मानवी

वर्ष -३ अंक ४

त्रैमासिक साहित्यिक ई-पत्रिका

अक्टूबर - दिसंबर २०२३

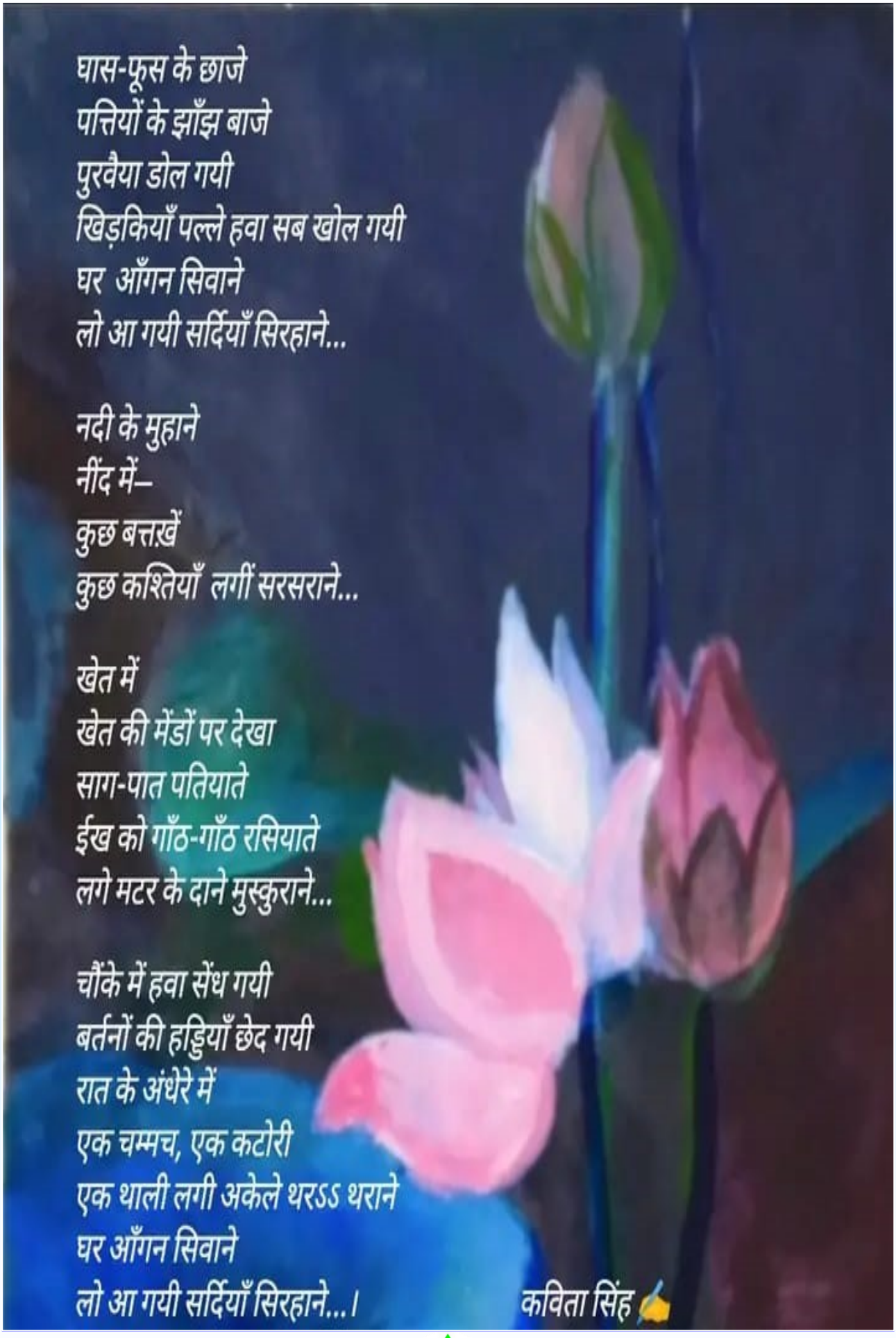
घास-फूस के छाजे
पत्तियों के झाँझ बाजे
पुरवैया डोल गयी
खिड़कियाँ पल्ले हवा सब खोल गयी
घर आँगन सिवाने
लो आ गयी सर्दियाँ सिरहाने...
नदी के मुहाने
नींद में–
कुछ बत्तख़ें
कुछ कश्तियाँ लगीं सरसराने...
खेत में
खेत की मेंडों पर देखा
साग-पात पतियाते
ईख को गाँठ-गाँठ रसियाते
लगे मटर के दाने मुस्कुराने...
चौंके में हवा सेंध गयी
बर्तनों की हड्डियाँ छेद गयी
रात के अंधेरे में
एक चम्मच, एक कटोरी
एक थाली लगी अकेले थरऽऽ थराने
घर आँगन सिवाने
लो आ गयी सर्दियाँ सिरहाने...।
कविता सिंह

वर्ष– 3 ,अंक– 4 (अक्तूबर -दिसंबर 2023)

त्रैमासिक ई -पत्रिका

मानवी

प्रधान सम्पादक -कविता सिंह

सम्पादक -राजेश कुमार सिंह

****

आवरण -चित्र -तेजस सिंह

****

manvipatrika@gmail.com

http://www.manvipatrika.co.in/

****

संरक्षक

श्रीमती जानकी किशोरी देवी एवं

श्री राम चन्द्र सिंह

****

पता -कार्यकारी -बी -701 ,स्वाति फ्लोरेंस ,

निकट सोबो सेंटर ,साउथ बोपल ,अहमदाबाद

-380058

स्थायी - 274/x ,शक्ति णगर

कालोनी ,आरोग्य मंदिर ,गोरखपुर -273003

मोब -9833775798

मानवी पत्रिका में प्रकाशित लेख /काव्य आदि रचनकारों के अपने विचार है ,जिनसे प्रकाशक/ संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गोरखपुर रहेगा। रचना की मौलिकता का दायित्व रचनाकार का है

पत्रिका से जुड़े सभी पद अवैतनिक है।

पत्रिका आप सभी मित्रों से रचनात्मक सहयोग के अलावा अर्थ-सहयोग का भी निवेदन करती है, यह स्वैच्छिक है आप पेटिएम नं -9833775798 पर स्वेच्छा से यथासंभव धनराशि सहयोग के रुप में अंतरित कर सकते हैं।

इस अंक में....

संपादक की कलम से -4/5

काव्य धरोहर -6

लेख /आलेख /संस्मरण

7-प्रदीप कुमार नायक
11-कामेश्वर त्रिपाठी
14-अनिमा दास
15- डॉ कान्ति लाल यादव
16- डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफरी
18 -मनोज जैन 'मधुर'
20-आकांक्षा यादव
22- डॉ दिनेश कुमार गुप्ता

हास्य व्यंग्य -

26-दिलीप कुमार

कहानी -

28-महेश शर्मा
33-डॉ संदीप शर्मा
35-मनीष कुमार सिंह
39-कृष्ण कुमार यादव
गुजराती से अनूदित दो कहानियाँ
41- कहानीकार: गिरिमा घारेखान (अनुवादक: डॉ. रजनीकान्त एस.शाह(
44-कहानीकार : योगेश जोषी (अनुवादक: डॉ. रजनीकान्त एस.शाह(
50-डोली शाह
52-सरोज बाला
56-राजेन्द्र कुमार सिंह
60-क़ाज़ी वाजिद सिद्दीक़ी
62-रमेश कुमार संतोष

लघुकथा

49-प्रगति त्रिपाठी
59-मीना दत्ता
61-सपना चंद्रा
61-पूनम सिंह
64-शराफ़त अली खान
64-संदीप आनंद
65-डॉ मीना बैस रघुवंषी
66-अख़लाक़ अहमद ज़ई
68- गोविन्द भारद्वाज
69- डॉ .सन्तोष खन्ना

काव्य /हाइकु /ग़ज़ल

25-रामस्वरूप मूंदड़ा
25-विनय बंसल
27-डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफरी
32-ऋषि रंजन
34-अशोक सपड़ा हमदर्द
38-दीपक कुमार
48-डॉ .दलजीत कौर
51-अर्चना तिवारी
55-हमीद कानपुरी
63-राहुल लोहट
70-विनोद दूबे
71-सतीश" बब्बा"
71-नलिन खोईवाल
71-मधुकर वनमाली
72-डॉ .उमेश कुमार शुक्ल
73- विजय कुमार पुरी
73- शिव डोयले
74- हरेराम सिंह
75- शुचि' भवि'
75- शेफालिका सिन्हा
75-डॉ मीरा सिंह" मीरा"
76-नवीन माथुर पंचोली
77-प्रभात सिन्हा
77-डा0 उषा माहेश्वरी पुंगलिया
79-निधि" मानसिंह"
87-डॉ दीपिका माहेश्वरी सुमन (अहंकारा)

पुस्तक समीक्षा -

78- डॉ हरिसिंह पाल
80- डा. बबीता गुप्ता
82- मोहन सपरा
84- दीपक गिरकर
88- विजय कुमार तिवारी
92- राजेश सिंह

आस-पास –94

कुछ मेरी भी....

इस युग में तेजी से पूंजीवाद की ओर अग्रसर सामाजिक संरचना में मानवता का स्थान किस पायदान पर है ,है भी या नहीं। इस तथ्य पर वर्तमान समय में व्यापक रूप से चिंतन की आवश्यकता है। समाज में पश्चिम से आयातित गला काट प्रतिस्पर्धा में मानवता धीरे धीरे हाशिये पर स्थानांतरित होती जा रही है। साफ शब्दों में कहें तो लोग मतलबी होते जा रहें है। जब तक आप किसी के काम आ रहें है तभी तक आपको पूछा जा रहा है ,तभी तक दुनिया को आपसे मतलब है। गोया अगर आप किसी काम के नहीं है तो आप अपने आदमी होने की अहर्ता भी खो देते है। हम भले ही आर्थिक रूप से कितने ही वैभवशाली क्यों न हो जाए अगर भावनात्मक रूप से पिछड़ गए या संवेदना के स्तर से नीचे गिरते रहें तो समाज में पाप ,दुराचार ,भष्टाचार बढ़ता ही जायेगा। और एक दिन यह आपसी मार-काट ,युद्ध ,आतंकवाद के भयावह युग में तब्दील हो जाएगा। यह बात तो कोई भी विश्व के विकसित कहे जाने वाले देशों को देखकर समझ सकता है । या तो विकसित देश युद्ध कर रहें है या फिर युद्ध को बढ़ावा दे रहें हैं।

भारतीय समाज या परंपरा हमेशा पापाचरण को या फिर भ्रष्टाचारण को आलोचनात्मक दृष्टि से देखती है। पापकर्मों के बुरे फलों की चेतावनी देती है। पापकर्मों से नरक की प्राप्ति होती है और नरक में बहुत ही भयावह पीड़ादायी दंडों का विधान है। भारतीय परंपरा में हमेशा से मानवतावाद को बढ़ावा दिया गया है। भारतीय विचारधारा को मानवतावाद का पोषक कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि भारतीय संस्कृति में सहअस्तित्व एवं सर्वकल्याण की भावना, उसकी समस्त पद्धतियों एवं शाखाओं में विद्यमान है। भारतीय समाज में प्रकृति पूजा की संकल्पना उसके प्राचीन अस्तित्व एवं उपस्थिति में विद्यमान थी। प्रकृति में मात्र पेड-पौधे नही थे वरन् मानवों के अतिरिक्त समस्त प्राणियों के प्रति प्रेम एवं कल्याण की भावना निहित थी। हम देखते है कि कई पालतु एवं हिंसक प्राणी, विविध हिंदू देवी-देवताओं के वाहन स्वरूप है। उसी तरह विविध वृक्षों एवं वनस्पतियों में भी देवताओं का वास होना माना जाता है।

कुल मिलाकर जिस पर्यावरण एवं प्रकृति संरक्षण के आंदोलन एवं मुहिम आज चलाए जा रहे है, वह भारतीय विचारधारा के मूलभूत विचारों में मौजूद था। यहां मानवतावाद को केवल मानवों तक के सीमित अर्थों में ही नहीं देखा जाना चाहिए वरन् इसकी व्यापकता के दायरे में संपूर्ण प्रकृति, जीव-जन्तु आदि आते है क्योंकि यह सब आपस में इक दूसरे के पूरक है,इक दुसरे के पोषक है ,तथा एक-दूसरें के अस्तित्व का आधार भी है। प्रकृति के बिना पुरुष की संकल्पना करना असंभव है और पुरुष का आधार ही प्रकृति है।

हिंदुत्व के प्राचीन ग्रन्थों से लेकर अर्वाचीन साहित्य में मानवता या फिर पाप और पुण्य की विचारधारा दृश्यमान है। वेद व्यास जी सारे पुराणों का निचोड़ निकालते हुए स्पष्टतः केवल दो बातें कहते हैं, जिनसे मानवता को समझने में पर्याप्त मदद मिलती है।

"परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥"

पहली -दूसरे पर उपकार करने से पुण्य मिलता है और दूसरी -दूसरे को पीड़ा देने से पाप। इतने साफ साफ शब्दों में मानवता का संदेश और कहीं नहीं मिलता है , और मात्र दो शब्दो में मानवता की व्याख्या,समझ और स्पष्टीकरण शायद ही कहीं और मिलता हो।

इसी तथ्य को मान्यता देते हुए **गोस्वामी तुलसीदास जी** भी लिखते है -

"परहित सरसि धरम नहि भाई"

अर्थात दूसरे के हित से बड़ा कोई धर्म नहीं है।

मानवता की व्याख्या करते हुए **राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त जी** कहते हैं -

"मनुष्य है वही कि जो मनुष्य के लिए मरे।"

सच्चा मनुष्य वही है जो औरो के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर देता है। मनुष्य वही है जो वक़्त आने पर दूसरो के काम आये , दूसरो का भला करे। एक सच्चा मनुष्य वही है जो अपने स्वार्थ का त्याग करके औरो का भला करता है।

ज्यादातर लोग मानवता को सिर्फ सेवा भाव से जोड़कर देखते हैं जबकि मानवता का तात्पर्य सिर्फ सेवाभाव ही नही वरन् मानव के विकास की समग्रता से है।

यहां विकास का तात्पर्य जीवन के सम्पूर्ण आयामों -यथा सामाजिक,आर्थिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिकता से है और हिंदुत्व की विचारधारा में तो इससे कहीं ज्यादा मानव के नैतिक एवं चारित्रिक उत्थान एवं उत्कृष्टता पर जोर दिया गया है।

जिस प्रकार से **धर्मो रक्षित रक्षित:** है वैसे ही मेरा मानना है **मानवों रक्षित रक्षित:** और यह मानवता भाव से ही सम्भव है, अन्यथा वर्तमान समय में युद्ध से मानव और मानवता का ह्रास रुस यूक्रेन, इजरायल हमास के अलावा भी तमाम आतंकवादी गतिविधियों में परिलक्षित है। मानवता की समझ और इसकी जागरूकता से ही एक उत्कृष्ट मनुष्य, उत्कृष्ट समाज और उत्कृष्ट देश का निर्माण संभव है।

निष्कर्षतः हिंदुओं के प्राचीन उपनिषदों के श्लोक में की गई प्रार्थना के निहितार्थ को समझा जा सकता है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्।।

इस श्लोक में सभी के सुखी होने, निरोगी होने एवं निरापद रहने की मंगलकामनाएं अभिव्यक्त हुई है जो इस बात की पुष्टि करता है कि हिंदुत्व एवं मानवतावादी दृष्टिकोण आपस में कितने संश्लिष्ट है कि इन्हें पृथक् करके नहीं समझा जा सकता है।

आइए हम सब मानवता को सभी व्यक्तियों के अंदर सच्चे अर्थों में जगाने का प्रयास करें ,तभी एक सम्यक सभ्य समाज की निर्माण संभव है।

आप सभी पाठकों /रचनाकारों को नववर्ष की अग्रिम बधाई एवं सुभकामनाएँ।

आपका
शुभेच्छू

काव्य धरोहर

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सययन 'अज्ञेय'

शरद चांदनी बरसी
अँजुरी भर कर पी लो

ऊँघ रहे हैं तारे
सिहरी सरसी
ओ प्रिय कुमुद ताकते
अनझिप क्षण में
तुम भी जी लो।

सींच रही है ओस
हमारे गाने
घने कुहासे में
झिपते
चेहरे पहचाने

खम्भों पर बत्तियाँ
खड़ी हैं सीठी
ठिठक गये हैं मानों
पल-छिन
आने-जाने

उठी ललक
हिय उमगा
अनकहनी अलसानी
जगी लालसा मीठी,
खड़े रहो ढिंग
गहो हाथ
पाहुन मन-भाने,
ओ प्रिय रहो साथ
भर-भर कर अँजुरी पी लो

बरसी
शरद चांदनी
मेरा अन्त:स्पन्दन
तुम भी क्षण-क्षण जी लो !

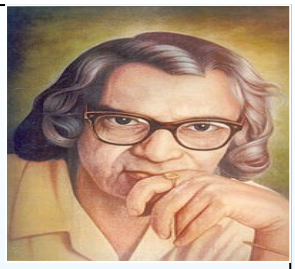

सुमित्रानंदन पंत

शरद चाँदनी!-

शरद चाँदनी!
विहँस उठी मौन अतल
नीलिमा उदासिनी!

आकुल सौरभ समीर
छल छल चल सरसि नीर,
हृदय प्रणय से अधीर,
जीवन उन्मादिनी!

अश्रु सजल तारक दल,
अपलक दृग गिनते पल,
छेड़ रही प्राण विकल
विरह वेणु वादिनी!

जगीं कुसुम कलि थर् थर्
जगे रोम सिहर सिहर,
शशि असि सी प्रेयसि स्मृति
जगी हृदय ह्लादिनी!
शरद चाँदनी!

प्रदीप कुमार नायक
स्वतंत्र लेखक एवं पत्रकार

चौदह वर्ष के वनवास में राम कहां-कहां रहे?

प्रभु श्रीराम को 14 वर्ष का वनवास हुआ। इस वनवास काल में श्रीराम ने कई ऋषि-मुनियों से शिक्षा और विद्या ग्रहण की, तपस्या की और भारत के आदिवासी, वनवासी और तमाम तरह के भारतीय समाज को संगठित कर उन्हें धर्म के मार्ग पर चलाया। संपूर्ण भारत को उन्होंने एक ही विचारधारा के सूत्र में बांधा, लेकिन इस दौरान उनके साथ कुछ ऐसा भी घटा जिसने उनके जीवन को बदल कर रख दिया।

रामायण में उल्लेखित और अनेक अनुसंधानकर्ताओं के अनुसार जब भगवान राम को वनवास हुआ तब उन्होंने अपनी यात्रा अयोध्या से प्रारंभ करते हुए रामेश्वरम और उसके बाद श्रीलंका में समाप्त की। इस दौरान उनके साथ जहां भी जो घटा उनमें से 200 से अधिक घटना स्थलों की पहचान की गई है।

जाने-माने इतिहासकार और पुरातत्वशास्त्री अनुसंधानकर्ता डॉ. राम अवतार ने श्रीराम और सीता के जीवन की घटनाओं से जुड़े ऐसे 200 से भी अधिक स्थानों का पता लगाया है, जहां आज भी तत्संबंधी स्मारक स्थल विद्यमान हैं, जहां श्रीराम और सीता रुके या रहे थे। वहां के स्मारकों, भित्तिचित्रों, गुफाओं आदि स्थानों के समय-काल की जांच-पड़ताल वैज्ञानिक तरीकों से की। आओ जानते हैं कुछ प्रमुख स्थानों के बारे में...

1.केवट प्रसंग :राम को जब वनवास हुआ तो वाल्मीकि रामायण और शोधकर्ताओं के अनुसार वे सबसे पहले तमसा नदी पहुंचे, जो अयोध्या से 20 किमी दूर है। इसके बाद उन्होंने गोमती नदी पार की और प्रयागराज (इलाहाबाद) से 20-22 किलोमीटर दूर वे श्रृंगवेरपुर पहुंचे, जो निषादराज गुह का राज्य था। यहीं पर गंगा के तट पर उन्होंने केवट से गंगा पार करने को कहा था।

'सिंगरौर' : इलाहाबाद से 22 मील (लगभग 35.2 किमी) उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित 'सिंगरौर' नामक स्थान ही प्राचीन समय में श्रृंगवेरपुर नाम से परिज्ञात था। रामायण में इस नगर का उल्लेख आता है। यह नगर गंगा घाटी के तट पर स्थित था। महाभारत में इसे 'तीर्थस्थल' कहा गया है।

'कुरई' :इलाहाबाद जिले में ही कुरई नामक एक स्थान है, जो सिंगरौर के निकट गंगा नदी के तट पर स्थित है। गंगा के उस पार सिंगरौर तो इस पार कुरई। सिंगरौर में गंगा पार करने के पश्चात श्रीराम इसी स्थान पर उतरे थे।

इस ग्राम में एक छोटा-सा मंदिर है, जो स्थानीय लोकश्रुति के अनुसार उसी स्थान पर है, जहां गंगा को पार करने के पश्चात राम, लक्ष्मण और सीताजी ने कुछ देर विश्राम किया था।

2.चित्रकूट के घाट पर :कुरई से आगे चलकर श्रीराम अपने भाई लक्ष्मण और पत्नी सहित प्रयाग पहुंचे थे। प्रयाग को वर्तमान में इलाहाबाद कहा जाता है। यहां गंगा-जमुना का संगम स्थल है। हिन्दुओं का यह सबसे बड़ा तीर्थस्थान है। प्रभु श्रीराम ने संगम के समीप यमुना नदी को पार किया और फिर पहुंच गए चित्रकूट। यहां स्थित स्मारकों में शामिल हैं, वाल्मीकि आश्रम, मांडव्य आश्रम, भरतकूप इत्यादि।

3.अत्रि ऋषि का आश्रम :चित्रकूट के पास ही सतना (मध्यप्रदेश) स्थित अत्रि ऋषि का आश्रम था। महर्षि अत्रि चित्रकूट के तपोवन में रहा करते थे। वहां श्रीराम ने कुछ वक्त बिताया। अत्रि ऋषि ऋग्वेद के पंचम मंडल के द्रष्टा हैं। अत्रि ऋषि की पत्नी का नाम है अनुसूइया, जो दक्ष प्रजापति की चौबीस कन्याओं में से एक थी।

अत्रि पत्नी अनुसूइया के तपोबल से ही भगीरथी गंगा की एक पवित्र धारा चित्रकूट में प्रविष्ट हुई और 'मंदाकिनी' नाम से प्रसिद्ध हुई। ब्रह्मा, विष्णु व महेश ने अनसूइया के सतीत्व की परीक्षा ली थी, लेकिन तीनों को उन्होंने अपने तपोबल से बालक बना दिया था। तब तीनों देवियों की प्रार्थना के बाद ही तीनों देवता बाल रूप से मुक्त हो पाए थे। फिर तीनों देवताओं के वरदान से उन्हें एक पुत्र मिला, जो थे महायोगी 'दत्तात्रेय'। अत्रि ऋषि के दूसरे पुत्र का नाम था 'दुर्वासा'। दुर्वासा ऋषि को कौन नहीं जानता?

अत्रि के आश्रम के आस-पास राक्षसों का समूह रहता था। अत्रि, उनके भक्तगण व माता अनुसूइया उन राक्षसों से भयभीत रहते थे। भगवान श्रीराम ने उन राक्षसों का वध किया। वाल्मीकि रामायण के अयोध्या कांड में इसका वर्णन मिलता है।

प्रातःकाल जब राम आश्रम से विदा होने लगे तो अत्रि ऋषि उन्हें विदा करते हुए बोले, 'हे राघव! इन वनों में भयंकर राक्षस तथा सर्प निवास करते हैं, जो मनुष्यों को नाना प्रकार के कष्ट देते हैं। इनके कारण अनेक तपस्वियों को असमय ही काल का ग्रास बनना पड़ा है। मैं चाहता हूं, तुम इनका विनाश करके तपस्वियों की रक्षा करो।'

राम ने महर्षि की आज्ञा को शिरोधार्य कर उपद्रवी राक्षसों तथा मनुष्य का प्राणांत करने वाले भयानक सर्पों को नष्ट करने का वचन देखर सीता तथा लक्ष्मण के साथ आगे के लिए प्रस्थान किया।

4.दंडकारण्य :अत्रि ऋषि के आश्रम में कुछ दिन रुकने के बाद श्रीराम ने मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के घने जंगलों को अपना आश्रय स्थल बनाया। यह जंगल क्षेत्र था दंडकारण्य। 'अत्रि-आश्रम' से 'दंडकारण्य' आरंभ हो जाता है। छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्सों पर राम के नाना और कुछ पर बाणासुर का राज्य था। यहां के नदियों, पहाड़ों, सरोवरों एवं गुफाओं में राम के रहने के सबूतों की भरमार है। यहीं पर राम ने अपना वनवास काटा था। यहां वे लगभग 10 वर्षों से भी अधिक समय तक रहे थे।

'अत्रि-आश्रम' से भगवान राम मध्यप्रदेश के सतना पहुंचे, जहां 'रामवन' हैं। मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ क्षेत्रों में नर्मदा व महानदी नदियों के किनारे 10 वर्षों तक उन्होंने कई ऋषि आश्रमों का भ्रमण किया। दंडकारण्य क्षेत्र तथा सतना के आगे वे विराध सरभंग एवं सुतीक्ष्ण मुनि आश्रमों में गए। बाद में सतीक्ष्ण आश्रम वापस आए। पन्ना, रायपुर, बस्तर और जगदलपुर में कई स्मारक विद्यमान हैं। उदाहरणत: मांडव्य आश्रम, श्रृंगी आश्रम, राम-लक्ष्मण मंदिर आदि।

राम वहां से आधुनिक जबलपुर, शहडोल (अमरकंटक) गए होंगे। शहडोल से पूर्वोत्तर की ओर सरगुजा क्षेत्र है। यहां एक पर्वत का नाम 'रामगढ़' है। 30 फीट की ऊंचाई से एक झरना जिस कुंड में गिरता है, उसे 'सीता कुंड' कहा जाता है। यहां वशिष्ठ गुफा है। दो गुफाओं के नाम 'लक्ष्मण बोंगरा' और 'सीता बोंगरा' हैं। शहडोल से दक्षिण-पूर्व की ओर बिलासपुर के आसपास छत्तीसगढ़ है।

वर्तमान में करीब 92,300 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैले इस इलाके के पश्चिम में अबूझमाड़ पहाड़ियां तथा पूर्व में इसकी सीमा पर पूर्वी घाट शामिल हैं। दंडकारण्य में छत्तीसगढ़, ओडिशा एवं आंध्रप्रदेश राज्यों के हिस्से शामिल हैं। इसका विस्तार उत्तर से दक्षिण तक करीब 320 किमी तथा पूर्व से पश्चिम तक लगभग 480 किलोमीटर है।

दंडक राक्षस के कारण इसका नाम दंडकारण्य पड़ा। यहां रामायण काल में रावण के सहयोगी बाणासुर का राज्य था। उसका इन्द्रावती, महानदी और पूर्व समुद्र तट, गोइंदारी (गोदावरी) तट तक तथा अलीपुर, पारंदुली, किरंदुली, राजमहेन्द्री, कोयापुर, कोयानार, छिन्दक कोया तक राज्य था। वर्तमान बस्तर की 'बारसूर' नामक समृद्ध नगर की नींव बाणासुर ने डाली, जो इन्द्रावती नदी के तट पर था। यहीं पर उसने ग्राम देवी कोयतर मां की बेटी माता माय (खेरमाय) की स्थापना की। बाणासुर द्वारा स्थापित देवी दांत तोना (दंतेवाड़िन) है। यह क्षेत्र आजकल दंतेवाड़ा के नाम से जाना जाता है। यहां वर्तमान में गोंड जाति निवास करती है तथा समूचा दंडकारण्य अब नक्सलवाद की चपेट में है।

इसी दंडकारण्य का ही हिस्सा है आंध्रप्रदेश का एक शहर भद्राचलम। गोदावरी नदी के तट पर बसा यह शहर सीता-रामचंद्र मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। यह मंदिर भद्रगिरि पर्वत पर है। कहा जाता है कि श्रीराम ने अपने वनवास के दौरान कुछ दिन इस भद्रगिरि पर्वत पर ही बिताए थे।

स्थानीय मान्यता के मुताबिक दंडकारण्य के आकाश में ही रावण और जटायु का युद्ध हुआ था और जटायु के कुछ अंग दंडकारण्य में आ गिरे थे। ऐसा माना जाता है कि दुनियाभर में सिर्फ यहीं पर जटायु का एकमात्र मंदिर है।

दंडकारण्य क्षेत्र की चर्चा पुराणों में विस्तार से मिलती है। इस क्षेत्र की उत्पत्ति कथा महर्षि अगस्त्य मुनि से जुड़ी हुई है। यहीं पर उनका महाराष्ट्र के नासिक के अलावा एक आश्रम था।

5.पंचवटी में राम :दण्डकारण्य में मुनियों के आश्रमों में रहने के बाद श्रीराम कई नदियों, तालाबों, पर्वतों और वनों को पार करने के पश्चात नासिक में अगस्त्य मुनि के आश्रम गए। मुनि का आश्रम नासिक के पंचवटी क्षेत्र में था। त्रेतायुग में लक्ष्मण व सीता सहित श्रीरामजी ने वनवास का कुछ समय यहां बिताया।

उस काल में पंचवटी जनस्थान या दंडक वन के अंतर्गत आता था। पंचवटी या नासिक से गोदावरी का उद्गम स्थान त्र्यंम्बकेश्वर लगभग 20 मील (लगभग 32 किमी) दूर है। वर्तमान में पंचवटी भारत के महाराष्ट्र के नासिक में गोदावरी नदी के किनारे स्थित विख्यात धार्मिक तीर्थस्थान है।

अगस्त्य मुनि ने श्रीराम को अग्निशाला में बनाए गए शस्त्र भेंट किए। नासिक में श्रीराम पंचवटी में रहे और गोदावरी के तट पर स्नान-ध्यान किया। नासिक में गोदावरी के तट पर पांच वृक्षों का स्थान पंचवटी कहा जाता है। ये पांच वृक्ष थे- पीपल, बरगद, आंवला, बेल तथा अशोक वट। यहीं पर सीता माता की गुफा के पास पांच प्राचीन वृक्ष हैं जिन्हें पंचवट के नाम से जाना जाता है। माना जाता है कि इन वृक्षों को राम-सीमा और लक्ष्मण ने अपने हाथों से लगाया था।

यहीं पर लक्ष्मण ने शूर्पणखा की नाक काटी थी। राम-लक्ष्मण ने खर व दूषण के साथ युद्ध किया था। यहां पर मारीच वध स्थल का स्मारक भी अस्तित्व में है। नासिक क्षेत्र स्मारकों से भरा पड़ा है, जैसे कि सीता सरोवर, राम कुंड, त्र्यम्बकेश्वर आदि। यहां श्रीराम का बनाया हुआ एक मंदिर खंडहर रूप में विद्यमान है।

मरीच का वध पंचवटी के निकट ही मृगव्याधेश्वर में हुआ था। गिद्धराज जटायु से श्रीराम की मैत्री भी यहीं हुई थी। वाल्मीकि रामायण, अरण्यकांड में पंचवटी का मनोहर वर्णन मिलता है।

6.सीताहरण का स्थान 'सर्वतीर्थ' :नासिक क्षेत्र में शूर्पणखा, मारीच और खर व दूषण के वध के बाद ही रावण ने सीता का हरण किया और जटायु का भी वध किया जिसकी स्मृति नासिक से 56 किमी दूर ताकेड गांव में 'सर्वतीर्थ' नामक स्थान पर आज भी संरक्षित है।

जटायु की मृत्यु सर्वतीर्थ नाम के स्थान पर हुई, जो नासिक जिले के इगतपुरी तहसील के ताकेड गांव में मौजूद है। इस स्थान को सर्वतीर्थ इसलिए कहा गया, क्योंकि यहीं पर मरणासन्न जटायु ने सीता माता के बारे में बताया। रामजी ने यहां जटायु का अंतिम संस्कार करके पिता और जटायु का श्राद्ध-तर्पण किया था। इसी तीर्थ पर लक्ष्मण रेखा थी।

पर्णशाला : पर्णशाला आंध्रप्रदेश में खम्माम जिले के भद्राचलम में स्थित है। रामालय से लगभग 1 घंटे की दूरी पर स्थित पर्णशाला को 'पनशाला' या 'पनसाला' भी कहते हैं। हिन्दुओं के प्रमुख धार्मिक स्थलों में से यह एक है। पर्णशाला गोदावरी नदी के तट पर स्थित है। मान्यता है कि यही वह स्थान है, जहां से सीताजी का हरण हुआ था। हालांकि कुछ मानते हैं कि इस स्थान पर रावण ने अपना विमान उतारा था।

इस स्थल से ही रावण ने सीता को पुष्पक विमान में बिठाया था यानी सीताजी ने धरती यहां छोड़ी थी। इसी से वास्तविक हरण का स्थल यह माना जाता है। यहां पर राम-सीता का प्राचीन मंदिर है।

7.सीता की खोज : सर्वतीर्थ जहां जटायु का वध हुआ था, वह स्थान सीता की खोज का प्रथम स्थान था। उसके बाद श्रीराम-लक्ष्मण तुंगभद्रा तथा कावेरी नदियों के क्षेत्र में पहुंच गए। तुंगभद्रा एवं कावेरी नदी क्षेत्रों के अनेक स्थलों पर वे सीता की खोज में गए।

8.शबरी का आश्रम :तुंगभद्रा और कावेरी नदी को पार करते हुए राम और लक्ष्मण चले सीता की खोज में। जटायु और कबंध से मिलने के पश्चात वे ऋष्यमूक पर्वत पहुंचे। रास्ते में वे पम्पा नदी के पास शबरी आश्रम भी गए, जो आजकल केरल में स्थित है।

पम्पा नदी भारत के केरल राज्य की तीसरी सबसे बड़ी नदी है। इसे 'पम्बा' नाम से भी जाना जाता है। 'पम्पा' तुंगभद्रा नदी का पुराना नाम है। श्रावणकौर रजवाड़े की सबसे लंबी नदी है। इसी नदी के किनारे पर हम्पी बसा हुआ है। यह स्थान बेर के वृक्षों के लिए आज भी प्रसिद्ध है। पौराणिक ग्रंथ 'रामायण' में भी हम्पी का उल्लेख वानर राज्य किष्किंधा की राजधानी के तौर पर किया गया है।

9.हनुमान से भेंट :मलय पर्वत और चंदन वनों को पार करते हुए वे ऋष्यमूक पर्वत की ओर बढ़े। यहां उन्होंने हनुमान और सुग्रीव से भेंट की, सीता के आभूषणों को देखा और श्रीराम ने बाली का वध किया।

ऋष्यमूक पर्वत वाल्मीकि रामायण में वर्णित वानरों की राजधानी किष्किंधा के निकट स्थित था। इसी पर्वत पर श्रीराम की हनुमान से भेंट हुई थी। बाद में हनुमान ने राम और सुग्रीव की भेंट करवाई, जो एक अटूट मित्रता बन गई। जब महाबली बाली अपने भाई सुग्रीव को मारकर किष्किंधा से भागा तो वह ऋष्यमूक पर्वत पर ही आकर छिपकर रहने लगा था।

ऋष्यमूक पर्वत तथा किष्किंधा नगर कर्नाटक के हम्पी, जिला बेल्लारी में स्थित है। विरुपाक्ष मंदिर के पास से ऋष्यमूक पर्वत तक के लिए मार्ग जाता है। यहां तुंगभद्रा नदी (पम्पा) धनुष के आकार में बहती है। तुंगभद्रा नदी में पौराणिक चक्रतीर्थ माना गया है। पास ही पहाड़ी के नीचे श्रीराम मंदिर है। पास की पहाड़ी को 'मतंग पर्वत' माना जाता है। इसी पर्वत पर मतंग ऋषि का आश्रम था।

10.कोडीकरई :हनुमान और सुग्रीव से मिलने के बाद श्रीराम ने अपनी सेना का गठन किया और लंका की ओर चल पड़े। मलय पर्वत, चंदन वन, अनेक नदियों, झरनों तथा वन-वाटिकाओं को पार करके राम और उनकी सेना ने समुद्र की ओर प्रस्थान किया। श्रीराम ने पहले अपनी सेना को कोडीकरई में एकत्रित किया।

तमिलनाडु की एक लंबी तटरेखा है, जो लगभग 1,000 किमी तक विस्तारित है। कोडीकरई समुद्र तट वेलांकनी के दक्षिण में स्थित है, जो पूर्व में बंगाल की खाड़ी और दक्षिण में पाल्क स्ट्रेट से घिरा हुआ है।

लेकिन राम की सेना ने उस स्थान के सर्वेक्षण के बाद जाना कि यहां से समुद्र को पार नहीं किया जा सकता और यह स्थान पुल बनाने के लिए उचित भी नहीं है, तब श्रीराम की सेना ने रामेश्वरम की ओर कूच किया।

11.रामेश्वरम : रामेश्वरम समुद्र तट एक शांत समुद्र तट है और यहां का छिछला पानी तैरने और सन बेदिंग के लिए आदर्श है। रामेश्वरम प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ केंद्र है। महाकाव्य रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम ने लंका पर चढ़ाई करने के पहले यहां भगवान शिव की पूजा की थी। रामेश्वरम का शिवलिंग श्रीराम द्वारा स्थापित शिवलिंग है।

12.धनुषकोडी :वाल्मीकि के अनुसार तीन दिन की खोजबीन के बाद श्रीराम ने रामेश्वरम के आगे समुद्र में वह स्थान ढूंढ निकाला, जहां से आसानी से श्रीलंका पहुंचा जा सकता हो। उन्होंने नल और नील की मदद से उक्त स्थान से लंका तक का पुनर्निर्माण करने का फैसला लिया।

छेदुकराई तथा रामेश्वरम के इर्द-गिर्द इस घटना से संबंधित अनेक स्मृतिचिह्न अभी भी मौजूद हैं। नाविक रामेश्वरम में धनुषकोडी नामक स्थान से यात्रियों को रामसेतु के अवशेषों को दिखाने ले जाते हैं।

धनुषकोडी भारत के तमिलनाडु राज्य के पूर्वी तट पर रामेश्वरम द्वीप के दक्षिणी किनारे पर स्थित एक गांव है। धनुषकोडी पंबन के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। धनुषकोडी श्रीलंका में तलैमन्नार से करीब 18 मील पश्चिम में है।

इसका नाम धनुषकोडी इसलिए है कि यहां से श्रीलंका तक वानर सेना के माध्यम से नल और नील ने जो पुल (रामसेतु) बनाया था उस का आकार मार्ग धनुष के समान ही है। इन पूरे इलाकों को मन्नार समुद्री क्षेत्र के अंतर्गत माना जाता है।

धनुषकोडी ही भारत और श्रीलंका के बीच एकमात्र स्थलीय सीमा है, जहां समुद्र नदी की गहराई जितना है जिसमें कहीं -कहीं भूमि नजर आती है।

दरअसल, यहां एक पुल डूबा पड़ा है। 1860 में इसकी स्पष्ट पहचान हुई और इसे हटाने के कई प्रयास किए गए। अंग्रेज इसे एडम ब्रिज कहने लगे तो स्थानीय लोगों में भी यह नाम प्रचलित हो गया। अंग्रेजों ने कभी इस पुल को क्षतिग्रस्त नहीं किया लेकिन आजाद भारत में पहले रेल ट्रैक निर्माण के चक्कर में बाद में बंदरगाह बनाने के चलते इस पुल को क्षतिग्रस्त किया गया।

30मील लंबा और सवा मील चौड़ा यह रामसेतु 5 से 30 फुट तक पानी में डूबा है। श्रीलंका सरकार इस डूबे हुए पुल (पम्बन से मन्नार) के ऊपर भू-मार्ग का निर्माण कराना चाहती है जबकि भारत सरकार नौवहन हेतु उसे तोड़ना चाहती है। इस कार्य को भारत सरकार ने सेतुसमुद्रम प्रोजेक्ट का नाम दिया है। श्रीलंका के ऊर्जा मंत्री श्रीजयसूर्या ने इस डूबे हुए रामसेतु पर भारत और श्रीलंका के बीच भू-मार्ग का निर्माण कराने का प्रस्ताव रखा था।

तेरहवांपड़ाव 'नुवारा एलिया' पर्वत श्रृंखला : - वाल्मीकिय-रामायण अनुसार श्रीलंका के मध्य में रावण का महल था। 'नुवारा एलिया' पहाड़ियों से लगभग 90 किलोमीटर दूर बांद्रवेला की तरफ मध्य लंका की ऊंची पहाड़ियों के बीचोबीच सुरंगों तथा गुफाओं के भंवरजाल मिलते हैं। यहां ऐसे कई पुरातात्विक अवशेष मिलते हैं जिनकी कार्बन डेटिंग से इनका काल निकाला गया है।

श्रीलंका में नुआरा एलिया पहाड़ियों के आसपास स्थित रावण फॉल, रावण गुफाएं, अशोक वाटिका, खंडहर हो चुके विभीषण के महल आदि की पुरातात्विक जांच से इनके रामायण काल के होने की पुष्टि होती है। आजकल भी इन स्थानों की भौगोलिक विशेषताएं, जीव, वनस्पति तथा स्मारक आदि बिलकुल वैसे ही हैं जैसे कि रामायण में वर्णित किए गए हैं।

श्रीवाल्मीकि ने रामायण की संरचना श्रीराम के राज्याभिषेक के बाद वर्ष 5075 ईपू के आसपास की होगी (1/4/1 -2)। श्रुति स्मृति की प्रथा के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी परिचलित रहने के बाद वर्ष 1000 ईपू के आसपास इसको लिखित रूप दिया गया होगा। इस निष्कर्ष के बहुत से प्रमाण मिलते हैं।

रामायण की कहानी के संदर्भ निम्नलिखित रूप में उपलब्ध हैं-

* कौटिल्य का अर्थशास्त्र (चौथी शताब्दी ईपू)
* बौद्ध साहित्य में दशरथ जातक (तीसरी शताब्दी ईपू)
* कौशाम्बी में खुदाई में मिलीं टेराकोटा (पक्की मिट्टी) की मूर्तियां (दूसरी शताब्दी ईपू)
* नागार्जुनकोंडा (आंध्रप्रदेश) में खुदाई में मिले स्टोन पैनल (तीसरी शताब्दी)
* नचार खेड़ा (हरियाणा) में मिले टेराकोटा पैनल (चौथी शताब्दी)
* श्रीलंका के प्रसिद्ध कवि कुमार दास की काव्य रचना 'जानकी हरण' (सातवीं शताब्दी)

संदर्भ ग्रंथ :

1.वाल्मीकि रामायण
2.वैदिक युग एवं रामायण काल की ऐतिहासिकता (सरोज बाला, अशोक भटनागर, कुलभूषण मिश्रा

कामेश्वर त्रिपाठी
जयपुर
जयपुर-मो.नं.9413394263

लोकचेतना और जन-प्रतिरोध के कवि – शैलेन्द्र चौहान

कवि होने व कविता लिखने में कवि होने को मैं प्राथमिक मानता हूँ। क्योंकि वर्तमान में कवियों की संख्या में अकूत वृद्धि हुई हैं। आज की समकालीन हिन्दी कविता पर नज़र डालें तो लगता है कविता लिखना सबसे आसान कार्य हो गया हैं। शब्दों के निरर्थक जोड़ तोड़ द्वारा जो कुछ लिख दिया जाय उसे पढ़कर उन्हीं के जैसे लोगों द्वारा वाह क्या कविता है! सुनते ही वह कवि बन जाता हैं। चाहे वह लेखक कितना ही भ्रष्ट, कुटिल अथवा हृदयहीन हो। मेरी समझ में कविता लिखने से पूर्व प्रेम, दया, करुणा, ईमानदारी, सच्चाई तथा सदाचरण-युक्त एक सुन्दर मनुष्य बनना बहुत जरूरी हैं। ऐसा व्यक्ति ही जीवन व समाज मे व्याप्त जटिल द्वंद्वात्मकता को समझ सकता है। कवि के व्यक्तिगत जीवन तथा उसकी सोच व रुझान को जानना भी सौंदर्यशास्त्र की दृष्टि से जरूरी होता है। वैसे कवि स्वभाव से 'शिवेतर क्षतए' का अनुगामी होता है। वर्गीय समाज में शासक व सांमत गरीब व दलित जनता पर निरंतर रोब गालिब ही नही करते बल्कि उनके श्रम का पग-पग शोषण करते रहते हैं। शोषण व अत्याचार से पीड़ित होती जनता के दुख कवि हृदय को संवेदित करते है। सच्चा कवि इन शोषित, उत्पीड़ित व लाचार जन के दुखों से दुखी व बेचैन होकर इस पूंजीवादी व सांमतवादी व्यवस्था से घृष्णा करने लगता हैं। वह संघर्षशील आम आदमी के पक्ष में शोषक व उत्पीड़क पूंजीवादी व्यवस्था का तीखा प्रतिरोध अपनी रचनाओं के माध्यम से करता हैं। हमारे बड़े लोकधर्मी कवियों का व्यक्तित्व प्रतिरोध की इस ज्वाला से दमकता था। ऐसे कवि स्वभाव से भी कुछ असाधारण होते हैं। ये कवि आम जन को शोषण उत्पीड़न व अत्याचार से मुक्त कराने के लिए वेचैन रहते है। यह बेचैनी आजकल बहुत कम कवियों में ही दिखलाई देती है। बहुत सारे कवियों से मिला पर अधिकांश कविता व कविकर्म को 'पार्ट टाइम जॉब' मानने वाले मिले। उसके बावजूद उनके अनेको काव्य संग्रह भी प्रकाशित हो जाते हैं। पुरस्कार भी दनादन उन्हें मिल जाने हैं। फिर क्या ये वरिष्ठ कवि की मुद्रा बनाकर कवि होने के भ्रम में पहाड़ से तन जाते हैं। आजकल जब तक पुरस्कार व सम्मान न मिले तब तक वह कवि नहीं समझा जाता हैं। पद प्रतिष्ठा व पुरस्कार के लोभ लालच में ही लिखी जा रही है ज्यादातर कविताएं। इस श्रेणी के कवियों की कविताओं की अलग-अलग किस्में हैं। चालीस के दशक से लेकर साठ के दशक तक आकाश, शून्य, मौन व एकांत को बारीक ताने बाने में बुनने का कलात्मक दौर था। कविता से आम आदमी के संघर्ष तथा जीवन व समाज के द्वंद्व को निष्कासित कर दिया गया था। कविता का जटिल अमूर्त तथा भाषाई वाग्जाल में उलझाकर कथ्यहीन बनाने का षड्यंत्र चला। इस प्रकार की कविताएं व्यवस्था के लिए बड़ी मुफीद साबित हुई। अज्ञेय, अशोक बाजपेयी, कुंवर नारायण, रघुवीर सहाय, केदारनाथ सिंह आदि इस धारा के अगुवा रहे हैं। इन कवियों ने कालिदास, वाल्मीकि, भवभूति, तुलसी, कबीर व निराला आदि की भारतीय काव्य परंपरा को त्याग कर पाश्चात्य देशों से काव्य परंपरा को नई कविता के रूप में प्रचारित किया। इसके विपरीत मुक्तिबोध, नागार्जुन, केदार बाबू, त्रिलोचन, कुमारेन्द्र, शलम श्रीराम सिहं, शील तथा विजेंद्र आदि कवियों ने संघर्षशील लोक तथा प्रकृति में रच-बस कर भ्रष्ट, क्रूर तथा शोषणवादी व्यवस्था के प्रतिरोध में लिखा।

ये जनपक्षधर कवि हैं। ये कवि पुरस्कार व सम्मान के लालच में जनता से दूर नहीं गये। कुछ प्रगतिशील तथा जनवादी कवि ऊपर से दिखने मे बड़े क्रांतिकारी लगते हैं। ये कवि व्यवस्था के क्रूर पंजों और बधनों के भयंकर चित्र कविता में प्रस्तुत करके कम सचेत लोगों की वाहवाही लूटते हैं। गरीब व शोषित जनता को पिटते हुए दिखाकर व्यवस्था द्वारा उत्पन्न भय का प्रचार प्रसार करते हैं। ये आधुनिकतावादी कवि हैं। व्यक्तिवादी या विद्रोही रचनाकार हमेशा असुरचित महसूस करता है। जबकि बदलाव के लिए संघर्षरत अपार जन समूह की अपराजेय शक्ति का अहसास लाकोन्मुख कवियों का योद्धा बना देता हैं।

इन दिनों कवि, आलोचक व संपादक शैलेन्द्र चौहान से मेरी घनिष्टता हुई। इनके एक मित्र कवि उदय प्रकाश को इस प्रतिबद्ध बौद्धिक रचनाकार की स्वप्निल आँखों में बल दिखाई देता है। फरवरी 2009 में प्रकाशित 'क्रमशः' पत्रिका का एक पूरा अंक कवि शैलेन्द्र पर केंद्रित था। इसके पृष्ठ-15 पर उदय प्रकाश लिखते है कि "यह स्वीकारने में मुझे कोई झिझक नहीं कि 1990 के बाद, जब आवारा विश्वपूंजी का सामाज्य सारी दुनिया में तेजी से फैलने लगा और उसने तमाम मानवीय और सामाजिक मूल्यों को चट करना शुरू किया, शैलेन्द्र उन कुछ गिने चुने दोस्तों में से एक था जिसने अपनी चेतना को इस तेज अधंड़ के हवाले नहीं किया। किसी पतित अवसरवादी की तरह किसी हाकिम-मंत्री का चापलूस बनकर उसने कवि या लेखक के रूप में अपना कैरियर बनाने की कोशिश नहीं की। भूमण्डलीकरण की तेज चपेट में हमारे अपने साथियों और मित्रों के 'चाल-चेहरे और चरित्र' तेजी से बदल रहे थे।" 21-12-1954 को जन्में शैलेन्द्र ने विदिशा से विद्युत में इन्जीनियरिंग में डिग्री हासिल की। वह विद्यार्थी जीवन से ही कविता की ओर आकृष्ट हो गए थे। ईमानदारी व वैचारिक प्रतिबद्धता के चलते नौकरी में इलाहाबाद, कानपुर, मुरादाबाद, कोटा, जयपुर, गाजियाबाद तथा फरीदाबाद, नागपुर आदि जगहों पर जल्दी-जल्दी स्थानांतरित होने को शैलेन्द्र धुमक्कड़ी के अनुभव की तरह ही लिए। कविता तथा कविकर्म साथ-साथ चलता रहा। वर्ग चेतना के प्रखर वैचारिक ताप से निरन्तर चैतन्य शैलेन्द्र संवेदनों के आधार पर जीवन व समाज के सत्य की पड़ताल करते चलते हैं।

शैलेन्द्र चौहान का कवि मन अपने आपको मनुष्य हित में बेहतर से बेहतर समाज और परिवेश की कल्पना रखने वाले लोकधर्मी कवि पाब्लो नेरूदा, बर्तोल्त ब्रेख्त, नाज़िम हिकमत; नजरुल इस्लाम, पाश और नागार्जुन आदि के पास ही पाता हैं। कवि होने के लिए कवि कर्म या काव्य परंपरा के गहन, अध्ययन, मनन के साथ संघर्षशील लोक से गहरी संपृक्ति जरूरी होती हैं। जीवन, समाज व प्रकृति से कटा हुआ कवि गगन-बिहारी होता है। लोग कविता को समाज निरपेक्ष चीज समझते हैं। शैलेन्द्र जैसे कवि की पैनी नजर जीवन और समाज के भयावह यथार्थ पर टिकी रहती है। देश में आपात काल लगने के बाद उन्हें एक नई रचना दृष्टि व सौंदर्य दृष्टि मिली। उन्हें लगा कि नागार्जुन, त्रिलोचन, शील, शमशेर, केदारबाबू, विजेन्द्र तथा कुमारेन्द्र पारसनाथ सिंह जैसे कवियों की सहज व लोकधर्मी काव्य परंपरा को विकसित करते हुए ही कविता को सहज जन-संवाद का माध्यम बनाया जा सकता हैं। शैलेन्द्र की प्रथम काव्य कृति 'नौ रुपए बीस पैसे के लिए' परिमल प्रकाशन इलाहाबाद से 1983 में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक की भूमिका वरिष्ठ जनकवि शील जी ने लिखी हैं। उन्होंने लिखा है कि शैलेन्द्र की कविताओं में कहानी तत्व की विशेषता है। कविताएं संवाद करती हैं। सामाजिक जीवन के चित्र बोलते हैं।

विषय-वस्तु की विविधता के साथ-साथ कविता में आए पात्रों में भिन्नता हैं। इन कविताओं में शोषण उत्पीड़न से जूझते हुए मजदूर वर्ग के प्रति सहानुभूमि और शोषक-शासक वर्ग की स्वार्थलिप्सा, अन्याय और उत्पीड़न के विरुद्ध गहरा आक्रोश हैं।' कवि शैलेन्द्र को भ्रष्ट व शोषणवादी व्यवस्था से जितनी घृणा है उससे कहीं अधिक उनमें संघर्षशील आम जन के प्रति प्रेम व सहानुभूति हैं। वह स्वयं भी इतने प्यारे इंसान है कि उनसे मिलने के बाद सच्चा व ईमानदार आदमी उनसे आकर्षित हुए बिना नहीं रह सकता। यही वजह है कि अधिकांश लोकोन्मुख व जनवादी रचनाकार उन्हें बहुत प्यार करते हैं। कविता व कविकर्म के प्रति उनकी सौद्देश्य सक्रियता काबिले तारीफ हैं। उनके अब तक पांच कविता संग्रह प्रकाशित हैं। साहित्य के मठाधीशों व सामंतों के खिलाफ वह बहुत बेबाक तथा तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। पद प्रतिष्ठा व पुरस्कार के लिए रचनाकार की नैतिकता को दांव पर लगाने वाले समझौता परस्त व अवसरवादी लेखकों की वह कूट आलोचना करने से नहीं चूकते। साहित्य की स्वस्थ लोकोन्मुख व जनपक्षधर, परम्परा को आगे बढ़ाने, उसे विकसित करने के उद्देश्य से वह 'धरती' नामक पत्रिका का संपादन भी करते हैं। उन्होनें इस पत्रिका के विशेषांक के रूप में वरिष्ठ कवि शील, शलभ श्रीराम सिंह तथा त्रिलोचन पर केंद्रित महत्वपूर्ण अंकों का कुशल संपादन किया हैं। शैलेन्द्र का गद्य शिल्प भी बेजोड़ है। वह समकालीन हिंदी कविता के स्वस्थ आलोचक हैं। संप्रति चाटुकार कवियों व लेखकों की एक बहुत बड़ी जमात हैं। ये लेखक जीवन व समाज के यथार्थ पर पर्दा डालने का काम करते है। विचारधारा, वर्ग चेतना तथा वर्ग संघर्ष जैसे शब्दों से बिदकने वाले ये लेखक कविता, कहानी व उपन्यास सभी के नये प्रतिमान गढ़ते हैं। ये प्रतिमान हमे जीवन व समाज के नैतिक मूल्यों से भटका कर पाश्चात्य पतनशील जीवन मूल्यों को आरोपित करने के षड्यंत्र मात्र ही साबित हुए हैं। तथाकथित प्रगतिशील व जनवादी लेखक इन प्रतिमानों की आड़ में व्यवस्था द्वारा मिलने वाले लाभ भी उठाते रहते हैं और हमारे बीच मार्क्सवादी भी बने रहते हैं। शैलेन्द्र ऐसे लेखकों की खटिया खड़ी करने वालों में सबसे आगे रहते हैं। मुझसे कहते है इन लोगों की बाते त्रिपाठी जी छोड़िए, संत हो जाइए। तब मुझे कबीर की उक्ति याद आती हैं। 'सनमुख लड़ै सो संत कहावै'। कविता मे सिर्फ हंगामा खड़ा करना उनका ध्येय नहीं हैं। उनके सरोकार व्यापक हैं। वह दुष्यन्त कुमार की तरह इस बुरी सूरत को पूरी तरह बदल देने को बेचैन रहते हैं। इस संक्रिया में वह श्रमिकों, किसानों व मजदूरों के समग्र संघर्षशील लोक में रम कर संवेदनात्मक ज्ञान से ज्ञानात्मक संवेदना के स्तर तक भावात्मक बिंब ग्रहण करते हैं। भावों का समूर्तन भी बिंब का अव्यक्त रूप होता हैं। कविता में मूर्तता सौंदर्य शास्त्र की दृष्टि से मूलभूत शिल्प-प्रविधि है। कविता मे सहज व सरल लोक-भाषा के मध्यम से सामाजिक द्वंद्वों का भावात्मक निरूपण करना कठिन होता है। शैलेन्द्र की कविताओं में यह सहजता व

सप्रेषणीयता हमें आश्वस्थ करती हैं। मार्क्सवादी सौंदर्य शास्त्र रूपवादी-कलावादी सौंदर्य शास्त्र से भिन्न होता हैं। समय के अनुसार लेखकों व कवियों ने अभिजात सौंदर्य को तोड़ा है तथा नये सौदर्य बोध का सृजन किया है। प्रेमचन्द, निराला व नागार्जुन आदि की रचनाओं मे लोकोन्मुख सौंदर्यबोध मिलता है। प्रसिद्ध जनवादी शायर अदम गोंदवी के शेर देखे :

धर के ठण्डे चूल्हे पर अगर खाली पतीली है
बताओं कैसे लिख दू घूप फागुन की नीशीली है।
वह फिर इरादे के साथ कहते हैं कि
भूख के एहसास को शेरो-सुखन तक ले चलो
या अदब को मुफ्लिसों की अंजुमन तक ले चलों।

शैलेद्र का कवि भी कुछ ऐसे ही सवाल करता है। **'क्या कारण है/लिख नहीं पा रहा मैं/एक सुन्दर सी कविता/ क्या कारण है कि बेचैन हूं इस कदर कि गा नहीं पा रहा/ खुशी और उमंग का कोई गीत'** शैलैदं के लिए एक सुन्दर सी कविता का अर्थ उसी अभिजात सौंदर्य का प्रतीक लगता है। क्योंकि वह आगे कहते हैं - **'किसी नवयुवती के सुन्दर होठ/ आँखें, कमर, नितम्ब/मुझे गुदगुदाने के बजाय/तिलमिला देते हैं' .....** (नौ रुपये बीस पैसे के लिए, अच्छी कविता')। जनपक्षधर रचनाकारों की सौंदर्य दृष्टि आज की समकालीनता भी है। इनके द्वारा व्यक्त यथार्थ जड़ता को तोडने वाला गतिशील यथार्थ होता है। शैलैंन्द्र की एक कविता है 'जनयुग' जो मुझे सोचने को मजबूर करती है। शैलैन्द्र अपने को डी-क्लास करते हुए सदियों से हथौड़ा पीटने वाले श्रमिक के रुप मे एक सवाल खड़ा करते हैं। अपने अथक श्रम से अट्टालिकाएं, सड़कें, पुल और बांध बनाते ही ये श्रमिक उनकी गिरफ्त से छिटक जाते हैं। बची रहती है तो हथौडे की कर्कश आवाज जो कवि को दिन रात बैचैन किए रहती है। उसे लगता है - 'तुम्हारा श्रम, तुम्हारा पसीना/तुम्हारा अपना नहीं है। वह समाज की उन्नति मे/ सहायक नहीं है/हजारों लाखों, करोड़ों/इंसानो का पसीना बेकार बह रहा है/चंद लोग तिजारत करते है/तुम्हारे श्रम की .....' अन्त में मैं 'कवि कहता है' 'हथौड़े की आवाज/मुझे चैन से सोने नहीं देती/हथौडे की आवाज अब ओर नहीं आएगी/अब वक्त बदल गया है/ अब हथौडे फेंक देने चाहिए।' कुछ आलोचको को यह अतिरिक्त दुसाहस लग सकता है। मुझे लगता है कवि उन करोड़ करोड़ श्रमिकों की ओर से शोषणवादी यथास्थिति को तोड देने की बात करता है। शैलेन्द्र की कविताओं में सामाजिक जीवन के चरित्र विषय-वस्तु की विविधता के साथ उपस्थित है।

'ब्रह्मपुत्र' कविता मे गुप्तेश्वर मंदिर के पुजारी के बेटे शंकर गोस्वामी को शैलैन्द्र बडे करीब से देख उसे सच्चे चरित्र की पड़ताल कर लेते है। यूँ तो सुबह होते ही वह महादेव के लिंग, नाग के मुह और कोटर की साफ-सफाई करके दत्तचित्त होकर कर्पूर गौरम ... का जाप करता है। पर बाहर इमली बीनते हुए वह बुदबुदाता है 'भगवान क्या है/ पत्थर है न ...! ढ़ोंग है सब .....! फिर सम्हलता है/ चल देता वापस/आज सोमवार है/मिठाई चढ़ी होगी बहुत/ और उसे करनी होगी/सफाई भी।' समाज मे सहज रूप से घुल मिलकर कविता के लिए ऐसे विंबो व पात्रों का भावनात्मक व कलात्मक रचाव शैलेन्द्र जैसे जन प्रेमी ही कर पाते हैं। उनकी कविताओं में सरल व कलात्मक ढ़ंग से सामाजिक यथार्थ की कुशल अभिव्यक्ति मिलती है। शैलेन्द्र की कविताओं में जीवन व समाज के द्वंद्व चित्रित मात्र ही नहीं है कवि फर्क रहित दुनियाँ के बारे में विकल्प भी प्रस्तुत करता है। आज कल बहुत बड़ी-बड़ी बाते और जुमले झूठे नेतागण गढ़ते रहते है। शैलेन्द्र कहते है सूचना अब पूंजी के प्रभाव से झरती है और पूजी पर आकर ही खत्म होती हैं। समस्याओं की छोटी-छोटी शक्ले, चप्पे-चप्पे पर अभाव व बदहाली से परेशान कवि को रात में ठीक से नींद नहीं आती। उनकी आँखे क्यो लाल हैं यह बड़ी-बड़ी बाते करने वालो को क्या पता। शैलेन्द्र का चौथा काव्य संग्रह 'ईश्वर की चौखट पर' 2004 में शब्दालोक प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुआ। 'मैं तुम्हें प्यार करना चाहता हूँ' शीर्षक कविता में वह कहते हैं "मैं प्यार करना चाहता हूँ। खेतों, खलिहानों/उनके रखवालों को/एक औरत को/जिसकी आँखों में तिरती नमी/मेरे माथे का फाहा बन सके/ मै प्यार करना चाहता हूँ तुम्हें/ ताकि तुम/ इस छोटी दुनियाँ के लोगो से/आँख मिलाने के/काबिल बन सको।" शैलेन्द्र का यह प्यार भावाकुलता के साथ उनकी विचार चेतना से जुड़कर कविता को समष्टिगत आधार देता है। नवें दशक के बाद से आर्थिक उदारता बनाम निजीकरण के प्रभाव में साम्राज्यवादी देशों तथा देशी थैली शाहों को देश की गरीब जनता को लूटने की खुली छूट मिली है। जीवन व समाज के उन्नत मूल्यों को समाप्त करने तथा पतनशील अपसंस्कृति के प्रचार प्रसार का आधुनिक व उŸार आधुनिक दौर चल रहा है। ऐसे कठिन समय में अधिकांश बुद्धिजीवी लेखक सरकारोन्मुख व धनोन्मुख होकर बहती गंगा में हाथ धो रहे हैं। पर लोकोन्मुख तथा जनपक्षधर रचनाकारों के स्वाभिमान और जग गये है। मुहबोर कर अवसर का लाभ उठाने वाले सुविधा जीवी लेखक भले ही उन्हें सनका हुआ ही समझें। शैलेन्द्र अपनी कविता 'सनक जोन की खबर' में इस स्थिति का जिक्र करते है। 'सनक गया है/कहते लोग अक्सर/चल देते है, मुह फेर कर।' क्योंकि चोरो व लुटेरों की भीड़ में सच के रास्ते पर चलने वालों की ऐसी ही स्थिति होती हैं। शैलेन्द्र लेखन को एक सचेत सामाजिक कर्म मानते हैं। शैलेन्द्र की कविताओं को शिल्प व संरचना की दृष्टि से लोग बहुत तरजीह न दे पर, वह सहज व सरल ढंग से समाज के अन्तद्वन्द्वों का भावात्मक व कलात्मक बिंब प्रस्तुत कर कविता के माध्यम से सहज जन संवाद करने का काम करते हैं।

बहुत से अलोचक कविता को राजनीति से भी निरपेक्ष चीज मानते हैं। मेरा मानना है कि एक कवि को राजनीति की गहरी समझ होनी चाहिए। विचारधारा का विरोध करने वाले स्वयं अपने-अपने खेमों से नित्य नये नये विचार उत्पन्न करते रहते हैं। 'विचार अगली शताब्दी की ओर' कविता में शैलेन्द्र यह निष्कर्ष निकालते हैं कि 'इन सभी खेमों में कुछ बुनियादी समानताएं थी/अच्छा खाने, पीने, पहनने, भोगने के ये सब कायल/विचार और व्यवहार के बीच खीच रखी थी/सबने एक सनातन लक्ष्मण रेखा' यह लक्ष्मण रेखा बहुत बड़ा छलावा है। कथनी और करनी के बीच द्वैध से कविता भी प्रभावित होती हैं। कोरे विचारवादियों के बारे में शैलेन्द्र कहते है आजकल विचार पर विचार करना मुनाफे का व्यवसाय हैं। आधुनिकता वादी विचार तेजी से उत्तर आधुनिक हो गये हैं। ये नये-नये विचार हमारी लोकोन्मुखी चेतना तथा सौंदर्य दृष्टि के विरुद्ध पैदा किए जाते हैं पर वर्ग चेतना से युक्त कवि जीवन व समाज को लोक हित में देखता समझता है और उसे रचता है।

अनिमा दास
कटक, ओड़िशा

आलेख

साहित्य में मानवीय मूल्यबोध

'भा'रतवर्ष' नाम में ही विविध संस्कृति तथा भाषा एवं धर्म की छवि समक्ष आ जाती है।हमारे देश में 22 भाषाएँ अधिकृत रूप से प्रचलित हैं। भिन्न भिन्न धर्मों की परंपरागत शैली में जीवन अतिवाहित होना भारतीय मृदा पर एक उत्सव सा है। ऋतुओं का आगमन उत्साह एवं उल्लास से होता है। कभी ग्रीष्म की प्रखरता में उत्साह तो कभी श्रावण के झूले में, उसकी बूँदों में आह्लाद की सुरभि। शरद का शशि दमकते हुए प्रेम रश्मियाँ बिखेर देता है... मादकता के रंग लिए अलिंद पुष्पों का पराग चुरा लेता है। शिशिर के तुहिन कणों में जीवन ढूंढ लेतीं हैं सिक्त आशाएँ। शीतल समीरण में बन जाता है नव उपलब्धियों का समीकरण। आह्लादिनी कलिकाएँ मंद स्मिता से स्वागत करती हैं वसंत का... प्रणयपूर्ण ऋतुराज का। वासंती रंगों से रंगमय हो जाता है सारा संसार। वास्तवमें, हमारे देश में ऋतुओं की भी विविधता है तथापि समस्त सजीव-निर्जीव वस्तुओं में कितना सौहार्द एवं कितनी आत्मीयता है।

यह भारतवर्ष प्राचीन प्रथाओं का समागम है.. प्राक इतिहास का जीवंत साक्षी है। पराजित स्वप्न को स्वर्गीय पराक्रम से कर विभूषित उत्थान के पथ का पथिक बना यह देश । देवताओं, ऋषिओं के मन्त्रोच्चारण से, यज्ञ कुंड के पवित्र धूम्र से मानवीय परिवेश को श्रृंखलित किया है, इस देश ने ।

भाषा का जन्म शब्दों से एवं शब्दों का जन्म ध्वनि से होता है। मन के भावों को, विचारों को, चिंतन को, ज्ञान को संप्रेषित करने हेतु आदिमानव को चित्र की सहायता लेनी पड़ी। उसके पश्चात् ध्वनि की सहायता से प्रत्येक संवेदना को प्रेषित करने की चेष्टा की। उस ध्वनि से कभी शब्द जन्म लिए होंगे जिससे..अश्रु धारा को तीर मिला होगा, पीड़ा को औषधि एवं लक्ष्य को आह्लाद। ऋतु परिवर्तन, जलवायु का परिवर्तन मन मस्तिष्क को प्रकृति के माधुर्यपूर्ण रूप का वर्णन करना सिखाया होगा। बनाया होगा संगीत एवं ध्वनित हुआ होगा प्रथमबार प्रकृति एवं आकाश के संगमस्थल पर।

इन्हीं शब्दों से बनी विभिन्न भाषाएँ एवं विभिन्न प्रांतो की लोक भाषाएँ उनकी संस्कृति एवं परम्पराओं की स्तुति करते हुए रचा गया होगा साहित्य। साहित्य अर्थात् समाज की हित निमित्त रचा गया शब्द शास्त्र। साहित्य भावों का मिलन है। प्रशंसा की अभिव्यंजना, उत्कर्ष एवं अपकर्ष, जीवन एवं मृत्यु, संघर्ष एवं शांति, विच्छेद एवं संगम इत्यादि।

साहित्य सीमित नहीं होता किसी एक भाषा वर्ग में। यह तो वह सेतु है मानव मूल्य का जिससे समग्र पृथ्वी, एक चिंतन एवं एक संवेदना में आबद्ध हो जाती है।

शब्द एवं अर्थ का संगम पार्वती एवं परमेश्वर के अर्धनारीश्वर रूप जैसा ही है। सौंदर्य वर्णन में शब्द रूपांतरित होता रहता है वाक्य में किंतु भाव अपरिवर्तनीय रहता है जैसे शिल्पी कई उपकारणों का प्रयोग करता है एक मूर्ति को आकार देने में एवं भाव प्रतिबिंबित होता है निष्प्राण प्रस्तर पर । साहित्य इन कला, इतिहास, प्राचीन प्रथा, संस्कृति, लोककथा, वातावरण,अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, विज्ञान, अविष्कार, संगीत एवं नृत्य शास्त्र तथा प्रत्येक पीढ़ी की संरचना में नूतनत्व को सहर्ष ग्रहण करना जैसे अनेक बिंदुओं को सम्मिलित करता है स्वयं में।

कई वर्षों पूर्व जब एक संदेश सम्मिलित स्वर में जनमानस को देना असंभव होता था तब, वही संदेश भिन्न भिन्न स्वरुपों में पहुँच जाता था जैसे काव्य, गद्य, नाट्य तथा संगीत के माध्यम से । भर्त्तहरि कहते हैं कि कला एवं अलंकार विहीन साहित्य कभी साहित्य नहीं माना जाएगा। भाषा का अलंकरण सौंदर्य का प्रतीक होता है। पाठकों को आकर्षित कर अशुद्धियाँ रहित करता है ऐसा सृजन।

विभिन्न लेख-आलेख से विचारधारा का संस्करण किया जाता है। कई वाद-प्रवाद का भी निष्कर्ष स्थापित होता है। श्रृंखलित परिवार सा एक समृद्ध राष्ट्र तभी बनता है जब साहित्य समृद्ध होता है। जीवन शैली में भूत, वर्तमान एवं भविष्य का प्रलंबन नहीं रहता, यदि हम मानसिक स्तर को स्वस्थ चिंतन का आधार देते हैं। बोधगम्य शैली से रचा गया साहित्य निम्न वर्ग के जनमानस को जीवन का महत्व सिखाता है, असामाजिक बाधाओं के समाधान का भी उल्लेख करता है।

समाज में प्रचलित कुसंस्कारों का उन्मीलन केवल साक्षरता एवं साहित्य के माध्यम से संभव हो पाया। ऐसी कई असामाजिक व्यवस्था का प्रचलन होता आया है एवं वर्तमान भी हो रहा है जिसका निराकरण हम प्रत्यक्ष रूप में नहीं कर सकते। उन्हीं विकृतिओं का निदान उपन्यास, चलचित्र, नाट्यशाला में जीवंत कर देश विदेश के कोण अनुकोण में पहुँचाकर सृजनकार स्वस्थ समाज के प्रति कर्तव्य परिपूर्ण करता है,गंतव्य पथ को सार्थकता भी देता है।

किसी भी काल के अध्ययन से हमें तत्कालीन मानव जीवन की शैली तथा अन्य गतिविधियों के बारे में ज्ञान मिलता है। देश की भाषा,इसकी संस्कृति तथा सभ्यता का परिचय देती है। लेखक की लेखनी ब्रह्मास्त्र सा कार्य करती है। लेखनी मानवीय धर्म को एवं कर्म को उज्जीवित करती है। परिवर्तनशील जगत को प्रत्येक क्षेत्र में स्वच्छ एवं निर्मल भाव का आदान प्रदान करना सिखाती है लेखनी। साहित्य प्रत्येक भाषा का दर्पण होता है... तो कभी उस क्षेत्र का वटवृक्ष।

भारत को विश्वगुरु माना जाता है क्योंकि सनातनी भित्ति पर सुगठित भारतवर्ष ने जगत को ज्ञान से प्रकाशित किया है। भारत का प्राक इतिहास सदैव नैतिक मूल्यबोध की शिक्षा देता है। इस देश के ऋषियों ने, विद्वजनों ने, कई शिक्षाविदों एवं समाज सुधारकों ने साहित्य के माध्यम से ही इस महान राष्ट्र को विश्वभर में सर्वश्रेष्ठ होने का सौभाग्य प्रदान किया है।

आलेख

डॉ. कान्ति लाल यादव
सहआचार्य एवं विभागाध्यक्ष ,हिंदी
माधव विश्वविद्यालय पिंडवाड़ा,
सिरोही (राज.)

हर भारतवासी के दिल की धड़कन बने हिंदी भाषा

आज हिंदी भाषा सिर्फ भाषा ही नहीं बल्कि सभी भारतीय भाषाओं में समृद्ध और मुख्य भाषा है। हिंदी भावों ,अभिव्यक्ति और व्यवहार की भाषा है। आज भारत की पहचान हिंदी से है।हिंदी भारत की अभिव्यक्ति की भाषा है।हर भारतवासी के लिए एक दूसरे से जुड़ने की शक्ति के रूप में भक्ति और मुक्ति स्वरूप है। यह देश की पहचान है ।भारतीयों की शान है।यह भारतीयों की जान है।इस भाषा का एक विशाल हिंदुस्तान है। यह भारत का अभिमान है। हिंदी का सम्मान हमारा सम्मान है। हिन्दी हर भारतवासी के दिल की धड़कन बने। क्योंकि यह देश में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। इसका विस्तार दुनिया के पटल पर दिनों दिन फैलता जा रहा है। इसका अद्भुत साहित्य है। व्याकरण है। हिंदी हमारी गर्व की भाषा है।हिंदी को मान दो सम्मान दो यह प्यार की भाषा है।व्यवहार की भाषा है।हिंदी भाषा के उत्थान से ही हमारा उत्थान है। हिंदी भाषा ने हिंदी साहित्य को पुष्ट किया है और देश की संस्कृति की रक्षा की है।

हिंदी दिवस को वर्ष में दो बार मनाया जाता है। 14 सितंबर को राष्ट्रीय हिंदी दिवस के रूप में और दूसरा 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के रूप में। 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में घोषित किया गया था।राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के कहने पर 1953 से पूरे भारत में 14 सितंबर को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया था।10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है।

विश्व हिंदी दिवस 2006 में मनाया गया था। प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन 10 जनवरी 1974 को महाराष्ट्र के नागपुर में आयोजित किया गया था।इस सम्मेलन का उद्घाटन श्रीमती इंदिरा गांधी के द्वारा किया गया था। इस सम्मेलन में 30 देश से 120 से ज्यादा प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। हिंदी दिवस भारतीय भाषा का त्योहार है। हिंदी मातृभाषा के रूप में ममतामय भाषा है। महात्मा गांधी ने हिंदी भाषा को "जनमानस की भाषा" कहा था।महात्मा गांधी ने सर्वप्रथम 1917 में गुजरात के भरूच में हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की थी। हिंदी आज देश- दुनिया को जोड़ने का काम कर रही है। हिंदी सुंदर, मनोरम , सहज और सरल भाषा है। यह भाषा "अ" अज्ञानी से "ज्ञ" से ज्ञानी बनने वाली भाषा है।

यह जैसे लिखी जाती है वैसे ही पढ़ी जाती है। यह वैज्ञानिक भाषा है।आज दुनिया की 180 से भी ज्यादा विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाई जाती है।हिंदी को देवनागरी लिपि में लिखा जाता है। हिंदी एक इंडो आर्य भाषा है।बिहार में 1881 में उर्दू की जगह हिंदी को अपनी आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार करने वाला और हिंदी को अपनाने वाला प्रथम राज्य बना।संयुक्त अरब अमीरात में हिंदी को तीसरी कार्यालय अदालत की भाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। हिंदी की प्रथम पुस्तक प्रेम सागर 1805 में लिखी गई है।हिंदी की प्रथम फिल्म राजा हरिश्चंद्र 1913 में दादा साहब फाल्के द्वारा बनाई गई थी। विदेशी विद्वान डॉक्टर फादर कामिल बुल्के ने हिंदी के बारे में कहा था-"संस्कृत मां, हिंदी ग्रहणी और अंग्रेजी नौकरानी है।"

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कहा था -"देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता स्वयं सिद्ध है।"

जॉर्ज ग्रियर्सन ने कहा था -"हिंदी आम बोलचाल की महाभाषा है।"

आज हिंदी देश दुनिया को जोड़ने वाली भाषा व्यवहार की भाषा और संस्कृति की सेतु की भाषा बनती जा रही है। आज हिंदी सोशल मीडिया की सबसे तीव्र गति से बढ़ने वाली भाषा बनी हुई है। भाषा विशेषज्ञ जयंती प्रसाद नौटियालके अनुसार हिंदी अब विश्व की प्रथम भाषा बन चुकी है।

हिंदी भाषा का विकास दुनिया की सब भाषाओं में तीव्र गति से हो रहा है। हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा देने पर ही भारत विकसित राष्ट्र बन सकता है। हिंदी भाषा आज रोजगार की भाषा बनती जा रही है। हिंदी भाषा को भारत के उन प्रान्तों में जहां हिंदी पूर्ण रूप से नहीं अपनाई गई है वहां पहुंचाने के लिए उन प्रान्तों की भाषा को भी सीखने की जरूरत है। जब उन प्रान्तों की भाषा को अपनाया जाएगा तो हिंदी का महत्व और सम्मान और बढ़ जाएगा। भारतीय संविधान में संवैधानिक रूप से 22 भाषाओं को मान्यता मिली है उसमें सबसे ज्यादा बोली जाने वाली हिंदी है। हिंदी एकता की भाषा है। बहुसंख्यकों की भाषा है परंतु हिंदी को राष्ट्रभाषा की मान्यता आज तक नहीं मिली है यह हमारे लिए दुर्भाग्य की बात है। त्रिभाषा फार्मूला को मजबूती से अपना कर भारत में जल्दी से जल्दी हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाने का संकल्प ले यही भारत की एकता का विकल्प है।

डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफरी
सहायक प्राध्यापक
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
मिर्ज़ा ग़ालिब कॉलेज गया बिहार

लेख

हिन्दी ग़ज़ल में दुष्यंत की स्थिति

हिंदी और उर्दू ग़ज़लों का अंतर हम दो प्रकार से कर सकते हैं. एक शिल्प के स्तर पर और दूसरा कथ्य स्तर पर.

शिल्प के स्तर पर हिंदी और उर्दू गजल में कोई अंतर नहीं है. बस दोनों की भाषिक संरचना थोड़ी बहुत अलग है. ग़ज़ल चाहे जिस भाषा में लिखी जा रही हो उसका जो बुनियादी ढांचा है उसमें परिवर्तन संभव नहीं है. मतलब अगर वह ग़ज़ल है तो उसमें काफिया, रदीफ़, मतला, मक़्ता बहर इन सब चीजों का होना लाज़िम है. इसके अभाव में वह चाहे जो भी हो कम से कम गज़ल नहीं होती. हिंदी में काफिया, रदीफ़, बहर के अलग-अलग नाम रख लिए गए हैं, पर वह हैं मूलतः वही चीज. उर्दू के बहर को हिंदी में गण कह देने से या छंदों के जगन, मगन नाम रख देने से वास्तविक स्थिति बदल नहीं जाती. कुछ लोगों ने हिंदी में ग़ज़ल को तेवरी कहा, पर वो रही ग़ज़ल ही. नाम बदल देने से किसी भी विधा के संस्कार नहीं बदल जाते .

उर्दू और हिंदी ग़ज़ल का जो मूल अंतर है वह उसके कथ्य को लेकर है. उसकी भी अपनी वजह है. उर्दू गजल फारसी से आई और हिंदी ग़ज़ल उर्दू से आई. फारसी ग़ज़लों में शुद्ध रूप से इश्क- मुश्क के चर्चे रहे. इसलिए उर्दू शायरी भी काफी वक्त इसी के इर्द-गिर्द घूमती रही. लेकिन यह गजल जब गालिब इकबाल,फैज़,फिराक,साहिर आदि तक पहुंची तो उसमें सूफियानापन,धर्म और दर्शन तथा प्रगतिशीलता के लक्षण भी दिखलाई देने लगते हैं. हिंदी गजल इसी रास्ते से होकर आई, इसलिए उसने जो तेवर अख्तियार किए उसमें देश और समाज के प्रति असंतोष भी था और विद्रोह भी. दुष्यंत ने कहा-

वो कर रहे हैं इश्क पे संजीदा गुफ्तगू
मैं क्या बताऊं मेरा कहीं और ध्यान है

जाहिर है दुष्यंत का ध्यान देश के बदलते हुए हालात पर था. आजादी से जो उम्मीदें थीं, उससे उन्हें निराशा लगी थी. हिंदी ग़ज़ल में जहां तक दुष्यंत का प्रश्न है. दुष्यंत के पहले भी हिंदी ग़ज़ल की समृद्ध परंपरा रही है. अगर आप हजरत अमीर खुसरो और कबीर आदि को छोड़ भी दें तो भारतेन्दु,निराला, प्रसाद मैथिलीशरण गुप्त से लेकर त्रिलोचन, शमशेर, रामनरेश त्रिपाठी, रंग आदि कई नाम हैं जो हिंदी में ग़ज़लें पाबंदी से लिख रहे थे. निराला के बेला में खासतौर से ग़ज़लें पाई जाती हैं.यह अलग बात है कि हिन्दी ग़ज़ल को पहचान दुष्यंत कुमार से मिली. अगर दुष्यंत नहीं होते तो आज जहां हिंदी गजल है वो यहां नहीं होती.दुष्यंत की ग़ज़लों में 1960 से 1975 तक के भारत के उठापटक का इतिहास है. दुष्यंत देश की व्यवस्था से असंतुष्ट दिखते हैं और नई कविता को छोड़कर ग़ज़लों की तरफ मुखातिब होते हैं, ताकि अपनी बातों को आम लोगों तक पहुंचाई जा सके. दुष्यंत कहते हैं -

कहां तो तय था चिरागां हर इक घर के लिए
कहां चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए

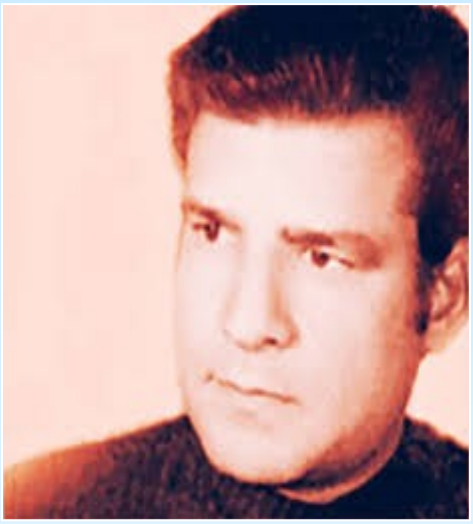

यहां दरख्तों के साए में धूप लगती है
चलो यहां से चलें और उम्र भर के लिए

.....

तू किसी रेल सी गुजरती है
मैं किसी पुल सा थरथराता हूं

एक चिंगारी कहीं से ढूंढ लाओ दोस्तों
इस दिये में तेल की भीगी हुई बाती तो है

मैं जिसे ओढ़ता बिछाता हूं
वो ग़ज़ल आपको सुनाता हूं
एक जंगल है तेरी आंखों में
मैं जहां राह भूल जाता हूं

तू किसी रेल सी गुजरती है
मैं किसी पुल सा थरथराता हूं
हर तरफ एतराज़ होता है
मैं अगर रोशनी में आता हूं

यह जुबां हमसे सी नहीं जाती
जिंदगी है कि जी नहीं जाती
मुझको ईसा बना दिया तुमने
अब शिकायत भी की नहीं जाती

वह आदमी मिला था मुझे उसकी बात से
ऐसा लगा कि वो भी बहुत बेज़ुबान है

इस नदी की धार से ठंडी हवा आती तो है
नाव जर्जर ही सही लहरों से टकराती तो है
एक चिंगारी कहीं से ढूंढ लाओ दोस्तों
इस दीए में तेल से भीगी हुई बाती तो है
.....
यह सारा जिस्म झुक कर बोझ से दोहरा गया होगा
मैं सजदे में नहीं था आपको धोखा हुआ होगा
यहां तक आते-आते सूख जाती हैं कई नदियां
मुझे मालूम है पानी कहां ठहरा हुआ होगा
.....

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए
.....
कैसे मंज़र सामने आने लगे हैं
गाते गाते लोग चिल्लाने लगे हैं
अब तो इस तालाब का पानी बदल दो
ये कमल के फूल कुम्हालाने लगे हैं.

दुष्यंत कुमार की गजलें भारत की आजादी से मोहभंग की िस्थति से उत्पन्न होती है. ऐसा नहीं है कि यह मोहभंग की स्थिति सिर्फ ग़ज़लों में है. नई कहानी नई कविता,साठोत्तरी कविता इसी मोहभंग की स्थिति से पैदा हुई थी. दुष्यंत की ग़ज़लों में विद्रोह है, और भूख, बेकारी बेबसी, अन्याय,अनास्था ,नाराजगी बेचैनी आदि का चित्रण भी. दुष्यंत ने अपनी किताब "जलते हुए वन का वसंत " की भूमिका में लिखा भी है कि मेरे पास कविताओं के मुखोटे नहीं हैं. दुष्यंत ग़ज़ल में भी किसी मुखोटे का इस्तेमाल नहीं करते. जहां तक समस्या की बातें हैं. तो दुष्यंत की शायरी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह सिर्फ समस्या खड़ी नहीं करते उसका समाधान भी प्रस्तुत करते हैं.दुष्यंत का एक शेर है कि -

यहां तक आते-आते सूख जाती हैं कई नदियां
मुझे मालूम है पानी कहां ठहरा हुआ होगा

तो बताते हैं कि योजनाएं हमारे पास जब नहीं पहुंचती तो कहां ठहर जाती है. उन्होंने ख़ुद कहा है -

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश हैकि ये सूरत बदलनी चाहिए
.....
इस नदी की धार से ठंडी हवा आती तो है
नाव जर्जर ही सही लहरों से टकराती तो है
.....
एक चिंगारी कहीं से ढूंढ लाओ दोस्तों
इस शहर में तेल से भीगी हुई बाती तो है

यहां चिंगारी प्रेरणा का सूचक है. दुष्यंत कहते हैं बस एक लौ जलाने की जरूरत है.

सिर्फ हिंदी ग़ज़ल ही नहीं भारतीय भाषाओं या विदेशी भाषाओं में भी जो ग़ज़लें लिखी जा रही हैं वह सभी गजल के शिल्प और बुनियादी तत्वों का पालन करती है. कोई भी ग़ज़ल ग़ज़ल की संरचना से बाहर होकर नहीं लिखी जा सकती.

दुष्यंत की ग़ज़लों को प्रायः इमरजेंसी से जोड़कर देखा जाता है. हम जानते हैं कि 1975 से 1977 तक लगभग 21 महीने भारत में इमरजेंसी लागू रहे. इस दौरान लोगों के तमाम अधिकार छिन लिए गए. सरकार के पास तमाम शक्तियां आ गई. देश के बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया. चुनाव स्थगित हो गए, और इमरजेंसी के बाद जब चुनाव हुए तो कांग्रेस 150 सीटों पर सिमट गई यहां तक कि इंदिरा गांधी चुनाव हार गई. देखने की बात यह है कि साए में धूप का प्रकाशन भी 1975में हुआ, आपातकाल भी इसी वर्ष लगा. और दुष्यंत की मृत्यु भी इसी वर्ष हो गई. दुष्यंत ने लगभग 44 वर्ष की उम्र पाई और 52 ग़ज़लों की रचना की. जाहिर है यह सारी ग़ज़लें आपातकाल की नहीं हो सकती,पर दुष्यंत के शेर ने आपातकाल के समय एक ऊर्जा का काम किया. जब दुष्यंत ने लिखा -

एक बूढ़ा आदमी है मुल्क में या यूं कहो
इस अंधेरी कोठरी में जैसे रोशनदान है

तो आपातकाल के दौरान जयप्रकाश नारायण की हिमायत करते हुए दिखते हैं. जिसके लिए उस समय के राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने उन्हें तलब भी किया था.

दुष्यंत के वक्त में सारिका पत्रिका का अपना स्थान था. जैसे सरस्वती या हंस पत्रिका का था. 1970 से 1985 तक यह पत्रिका प्रकाशित होती रही, पर यह कहानी केंद्रित पत्रिका थी, जिसमें दुष्यंत की ग़ज़लें भी आ जाती थी. दुष्यंत को लोगों ने इस पत्रिका के माध्यम से भी जाना.आपका प्रश्न जो दुष्यंत की मित्र मंडली को लेकर है. दुष्यंत की मित्र मंडली में मोहन राकेश, कमलेश्वर और मार्कण्डेय की चर्चा होती है. उनकी मित्र मंडली में कोई गज़लकार नहीं थे. अगर दुष्यंत इन मित्रों के सहारे आगे बढ़ते तो आज संभवतः उनका जिक्र नहीं होता. दुष्यंत अपनी प्रतिभा और गजल शैली से पूरी दुनिया में जाने और पहचाने गए. और हिन्दी ग़ज़ल के पर्याय बन कर सामने आए.

मनोज जैन 'मधुर'
संचालक -वागर्थ
(सोशल मीडिया का चर्चित समूह)
भोपाल

भारतीय सांस्कृतिक चेतना के कुशल शिल्पी : डॉ बुद्धिनाथ मिश्र

प्रसिद्धि, कहें या नाम, हममें से सब अपना नाम कहीं न कहीं और किसी न किसी क्षेत्र में चाहते तो अवश्य हैं पर यह सबके हिस्से में आसानी से आता नहीं है। इस सन्दर्भ में जैन वाङ्गमय की कर्म सिद्धान्त की अनूठी और सटीक दार्शनिक व्याख्याएं मेरी दृष्टि से गुजरी हैं। कर्मों की तिरेसठ प्रकृतियों में एक पूरा चैप्टर यश नाम कर्म के सम्बंध में पढ़ने और समझने का सुअवसर मिला।

अक्सर हमारी ईर्ष्या का कारण हमारा अपना अज्ञान ही होता है। हम अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों के चलते, सैद्धांतिक पक्ष को जाने बग़ैर किसी की प्रसिद्धि से स्वयं को दुखी करते रहते हैं। यह बात प्रसंगवश एक "बार जाल फेंक रे मछेरे" जैसी पँक्ति और अमर गीत के गीतकार बुद्धिनाथ मिश्र जी के संबन्ध में भी प्रासंगिक है। उनकी उपलब्धियाँ फिर चाहे पर्सनल हो या प्रोफेशनल अथवा साहित्यिक या सामाजिक, मिश्र जी का कद बड़ा है, और उनके समानधर्माओं को स्पृहणीय भी !

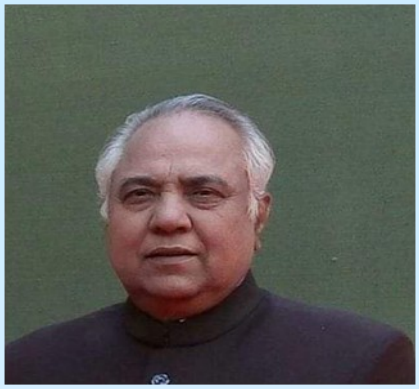

यदि दो एक बातें अपनी तरफ से जोड़कर कहना चाहूँ तो जो तथ्य निर्विवाद निकलकर सामने आता है।

वह यह कि उनकी प्रसिद्धि के पीछे यश नाम कर्म के साथ-साथ बुद्धिनाथ जी के स्वयं के अपने अथक प्रयास भी हैं जो उन्हें बहुश्रुत और बहुपठित बनाने में सहयोगी रहे। मिश्र जी एक ऐसे आदर्श गीतकार हैं जिन्हें पाठ्य और वाचिक दोनों परम्पराओं में व्यापक जनस्वीकृति मिली है। इसी जन स्वीकृति के चलते वह लोकप्रिय कवि के रूप में हमारे सामने आते हैं।

बुद्धिनाथ मिश्र जी से मेरा पहला परिचय भोपाल से निकलने वाली तात्कालिक शोध मासिकी "साहित्यसागर" में प्रकाशित किसी एक आलेख से हुआ था,जिसमें बुद्धिनाथ मिश्र जी ने गीत की रचना धर्मिता और रचना प्रक्रिया पर खुल कर प्रकाश डाला था। परिचय के इस प्रस्थान बिंदु से लेकर अब तक मैंने मिश्र जी के अनेक आलेख, भूमिकाएं और संग्रहों को अक्षरशः खँगाल डाला।

डॉ बुद्धिनाथ मिश्र जी की रचनाओं में भारतीय सांस्कृतिक चेतना, मूल्यपरकता, वैदिक वांग्मय, दार्शनिक चिंतन के साथ - साथ अपने समय के सामाजिक सरोकारों व युगीन विडंबनाओं का खुलकर वर्णन हुआ है। डॉ.बुद्धिनाथ मिश्र जी के गीतों नवगीतों में अलग-अलग रंग और ढंग से मानव मन और आज के जटिल जीवन की स्थितियों और परिस्थितियों से साक्षात्कार करने का अवसर मिलता है। उनका पूरा रचनाकर्म अन्तर्मन की प्रतिच्छाया है। कहते हैं कि एक संवेदनशील मन ही अपने बहाने सारे जग की पीड़ा को स्वर देता है।

बुद्धिनाथ मिश्र जी हिन्दी गीत विधा के स्तरीय, स्थापित और लोकप्रिय आइकॉन के रूप में जाने जाते हैं। एक संवेदनशील और मधुर गीतकार होने के साथ ही वे एक जागरूक अध्येता और प्रबुद्ध चिंतक भी हैं। उनकी रचनाओं में, भारतीय संस्कृति की प्रतिबद्धता और संस्कारों की झलक यत्र-तत्र-सर्वत्र दिखाई देती है।

कथ्य की नवीनता कहन की अभिव्यंजना, समसामयिक सन्दर्भ में मिथकीय। प्रयोग युक्ति संगत अनछुये बिम्बों की धूप-छाँव, लोकरंगो की गमक, माटी की महक, प्राकृतिक सौन्दर्य, रूप रस के माधुर्य के कारण उनके गीत भीड़ में भी अलग से पहचान लिए जाते हैं।

गूढ़ विषयों की अभिव्यक्ति में भी उनके नवगीतों में लालित्य और रस विद्यमान रहता है, यही उनकी नैसर्गिक काव्य प्रतिभा का प्रमाण है। हाल ही में हम सभी ने वैश्विक स्तर संकट का घटाटोप या कहें कि कोरोना का क़हर अपनी आँखों से देखा है। इसी दौरान सोशल मीडिया के फेसबुक पर चर्चित गीत नवगीत पर एकाग्र समूह "वागर्थ" ने उनके कुछ नवगीतों को दो भागों में प्रस्तुत किया था। उन प्रस्तुतियों में डॉ बुद्धिनाथ जी ने एक गीत में बहुत कम शब्दों में युगीन त्रासदी को मार्मिक स्वर दिया था। वैश्विक महामारी कोविड पर उनका एक गीत कितना प्रासंगिक बन पड़ा है।

गीत की पंक्तियाँ में कवि ने कोरोना काल की मनः स्थितियों से उपजे तात्कालिक संवेग जैसे ऊब, उदासी, बैचेनी, घुटन ,संत्रास बंधन और मुक्ति जैसे स्वस्फूर्त त्रासद बिम्ब रचती हैं।

द्रष्टव्य है एक गीत का अंश - "क्या शहर/क्या गांव है/सर्वत्र फैलायह करोना /वायरस नारायणी है/ बंद हैं /अपने घरों में /मित्र सारे/आदमी इस दौर का/ कितना ऋणी है/दूरियां नज़दीकियों से /आज बेहतर/"

या फिर ;- "बहुत दिनों के बाद/आज बाहर निकला/जो भी देखा, सब/पाने को जी मचला। बाहर की दुनिया देखी/हलचल देखी/ पटरी पर दौड़ती/ रेल एकल देखी/ पिंजरे वाले हैं चिंतित/ क्या होगा कल/ खेतों से सीमा तक/ लेकिन चहल-पहल/बहुत अकेलापन / झेला घरबंदी में/ दौड़ रहा बादल पर/ अब यह मन पगला।बहुत दिनों के बाद/आज बाहर निकला/ जो भी देखा सब पाने को जी मचला/"

उनके गीत आज के समय की द्वंद्वात्मक स्थितियों,निराशाजनक प्रतिकूल परिस्थितियों की शाब्दिक झाँकी प्रस्तुत कर अपने आप में गुम पाठकों का ध्यान विषय पर केन्द्रित करते हैं। भाषा की मुहावरेदानी और नूतन प्रतीकों का साहचर्य मिश्र जी के नवगीतों को प्रभावी बनाते हैं।

यों तो बुद्धिनाथ मिश्र जी के व्यक्तिव और कृतित्व पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है फिर भी उनके एक गीत चाँद उगे चले आना जिसमें प्रेम अपनी सम्पूर्ण सत्ता के साथ प्रतिष्ठापित हुआ है, को पाठकों के समक्ष अविकल प्रस्तुत करना चाहूँगा।

चाँद उगे चले आना

चाँद उगे चले आना
पिया, कोई जाने ना।
दूँगी तुझे नजराना
पिया, कोई जाने ना।

जाग रही चौखट की साँकल
जाग रही पनघट पर छागल
सो जाएँ जब घाट नदी के
तुम चुपके से आना
पिया, कोई जाने ना।

सोना देंगे, चाँदी देंगे
पल भर में सदियाँ जी लेंगे
छूटेगा कजरा, टूटेगा गजरा
पूछेगा सारा जमाना
पिया,कोई जाने ना।

पँखुरी-पँखुरी ओस नहाए
पोर-पोर बंसी लहराए
तू गोकुल है मेरे मन का
मैं तेरी बरसाना
पिया, कोई जाने ना।

लोकलय में निबद्ध संवाद शैली में कवि अपने प्रेम को सदियों जी लेने का सन्देश बड़ी शिष्टता और शालीनता के साथ देते हैं। देह राग से देहातीत होने तक की पूरी यात्रा का आनन्द मात्र चार अन्तरों में देने वाले कवि स्वाभिमान के मामले में धनी हैं।

भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित "ऋतुराज एक पल का" गीत संग्रह में उनके गीतांश में कवि ने एक गीत अपने ही नाम किया वह कहते हैं कि"भूसे से जैसे/अनाज हितकारी है/एक गीत /पूरी किताब पर भारी है/लोग कहें/ सिरफिरे हो गये मेरे गीत।"

कविता अंततोगत्वा हमें एक अच्छा मनुष्य बनाती है। मिश्र जी के गीतों का मर्म भी तो यही है। तभी तो वह अपने एक गीत " पानी देनेवाले गीत लिखो" में कहते हैं।

"लिखा शत्रु है जहां/मिटाकर मीत लिखो/ ज्योति-विमुख तम की कविता क्यों लिखते हो / मरते दम तक तुम सांसों की जीत लिखो।"

मिश्र जी की लेखनी निर्वाध गति से चलती रहती है। हर गीत की पृष्ठभूमि उन्हें याद है। उन्हें यह भी याद है, किस गीत ने कब और किन परिस्थितियों और मनः स्थितियों में जन्म लिया। यही कारण है कि हर गीति रचना के नीचे उस स्थल का नाम और तिथि जरूर लिखी होती है। ताकि सनद रहे !

मिश्र जी की आस्था सामाजिक समरसता में है। उनका कवि आरक्षण के मसले पर उन प्रतिभाओं के साथ जाकर खड़ा होता है जो अकारण आरक्षण का दंश झेलने के लिए विवश हैं।

कवि धर्म का निर्वहन करते हुए वह दोषियों को तर्जनी दिखाते हैं। कथन की पुष्टि के लिए प्रस्तुत है 2-8-2021 को नोएडा, में लिखे एक गीत के कुछ अंश :-

"इन्द्रजाल

बंधु , तुमसे थी बड़ी उम्मीद/काटोगे तुम्हीं आरक्षणों का जाल / नागपाशों में फँसी प्रतिभा सवर्णी / हो रही जिससे यहाँबदहाल।"बंधु,यह अभिशाप/ भारत देश का ही/ जिसे गद्दी पर बिठाओ/चार दिन में अमृतवर्षी/वासुकी बनता विषैला
/छोड़ अपने आत्मबल/तप का भरोसा/नकल करता सूअरों की/खीर तज, लगता निगलने/हवस-मैला/तुम चले तो थे/ सभी को साथ लेकर/क्या हुआ/ फिर तुम्हें/बिगड़ी चाल/

गीत हों या नवगीत सरल तरल शब्दों के रचाव में कविवर बुद्धिनाथ जी का कोई सानी नहीं है। प्रयोगिक दृष्टि से गीतों में मिथकीय निरूपण अर्थ विस्तार की दृष्टि से युगों को अपनी परिधि में समेट लेता है।
उनके गीतों में लोकलय मोहती है समग्रतः यदि सार संक्षेप में कहें तो डॉ बुद्धिनाथ मिश्र जी ने नवगीतों को नया स्वरूप और नूतन सौन्दर्य बोध के साथ साथ अर्थ बोध दिया है। सच्चे अर्थों में डॉ बुद्धिनाथ मिश्र जी भारतीय सांस्कृतिक चेतना के कुशल शिल्पी हैं।

आकांक्षा यादव
पोस्टमास्टर जनरल आवास
नदेसर, कैण्ट प्रधान डाकघर, वाराणसी- 221002

हाशिये की राजनीति से 'नारी शक्ति वंदन' तक आधी आबादी

भारत एक पितृसत्तात्मक समाज है और तमाम प्रगति के बाद भी महिलाओं को वो स्थान नहीं मिल सका है, जो उन्हें मिलना चाहिए। यही कारण है कि राजनीति में महिलाएँ आज भी हाशिये पर हैं। न केवल उनकी संख्या कम है बल्कि राजनीतिक निर्णयों में उनकी भागीदारी अत्यल्प है। भारतीय राजनीति में आज भी महिलाओं की स्थिति संरक्षणवाद की शिकार है और जब भी वे स्वतंत्र निर्णय लेने की कोशिश करती हैं तब उन्हें चौतरफा हमले का सामना करना पड़ता है। राजनीति में आधी आबादी की भागीदारी का सवाल समय-समय पर उठता रहता है। कुछ लोग इसे चुनावी जुमले के रूप में देखते हैं, तो कुछ लोग इसकी गंभीरता को समझते हैं।

संविधान निर्माता डॉ. अम्बेडकर ने कहा था, "मैं किसी भी समाज की प्रगति उस समाज में महिलाओं द्वारा हासिल की गई प्रगति से मापता हूँ।" यह एक सुखद संयोग है कि नए संसद भवन का श्रीगणेश आधी आबादी के चिर-प्रतीक्षित लोकसभा और विधान सभाओं में महिलाओं को एक तिहाई आरक्षण वाले 'नारी शक्ति वंदन' अधिनियम से हुआ। 128 वां संशोधन विधेयक के रूप में पेश इस विधेयक के कानून में बदलने और प्रभावी होने के बाद वर्तमान स्थिति के हिसाब से लोकसभा में महिलाओं के लिए 181 और राज्य विधान सभाओं में 1,374 सीटें आरक्षित हो जाएँगी। फ़िलहाल यह कानून जनगणना और नए परिसीमन के बाद ही प्रभावी किया जायेगा। नया परिसीमन 2026 में प्रस्तावित है। आरम्भ में यह आरक्षण 15 वर्षों के लिए होगा और रोटेशन के आधार पर क्रम में बदलाव होगा। विधायी सभाओं में महिला आरक्षण का मुद्दा काफी पुराना है।

महिला आरक्षण विधेयक पहली बार 12 सितंबर, 1996 में तत्कालीन प्रधानमंत्री एच.डी.देवगौड़ा के कार्यकाल में यह विधेयक लाया गया था, किन्तु अपने अंजाम तक नहीं पहुँच सका। उसके बाद भी विभिन्न सरकारों ने प्रयास किया, परन्तु सफलता हासिल नहीं हुई। वर्तमान की बात करें तो भी लोकसभा में 543, जबकि जम्मू-कश्मीर एवं दिल्ली सहित राज्यों की विधान सभाओं में कुल 4,123 सीटें हैं। वर्तमान लोकसभा में मात्र 78 महिला सदस्य हैं जो 15 प्रतिशत से भी कम हैं। ऐसे में 'नारी शक्ति वंदन' अधिनियम का संसद के दोनों सदनों से दो तिहाई बहुमत से भी ज्यादा वोटों से पारित होना देश की 44 करोड़ महिला वोटर्स के हिसाब से एक क्रन्तिकारी कदम है।

भारतीय राजनीति में तमाम महिलाएं शीर्ष पर स्थान बनाने में कामयाब हुई हैं। देश की राष्ट्रपति से लेकर प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, विपक्ष की नेता, कैबिनेट मंत्री और विभिन्न राज्यों में मुख्यमंत्री व राज्यपाल तक महिलाएं पदासीन रही हैं। भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी, प्रथम महिला राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल, प्रथम महिला केन्द्रीय मंत्री (स्वास्थ्य मंत्री) राजकुमारी अमृत कौर, प्रथम महिला विदेश मंत्री सुषमा स्वराज, प्रथम महिला रेल मंत्री ममता बनर्जी, प्रथम महिला रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण, प्रथम महिला सांसद राधाबाई सुबरायण, राज्यसभा की प्रथम महिला उपसभापति नजमा हेपतुल्ला, लोकसभा की प्रथम महिला अध्यक्ष मीरा कुमार, लोकसभा में प्रथम महिला प्रतिपक्ष नेता सुषमा स्वराज, प्रथम महिला राज्यपाल सरोजिनी नायडू (उत्तर प्रदेश, 1947), प्रथम महिला मुख्यमंत्री सुचेता कृपलानी (उत्तर प्रदेश, 1963), प्रथम मुस्लिम महिला मुख्यमंत्री सैयद अनवरा तैमूर (असोम, 1980), प्रथम दलित महिला मुख्यमंत्री मायावती (उत्तर प्रदेश, 1995), प्रथम महिला विधायक मुत्तुलक्ष्मी रेड्डी, किसी राज्य की विधान सभा की प्रथम महिला स्पीकर शन्नो देवी जैसी तमाम महिलाओं ने समय-समय पर भारतीय राजनीति को नई ऊँचाइयाँ दी हैं। अभी तक भारत में 20 से ज्यादा महिलाएं राज्यपाल बन चुकी हैं, जिसमें राजस्थान की पहली महिला राज्यपाल प्रतिभा पाटिल देश की पहली महिला राष्ट्रपति बनीं। विभिन्न राज्यों की मुख्यमंत्री के रूप में अब तक 15 से ज्यादा महिलाओं ने गद्दी संभाली है। दलगत राजनीति की बात करें तो तमाम महिला नेत्रियों ने समय-समय पर अपने दलों का नेतृत्व किया है।

नारी सशक्तिकरण सिर्फ एक अमूर्त अवधारणा नहीं है बल्कि इसका किसी भी देश की राजनीति से गहरा संबंध होता है। यही कारण है कि इस पर जब भी चर्चा की जाती है तो अक्सर राजनीति में महिलाओं के कम प्रतिनिधित्व

पर अफसोस जताया जाता है। वस्तुतः राजनीति में महिलाओं को बराबर की भागीदारी देने की बात विभिन्न राजनैतिक दलों, न्यूज चैनल्स से लेकर सार्वजनिक मंचों पर आए दिन होती है लेकिन उसके क्रियान्वयन के प्रति सभी राजनैतिक दल उदासीन ही रहते हैं। दुनिया भर में महिलाओं को भेदभाव, हिंसा, पार्टियों के ढांचे, गरीबी और धन की कमी के चलते संसदों से दूर रखा जाता है। लोकसभा और फैसले लेने वाली जगहों, जैसे कि मंत्रिमंडल में महिलाओं का कम प्रतिनिधित्व सीधे-सीधे राजनीतिक ढांचे से उनको सुनियोजित ढंग से बाहर रखने और मूलभूत लैंगिक भेदभाव को रेखांकित करता है। हालांकि महिलाएं राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर ठीक-ठाक संख्या में राजनीतिक दलों का प्रतिनिधित्व करती हैं लेकिन इन राजनीतिक दलों में भी उच्च पदों पर महिलाओं की उपस्थिति कम ही है। भाषणों में नारी सशक्तिकरण तथा बराबरी की बात करनेवाले दलों की असलियत चुनावों में टिकट वितरण के दौरान ही सामने आ जाती है। अधिकतर महिलाएं जिन्हें टिकट मिलता है, वे भी ज्यादातर राजनैतिक परिवारों से ही संबंध रखती हैं। कई बार तो राजनैतिक दल प्रमुख महिला प्रत्याशी के खिलाफ महिला को ही मैदान में उतारते हैं। ऐसे में एक ही महिला चुनाव जीत पाती है और इस तरह बहुत सी प्रतिभावान महिलाएं संसद या विधानसभाओं में पहुँचने से वंचित रह जाती हैं। यही कारण है कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत में विधायिका स्तर पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व अन्य देशों के मुकाबले काफी कम है। ऐसे में 'नारी शक्ति वंदन' अधिनियम का संसद से पारित होकर शीघ्र क्रियान्वित होना बेहद जरुरी है।

दुनिया भर में राजनीतिक जीवन में महिलाओं द्वारा हासिल की गयी बढ़त और लैंगिक भेदभाव के खिलाफ संघर्ष जारी रखने की प्रतिबद्धता के बीच संसद से लेकर विधान सभाओं तक महिलाओं की पहुँच कई कारणों से प्रभावित होती है जिसमें विधायिका तक महिलाओं को पहुँचाने में आरक्षण एक मुख्य माध्यम है। इंटर पार्लियामेंट्री यूनियन के अनुसार आरक्षण महत्वाकांक्षी, व्यापक होना चाहिए और उसे प्रभावकारी बनाने के लिए उसका क्रियान्वयन होना चाहिए। भारत में महिलाओं के मुद्दों के प्रति राजनीतिक दलों की गंभीरता महिला आरक्षण बिल को पास करने में असफलता से ही साफ हो जाती है। पिछले कुछ चुनावों के प्रमुख राजनीतिक दलों के घोषणापत्रों पर नजर डालने से साफ हो जाता है कि उनमें लैंगिक मुद्दे प्रमुखता रखते हैं। महिला सशक्तिकरण यानी उन्हें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक आधार पर बेहतर स्थान देने के वादे कमोबेश हर राजनीतिक दल के पिटारे में है। मगर सच्चाई इन लोक-लुभावन वादों से कोसों दूर है। संसद और विधानसभा में राजनीतिक दल महिला आरक्षण बिल पारित करने की हुंकार जरूर भरते हैं, लेकिन जब राजनीतिक नुमाइंदगी की बात आती है तो 10 फीसदी टिकट भी महिलाओं को नहीं दिये जाते। महिला उम्मीदवारों को जीतने लायक नहीं माना जाता। जिन महिलाओं को टिकट दिया भी जाता है उनमें से ज्यादातर किन्हीं राजनीतिक दल के नेताओं की सगी-संबंधी होती हैं।

ऐसे में आर्थिक और सामाजिक बंधनों से मुक्त होने के लिए संघर्ष कर रही आम महिलाओं को वाजिब प्रतिनिधित्व नहीं मिल पाता। महिलाओं का राजनीतिक स्तर सुधारने के उद्देश्य से उठाये गये पहले कदम के रूप में सरकार द्वारा 1992 में 73 वें और 74 वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा क्रमशः पंचायतों और नगर पालिका स्तर पर महिलाओं के लिए एक तिहाई आरक्षण का प्रावधान किया गया। इससे प्राथमिक स्तर पर राजनीति में महिलाओं की भागीदारी तो सुनिश्चित हो गई किन्तु इससे आगे संसद और विधान सभाओं में कोई फर्क नहीं पड़ा। यदि महिला आरक्षण कानून लागू हो जाये, तो विधायिका में महिला प्रतिनिधियों की संख्या स्वतः बढ़ जायेगी। आज देश में कुल मतदाताओं की संख्या में आधी संख्या महिला वोटरों की है, पर उनकी संख्या के हिसाब से उन्हें समान आधार पर नेतृत्व कभी नहीं मिला। सवाल यह उठता है कि एक तिहाई आरक्षण का आधार क्या है और एक तिहाई आरक्षण ही क्यों ? अगर जनसंख्या को आधार बनाना है तो यह आरक्षण स्त्री-पुरुष अनुपात के हिसाब से होना चाहिए।

भारत में महिला आरक्षण आंदोलन इस वक्त संसद और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के सवालों पर सकारात्मक कार्रवाई को लेकर बँटा हुआ है। यह मूलतः दो बातों पर केंद्रित है- पहला कुल मिलाकर महिला आरक्षण का कोटा बढ़ाने को लेकर और उसमें पिछड़ी जाति की महिलाओं को लेकर और दूसरा अभिजात्यवाद के मुद्दे पर। निस्संदेह संसदीय सीटों पर मिले आरक्षण में जिस प्रकार अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति को शीर्ष स्तर पर पहचान मिली है, उसी प्रकार विधायिका में महिलाओं को आरक्षण मिलने से उनकी राजनीतिक और सामाजिक हैसियत में भी सकारात्मक बदलाव आएगा।

वक्त के साथ महिलाओं ने सफलता के तमाम नए आयाम रचे हैं। शिक्षा, नौकरी, पैतृक सम्पत्ति में बराबरी का हक पाने के साथ ही आई.टी. एवं विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी अपनी योग्यता सिद्ध की है। ऐसे में इसमें कोई शक नहीं कि महिलाएं राजनीति में बेहतर कर सकती हैं। व्यवस्था परिवर्तन के लिए राजनीति एक सशक्त माध्यम माना गया है। इसमें उन्हें अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। राजनैतिक दलों की पहल पर ही महिलाओं की राजनीति में भागीदारी आसानी से बढ़ सकती है। दलों के संगठनात्मक ढाँचा खड़ा करने से लेकर टिकट वितरण तक महिलाओं का स्थान तय करना होगा। अब महिलाओं को अपनी मंजिल खुद तय करनी होगी और इस मंजिल को पाने के लिये खुद ही रास्ते तलाशने होंगे। सत्ता में महिलाओं की भागीदारी का अनुपात किसी भी देश की सार्थक प्रगति का मापदंड है। अब समय आ गया है कि हमारे देश की राजनीति और राजनेता महिलाओं के प्रति अपनी सोच को उदार बनायें और उन्हें समुचित स्थान दें।

'नारी शक्ति वंदन' के माध्यम से विधायिका में महिलाओं का ज्यादा प्रतिनिधित्व न सिर्फ पितृसत्तात्मक सोच को बदलेगा बल्कि इससे महिला-समर्थक कानूनों को भी बढ़ावा मिलेगा। इससे कन्या शिशु के बारे में भी धारणा बदलेगी। जब संसद और विधान सभाओं में महिलाएँ सशक्त बनती हैं, और वह भी बड़ी संख्या में, तो वह ज्यादा से ज्यादा लोगों की प्रतिनिधि हो जाती हैं। ऐसे में महिलाओं को बोझ समझने वाली पूरी सोच को ही बदला जा सकता है। महिलाओं के लिए आरक्षण तो बस एक शुरुआत है, इसका असली लक्ष्य निर्णय प्रक्रिया में बराबरी होना चाहिए। तभी स्त्रियों के अधिकारों उनकी समस्याओं, स्त्री विमर्श तथा उनकी मुक्ति संबंधी विषयों पर विधायिका में खुलकर बहस हो सकती है।

डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता
प्रवक्ता, अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, गंगापुर सिटी
जिला-सवाई माधोपुर (राजस्थान) 322201

लेख

नयी शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषाएँ

भाषा संवाद में जन्म लेती है। संवाद के बिना समाज भी नहीं बन सकता न उसका काम ही चल सकता है। इसलिए समाज भाषा को जीवित रखने की व्यवस्था भी करता है। इस क्रम में भाषा का शिक्षा के साथ गहरा सरोकार बन जाता है। शिक्षा पाने के दौरान बच्चा भाषा भी सीखता है और भाषा के सहारे विभिन्न विषयों का ज्ञान भी प्राप्त करता है। उसकी योग्यता, कौशल और मानसिकता के विकास पर उसके आस-पास फैली पसरी भाषा की दुनिया का बड़ा व्यापक असर पड़ता है। भाषा के सहारे ही सोचना होता है और हम जीवन का गुणा भाग लगाते हैं। रिश्ते नातों का बनना बिगड़ना, मन ही मन वर्तमान, अतीत और भविष्य की काल-यात्रा करना, निर्णय लेना और अपनी हालत समझना और दूसरों को समझाना आदि सारे कार्य भाषा में दक्षता आने पर ही हो पाते हैं। भाषा से मिलने वाली शक्ति को आत्मसात करते हुए उसके साथ अस्मिता भी जुड़ जाती है और यदि समाज में कई भाषाएं हों तो उनकी आपस में प्रतिद्वंद्विता होने लगती है और जो भाषा अधिक सक्षम होती है उसका आकर्षण उतना ही अधिक होता है। इस ढंग से कुछ भाषाएं दौड़ में आगे निकल जाती हैं और कुछ प्रयोग के अभाव में असहाय हो कर अस्त होने लगती हैं। अनुमान है कि दुनिया में बोली जाने वाली लहभग छह हजार भाषाओं में से इस सदी के अंत होते न होते शायद 200 भाषाएं ही जीवित रहेंगी और शेष नष्ट हो जाएगी| भारत की भाषाओं का भी इसमें बड़ा हिस्सा होगा खास तौर पर लिपिहीन भाषाओं पर संकट ज्यादा गहरा है। परंतु बड़ी जनसंख्या में प्रचलित भाषाओं की भी हालत विचारणीय है| भाषा की सत्ता का लोकतंत्र की व्यवस्था, राष्ट्र की कल्पना और सांस्कृतिक जीवन्तता से अभिन्न रिश्ता है। भाषाओं का जाना संस्कृति और सभ्यता के लिए भी खतरे की घंटी है। भाषा भावनात्मक, सौन्दर्य, सुरुचि और संस्कार का मार्ग प्रशस्त करती है। ज्ञान के निर्माण, प्रशासन, शिक्षा और अनुसंधान सबकी साधन होती है। उसकी भूमिकाओं के साथ भाषा की सापेक्षिक प्रतिष्ठा जुड़ी होती है। भाषा को गम्भीर कार्य सौंपने पर उसकी मांग बढ़ती है। भारत में आज अंग्रेजी का आकर्षण खूब बढ़ा है और अंग्रेजी माध्यम के स्कूल तेजी से बढ़ते रहे हैं। अंग्रेजी भाषा के प्रति मोह की मनोवृत्ति, अंग्रेजियत की जीवन शैली और संस्कृति के विस्मरण की प्रवृत्ति ने सभ्यता का संकट खड़ा कर दिया है। चूंकि भाषा का कौशल समाज में रहते हुए ही अर्जित होता है इसलिए उसके निर्माण में सामाजिक परिवेश की खास भूमिका होती है। बोलने वाले की भाषा और उसके संवादी की भाषा में संगति और तारतम्य भी जरूरी होता है। इसलिए नयी शिक्षा नीति की भाषा दृष्टि पर विचार करना जरूरी है।

शिक्षा नीति-2020 में भारतीय भाषाओं को लेकर जो विचार दिए गए हैं उनसे कुछ आशा बंधती है। यह संतोष की बात है कि यह नीति औपचारिक दुनिया में भारतीय भाषाओं के प्रति उदासीनता और इस कारण उनके अस्तित्व पर आ रहे संकट को रेखांकित करती है। भाषा द्वारा व्यक्ति और समाज की चेतना के निर्माण के महत्व को देखते हुए यह नीति इस बात को स्वीकार करती है कि भाषा का सवाल केवल शिक्षण माध्यम और विषय तक ही सीमित नहीं है। इसके साथ शिक्षा के मूल सरोकार, राष्ट्रीय एकता, अवसरों की समानता, संस्कृति के पोषण और आर्थिक विकास के प्रश्न भी गुंथे हुए हैं। अतएव भाषा के बारे में फैंसला सिर्फ बहुमत के आधार या प्रयोग की सुलभता के आधार पर नहीं लिया जा सकता। उसमें विविधता और समावेशन का पूरा स्थान होना चाहिए। नई शिक्षा नीति में भाषा की उपस्थिति को भाषा-शिक्षण, शिक्षा के माध्यम के रूप में, भाषा को अध्ययन विषय के रूप में और भाषा के सांस्कृतिक संदर्भ के प्रति संवेदना की दृष्टि से समझा जा सकता है। इस नीति के अनुसार भारतीय भाषाएं पूर्व विद्यालयी स्तर से लेकर शोध के स्तर तक औपचारिक शिक्षा का माध्यम बननी चाहिए। साथ ही भाषाओं को केवल उनके साहित्य तक सीमित न रख इतिहास, कला, संस्कृति तथा विज्ञान जैसे विषयों को पढ़ाने का माध्यम बनाया जाना चाहिए। इस तरह भाषा के समुचित प्रयोग द्वारा समाज को लोकतांत्रिक और समावेशी बनाया जा सकता है। यह भी गौरतलब है कि प्राथमिक और स्कूली स्तर पर पाठ्यचर्या विकराल भौतिक और मानसिक बोझ का एक बड़ा कारण विद्यार्थी के लिए स्वीकृत विषयवस्तु और उसके गृह संदर्भ में प्रयुक्त भाषाओं के बीच विद्यमान अंतर है। भाषा का सम्बन्ध केवल साहित्य से है, इस धारणा को तोड़ कर उसकी अन्य क्षेत्रों में व्याप्ति को समझना जरूरी है। तभी अनुवाद और रटन की अध्ययन संस्कृति के स्थान पर मौलिक सृजन की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल सकेगा। आज की प्रचलित परिपाटी में कुछ विषयों

को अंग्रेजी के माध्यम से पढ़ाया जाना रूढ़ सा बना दिया गया है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी, चिकित्सा एवं विधि के विषय इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इस दिशा में भारतीय भाषाओं के माध्यम से पहल होनी चाहिए। यह भी उल्लेखनीय है कि कला, शिल्प, खेल और देशज ज्ञान को अपनी भाषा के माध्यम से ही खोजा और संरक्षित किया जा सकता है। नीति का यह मानना है कि ज्ञान, विज्ञान और कौशल की दृष्टि से भाषाओं को रोजगार की दुनिया में स्थापित किया जाना चाहिए। नीति में प्राचीन भाषाओं के लिए आदरभाव विकसित करने और भाषा शिक्षकों की नियुक्ति को प्रोत्साहन देने का सुझाव स्वागत योग्य है। सूचना क्रान्ति को अंग्रेजी के प्रभाव से मुक्त करते हुए भारतीय भाषाओं के माध्यम को सार्थक बनाने हेतु भारतीय भाषाओं के शिक्षण को समर्थ बनाने के लिए विचार करना होगा। भारतीय भाषाएं इतनी समर्थ हैं कि इनके द्वारा ज्ञान का सृजन और स्थानान्तरण किया जा सकता है। साथ ही औपचारिक शिक्षा, अर्थव्यवस्था एवं अन्य सामाजिक-राजनीतिक कार्यों के लिए इसका प्रयोग सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। जहां तक पूर्व विद्यालयी शिक्षा का प्रश्न है मातृभाषा का प्रयोग करते हुए सोचने विचारने की प्रक्रिया का सूत्रपात करना ही सर्वथा हितकर होगा। बच्चे की भाषा सीखने की सहजात क्षमता का उपयोग करते हुए सीखने का सक्रिय परिवेश बनाया जा सकता है। बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने के लिए चित्र वाली किताबों एवं अन्य भाषा शिक्षण सहायक सामग्री का विकास करना आवश्यक होगा। प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षण को अनिवार्यत: लागू किया जाना ही श्रेयस्कर है। इस हेतु गणित, विज्ञान आदि विषयों में रोचक पुस्तकों की रचना एवं अन्य सामग्रियों की उपलब्धता को सुनिश्चित करना होगा। भारतीय भाषाओं में बालोपयोगी साहित्य के लिए राष्ट्रीय मिशन को संचालित कर युद्द स्तर पर यह कार्य करना होगा। नीति में तो उच्च शिक्षा तक को भारतीय भाषाओं के माध्यम से संचालित करने के अवसर का विस्तार करने की संस्तुति की है। यह बात सर्वविदित है कि चीनी, जापानी, फ्रांसीसी, जर्मन, रूसी, हिब्रू आदि गैर अंग्रेजी भाषा माध्यम में उच्चतम स्तर की शिक्षा दी जा रही है और शोध किया जा रहा है। अत: भारतीय भाषाओं में भी उच्च स्तरीय शोध होना चाहिए। नई शिक्षा नीति कला, शिल्प, इतिहास, देशज विज्ञान और लोक विद्या को भी औपचारिक शिक्षा के दायरे में लाने को सोच रही है। इनमें प्रवेश के लिए अपनी भाषा ही उपयुक्त होगी। भारतीय भाषाओं को व्यावसायिक शिक्षा में यथोचित स्थान देते हुए रोजगार बाजार से जोड़ना होगा। आज सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में भाषायी कौशलों का संवर्धन एक बड़ी चुनौती हो गई है। आज की सबसे बड़ी सीमा है कि विद्यार्थी लिखित और मौखिक रूप में ठीक से संप्रेषित नहीं कर पाते हैं। अत: भाषायी दक्षता का संवर्धन जरूरी है। चूंकि सहज संज्ञानात्मक सक्रियता मातृभाषा में होती है अत: भारतीय भाषाओं में पाठ्य पुस्तक और अन्य पुस्तकों की उपलब्धता और उन्हें सतत अद्यतन करते रहना आवश्यक होगा। भारतीय भाषाओं में पारस्परिक संबंध विद्यमान है। कई क्षेत्रीय बोलियां जो लगभग भाषा जैसी है उनमें शब्दों, संज्ञाओं आदि की समानता का लाभ लेना होगा। अध्यापकों की नियुक्ति और प्रशिक्षण में उनकी भाषा संबंधी योग्यताओं में सुधार और परिष्कार जरूरी होगा।

भारतीय ज्ञान-परम्परा और संस्कृत, प्राकृत और फारसी का अध्ययन आज सक्रिय संरक्षण की अपेक्षा करता है। संस्कृत की जड़ों को जीवन्त रख कर ही समाज में चैतन्य लाया जा सकता है। इस दृष्टि से शरीर, मन और आत्मा इन सबका पोषण होना चाहिए। नई नीति में ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में से अपनी रुचि के विषय पढ़ने का अवसर, माध्यमिक शिक्षा के अंतर्गत कौशल की अनिवार्य शिक्षा और आगे उच्च शिक्षा में प्रवेश और निर्गम की (एक/दो/तीन/चार वर्षों के विकल्प की) सहूलियत नि:संदेह आज के किशोर और युवा के लिए अधिक अवसर प्रदान करेगी। नई नीति में परीक्षा के स्वरूप, अवसर और संख्या को लेकर नई सोच है, जो विद्यार्थियों और अभिभावकों के लिए सुकून देने वाली है। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए योग की शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। नई शिक्षा नीति में त्रिभाषा सूत्र को लागू करने का प्रावधान किया गया है जो भारत की बहुभाषिकता की दृष्टि से उपयोगी है। इसे गंभीरता से लागू करने की आवश्यकता है। इससे हिन्दी समेत सभी भारतीय भाषाओं के विकास के लिए बल मिलेगा। इसी प्रकार प्राथमिक शिक्षा के लिए मातृभाषा की संस्तुति भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। बच्चों को घर की भाषा और विद्यालय की भाषा में निरंतरता से उनके सीखने का कार्य सुगम होगा तथा माता-पिता की रुचि और क्षमता का भी उचित लाभ मिल सकेगा। आज हिन्दी भाषी परिवार के बच्चे को अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करना एक तरह के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक तनाव को जन्म देता है। प्रस्तावित व्यवस्था से हिन्दी क्षेत्र के राज्यों में हिन्दी सीखने का अवसर बढ़ेगा। इसके लिए प्रभावी भाषा शिक्षण की व्यवस्था करनी होगी। अत: भाषा का उचित शिक्षण और संस्कार देना जरूरी है। इस समय भाषिक प्रौद्योगिकी का तीव्र विकास हो रहा है और भारतीय भाषाओं के लिए कंप्यूटर का उपयोग अत्यंत सरल हो गया है। अनुवाद की भी सुविधा बढ़ी है।

राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 में भाषा विकास हेतु सुझाव

भाषा, नि:संदेह, कला एवं संस्कृति से अटूट रूप से जुडी हुई है। विभिन्न भाषाएँ, दुनिया को भिन्न तरीके से देखती हैं इसलिए, मूल रूप से किसी भाषा को बोलने वाला व्यक्ति अपने अनुभवों को कैसे समझता है या उसे किस प्रकार ग्रहण करता है यह उस भाषा की संरचना से तय होता है। विशेष रूप से, किसी संस्कृति के लोगों का दूसरों के साथ बात करना जैसे परिवार के सदस्यों, प्राधिकार प्राप्त

व्यक्तियों, समकक्षों, अपरिचित आदि भाषा से प्रभावित होता है तथा बातचीत के तौर-तरीकों को भी प्रभावित करती है। लहज़ा, अनुभवों की समझ और एक ही भाषा के व्यक्तियों की बातचीत में अपनापन, यह सभी संस्कृति का प्रतिबिम्ब और दस्तावेज़ हैं। अतः संस्कृति हमारी भाषाओं में समाहित है। साहित्य, नाटक, संगीत, फिल्म आदि के रूप में कला की पूरी तरह सराहना करना बिना भाषा के संभव नहीं है। संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार के लिए हमें उस संस्कृति की भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन करना होगा।

दुर्भाग्य से, भारतीय भाषाओं को समुचित ध्यान और देखभाल नहीं मिल पाई है जिसके तहत देश ने विगत 50 वर्षों में ही 220 भाषाओं को खो दिया है। यूनेस्को ने 197 भारतीय भाषाओं को 'विलुप्तप्राय' घोषित किया है। विभिन्न भाषाएँ विलुप्त होने के कगार पर हैं विशेषत: वे भाषाएँ जिनकी लिपि नहीं है। जब किसी समुदाय या जनजाति के, उस भाषा को बोलने वाले वरिष्ठ सदस्य की मृत्यु होती है तो अक्सर वह भाषा भी उनके साथ समाप्त हो जाती है; और प्रायः इन समृद्ध भाषाओं/संस्कृति की अभिव्यक्तियों को संरक्षित या उन्हें रिकॉर्ड करने के लिए कोई ठोस कार्यवाही या उपाय नहीं किए जाते हैं। इसके अलावा, वे भारतीय भाषाएँ भी, जो आधिकारिक रूप से विलुप्तप्राय की सूची में नहीं हैं- जैसे आठवीं अनुसूची की 22 भाषाएँ वे भी कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना कर रही है। भारतीय भाषाओं के शिक्षण और अधिगम को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता है। भाषाएँ प्रासंगिक और जीवंत बनी रहें इसके लिए इन भाषाओं में उच्चतर गुणवत्तापूर्ण अधिगम एवं प्रिंट सामग्री का सतत प्रवाह बने रहना चाहिए– जिसमें पाठ्य पुस्तकें, अभ्यास पुस्तकें, वीडिओ, नाटक, कविताएँ, उपन्यास, पत्रिकाएं आदि शामिल हैं। भाषाओं के शब्दकोषों और शब्द भण्डार को आधिकारिक रूप से लगातार अद्यतन होते रहना चाहिए और उसका व्यापक प्रसार भी करना चाहिए ताकि समसामयिक मुद्दों और अवधारणाओं पर इन भाषाओं में चर्चा की जा सके। दुनियाभर के देशों द्वारा– अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, हिब्रू, कोरियाई, जापानी शब्द भाषाओं में इस प्रकार की अधिगम सामग्री, प्रिंट सामग्री बनाने और दुनिया की अन्य भाषाओं की महत्त्वपूर्ण सामग्री का अनुवाद किया जाता है तथा शब्द भंडार को लगातार अद्यतन किया जाता है। परंतु, अपनी भाषाओं को जीवंत और प्रासंगिक बनाए रखने में मदद के लिए ऐसी अधिगम सामग्री, प्रिंट सामग्री और शब्दकोष बनाने के मामले में भारत की गति काफ़ी धीमी रही है। इसके अतिरिक्त, कई उपाय करने के पश्चात् भी देश में भाषा सिखाने वाले कुशल शिक्षकों की अत्यधिक कमी रही है। भाषा शिक्षण में भी सुधार किया जाना चाहिए ताकि वह अनुभव-आधारित बने और उस भाषा में बातचीत और अन्तःक्रिया करने की क्षमता पर केन्द्रित हो न कि केवल भाषा के साहित्य, शब्दभंडार और व्याकरण पर। भाषाओं को अधिक व्यापक रूप में बातचीत अधिगम के लिए प्रयोग में लिया जाना चाहिए। स्कूली बच्चों में भाषा, कला और संस्कृति को बढावा देने के लिए, कई पहलुओं की चर्चा की जा चुकी है जिसमें– सभी स्कूली स्तरों पर संगीत, कला और हस्तकौशल पर बल देना; बहुभाषिकता को प्रोत्साहित करने के लिए त्रिभाषा फार्मूला का जल्द क्रियान्वयन, साथ ही जब संभव हो मातृभाषा/स्थानीय भाषा में शिक्षण तथा अधिक अनुभव-आधारित भाषा शिक्षण; उत्कृष्ट स्थानीय कलाकारों, लेखकों, हस्तकलाकारों एवं अन्य विशेषज्ञों को स्थानीय विशेषज्ञता के विभिन्न विषयों में विशिष्ट प्रशिक्षक के रूप में स्कूलों से जोडना; पाठ्यचर्या, मानविकी, विज्ञान, कला, हस्तकला और खेल में पारंपरिक भारतीय ज्ञान का समावेशन करना, जब भी ऐसा करना प्रासंगिक हो; पाठ्यचर्या में अधिक लचीलापन, विशेषकर माध्यमिक स्कूलों में और उच्चतर शिक्षा में, ताकि विद्यार्थी एक आदर्श संतुलन कायम रखते हुए अपने लिए कोर्स का चुनाव कर सकें जिससे वे स्वयं के सृजनात्मक, कलात्मक, सांस्कृतिक एवं अकादमिक आयामों का विकास कर सकें आदि शामिल है।

उच्चतर शिक्षा एवं उससे आगे की शिक्षा के साथ कदम से कदम मिलाते हुए बाद में उल्लिखित प्रमुख पहलुओं को संभव बनाने के लिए आगे भी कई कदम उठाये जायेंगे। भारतीय भाषाओं, तुलनात्मक साहित्य, सृजनात्मक लेखन, कला, संगीत, दर्शनशास्त्र आदि के सशक्त विभागों एवं कार्यक्रमों को देश भर में शुरू किया जाएगा और उन्हें विकसित किया जाएगा, साथ ही इन विषयों में (दोहरी डिग्री चार वर्षीय बी. एड. सहित) डिग्री कोर्स विकसित किए जाएंगे। ये विभाग एवं कार्यक्रम, विशेष रूप से उच्चतर योग्यता के भाषा शिक्षकों के एक बडे कैडर को विकसित करने में मदद करेगा, साथ ही साथ कला, संगीत, दर्शनशास्त्र एवं लेखन के शिक्षकों को भी तैयार करेगा जिनकी देश भर में इस नीति को क्रियान्वित करने हेतु तुरंत आवश्यकता होगी। एन.आर.एफ. इन क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान हेतु वित्त मुहैय्या कराया जाएगा। स्थानीय संगीत, कला, भाषाओं एवं हस्त-शिल्प को प्रोत्सहित करने के लिए तथा यह सुनिश्चित करने के लिए कि छात्र जहाँ अध्ययन कर रहे हों वे वहाँ की संस्कृति एवं स्थानीय ज्ञान को जान सकें, उत्कृष्ट स्थानीय कलाकारों एवं हस्त-शिल्प में कुशल व्यक्तियों को अतिथि शिक्षक के रूप में नियुक्त किया जाएगा। प्रत्येक उच्चतर शिक्षण संस्थान, प्रत्येक स्कूल और स्कूल काम्प्लेक्स यह प्रयास करेगा कि कलाकार वहीं निवास करें जिससे कि छात्र कला, सृजनात्मकता तथा क्षेत्र/देश की समृद्धि को बेहतर रूप से जान सकें। अधिक उच्चतर शिक्षण संस्थानों तथा उच्चतर शिक्षा के और अधिक कार्यक्रमों में मातृभाषा/स्थानीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग किया जाएगा और कार्यक्रमों को द्विभाषित रूप में चलाया जाएगा ताकि पहुँच और सकल नामांकन अनुपात दोनों में बढोत्तरी हो सके, इसके साथ ही सभी भारतीय भाषाओं की मजबूती, उपयोग एवं

जीवन्तता को प्रोत्साहन मिल सके; मातृभाषा/स्थानीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में इस्तेमाल करने और कार्यक्रमों को द्विभाषित रूप में चलाने के लिए निजी प्रशिक्षण संस्थानों को भी प्रोत्साहित किया जाएगा एवं बढावा दिया जाएगा। चार वर्षीय बी.एड. दोहरी डिग्री कार्यक्रम को दो भाषाओं में चलाने से भी मदद मिलेगी, जैसे कि देश भर के विद्यालयों में विज्ञान को दो भाषाओं में पढाने वाले विज्ञान और गणित शिक्षकों के कैडर के प्रशिक्षण में। उच्चतर शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत अनुवाद और विवेचना, कला और संग्रहालय प्रशासन, पुरातत्व, कलाकृति संरक्षण, ग्राफिक डिजाईन एवं वेब डिजाईन के उच्चतर गुणवत्तापूर्ण कार्यक्रम एवं डिग्रीयों का सृजन भी किया जाएगा। अपनी कला एवं संस्कृति को संरक्षित करने और बढावा देने के शिए विभिन्न भारतीय भाषाओं में उच्चतर गुणवत्ता वाली सामग्री विकसित करना, कलाकृतियों का संरक्षण करना, संग्रहालयों और विरासत या पर्यटन स्थलों को चलाने के लिए उच्चतर योग्यता प्राप्त व्यक्तियों का विकास करना जिससे पर्यटन उद्योग को भी काफी मजबूती मिल सके।

सन्दर्भ सूची-

मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2020) "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020" मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, पृ. 86-90

मिश्र, गिरीश्वर (2020) " शिक्षा का भाषिक परिप्रेक्ष्य" कंचनजंघा, वर्ष-01, अंक-02, जुलाई- दिसम्बर, पृ. 63- 68

निरंजन कुमार (2021) "एनईपी 2020 के भाषाई प्रावधान और राष्ट्रहित: पुनर्विचार की आवश्यकता" अधिगम, अंक-18, मार्च-2021, पृ. 30-35

काव्य

रामस्वरूप मूंदड़ा

बूँदी -(राज)

सौ-सौ दीयें जलाओं तो क्या ?

सौ - सौ दीयें जलाओं तो क्या ?
कैद अंधेरे के घर में उजियाला है !

आज चारों ओर है घेरा अंधेरे का,
जाल बुनता जा रहा है कम नहीं होता ।
सोचता हूँ सिर्फ होती रोशनी जग में -
कौन होता पथ विमुख गर तम नहीं होता
सौ - सौ दीयें जलाओं तो क्या ?
उजले तन में बंद प
ड़ा मन काला है ।

आज पग -पग पर छलावे का निमंत्रण है,
हर तरफ बिखरे पडे है राह में कांटे ।
अब मधुर स्वर, बांसुरी की धुन हुई अनजान
सिर्फ परिचित बन गये है आह - सन्नाटें ।
सौ - सौ दीयें जलाओं तो क्या ?
आदर्शो के हाथों में अब हाला है !

इस तरफ लटके हुए चेहरे अभावों के,
उस तरफ भटके हुए चेहरे गुनाहों के ।
मुस्कराहटें बिक रही है कंकरों के मोल -
जम रहे है मंच ऑसू की कथाओं के ।
सौ - सौ दीयें जलाओं तो क्या ?
जहाँ मशालों का मौसम मतवाला हैं !

विनय बंसल

आगरा

शरद की चाँदनी रात

आ जाने दो शरद ऋतु की,
मस्त चाँदनी रातें।
मैं बोलूंगा, तुम भी कहना,
अपने मन की बातें।

तब तक चुप्पी साधे रख्खो,
छाये न मायूसी।
चैटिंग भी मत करना,
इसकी होती है जासूसी।

शरद ऋतु की रात चाँदनी,
को पहले आने दो।
मेरी आँखों में थोड़ा सा,
प्यार तो भर जाने दो।

खो जाना बाहों में मेरी,
हाथों में दे देना हाथ।
पकड़ मुझे ऐसे तुम लेना,
नहीं छोड़ना मेरा साथ।

चाँदनी रात में प्यार करेंगे,
हम दोनों रोजाना।
मैं तुम में खो जाऊँगा तब,
तुम मुझमें खो जाना।

व्यंग्य

दिलीप कुमार

jagmagjugnu84@gmail.com

जिज्जी के परसाई

सत्तो जिज्जी जिज्जी के परसाई और पत्तोजिज्जी आजकल नामी लेखिका बनी बैठी हैं। पत्तो जिज्जी तो ज्यादातर घर -गृहस्थी में व्यस्त रहती हैं , उन्हें सोसाइटी के व्हाट्सअप ग्रुप और किटी पार्टी में चुगली और परनिंदा के भरपूर अवसर मिल जाते हैं इसलिये उन्हें लिखने पढ़ने में मजा नहीं आता।

अलबत्ता इतना जरूर लिख पढ़ देती हैं कि लेखिका का लेवल चस्पा रहे।

इसके उलट सत्तो जिज्जी लंबा दंश मारने में यकीन रखती थीं।वह शांत ,मृदुभाषी और अल्पभाषी हैं जो लिख पढ़कर घाव देना ,बदला लेना उचित मानती थीं।

तो साहित्य के इन सीता और गीता के जन्म जीवन की भी बेहद पौराणिक कथा है। इनके वालिद साहब लोकनिर्माण विभाग में क्लर्क हुआ करते थे और उनके पास नहरों की सिल्ट की सफाई का काउंटर हुआ करता था।

बाढ़ का काउंटर एलाट था तो घर में लक्ष्मी की खूब बाढ़ आई। उसी बाढ़ में उनकी दोनों बेटियां खूब बढ़ीं। एक का नाम था सत्यवती और दूसरी का नाम था पार्वती। मगर दोनों सत्तो -पत्तो के नाम से मशहूर थीं , कभी -कभार लोग उन्हें चंगू -मंगू भी कहा करते थे। एक बार वो दोनों जिस डिग्री कालेज में पढ़ती थीं उसकी सारी दीवारों पर किसी सिरफिरे ने चंगू मंगू लिख दिया था।

उन दोनों की ख्वाहिश तो सीता और गीता बनने की थी क्योंकि जब वे कालेज में थीं तभी सीता और गीता जैसी लोकप्रिय फ़िल्म रिलीज हुई थी ,मगर तकदीर ने उन्हें कभी सत्तो-पत्तो बनाया तो कभी चंगू -मंगू।

बेलबॉटम ,हाफ शर्ट, स्कार्फ तो उन्होंने हेमामालिनी जैसा अपनाया मगर कद ,आवाज और रंगत हेमामालिनी की विलोम ही रही उन दोनों की।

सत्तो -पत्तो को गाने का बड़ा क्रेज था ,मगर इनका गाना कभी किसी ने नहीं सुना और जिसने सुना भी उसने दुबारा कभी न सुनने की अहद कर ली।

सत्तो-पत्तो जब सम्मिलित स्वर में गाती थीं तो उनके घर के बगल की गायें भी रम्भाने लगती थीं उनकी तान के तानों से।

सत्तो ने स्कूल- कालेज में जब भी गाया तब तब उनकी हूटिंग हुई, ये और बात थी कि पत्तो मोहल्ले और रिश्तेदारों से इस बात की हमेशा गवाहियां दीं कि सत्तो के गानों की लोग काफी तारीफ करते हैं।

अलबत्ता सत्तो की हालत देखकर पत्तो ने अपनी भद पिटवाना उचित नहीं समझा और पब्लिक डोमेन में गाने की हिमाकत नहीं की।

ऐसे ही पत्तो जब कभी अपने पुरूष मित्रों से निजी और गोपनीय मुलाकातें करने जाती थीं जाती थी तब सत्तो गवाही देती थी कि पत्तो एक्स्ट्रा क्लासेज लेने गई हैं कोचिंग की।

सत्तो -पत्तो लव स्टोरी फ़िल्म से काफी प्रभावित थीं बाद में उन्होंने लव मैरिज भी की। पत्तो तो घर -गृहस्थी में रमी रहीं मगर सत्तो को ससुराल में नहीं निभी।

उन्होंने ससुराल वालों पर मुकदमा किया ,तगड़ी एलुमनी ली और फिर फिल्मी गीतकार या प्लेबैक सिंगर बनने की संभावनओं को लेकर मुंबई पहुंच गईं फिर तो मौजा ही मौजा।

मुंबई इस देश की आर्थिक राजधानी तो है मगर आले दर्जे के लफ्फाज भी मुंबई में मिलते हैं और हर किस्म की लफ्फाजी और शोशेबाजी को पनाह देने वाले भी बहुतायत मात्रा में भी इसी शहर में पाए जाते हैं।

बरसों तक सत्तो जीजी ने कविता में हाथ आजमाया, मगर बात न बनी।

इसी बीचछोटकी जिज्जी पत्तो भी सूरत से मुंबई शिफ्ट हो गई थीं।

कविता,व्यंग्य , गीत लिखते -लिखते सत्तो जिज्जी बुढ़ापे की दहलीज पर आ खड़ी हुई। मगर साहित्य की किसी विधा में उनकी कोई खास पहचान बन नहीं पाई, ये और बात थी कि भाई था नहीं ,दो बहनों के बीच अगाध प्रेम था सो पत्तो ने पिता की संपत्ति का अपना सारा हिस्सा सत्तो को दे दिया।

गालिबनकैरियर नहीं कमाई नहीं फिर भी उम्र के तीन दशक मुंबई में सत्तो जीजी ने तफरीह में काट डाले।

सत्तो जिज्जी कविताएं लिखती रहीं ,पत्तो उनकी समीक्षा। सत्तो ने पति का सरनेम कभी अपनाया ही नहीं था क्योंकि शुरु से ही अपना नाम बनाने की अति प्रबल महत्वाकांक्षी थीं। सो अपने नाम में किसी और का नाम कैसे जोड़ लेतीं।

पत्तो ने शादी के बाद अपने पति का सरनेम जोड़ लिया तो वो पार्वती स्पंदन शर्मा के नाम लिखने लगीं, जो कि सत्तो के नाम से अलग था। सो सत्तो ने लेखन चुना और पत्तो ने आलोचना और गवाही।

सत्तो किताब लिखती ,पत्तों उसकी आलोचना करती। अलग सरनेम देखकर लोग समझते कि लेखिका कहीं अलग की हैं और आलोचक कहीं अलग की।सो तारीफ गढ़ने का उनका ये गोरखधंधा बरसों चलता रहा।

हिंदी की तमाम विधाओं में एकरसता आ चुकी थी । अकहानी, नई कहानी , नई कविता, अगुकान्त कविता के बाद हिंदी में एक नई विधा ने जन्म लिया ।

उसका नाम रखा गया काल्पनिक संस्मरण। सत्तो ने काल्पनिक संस्मरण लिखने की योजना पत्तो को बताई।

पत्तो ने समझाया कि " मैं तुम्हारे हर काल्पनिक संस्मरण पर अपनी सशरीर उपस्थिति की गवाही दे तो दूंगी पर ख्याल रहे कि हम उसी शहर में उस वक्त रहे हों और जिसके साथ के संस्मरण लिखे हों वो भी उस वक्त शहर में रहे हों"।

सत्तो जिज्जी की आदत है कि मुंबई से भगाए जाने के बाद उन्होंने राजेश खन्ना पर भी काल्पनिक संस्मरण लिखे थे कि कैसे उनकी अतुकांत और बेसिरपैर की कविताओं को राजेश खन्ना "इंकलाबी पोइट्री" कहा करते थे।

कब उन्होंने राजेश खन्ना को कविता सुना दी थी कोई नहीं जानता था।

" चिवड़ा की गवाही भेली (गुड़)"।

सत्तो ने राजेश खन्ना को कविता सुनाई। पत्तो इस बात की गवाही दे रही हैं ,राजेश खना अब इस दुनिया मे हैं नहीं, तब इस बात की तस्दीक कौन करे कि राजेश खंन्ना ने इनकी अतुकांत कविताएं सुनी भी थीं या नहीं,और सुनकर क्या ही कहा होगा।

वैसे इस बात को दुनिया जानती है कि राजेश खना को को न सिर्फ उर्दू शायरी की गहरी समझ थी बल्कि उनकी बैठकों में बहुत आला शायर और गीतकार शामिल हुआ करते थे,कॉपी करके टीपने वाली अतुकांत खारिज कुकविताएँ नहीं।

सत्तो ने किसी फंक्शन में राजेश खन्ना के साथ हाथ में लेकर फोटो खिंचवा ली थी , कंप्यूटर फोटोग्राफी से राजेश खन्ना की विभिन्न उम्र की तस्वीरों और अपनी विभिन्न उम्र की तस्वीरों का ऐसा कोलाज प्रस्तुत किया फ़ेसबुक पर, कि लोग हैरान रह गए। तस्वीरों में राजेश खन्ना के कुर्ते के रंग बदल दिये गए और सत्तो की साड़ियों के रंग। यानी बार -बार बदले गए इवेंटो से एक नया इवेंट तैयार। सबसे ज्यादा हैरान हुये इनके धारावी वाले मकान मालिक। कि सत्तो वन रूम किचन वाले मकान का भाड़ा नहीं दे पाईथी।

बरसों तक उस कमरे पर कब्जा किये रहीं। वो तो जब वो कमरा बिल्डिंग प्लान में आकर तोड़ा जाने लगा तब इन्हें जबरदस्ती खाली करना पड़ा।

इनका मकान मालिक हैरान था।

फ़ेसबुक पर राजेश खन्ना के साथ इनके फोटो और संस्मरण पढ़कर वो बुदबुदाया -

"घर में नहीं आने,अम्मा चलीं भुनाने "।

राजेश खन्ना के संस्मरणों से शुरू में तो इनको ख्याति मिली लेकिन जब मुंबई के इनके मकान मालिक, दूधवाला, किराना वाला ने इनकी उधारियों के संस्मरण लिखने शुरू किए तो इनकी खासी फजीहत हुई और ये मुंबई से चंपत हो गईं।

परसाई पर जब इन्होंने काल्पनिक संस्मरण लिखने शुरू किए तो काफी शोध और रिसर्च के बाद लिखा कि-

"कैसे परसाई जी इन्हें बेटी की तरह लाड़ करते थे" और बचपन में ही इनके लिखे हुए को देखकर कहा था कि "तुम बड़ी होकर एक बहुत बड़ी लेखिका बनोगी "।

"हाँ परसाई जी ने ऐसा कहा था मेरे सामने ही " इस बात पर हर जगह पत्तो की बाकायदा लिखित गवाही शामिल थी।

वास्तव में ये बात "अश्वत्थामा हतो,नरो या कुंजरो" जितनी ही सच थी सिर्फ।

एक बार अखबारों के सस्ते चुटकुले टीपकर ये परसाई जी के पास लेकर गई थीं और उन चुटकुलों को अपनी व्यंग्य रचना कहकर उन्हें पढ़ कर उनकी प्रतिक्रिया मांगी थी।

परसाई जी उस्ताद थे उन्होंने सिर्फ इतना कहा था "लिखना चाहिये मगर अपना ही "।

परसाई जी द्वारा सत्तो को कही गई ये बात पत्तो ने भी सुनी थी, मगर पत्तो ने परसाई जी की इस नसीहत की गवाही कभी नहीं दी, न लिखित न ही मौखिक।

तो आपने भी जीजी के काल्पनिक संस्मरण पढ़े क्या और उनके बारे में परसाई जी द्वारा कही गई महान बातें सुनीं क्या।

ग़ज़ल

डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफरी

नवादा, बिहार

इधर से किसलिए तू आ रही थी
मेरी सांसों में खुशबू आ रही थी

मेरा दिल हो गया उस पर निछावर
वो लड़की सीख जादू आ रही थी

उसे क्या हो गया दिखती नहीं है
उधर तो रोज़ अन्नू आ रही थी

मेरा सर उस तरफ रक्खा गया था
जिधर पत्थर सी वस्तु आ रही थी

खमोशी में घने जंगल पड़े हैं
जहां कोयल की कू कू आ रही थी

कहानी

महेश शर्मा
धार जिला धार म.प्र
मो न ९३४०१९८९७६

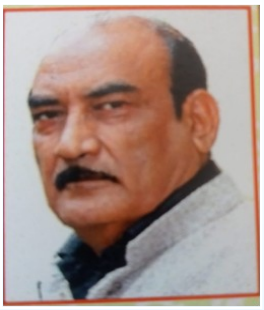

उसूल वाला

जय जय सियाराम , जय जय सिया राम का गगनभेदी नारा गुंज रहा था . हिन्दू एकता जिंदाबाद का शोर हो रहा था . हिन्दू भूमि पर अनाचार , नहीं चलेगा नहीं चलेगा . ऐसे प्रतिरोधी नारों से शोर मचाता ३००-४०० लोगो का जुलूस एक आक्रोशित भीड़ के रूप में बढ़ा चला जा रहा था . उनका लक्ष्य था नाले की ओर जहाँ पिछली तरफ गरीब लोगों की बस्ती थी .जहाँ कुछ हिन्दू और कुछ मुसलमानों की मिली जुली आबादी थी . धर्म के हिसाब से ये दो तबके थे लेकिन कर्म और अर्थ में मिलते जुलते ही थे यानि कामकाज निम्न किस्म के सेवा कार्य और आयप्राप्त कर जैसे तैसे घर चला पाने वाले . यानि रोजाना कमाने वाले रोजाना खाने वाले.

इसी बस्ती में रहते थे असलम मियाँ. जुलुस में चलते लोगों में असलम मियाँ की ही चर्चा थी कौन है साला ये असलम ? बहुत बदमाश पापी साला अपने बेटे की शादी एक हिन्दू लड़की से कर रहा है मार डालो साले को .

पर इस लड़की के माँ बाप कहाँ है उनको तो देखो . अरे उसका बाप तो कभी का मर चूका और माँ को इसी असलम ने बहुत पहले से रखेल बना रखा है, अब उसकी बेटी से अपने बेटे का निकाह करवा रहा है . सालों ने बाप दादा की जागीर समझ रखा है आज इन बाप बेटे को सबक सिखा कर ही रहेंगे . चलो भाइयो आगे बड़ो हिन्दू एकता जिंदाबाद .

जुलुस आगे बढने लगा .जुलुस का शोर और नारों की गूँज नाका पार कर रही थी तभी उस जुलूस को देख समझ कर बस्ती का एक लड़का अपने कच्चे मकान के आगे दालान में मोढ़े पर बेठे असलम मियाँ के पास दौड़ कर आया और बताने लगा , चाचा ,हिन्दू लोगाँ जुलुस ले के आ रिये . बोलते की बाप बेटे दोनों को निपटा देंगे आज . असलम मियाँ समझ नहीं पाए , क्यों ? मैने ऐसा क्या किया है ? सामने बैठे मदन मास्टर की और देखने लगे . अरे असलम मियाँ ये लोग इन अफवाहों के बीच गुस्सा होके आ रहे हैँ कि तुम जस्सो की शादी करवा रहे हो . "अरे तो मैँ कहाँ गलत कर रहा हूँ बच्चों के भविष्य के लिए ही तो कर रहा हूँ .

असलम मियाँ की नजर सामने लकड़ी के स्टूल पर दुल्हन बनी बैठी जस्सो पर पड़ी .असलम मियाँ की आँखों में आँसू तैरने लगे और उन आँसुओ में पिछला सारा इतिहास झिलमिलाने लगा .

उनका भूतकाल उनका वो सुख दुःख के बिच झूलता जीवन , खोने लगे वो पुरानी यादों मेँ . उनकी विचार यात्रा जस्सो से राजली तक और राजली से फातिमा तक चली गई . फातिमा उनकी बीबी उनकी दिलोजान . चालीसा साला फातिमा दमे की मरीज बड़ी शरीफ बड़ी नेक और संजीदा और दो बच्चे ये तीनो ही असलम मियाँ की जिन्दगी के तीन कोने थे और चोथे थे वे खुद . बस यही दुनिया थी उनकी . एक पुरानी खटारा मेटाडोर चलाते थे जिसकी छोटी मोटी अनियमित आय के सहारे अपनी इस दुनिया को सँवारने की कोशिश करते रहते थे .

इस सुख दुःख से भरी दुनिया से लगी एक और उदास दुनिया थी विधवा राजली की . असलम मियाँ के कच्चे पक्के मकान के पीछे एक विधवा , दो बच्चों की माँ राजली का झोपड़ा था .दोनों परिवारों में बहुत आत्मीयता थी . हालाँकि दोनों का धर्म अलग था खानपान अलग था पहनावा अलग था , पर बस ! यही तो अलग था . बाकि ? दोनों परिवारों के दिलो में उठने वाली तरंगे, भावनाए एक थी , दोनों परिवारों के देखे जाने वाले उन्नति के सपने एक जैसे थे , गरीबी से लड़ाई मजबूरियों से जद्दोजहद एक जैसी थी . उनकी सुबह शाम भी तो एक जेसी ही थी . कभी कभी अनायास आ जाने वाले सुख के छोटे छोटे टुकड़े सदा बनी रहने वाली समस्याओ की लम्बी फेहरिस्त वो भी तो मिलती जुलती ही थी . और बाकि उनको लगने वाली भूख प्यास उनके जज्बात बल्कि उनका खून और पसीना इनमे भी तो कोई फर्क नहीं था मगर हाँ दुनिया की नजरो में बहुत बड़ा फर्क था एक परिवार हिन्दू था तो दूसरा मुसलमान . एक का खुदा ऊँचे बहुत ऊँचे आसमानों में रहता था तो दुसरे का ईश्वर कहीं पहाड़ो पर, नदियों में ,बड़े बड़े मंदिरों में रहता था . वो दोनों यानि हिन्दुओं का भगवान और मुसलमानो का खुदा भी एक होना चाहे तो जमीं पर रहने वाले उनके नुमाइंदे उनको ही एक न होने दे तो धरती पर रहने वाले साधारण इंसानों की तो बिसात ही क्या .

खैर हम बात करँ इन दो परिवारों की जो पिछले कई बरसात के मोसम में चूते हुए घर और चारो और फैलते कीचड़ को एक साथ मिल कर भुगतते थे . दिवाली के दिन फटाके फोड़ते हुए राजली के बच्चों अमर और जस्सो के साथ पुरे टाइम असलम के दोनों बेटे शरीक होते थे तो ईद में दोनों परिवारों की भागीदारी होती थी . कुल मिलाकर ये दोनों परिवार जीवन के कई अछे बुरे क्षणों में एक दुसरे के सहायक थे . दोनों परिवारों का दिन भर बिना एक दुसरे से मिले बतियाये नहीं बीतता था . राजली जहां असलम मियां के दोनों बेटोँ १४ साल का शेरू और १२ साल का नूरु पर भरपूर प्यार रखती थी वहीं असलम मियां भी राजली की १० साला बेटी जस्सो और ७ साल के अमर को बाप जेसा लाड जताता था .

जीवन की छोटी मोटी खुशियों और दुखो को पार करते ये परिवार अपना समय काट रहे थे . इस बिच असलम मियां ने अपने बड़े बेटे शेरू को एक मेकेनिक के यहाँ काम सीखने को रख दिया . छोटे ने भी पढाई तो छोड़ ही दि थी वो भी बस स्टैंड पर हम्माली करने लग गया था जबकि जस्सू अभी स्कूल जा रही थी . असलम एक सीधा सदा पक्का मुसलमान था पुरे पाँचो वक्त नमाज पड़ने वाला और पक्के मुस्लमान से बढ के सच्चा इन्सान जो दिल में किसी के भी प्रति जरा नफरत नहीं रखता अपने उसूल वाला . वो समाज की होने वाली बैठकों में भी कभी नहीं जाता फातिमा कभी कभी कहती मस्जिदों की मीटिंगों में जाया करो . असलम कहता मस्जिद जाने में तो कोई हरज नहीं खुदा का घर है पर वहाँ की बैठकों में नही जाऊंगा क्योकि वहाँ खुदा का संदेसा नहीं फिरका परस्ती का जहर बांटा जाता है .

असलम मियाँ की पुरानी मेटाडोर हर हफ्ते कम से कम एक बार तो बिगडती ही , फिर रात भर ठोकपीट कर असलम मियाँ सुबह तक फिर उसे चलने लायक बना लेते . जैसी असलम मियाँ की मेटाडोर वैसी ही उनकी जिन्दगी की गाड़ी चल रही थी लेकिन कहते हैँ कि उपरवाले को भी मुसीबतजदा लोगों की परीक्षा लेने में ज्यादा मजा आता है या हमें ऐसा लगता है. शुरू होते ठण्ड के दिनों में फातिमा का दमा ऐसा उछला कि उसने पुरे परिवार का दम ला दिया रात रात भर की खांसी न तो फातिमा को सोने दे न ही असलम सो पाया . दमा इतना कुपित हुआ कि फातिमा को अस्पताल में भरती करना पड़ा और वहाँ दो चार दिन का मौका देते हुऐ फातिमा निकल गई . अपने जीवन की अंतिम अनंत यात्रा पर और वो सीधा सादा पाक इन्सान असलम अपनी शरीके हयात को रोकने में असफल रहा .

रोते बिलखते दोनों बेटोँ को सम्हालना तो दूर खुद असलम तीन दिन रात तक बेहाल रहा और इस दौरान राजली ने तीनो बाप बेटो को ऐसे सम्हाला जैसे घर के सगे हों . आखिर असलम मियाँ को खड़ा होना पड़ा . ये जिन्दगी की कितनी कडवी सच्चाई है कि हम जिनके बिना एक दिन भी जीने की कल्पना नही कर सकते जिनके खातिर दुनिया का हर जुल्म सह सकते हैँ किसी भी शर्त पर उससे बिछुड़ना गवारा नहीं करते उसी के अनायास बिछुड़ जाने पर कुछ नहीं कर पाते और धीरे धीरे फिर से जीना शुरू कर देते हैँ . असलम मियाँ घर के मुखिया थे मर्द थे दो बच्चों के बाप थे उन्हें फिर शुरू करना ही था जिन्दगी का सफ़र . और वो फिर शुरू हुए बच्चों का मनोबल बढाया . अल्ला खुदा की मर्जी को हँसते हँसते मंजूर करना सिखाया . और चल पड़े अपनी मेटाडोर से जिन्दगी के बाकि सफ़र पर . इस हादसे से दो नई बातेँ हुई , एक तो असलम मियाँ ने बाहरी दुनिया से नाता बिल्कल तोड़ दिया मेटाडोर के लिये बाहर जाना मजबूरी थी लेकिन इसके अलावा अब उन्हें दुनियादारी से कोई मतलब नहीं था सुबह उठ कर अपने हाथोँ से खुद का और बेटोँ का खाना बनाते उन्हें खिलाते फिर खुद खाकर मेटाडोर लेकर निकल जाते ऐसे ही रात को आते फिर सबका खाना बना खिला कर सो जाते . दुसरे उन्हें अब राजली के रूप में साक्षात् खुदा का कोई दूत दिखाई देता था जो उनके हर सुख दुःख में साये की तरह साथ था .

परेशान , उदास और निरुत्साह असलम मियाँ का एक एक दिन ऐसे ही गुजर रहा था . राजली सब देख रही थी , दुखी थी वो भी अपने पडोसी का दुःख देख कर . कई बार उसके मन में आया कि, कह दे आज से असलम मियाँ और बच्चों का खाना वो खुद बनाएगी . लेकिन संकोच समाज का , धर्म की क्षीण सी दिवार और बच्चों का रवैया क्या पता कैसा हो यही सब उसे रोक रहे थे और वो निरुपाय सी इस सीधे सादे दुखी इन्सान को बस देखती रहती .

अल्ला मियाँ अभी भी नाराज थे शायद असलम से . तभी तो एक दिन उनकी मेटाडोर एक पुलिया से टकरा के पलट गई . हलकी फुलकी खराबी होती तो असलम मियाँ खुद सुधार लेते लेकिन शायद गाड़ी के इंजन में काम आ चूका था , मेकेनिक ने बता दिया १५-२० हजार बिना गाड़ी चालू नहीं होगी . असहाय असलम मियाँ ठन्डे ठन्डे घर चले आये बेमन से बच्चों को शाम का खाना खिलाया और सोचते रहे कहाँ से इन्तेजाम करँ १५ -२० हजार का . रात बीती , दूसरा दिन भी घर बेठे बिता , फिर रात हुई ऐसे ही ३ दिन निकल गए . राजली लगातार गौर कर रही थी . अंततः उससे रहा नहीं गया पूछ ही लिया , क्या हुआ असलम मिंया ? गाड़ी पर नहीं जा रहे ? गाड़ी भी घर नहीं ला रहे ? क्या बात हो गई ?

नहीं कुछ नहीं . बड़ी मुश्किल से कह पाए असलम मियाँ लेकिन भारी होता स्वर और बैठती आवाज . राजली समझ चुकी थी कि कुछ अनहोनी हो चुकी है . बिना लाज संकोच के सामने बैठ गई . असलम मियाँ सच बताओ तुम्हे मेरी कसम है क्या हुआ ? अब कैसे रोक पाते असलम मियाँ खुद को . गाड़ी का एक्सीडेंट हो गया है इंजन में काम है १५-२० हजार का .मेरी ताकत नहीं है. इतना ही बोल पाए और रो पड़े असलम मियाँ .

कुछ ही क्षण लगे राजली को सोचने में कि अब क्या होगा ? और वो खड़ी हो गई असलम मियाँ के नजदीक जा पहूँची , रोते असलम मियाँ के दोनों हाथ अपने हाथो में ले लिए और बोली , रोओ मत असलम मरद हो मरद की तरह बात करो .

पर कैसे राजली अब मैँ क्या करूँगा ? आज मेरा कौन हे जो इस मुसीबत में मेरा हाथ थामेगा

"मैँ हूँ असलम मियाँ, मैँ, राजली तुम्हारी सुख दुःख की साथी "

अब असलम मियाँ और कमजोर होने लगे . रोक न पाए खुद को फिर फफक कर जोरो से रो पड़े , राजली ने अपने दोनो हाथोँ को असलम मियाँ के कंधोँ पर रखा उन्हे थपथपाया वैसे ही जैसे कोई माँ मुसिबत मैँ फँसे अपने बेटे को अपनी सशक्त उपस्थिति का एहसास दिलाती है या , वैसे ही जैसे कोई बहन अपने दुखी भाई को दिलासा देती है या वैसे ही जैसे कोई पत्नी निराश होते , हिम्मत हारते अपने पति को धेर्य रखते हुए बुरे वक्त का सामना करने का कहती है , लेकिन राजली तो इनमेँ से कोई भी नही थी असलम मियाँ की . उसका क्या रिश्ता था असलम मियाँ से ? कुछ भी तो नहीँ ? ये कहना बहुत बडी भूल होगी राजली का असलम से एक मानविय रिश्ता था जो सभी रिश्तो से बडा होता है जो युगोँ से शाश्वत चला आ रहा है . "असलम हिम्मत रखो अभी मैँ हूँ , तुम्हे ऐसे नहीं रोने दूंगी , रुको मैँ आती हूँ . और राजली अपने झोपड़े में घुसी अनाज के कुंडे में छुपी पुराने से कपडे में बंधी नोटों की पोटली निकाली और चली बाहर . उसकी नजर सामने दिवार पर लगी भगवान की तस्वीर पर पड़ी और मन के कोने से कोई शैतान की आवाज आई कहाँ जा रही हे राजली ? किसकी मदद करने , एक मुसलमान की ? राजली ने फिर देखा भगवान की तस्वीर की ओर , ओ मेरे दाता यहां न कोई हिन्दू है न मुसलमान . एक मुसीबतजदा इन्सान है जो मरद होकर भी रो रहा है जो टूट चूका है पूरी तरह से . मैँ उसी लाचार की मदद कर रही हूँ मेरे भगवान् मुझे माफ़ करना दुनिया के सारे इन्सान नाराज हो जाये तुम नाराज मत होना भगवान् . और राजली निकल आई घर से बाहर . ओटले पर बैठे सिसकते असलम मियाँ का सर उपर उठाया ,ये लो असलम इसमें पुरे १४-१५ हजार रुपये हैँ, कल के कल मेटाडोर ठीक कराओ काम धंदा चालू करो अब तुम्हे हम पाँच जनो का पेट पालना है.

क्या ? कौन पाँच राजली ?

हम तीन और तुम्हारे दोनोँ बेटे , और कौन ? तुम मरद हो असलम कमजोर मत बनो मैँ औरत हूँ पर अब तुम्हारे साथ आज से तुम्हारी साथी हूँ , हम दोनों मिलकर सब कुछ सुधार लेंगे . क्या मंजूर करोगे मुझे अपनी फातिमा की जगह ?

ओह ....ओह असलम मिंया पागल हो उठे . क्या कह रही हो राजली ? लोग हमें जिन्दा नहीं छोड़ेंगे मैँ मुसलमान तुम हिन्दू कैसे हम साथ साथ रह सकेंगे ?

बस ऐसे ही जैसे अभी रह रहे हैँ.

लेकिन ?

लेकिन क्या ? तुम इतना क्यों डर रहे हो ?

डर की बात तो है, कौन हमें शादी करने देगा और कौन हमारा निकाह पडवायेगा ?

असलम मियाँ निकाह या ब्याह क्या होता है ? भगवान या खुदा को हाजिर नाजीर मान कर किया गया वादा ही तो है ना ? तो हम दोनों बिना निकाह बिना ब्याह के भी भगवान् के सामने या तुम्हारे खुदा के सामने एक दुसरे का हो जाने की कसम खा लेँ.कोई सात फेरे की जरुरत नहीं कोई मुल्ला मोलवी या पंडित की जरुरत नहीं . बोलो हे हिम्मत तो पकड़ो मेरा हाथ छोडो निराशा और कल से नई जिन्दगी शुरू करो .

ओ खुदा ! असलम मियाँ ने दूर आसमान की और देखा , तेरी यही मर्जी हे तो यही सही हम पर रहमत रखना मेरे आका . और फिर गले लगा लिया राजली को अपने सीने से चिपकाते हुए रुंधे गले से बोल पड़े असलम मियाँ तुम मेरी फातिमा हो राजली , इन चारो बच्चों की माँ . "और तुम सब के रखवाले असलम . कहते हुए राजली भावुक हो गई उसने भी उपर आसमान मेँ देखते हुए अपने भगवान के हाथ जोडे . बड़ा बेटा शेरू तो उस समय वहाँ नहीं था पर बाकी तीनोँ बच्चे ये सब कुछ देख रहे थे वे भी सिमट आये राजली और असलम के करीब असलम ने तीनो बच्चों को अपनी बांहों में भर लिया . और उस तरह असलम और राजली और बच्चे सभी एक दुसरे से पूरी तरह जुड़ गए . जुलाई का महिना था आसमान में घुमड़ रहे बादल जो इस गठबंधन के साक्षी थे वे भी बरस पड़े खुश होकर या द्रवित होकर . दोनों ने इसे शगुन माना और फिर उस दिन से सब का खाना इकठ्ठे बनने लगा . एक नई गृहस्थी बनी जिसकी जानकारी उपरवाले के अलावा उन बरसते बादलो को थी या रात में निकलने वाले चाँद तारोँ को . और बच्चे तो खुश ही थे .

असलम मियाँ को अपने कंधो पर कुछ ज्यादा भार महसूस हुआ लेकिन ये भार उठाना भी एक सुखद अनुभूति थी . अगले दिन ही गाड़ी का काम लगवा दिया ५-७ दिन में असलम की मेटाडोर उनकी जिन्दगी के समान फिर चल पड़ी . असलम मियाँ ने तत्काल जस्सो के स्कूल की जानकारी ली उसकी किताबेँ बस्ते की खरीदी करी . इस बीच वो अपने दोनों बेटे शेरू और नुरू को ये जताते रहते थे कि जस्सो और अमर भी उनके भाई बहन हैँ जिनका उनको ध्यान रखना है . और बच्चे भी एक ही परिवार के होकर आपस में बड़े प्यार से लगाव से रहने लगे . लेकिन जस्सो और अमर और असलम के छोटे बेटे नुरू का प्यार जहाँ पूर्णतया निर्दोष और नैसर्गिक था वहीँ बड़े बेटे शेरू की नजरो में जस्सो की कुछ अलग ही जगह बन रही थी .ये ताजा बात नहीं थी . बहुत पहले से ही शेरू अपने साथ दिनरात खेलने वाली जस्सो के बारे में कुछ और ही सोचने लगा था . देखते ही देखते ५-७ साल जाने कब निकल गए बच्चे बड़े हो रहे थे .

असलम और राजली का प्यार भरा रिश्ता अभी भी उतना ही मजबूत और दिलो तक गहरा था . इस बिच आसपडोस वालो को भी इस रिश्ते की भनक लग चुकी थी कहीं कहीं से आरोप प्रत्यारोप सुनने को मिल जाते थे . पर अब दोनों को इसकी कोई चिंता नहीं थी . असलम मियाँ का बस चलता तो वे राजली के साथ निकाह पढ लेते लेकिन वे जानते थे निकाह पढना मतलब हिन्दू , मुसलमान , मुल्ला मोलवी , पंडित पुजारी का सामना साम्प्रदायिक तनाव और जाने क्या क्या मुसीबतेँ . तौबा तौबा यही क्या बुरा है किसी को मालूम पड़े बिना दोनों दिलो से जुड़े हैँ एक जान हैँ दोनों को संतोष था . लेकिन शायद उपर वाले को संतोष नहीं था तभी तो शहर में फेली डेंगू बुखार की लहर ने असलम की हंसती खेलती दुनिया पर अपना पंजा मारा और कीमत चुकाना पड़ी राजली की मौत से .

दो रात दिन राजली की सेवा उपचार में लगा रहा असलम . तीसरे दिन राजली को अपना आखरी टाइम लगने लगा तो असलम के हाथो को अपने हाथोँ में लेकर बड़े कमजोर स्वर में अपनी आखरी ख्वाहिश कह डाली , मेरे प्यारे असलम अब में नहीं बचूंगी . मेरे बच्चों की परविश अच्छे से करना इन्हें अच्छा इन्सान बनाना तुम्हारे जैसा उसूल वाला . और हाँ मेरी नजर में तो हिन्दू मुस्लिम का कोई भेद नहीं था तो मेने तुम्हारा दामन थाम लिया पर ये बच्चे मेरे आदमी की अमानत है एक हिन्दू की अमानत है हो सके तो इनका धरम बचाए रखना . आगे तुम्हारी मर्जी . और इसके बाद असलम बिलखता रहा लेकिन राजली जा चुकी थी उसके जीवन से दूर बहुत दूर .

अब उन चार बच्चों का पालने वाला अकेला असलम ही था बच्चे बड़े हो रहे थे .असलम राजली को बिलकुल भुला नहीं पा रहा था राजली उसके लिए खुदाई खिदमतगार थी जिसने दो तीन बार उसकी बर्बाद होती जिन्दगी को न सिर्फ बचाया बल्कि संवार दिया था उसके सामने जिन्दगी का सबसे बड़ा काम था राजली के दोनों बच्चों को सही मुकाम तक पहूँचाना और उनके धरम को सही सलामत पाकसाफ बनाये रखना . अब खाना बनाने की जिम्मेदारी थी जस्सो और असलम मियाँ की . असलम मियाँ ने अपने खाने का तरीका भी बदल दिया अब उनके घर में मटन चिकन नहीं बनता था . फिर आये त्यौहार होली दिवाली और ईद सारे त्यौहार मिलकर मनाये गए और एक बार जब राखी आई तो असलम मियाँ ने जस्सो के सर पर प्यार भरा हाथ रख कर उसे बताया कि अब उसके तीन तीन भाई हँ लेकिन शाम को राखी बंधवाते वक्त जस्सो के सामने अमर और नुरू तो थे शेरू कहीं बाहर था जानबूझ कर या अनजाने में . असलम मियाँ ने कुछ गौर नहीं किया उनके पैरो से तो तब जमीन खिसकी जब एक रात शेरू ने बड़े सकुचाते हुए पूछा अब्बू में जस्सो से निकाह पढना चाहता हूँ.

चौंक गए असलम मियाँ अरे नामुराद वो तेरी बहन लगती है और फिर वो हिन्दू है हम मुस्लमान . ये बात तेरे दिमाग में आई कैसे ?

नहीं अब्बू वो मेरी बहन नहीं मेरी बचपन की दोस्त है में उसे प्यार करता हूँ.

नहीं नहीं बिलकुल नहीं ये कभी नहीं होगा . बाप बेटे में बहुत बहस हुई . नया नया जवान हुआ शेरू अपने दिल के हाथोँ मजबूर हो रहा था . असलम मियाँ ने तो शेरू की एक न मानी और उसे बहुत भावुक तरीके से राजली के उपकार और मरते समय उससे किये गए वादे की बात बताकर समझाया कि वो किसी भी हालत में राजली से किया वादा पूरा करेंगे , राजली के दोनों बच्चों के धरम की हिफाजत करेंगे और जस्सो की शादी किसी हिन्दू से ही करेंगे .

इसके बाद असलम मियाँ ने मदन मास्टर को जो उसी बस्ती में रहने वाले एक सज्जन स्कूल मास्टर थे जो असलम मियाँ के जिगरी थे , उनको सारी बातेँ बता कर कोई रास्ता सुझाने का और जस्सो के लायक कोई अच्छा सा लड़का बताने की चर्चा की . मदन मास्टर ने सारी बातेँ समझी असलम मियां को धीरज भी बंधाया और एक रास्ता भी सुझाया , जिसे सुनकर असलम मियाँ खुश हो गए .

लेकिन इस बीच बाप बेटे की बहस और विवाद की खबरे जंगल की आग की तरह मोहल्ले से फेलती हुई पुरे कस्बे में फेल गई वो भी इस तरह की , एक मुस्लमान अपने बेटे का निकाह जबरदस्ती एक हिन्दू लड़की से करवाना चाहता है . फिर क्या था कसबे के हिन्दू संघठनो ने लपक लिया मुद्दा और सक्रीय हो गए . और अपने जासूस छोड़ दिए इस बस्ती में की शादी कब हो रही है . इधर कुछ मुस्लिम संघठनो ने असलम मियाँ को दिलासा दिया होसला बढाया कि अपने बेटे से ही निकाह कराओ देखते हैँ कौन रोकता है हम सब तुम्हारे साथ हैँ. लेकिन दूरदर्शी असलम मियाँ ने उनका सहारा लेने से साफ मना कर दिया .और एक दिन अचानक कहाँ से खबर फैली की १४ तारीख को असलम मियाँ के बेटे का निकाह एक हिन्दू लड़की जस्सो से होने जा रहा है. बस अब क्या था . हिन्दू संघठन उबल पड़े . हवा गरम होने लगी एक तरफ केसरिया लहराया तो दूसरी तरफ चाँद तारो से सजा हरा रंग भी उबला . प्रशासन सतर्क हुआ एहतियात बरती जाने लगी .और ठीक १४ तारीख को जय जय सियाराम , हर हर महादेव के नारो से गूंजता काफिला जुलुस के रूप में चल पड़ा असलम की बस्ती की ओर ..

अपने गुजरे अतीत में खोया असलम छोटे बेटे के झिंझोड़ने से चौंका , अब्बू वे लोगां आ गए , असलम की नजरे सामने आते हुजूम पर पड़ी जिसमे सबसे आगे स्वामी जी चल रहे थे .

असलम के सामने रुक कर स्वामीजी दहाड़े , क्यों रे मुर्ख म्लेच्छ क्यों अनाचार फैला रहा है? असलम हक्के बक्के हो रहे थे उपर की साँस उपर निचे की साँस निचे . स्वामीजी के साथ खड़ी भीड़ चिल्ला रही थी मार डालो साले को . निपटा दो बाप बेटे को .

बड़ी हिम्मत से पूछा , मैने क्या किया है स्वामी जी ?

अरे दुष्ट एक हिन्दू लड़की की शादी अपने बेटे से करवा रहा है. धर्म भ्रष्ट कर रहा है उसका
तेरी शामत आई है आज .
उग्र लोगों का हुजूम आगे बढने लगा तभी मदन मास्टर लपक कर आगे बढे और स्वामीजी के सामने खड़े हो गए ,रुकिए स्वामीजी पहले बात तो समझ लीजिये पूरी .
ये कौन हे साला हिन्दू होकर मुसलमान की तरफदारी कर रहा है इसको भी मारो .
स्वामीजी जी ने सबको चुप किया और मदन मास्टर की ओर प्रश्नसूचक द्रष्टि से देखा .
आप खुद चल कर देख लीजिये . आइये और मदन मास्टर स्वामीजी को असलम के मकान के पिछली तरफ बने राजली के झोपड़े के आँगन की ओर ले चला जहाँ बने विवाह मंडप में यज्ञवेदी पर बैठे थे जस्सो और मदन मास्टर का बेटा दीपक .और वहीँ बैठे थे पंडित जी जो विवाह प्रक्रिया प्रारंभ करवा रहे थे .
कौन हे ये दूल्हा बना लड़का ?
स्वामीजी ये मेरा बेटा है दीपक , और असलम मियाँ जस्सो की शादी मेरे बेटे से , एक हिन्दू से ही करवा रहे हैँ. झूठ बोलता है ये , भीड़ में से कोई चिल्लाया .
स्वामीजी ने हाथ उठाकर शांत किया सबको . मदनमास्टर फिर बोले ये जो असलम है ना पूरा पक्का मुस्लमान है लेकिन दुसरे मुसलमान जैसा नहीं . पुरे पाँच टाइम नमाज पढता है, पिछले १५ सालोँ से दोनों परिवार एक दुसरे के सुख दुःख के साथी हैँ और पिछले ५ साल से तो ये अकेला ही राजली के दोनों बच्चों का पिता समान रह रहा है लेकिन पूरी तरह से उनके धरम को सुरक्षित रखते हुए . इसने कभी उनका धरम बदलने की या भ्रष्ट करने की कोशिश नहीं की . मैँ इस बात का साक्षी हूँ स्वामीजी अब आप फैसला करेँ ये असलम सही है या गलत ?
स्वामीजी चमत्कृत थे , अफ़सोस में थे ,खिसिया रहे थे . पलट कर लोगों के हुजूम पर गुर्राए ,किसने ये अफवाह फैलाई कि असलम जस्सो की शादी अपने बेटे से कर रहा है?
सब चुप , कोई आवाज नहीं , होती भी कैसे , अफवाह के न तो हाथ पैर होते हैँ न ही कोई मालिक वो तो हवा में उडती है.

स्वामीजी आगे बढे असलम के दोनों कंधो पर हाथ रखे बड़ी आत्मीयता से बोले माफ़ करो असलम मियाँ ग़लतफ़हमी हो गई तुम्हेँ तकलीफ दी , गलत समझा . तुम बहुत अच्छे इन्सान हो एक नेक दिल मुस्लिम हो मैँ तुम जेसे पाक उसूल वाले इंसानियत का धरम निभाने वाले को सलाम करता हूँ.

स्वामीजी झुक रहे थे , एक मुसलमान के आगे नहीं बल्कि एक उसूल वाले सच्चे इन्सान के आगे . किसी मजहब के आगे नहीं बल्कि दुनिया के सबसे सच्चे धरम इंसानियत के आगे .
अनपढ असलम मियाँ किंकर्तव्यविमूढ से खड़े थे , जुलुस लौट रहा था , हारा हुआ . मदन मास्टर के चेहरे पर संतोष के भाव थे असलम मियाँ ने जस्सो और दीपक के सर पर हाथ रखा दूर आसमानों में देखा मानो राजली को कह रहे हों मैने अपना उसूल निभाया है राजली .

ऋषि रंजन
दरभंगा (बिहार)

निर्मोही सजनी

निर्मोही सजनी तू ना समझी मेरे मन के पीड़ को
फैसले फासले के थे तुम्हारे कैसे दोष दूँ तकदीर को।

यूँ तेरा इश्क में छलना मगर मैं चलना नहीं सिखा
सिखा ठोकरें खाकर जीना मगर मरना नहीं सिखा
हंसते रोते सोते गाते मैंने हरपल तुझको चाहा था
साक्षी है चाहत की दास्ताँ, कविता की तहरीर को
निर्मोही सजनी तू ना समझी मेरे मन के पीड़ को।

एहसासों से खुद जुदा हुए तुम मैंने कब चाहा था
बसाया था दिल में, जैसे सिया राम को भाया था
मुकद्दर में थी नहीं जुदाई तुम्हारे किरदार खोटे थें
फिर कैसे गलत समझूँ अपनी हाथों के लकीर को
निर्मोही सजनी तू ना समझी मेरे मन के पीड़ को।

एहसान समझ, ये मन बावला तुमसे प्रीत लगाया
छोड़कर सारे देवालय हृदय में तेरी छवि बसाया
खुदा तुम मेरे हो न पाए, माणिक्य तुमने खोया है
अब अपने काबु में रखना अपने नयन के तीर को
निर्मोही सजनी तू ना समझी मेरे मन के पीड़ को।

हर लम्हा मेरा ठहर गया जब तुम रिश्ता तोड़ गई
रूप चाँद सा था तुम्हारा साथ उजाले का छोड़ गई
मोह आया ना माया मिली तुमको अपने प्यार पर
तुम धूर्त अज्ञानी जान ना पाई रिश्ते की तासीर को
निर्मोही सजनी तू ना समझी मेरे मन के पीड़ को।

अब कैसे समझूं निर्मोही सजनी, तू थी अनमोल रे
मोल न जाना मेरे दिल के थे तेरे बिगड़े हर बोल रे
मेरे जज्बातों से खेला तुने ज्ञात अज्ञात पहेली थी
अब पसंद नहीं करता दिल तेरी किसी तस्वीर को
निर्मोही सजनी तू ना समझी मेरे मन के पीड़ को।

डॉ. संदीप शर्मा
हमीरपुर,हिमाचल प्रदेश
फोन 094181-78176

कहानी

दुख और सुख की ढेरियाँ

वह सुबह उठता और सीधा खड्ड की ओर चल देता। यह खड्ड उसके जन्म से पहले की है और अब तक हर बरसात में बाढ़ के बाद सैंकड़ों पत्थरों को उगलती है, बस उसका काम केवल इतना था कि एक पत्थर सुबह उठा कर लाना और एक पत्थर शाम को उठा लाना। अब उसने पत्थरों को ही क्यों चुना, यह तो बूढ़े ठाणू राम का मन ही जाने पर जो भी हो उसके इन ढेरों ने गाँव के तंत्र में खलबली मचाना शुरू कर दी थी क्योंकि ये ढेर अब काफ़ी बड़े हो गए थे। कोई कहता, " यह सब बूढ़ा कब करता रहा? हमें तो पता ही नहीं चला। आखिर वह सठिया चुका है।"असल में ठाणू राम पहले तो पत्थरों को घास फूस से ढकता रहा और फिर बरसात में उगे घास व बेलों ने कुछ मदद की, कुछ उसने सब्जियों की बेलें लगाए रखीं।

गाँव के छोकरों ने एक शाम बूढ़े के पत्थरों पर सेंध लगा दी और आस-पास आग लगा दी। बस उसके बाद गाँव में पंचायत को आना पड़ा। पंचायत ने फ़ैसला किया, "अगर किसी ने पत्थरों पर बुरी नज़र डाली तो उसे दुगने पत्थर देने होंगे।'

बस उस दिन से ये दो ढेर उसकी मलकीयत तीन कनाल की ज़मीन पर दूर से नज़र आ जाते थे। उसके पास जो तीन खेत और छप्पर वाली ज़मीन थी वह उसने पहले ही गाँव के ठाकुर के पास गिरवी रख छोड़े थे। बदले में वह हर साल अपनी पत्नी के श्राद्ध के लिए ठाकुर से पैसे लेता रहता था और उस दिन पूरे गाँव को धाम खिलाता था। यह पूरे बीस वर्षों का इकरारनामा था, साथ में अपने दो समय भोजन का प्रबंध भी ठाकुर ने ही करने का वादा कर लिया था। ठाणू राम की मुख्य समस्या सदा के लिए ख़त्म हो गई थी।

गाँव में नए मकान की तैयारी करते रिटायर फौजी ने ठाणू राम के छप्पर में प्रवेश किया, "ठाणू राम मुझे ये पत्थर बेच दो, वैसे भी अब खड्ड में एक भी पत्थर नहीं बचा है, खच्चरों वालों ने सब इकट्ठे करके बेच डाले है। अब मुझे लगता है कि तुम तो इस उम्र में कुछ बनाओगे नहीं। मैं ठीक-ठाक पैसे दूँगा।"बूढ़े ठाणू राम ने बस हाथ जोड़ दिए थे, "मैं बस पत्थर ही नहीं बेच सकता बाकी चाहे तुम चाहो तो मेरे छप्पर को खरीद लो वैसे भी इस बे-औलाद बूढ़े के लिए यह सब किसी काम का नहीं, मेरी पत्नी को मरे भी कल बीस साल हो जाएँगे। बस उसके नाम पर ही सुबह शाम ले आता हूँ, इसी बहाने उसकी याद आ जाती है, बड़ा साथ निभाया था उसने।" फौजी परेशान हो गया था। वह कोई उसकी कहानी सुनने नहीं आया था। इसके बाद बड़े दिनों तक किसी गाँव वाले के मन में पत्थर खरीदने का विचार नहीं आया। बूढ़े ने अब घर से निकलना भी बंद कर दिया था। वह दिन रात इन ढेरों की चोरी से रक्षा करता। दिन में वह वहीं पत्थरों के आस-पास अपने मंजोलू पर पसरा रहता और रात को भी कई चक्कर लगाता रहता। साथ में सुबह शाम खड्ड से दो पत्थर लाने का सिलसिला भी चलता रहा, चाहे पत्थरों का आकार अब छोटा होता जा रहा था।

ये ढेर बढ़ते जा रहे थे और गाँव वालों में एक नई चिंता का बोझ भी बढ़ता जा रहा था। किसी ने इसी चिंता में डूबे कहा, "अरे! वह आस-पास की ज़मीन हथियाना चाहता है। देखा नहीं! उसके दोनों ढेर हमारे खेतों में फैलने लगे हैं।" गाँव में कई गुप्त बातें चलती रही पर किसी की हिम्मत नहीं जो बूढ़े को रोक टोक सके। कुल मिलाकर पत्थरों के ढेर चर्चा का विषय अभी भी थे। अब चाहे बूढ़ा दमे के कारण बीमार रहने लग पढ़ा था पर फिर भी सुबह शाम जैसे तैसे पत्थर लाने का सिलसिला आख़िर जारी था। कोई कहता, "भई इतने वर्ष तभी जी पाया है वरना और कई बूढ़े अभी तक तो दूसरे घर में भी बूढ़े हो चुके होंगे।"

बूढ़ा दमे से और अधिक बीमार पड़ गया, इतना बीमार कि गाँव वाले बारी-बारी उसकी दवा दारू की सलाह का आदान-प्रदान करने लगे। कोई कहता, "भाई अब यही वक्त होता है जब परिवार, रिश्तेदार या फिर गाँव का आस पड़ोस मदद के लिए उठता है।"

हो न हो सारे के सारे टोटके बूढ़े मरीज पर आजमाने के बाद किसी ईश्वर भक्त ने सलाह दी, "अब बूढ़े की अंतिम घड़ी आ चुकी है कुछ दान वान करवाओ ताकि एक तो साँसों का हिसाब जल्दी ख़त्म हो और आगे का रास्ता भी साफ़ हो जाए।"

कोई कहता, "उसकी जान पत्थरों में अटक गई है, हो न हो जब ये पत्थर नहीं होंगे तो ही बूढ़े की फुक्क रुखसत होगी।" अब हिम्मत किसको करनी थी बूढ़े से दान करवाने की और आख़िर उसके पास क्या था जो किसी को दान कर सके। उधर ठाकुर भी अब बीस साल की शर्त से मुक्त हो गया था और बस अब उसे भी ठाणू के जाने का इंतज़ार था। ठाकुर ने आख़िर गाँव के बुजुर्ग बख्सी राम को मृत्यु सइया पर लेटे ठाणू राम के पास भेज दिया। बख्सी राम ने कहा, "वैसे मैं

तो उम्र में तुमसे एक आध ही साल बड़ा हूँ , बस और कुछ नहीं तो ये जो पत्थरों के ढेर है इन्हें ही गाँव में पीपल के इर्द -गिर्द टियाले बनाने के लिए या फिर मंदिर बनाने के लिए, तुमने तो बस इस मुँह से हाँ ही करनी है।"

बुजुर्ग ठाणू ने धीरे से कँपकँपाती आवाज़ में कहा, "सुन बडके, एक राज की बात बता देता हूँ ये जो दो ढेर है ये मेरे जीवन के अपनी पत्नी के साथ बिताए समय के सुख और उसके जाने के बाद मिले दुख की निशानियों के ढेर हैं, जब मैं सुबह एक पत्थर लाता था तो उसे जीवन के सुख के ढेर पर फेंकता था और अब जैसे-जैसे ही यह ढेर बढ़ा मेरे मन को उसकी यादों से और सुख मिलता गया। जब शाम को एक पत्थर दुख के ढेर पर फेंकता था तो सोचता था कि उसके जाने के बाद मेरे जीवन में दुख भी बढ़ते जा रहे हैं। वैसे मैंने इसी आशा में अपना अधूरा जीवन लगा दिया कि मेरे मरने के बाद अगले लोक में मुझे इतने ही सुख और दुख मिलेंगे, अब मेरे जीते जी मैं इन्हें दान नहीं कर सकता। दूसरा इन्हीं पत्थरों के कारण अब मुझे जीने का मकसद नज़र आता है, ये ढेर भी अब मुझे जीने को मजबूर करते हैं। ये तो अब मेरा सहारा बन गए हैं।"

बुजुर्ग बख्सी राम ने ठाकुर को दिलासा दे दिया कि अभी बूढ़ा ठाणू कुछ दिनों में जाने वाला नहीं है इसलिए बारी-बारी उसके भोजन का बंदोबस्त जारी रखें। अगले वर्ष की एक ठंडी सुबह को ही बूढ़े को दमे का दौरा पड़ा और बूढ़ा अगली यात्रा पर निकल गया। उस वक्त उसके पास उसका बुजुर्ग बडका बख्सी राम ही बैठा था। "मरने से पहले उसने कई बार सिर हाँ में आगे पीछे किया था और साथ में अपनी अंतिम इच्छा भी बताई।" यहीं गाँव वालों को उस बख्सी राम ने बताया, "अब इससे अधिक तो ठाणू दमे के दौरे के कारण बोल ही नहीं पाया।"

बूढ़े ठाणू के क्रिया कर्म के बाद गाँव की पंचायत ने ढेरों के बारे में निर्णय लिया, "ये जो पत्थरों के ढेर थे इनमें जो स्वर्गीय ठाणू राम के अनुसार सुख का ढेर था, ये तो शाम लात 'सरकारी' ज़मीन पर लगा था तो ये पत्थर तो गाँव वाले खड्ड के पास बनने वाले पक्के शमशान घाट के लिए प्रयोग करें और ये जो दूसरा दुख का ढेर था, ये उसकी निज़ी ज़मीन पर लगा था, इसको स्वर्गीय ठाणू राम की इच्छा के अनुसार दान समझ कर गाँव के टियाले या फिर किसी और धार्मिक काम में इन्हें लगाया जा सकता है। पंच ने गाँव वालों को बख्सी राम के कहे अनुसार सुनिश्चित कर दिया कि स्वर्गवासी ठाणू राम ने अपने अंतिम शब्दों में अपनी यही अंतिम इच्छा व्यक्त की थी।

अशोक सपड़ा हमदर्द

न पूछ

कैसे हो गई यह वारदात न पूछ
दिल लगाने की शुरुआत न पूछ

फ़क़त हम मौत से खेलने लगे
कैसे फंसे ये अपने हालात न पूछ

किजकी शह किस की मात होगी
जान की बाज़ी की बिसात न पूछ

वो वादा वफ़ा कर गए न जाने कब
हुए कैसे उसके हाथ बर्बाद न पूछ

झंग मुल्तान लाहौर ढूंढ आये उसे
रह गए मुम्बई पूना गुजरात न पूछ

उमड़ आये बादल आँखों मे अपने
हो रही अश्को की बरसात न पूछ

खुद अपनी गर्दन उसके हाथ दे दी
हमारी जान गई या नहीं बात न पूछ

प्रिये

सुनो न कभी तो दिल की बात प्रिये
करलो शरारत घनी अंधेरी रात प्रिये

तुम्हे न भाऊ मैं कैसे यह हो जाएगा
मर जाऊँ जो टूटे तेरा मेरा साथ प्रिये

मिले जो तू तो तेरे लबों से पिये हम
करनी तुमसे ऐसी ही खुराफ़ात प्रिये

अलाएँ बलाएँ बंगाली बाबा जानेगा
खुदा से माँग आया मैं तेरा साथ प्रिये

मेरा चेहरा पढ़ लें किताबो जैसा तू
छोटी सी ख्वाईश में मेरी हयात प्रिये

मैं बनकर छाऊंगा आशती की घटा
तूम कर देना इश्क की बरसात प्रिये

देख अंधेरी रात दिल जलाकर आया
मिलन की तुझसे है तवक्कुआत प्रिये

सिला मिलेगा अपनी चाहत का हमें
ख्वाबो से मेरे कर ले मुलाक़ात प्रिये

कहानी

मनीष कुमार सिंह
एफ-2, 4/273, वैशाली, गाजियाबाद,
उत्तर प्रदेश, 8700066981
ईमेल:manishkumarsingh513@gmail.com

लक्ष्मी पूजा

बंसल ने रुमा को फोन करके कहा कि उसे ऑफिस से आने में थोड़ी देर होगी। वह होटल मेरिडियन में होने वाली मीटिंग को अटेण्ड करके आएगा। देर तो लगभग रोज होती थी लेकिन मेरिडियन की बात सुनकर वह खुश हो गयी। अपने पति की उन्नति से कौन स्त्री प्रसन्न नहीं होगी। बड़े लोगों के बीच उठने-बैठने की बात अलग है। अनायास ही कामवाली के द्वारा दो बार सफाई करने के बाद भी वह स्वयं ड्राइंगरुम में कांसे के सारे शोपिस साफ करने लगी। सोचा कि दीवाल पर टँगी मार्डन आर्ट की पेटिंग को कहीं और लगा दे। शायद ज्यादा जँचेगा। किसी के बैठते ही नजर पड़ेगी। फिर उधेड़बुन में वही रहने दिया। ठीक ही तो लगा है।

कॉलबेल की आवाज आयी तो रुमा ने सोचा कि अभी कौन आया होगा। नौकर ने दरवाजा खोला। पास में अपना ठेला लगाकर लोगों के कपड़े इस्तरी करने वाले धोबी के बच्चे थे। थोड़े मैले कपड़े पहने संकुचाए से खड़े थे। उसे नौकर के पीछे से झाँकते देखकर एक ने कहा,"आँटी आपके कपड़े।"

"ठीक है। दे दो।" वह लापरवाही से बोली। अपने आकार से बड़े कपड़े पहने दो बच्चे नौकर को कपड़े थमाने के बाद एकाध पल अपनी जगह खड़े रहे। लड़की जोकि बड़ी थी लगभग अपनी सारा की उम्र की, जरा उचक कर भीतर झाँक रही थी। शायद मार्डन आर्ट को देखकर वह कुछ समझने का प्रयास कर रही थी। उसका छोटा भाई हनी से एकाध बरस कम ही होगा। नाक सुड़कते हुए वह अपनी बहन के साथ चला गया।

नौकर को अपने लिए बिना दूध-चीनी की कॉफी बनाने को कहकर वह फैशन तथा लाइफ-स्टाइल से सम्बन्धित मैगजीन देखने लगी। यह मानना पड़ेगा कि पिछले कुछ सालों के भौतिक उपलब्धियों के सोपान पर निरंतर आरोहण ने बंसल दम्पत्ति को कुमार, विरमानी एवं मनोचा के समकक्ष पहुचा दिया था। अध्यवसाय,परिश्रम इत्यादि के अतिरिक्त उसने व्यवसायिक पटुता तथा पेशेवर तौर-तरीकों का भी सहारा लिया था। महीने में लगभग एक या कभी-कभी दो बार जब ड्रिंक्स पर मण्डली जमती तो रुमा को एक नामालूम खुशी होती। वह कुमार के मजाक और टिप्पणियों का बुरा नहीं मानती तथा न ही अपने पति द्वारा पुराने जान-पहचान वालों से किनारा करने को गलत समझती। सम्पन्नता आने पर लोग थाली में चोंच मारने आ जाते हैं। ऐसे लोग मुर्गे या बत्तख की तरह पक्षी होते हुए भी कभी उड़ नहीं पाते पर औरों को बढ़ते देखकर जलते हैं। बंसल इन्हें जलनखोर न कहकर क्रैब मेनटेलिटी पीपुल कहता। वह उसकी इस उक्तिवैचित्रय से प्रभावित होती।

रात करीब नौ बजे गाड़ी की आवाज सुनकर वह समझ गयी कि पति का आगमन हुआ है। बंसल ने जूते उतारते हुए कहा,"किसी के मन की थाह जानना बड़ा मुश्किल है। जो कमबख्त हमारे साथ बैठकर पीते हैं वे ही मौका मिलने पर बेईमानी करते हैं।" उसने प्रश्नसूचक मुद्रा में पति की ओर देखा। "अरे मैं कुमार की बात कर रहा हू। मेरा प्रमोशन होने के बाद उसका रवैया बदल गया। अब किसी की इंऐफिशियन्सी के लिए जिम्मेवार मैं थोड़े न हू।...नए प्रोजेक्ट को मुझे दिया जाना था। साले ने ऊपर जाकर न जाने कौन सी आग लगा दी कि बॉस ने आखिरी वक्त पर डिसीजन बदल दिया।"

रुमा ने अपनी निराशा छिपाते हुए कहा,"छोड़िए चिन्ता करने से क्या होगा। ऊपर वाला सब देखता है।" बिल्कुल सही समय पर उसे ईश्वर की याद आयी। पिछले साल बंसल ने उसे नेकलेस का पूरा सेट शादी की सालगिरह पर दिलाया था। वह पूरे हफ्ते बड़े रोमांटिक अंदाज में अपने पति से पेश आयी। आमतौर पर बंसल कभी छुट्टी लेकर घर नहीं बैठता था। संडे को भी काम पर भागता लेकिन उन दिनों में शाम में बाहर खाने जाते और छुट्टी में वह लांग ड्राइव पर भी गया। इस दीवाली में प्रोजेक्ट मिलने पर काफी उम्मीदें थी। दम्पत्ति को आशा थी कि कतिपय भौतिक उपादान प्राप्त होगें और कैरियर की उर्ध्वगामी उड़ान भरेगा। लेकिन कल्पना की यह उड़ान मानो मौसम की खराबी के कारण रद्द हो गयी।

बच्चे अगली छुट्टी में विदेश यात्रा की फरमाइश कर रहे थे। जोश में रुमा ने हामी भर दी थी। सोच-समझकर निर्णय लेने वाले बंसल ने पिता और पेशेवर के बीच संतुलन बरतते हुए बिना कोई समय-सीमा तय किए इस माँग को सिद्धान्त रुप में स्वीकार कर लिया। लेकिन औलादों की माँग शनै: शनै: जोर पकड़ने वाली होती है जो अन्तत: माता-पिता को मानने को विवश कर देती है। हनी तो खैर कुछ नहीं समझता है। जो कह दिया बस वह

चाहिए। सारा भी अपनी फ्रेन्डस् की मिसाल देते हुए इस मॉग पर जोर देगी। वैसे रुमा ने एक काम सोच समझकर किया कि अपनी बेटी का नाम नए जमाने के हिसाब से रख दिया। वरना सासुमॉ का रखा नाम सरस्वती बेहद पुराना लगता था।

इस दीवाली में गिफ्ट वगैरह मिलने की अच्छी उम्मीद थी। पदोन्नति के बाद डिब्बों की संख्या व आकार में आशातीत वृद्धि होनी चाहिए थी। उसे याद था कि कुछ साल पहले वह अपने पति के साथ गगनचुम्बी अट्टालिकाओं को हसरत से निहारती हुई प्रापर्टी डीलरों के पास फ्लैट देखने जाया करती थी। इसी उधेड़बुन में रहती कि बजट में अपने अरमान कैसे समाए। बंसल के बैचमेट के यहॉ जब वे गए तो उसकी पत्नी ने अपने चार बॉलकनी वाले फ्लैट का उसे निरीक्षण कराया। फिर गर्व से बोली कि ट्वेल्थ फ्लोर से यहॉ से मीलों दूर बहती नदी दिखती है। यह नदी उसकी दुखती रग सी लग रही थी। दोस्त की स्त्री के शरीर पर सजे आभूषणों को चोर नजर से देखती रुमा वापस ड्राइंग रुम में सोफे पर बैठ गयी। वहॉ बंसल मित्र की सफलता की कहानी और गुर सुन रहा था।

कामवाली ने आकर उसकी तन्द्रा भंग की। "भाभीजी आज खाने में क्या बनेगा?" वह इस सम्बोधन को पसंद तो नहीं करती थी परंतु इन लोगों के नखरे देख-देख कर परेशान थी इसलिए कुछ नहीं बोलती थी। प्रकट में कहा,"सब्जी-दाल कल वाली मत बनाना। फ्रिज में नौकर ने लाकर रखा है। उसे बना दो।" कामवाली धोबी की औरत थी। उसका छोटा लड़का भी साथ आया हुआ था। करीब पॉच साल का बालक मलिन सस्त्र धारण किए खड़ा था। उसका धूसर मुख कपड़े से मेल खा रहा था। उसके एक हाथ में प्लास्टिक का कोई पुराना खिलौना था। दूसरे हाथ की उँगली मुह में डालकर वह उसे निर्निमेष दृष्टि से देख रहा था। वह तनिक वितृष्णा से बोली,"जरा इसे साफ रखा कर। ये क्या हाल कर रखा है? भला नहाने-धुलाने के भी पैसे लगते हैं?" कामवाली ने कोई प्रतिक्रिया नहीं प्रकट की। पर शायद अंदर ही अंदर तनिक शर्मिंदा हुई होगी। या हो सकता है कि इन लोगों का यही स्तर है। कोई फर्क नहीं पड़ता है। रुमा ने जरा तरस खाकर नौकर से कहा कि वह पीछे के कमरे में हनी के यूँ ही पड़े पुराने खिलौनों में से कोई एक इसके लड़के को दे दे। खिलौना पाकर लड़के की ऑखें रंगीन शीशे की तरह नानावर्णी होकर चमक उठीं। वह एक हैलिकॉप्टर था। उसका एक डैना टूटा हुआ था। बैटरी चालित खिलौना वैसे तो अच्छी कीमत का था पर इस अवस्था में कम से कम इस घर के बच्चे के खेलने योग्य नहीं था।

इससे पहले भी कामवाली की लड़की को एक बार दयावश रुमा ने खाने को रात के पड़े चावल दिए थे। नौकर ने जब उसकी थाली में चावल डालना शुरु किया तो ऐसा लगा कि वह किसी गाय-भैंस को चारा दे रहा हो। इतना यह कैसे खा पाएगी। रुमा हैरान थी लेकिन थोड़ी देर में वह सारा चट कर गयी।

"कुछ खाने को नहीं देती है क्या?" उसने दया और जुगुप्सा मिश्रित भाव से पूछा।

"जितना बन पड़ता है देते ही हैं।" कामवाली ने अपने हिसाब से जवाब दिया। इतनी क्या आफत आयी है उसे। उसने सोचा। कितने घरों में काम करती होगी। मर्द भी कपड़े इस्तरी करता या रिक्शा-ठेला खींचता होगा। ये लोग बस ऐसे ही हैं।

"पिछले साल खेती बगैर बारिश के चौपट हो गयी भाभीजी।" कामवाली कह रही थी। झाड़ू लगाते हुए उसने एक और बात कही। "टी.वी.,फ्रिज, गाड़ी के लिए बारिश-पानी की जरुरत नहीं होती पर अनाज-सब्जी बिना इसके नहीं उगेगे।"

दीवाली में उपहारों के पैकेट सहेजते हुए रुमा प्रफुल्लित रहती। पर मन के भाव गंभीरता और औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन की परतों के भीतर आवृत रखती। कुछ दफा तो स्वीकार करते समय प्रदर्शन करना पड़ता जैसे वह देने वाले पर उपकार कर रही हो। वह सरसरी तौर पर डिब्बों को देखता हुआ कुछ सोचता रहा। "इनमें से किसी ने गोल्ड क्वाइन भी दिए हैं?" ड्राई फ्रूटस्, मिठाई ओर क्रॉकरी सेट के बीच वह खासतौर पर क्या देखना चाहता था यह स्पष्ट करके उपेक्षा भरी दृष्टि से पुन: ढ़ेर की ओर नजर फेरी। अपनी खुशी को अप्रभावित रखकर रुमा ने जानकारी दी कि एक पार्टी ने चॉदी की तश्तरी और दो कटोरियॉ भिजवायी हैं। बंसल ने चेहरे पर सिगरेट और शराब के सेवन से असमय छायी लकीरों के मध्य कौंधी चमक को दक्षता से छिपा लिया। "हू ठीक है।"

दीवाली के सामान को पूजा-घर में रखकर रुमा अपनी तैयारी से कुछ संतुष्ट नजर आयी। पीछे से बंसल के आने पर उसे लगा कि सदैव व्यस्त रहने वाला पति घरेलू कृत्यों में भी साझीदार होने आया है। "ये कैसे दीये हैं?" उसने रंग-बिरंगे मोम से भरे एलयूमिनियम के दीये को देखकर पूछा।

"ये डिजाइनर दीये हैं।" वह हॅसी।

"एक हमारे अलवर में दीवाली होती थी। मिट्टी के दीयों में तेल भरकर दरवाजों,ऑगन में रखकर सारे बच्चे बड़ों के साथ पूरे छत की रेलिंग पर दीये सजाते थे। आधी रात के पहले एक भी नहीं बुझता था।" वह आश्चर्यजनक रुप से अतीत में चला गया। रुमा उसकी इस क्षणिक अतीतजीविता पर मुस्करायी। अपने आरामदेह व सजे-सॅवरे फ्लैट की दोनों बॉलकनियों पर बच्चों के साथ चंद दीये जलाकर रसम अदायगी कर लेती थी। उसे भली प्रकार याद था कि पिछले साल दीवाली के मेल-मिलाप में मिसेज मनोचा ने उसकी त्वचा के विषय में टिप्पणी करते हुए कहा कि वाऊ, लवली चिक्स्। बिल्कुल पी.एच. बैलेंस्ड है। वह याद करके इतरा उठी।

वीकएंड पार्टी में बंसल अपने बैचमेट, सहकर्मी इत्यादि के साथ जीवन जीने में लगा था। कुमार के प्रति अपने भाव छिपाकर वह हॅसी-मजाक कर रहा था। ऐसे समय हर तरह के हास्य-परिहास की छूट थी। बीच-बीच में

मदिरा के सरुर में कोई कैरियर, सोसाइटी से लेकर दुनिया-जहान तक की बातें भी कर लेता था। विरमानी अभी पिछले दिनों जापान गया था। उसने मामला फिट करके काम के सिलसिले में टूर बनवा लिया। जाहिर था कि इसके पीछे बॉस की कृपा होगी। "हमारे और उनके यहाँ में बहुत फर्क है।" उसने बिना पूछे अपना अनुभव बताया। "वहाँ प्लानिंग करने में काफी वक्त लगाते हैं लेकिन उन्हें इंमप्लिमेंट जल्दी कर देते हैं। इस कंट्री में प्लानिंग जल्दबाजी में होती है पर पूरा करने में जमाना लग जाता है।"

"यू आर राइट।" मनोचा ने गिलास लहराते हुए उसका तक्षण समर्थन किया। कुमार का भी इस विमर्श में हस्तक्षेप करना लाजमी था। "बस मैटिरियल प्रोग्रेस को टारगेट करने से क्या होगा जब तक हम सोशल और कल्चरल चेंज नहीं लाएगें। यार मैं फ्रैंकली कहता हूँ कि हम जो चढ़ावा मंदिर और भगवान देते हैं वही जरुरतमंदों को दिया जाए तो सोसाइटी का कल्याण होगा। कम से कम पैसा सही जगह जाएगा।" मनोचा ने इस व्याख्यान को सुनते हुए सिगरेट के धुँए को कलात्मक छल्लों में परिवर्तित कर दिया। वातावरण में विलीन होने से पूर्व वे किसी अन्तर्राष्ट्रीय खेल के आयोजन के चिन्ह प्रतीत हो रहे थे। वह स्वयं भी फ्रेंच कट दाढ़ी में प्रखर बुद्धिजीवी सद्दृश्य लग रहा था। "माई डियर काइंडली मुझे यह बताओ कि आज हमारे यहाँ गरीब कौन बचा है। टेल मी..। आज स्लमस् में भी कलर टी.वी., फ्रिज मिल जाते हैं। काम करने वालों के लिए पैसे कमाने के सारे मौके हैं।" उसने बीच में नफासत से एक घूँट कर पाते हैं। इधर लोअर क्लास को किसी किस्म का टैक्स नहीं देना पड़ता है। चाइल्ड केयर और एजूकेशन पर एक ढ़ेला नहीं खर्च करना। हमें हर चीज सोचना और करना है। डैम इट..। मेरी कामवाली,यू नो...।"

"छोड़ यार," विरमानी ने उसे टोका,"अब रहने दे।" लोग हो-हो करके हँसने लगे। कुछ पल के लिए बंसल भूल गया कि उसका भीतरघाती कुमार उसके साथ महफिल सजाए हुए है।

"बॉस भी बिल्कुल एब्सट्रैक्ट व्यवहार करता है।" थोड़ा सरुर चढ़ने पर बंसल ने मन की बात कही। "समझ में नहीं आता आखिर चाहता क्या है।" लोगों के कान खड़े हुए। "कभी कटखने कुत्ते की तरह बिहेव करता है तो कभी बेहद नरम होकर बोलता है।○"

"अगले महीने फॉरेन डेलिगेशन आ रहा है," मनोचा थोड़ा हिल रहा था,"सबके सब एक साथ हाथ खड़े कर देते हैं। कर ले जो करना है। अकेला निपट नहीं पाएगा।" इस पर लोग उत्साह से मुस्कराने लगे। कुमार कुछ ऐसी बाते करने की घात में था कि सबके मुँह लटक जाए पर वह इसे बारीक तरीके से अंजाम देना चाहता था। "माई पेज थ्री फ्रेंड्स् बॉस इज गोइंग टू थ्रो एक ग्रांड पार्टी नेक्सट बीक। बी प्रिपेयर फॉर दैट।" उसे मालूम था कि इस बात का किसी को गुमान नहीं है। शायद उसे छोड़कर कोई और आमंत्रित भी नहीं होगा। बंसल उसकी बात भाँपकर हँसा,"वह पार्टी फेंकता जाए और तुम बटोरते जाओ।" लोगों ने कहकहा लगाया। प्रतिद्धन्द्धी के बाण को काटकर वह हर्षित हुआ। परंतु मन की पीड़ा जलाशय के तल में बैठे पत्थर की भाँति यथावत रही। क्या वह कुत्ते-सियार की तरह जूठनखोर बन कर रह जाएगा। इस तनाव में भी वह किसी आन्तरिक वातानुकूलन के जरिए आक्रोश का शमन किए हुए था।

आने वाले दिनों में ऊँट किस करवट बैठेगा यह प्रश्न बर्रो के झुण्ड की तरह सभी को इस महफिल में भी डँस रहा था। वह बारम्बार एक दूसरे की अतीत में की गयी फूहड़ता व असफलताओं पर हँसकर या औरतों के विषय में अश्लील परिहास कर इस चिन्ता को अपने से दूर भगा रहे थे पर वह कुछ क्षणों पश्चात् देशाटन करके पुन: मस्तिष्क में अतिक्रमण कर रही थी। मनोचा कुछ ज्यादा चढ़ा गया था। "एक्च्युली आई अवाएड फंक्शनस् एंड पार्टिस् वीच ऑर नॉअ अप टू माई टेस्ट।"

विरमानी वक्र मुस्कान से उसे देख रहा था। तिर्यक दृष्टिपात करके बोला,"यार घर तक तो पहुँच जाएगा ना।"

मनोचा ने उसे घूरा। "ऐसे कितने पेग पीकर चला सकता हूँ। यू नो मेरी गाड़ी में एक भी डेंट नहीं है।"

कुमार ने दोनों के मध्य चल रहे खेल का मजा लेने के लिए कहा,"ऐसा कैसे हो सकता है?" आदमी गाड़ी लेकर सड़क पर निकले और खरोंच न आए।" बंसल का दिमाग राजमार्ग पर दौड़ते वाहन की तरह चल रहा था। आखिर बॉस क्या चाहता है। आज नहीं तो कल जरुर कोई बड़ा फेरबदल करेगा। घटना चाहे दूर ही हो पर ध्रुवीय क्षेत्र में हिमनदों का पिघलना श्रृंखलाबद्ध परिणाम प्रस्तुत करता है। दूर कहीं तटीय इलाकों की जनसंख्या जलस्तर बढ़ने से प्रभावित हो सकती है। उसने सुना था कि बॉस अपनी कम्पनी के चार बैलेंस शीट तैयार करता है जो कि उसके निकटतम लोगों के संज्ञान में भी नहीं रहती। आवश्यकता पड़ने पर वह निष्ठा बदलकर दूसरी जगह जाने को तैयार था। परंतु किसी भी निर्णय लेने से पूर्व वह उपकर्णिका और जनश्रुतियों की बजाए तथ्याश्रीत आधार पर अग्रसर होना उपर्युक्त समझता था। क्या पता ये तीनों महानुभाव जो हर बात को आत्यंतिक ढ़ंग से कटूक्तियों में व्यक्त करते हैं, उसके विरुद्ध किसी घातक त्रिभुज की रचना कर रहे हो।

रुमा ने बाद में उसे चिन्तित देखकर कहा कि कैरियर गाड़ी की तरह है। ज्यादा रफ्तार से बेहतर है कि गाड़ी आपके नियंत्रण में हो। अन्त में यह परामर्श दिया कि दीवाली के उपलक्ष्य में एक बढ़िया सा गिफ्ट लेकर यदि बॉस के घर दोनों चले तो अच्छा प्रभाव पड़ेगा। आखिर जो लोग हमारे यहाँ भी उपहार पहुचा रहे हैं वे कोई रिश्तेदारी के नाते तो यह सब कर नहीं रहे।

दीवाली के उपलक्ष्य में मिले उपहारों को समेट कर रुमा ने पलंग पर लगवा लिया। कामवाली को दूसरे कमरे में भेज दिया था। कहते हैं कि अपनी सम्पन्नता देखकर दूसरों की हाय लगती है। कम से कम न्यून सम्पन्न लोगों की नीयत जरुर खराब होती है। संशय के इस

तिमिरावृत में बंसल दम्पत्ति प्रत्येक चीज का आकलन करने लगे थे। लेकिन फिर सोचा कि ये सब बेकार की बात है। उसे बुलाकर सारे पैकेट करीने शीशे के सेल्फ में रखवा दिया।

कामवाली सहसा बोली,"भाभीजी एक साल हो गया है। पगार बढ़ाओ।"

"अरे तूझे पगार की पड़ी है। हम पहले ही अगल-बगल वालों से ज्यादा दे रहे हैं।" वह इस असमय मॉग पर मन ही मन खीझ गयी। फिर मामला शांतिपूर्वक सुलझाने के लिए पचास का एक नोट बढ़ाया। "दीवाली की मिठाई ले लेना।" कामवाली ने निस्तेज नेत्रों से देखते हुए नोट पकड़ लिया।

थोड़ा रुककर वह रुमा को सम्बोधित करके बोली,"भाभीजी अगले हफ्ते से सुबह जरा देर से काम पर आऊगी।"

"क्यों?" वह आशंकित हो उठी। अभी ही कौन सा सुबह-सुबह आती है।

"हमारी झुग्गी अब पास में नहीं रहेगी। गवर्नमेंट वाले आए थे। कहते हैं कि तुम सबके खिलाफ कम्प्लेन है। गन्दगी फैलाते हो। यहॉ से सब हटाओ। इसलिए बाहर वाली सड़क पर झुग्गी डालनी पड़ेगी।...इसमें थोड़ा टाइम लगेगा। कुछ दिन में सब ठीक हो जाएगा।" उसके ऊपर कोई ज्यादा फर्क न था। रुमा आश्वस्त नजर आयी। चलो काम तो जारी रखेगी। "तुम लोग भी पूजा करते ?" उसने यूँ ही उससे पूछ लिया। बदले में वह विद्रूपता से हॅसी। कैसे लोग हैं। त्योहार साल भर पर आता है। दीया जलाकर देवी की दो पल पूजा करने में क्या जाता है। सहसा उसे ध्यान आया कि ये लोग पता नहीं कहॉ के होगें। बंगलादेश से निकली अमर बेल के अंश या अपने ही देश के किसी पिछड़े इलाके से उखड़े लोग। क्या पता...।

दीवाली आखिर सभी के लिए आयी। अपने सुरुचिपूर्ण ढ़ंग से सजाए पूजा-घर में रुमा ने सारे उपहार लाकर लक्ष्मी-गणेश की चॉदी की प्रतिमा के समक्ष रख दिए। पूजा के दीयों की चमक में झिलमिला रहे उपहारों को निहार कर वह औरों से अपनी सापेक्षिक उच्चता के अहसास का आनन्द लेने लगी। दीवाली के उपलक्ष्य में उसने बैंक के लॉकर से अपने सारे गहने भी निकलवा लिए थे। लेकिन उसके मनस्वी पति ने सोसाइटी में सुरक्षा के तमाम प्रबंधों के बावजूद चोरी की दो घटनाओं का उदाहरण देते हुए चेताया कि वह इन्हें पुन: लॉकर में स्थानान्तरित कर दे। यह सुनकर वह दुर्स्वप्न से जगे व्यक्ति की तरह सहमी सी लगी। मनुष्य के सुख और दुख की मूल अनुभूतियॉ अलग मनस्थिति व अवस्था में अन्य जटिल भावों में परिवर्तित हो जाती है।

बंसल दम्पत्ति ने सोसाइटी के सफाईवाले को भी बख्शीश दी। लोगों ने देखा कि एक लॅगड़े भिखारी को कामवाली के मर्द ने दो रुपए का सिक्का दिया। कामवाली के बच्चे अगले दिन सड़क पर गिरे अधजले पटाखे इकठ्ठा कर रहे थे। पिछली रात भी उन्हें चंद फुलझड़ियॉ और कुछ और पटाखों के साथ दो अनार भी जलाने को मिले थे। मॉ-बाप ने लाई के साथ चीनी के खिलौने भी दिलवाए थे। उनकी खुशी किसी से कम नहीं दिख रही थी। वह पहले उन खिलौनों से जी भरके खेलते फिर उन्हें खाते। लड़की ने तो मॉ की ऑख बचाकर पुरानी रजाई से कुछ रुई बाती बनाने के लिए निकाली और पॉच पुराने दियों में इधर-उधर से मोम जमा करके जलाए। उसका भाई उत्साह से इस कार्य में मदद कर रहा था। पीछे से आकर जब उनके मॉ-बाप खड़े हो गए तो बच्चों ने समझा कि वे नाराज होगें पर उनके चेहरे पर मुसकराहट थी। उनके भावावेग की निश्चल ध्वनियॉ कानफोडू पटाखों की आवाज में भी सुनी जा सकती थी। इस परिवार को देखकर यह बिल्कुल नहीं प्रतीत होता हो रहा था कि शायद कुछ दिनों में शहर के सौन्दर्यीकरण या ऐसी ही किसी वजह से उन्हें यह जगह छोड़कर जाना भी पड़ सकता है। दरअसल वे ऐसी खाल नहीं ओढ़ते थे जिसमें दम घुटता हो।

दीपक कुमार

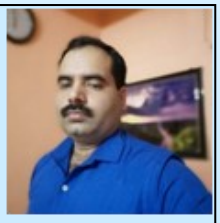

धूप

शिवरतन बड़बड़ा रहा था
बुखार में
धूप तेज थी, लग गयी।
गर्म तावे सी देह
ठंडी नब्ज
सिरहाने लोहे की तपती कुदाल
शिवरतन बदहाल
खाट पर फड़फड़ा रहा था
धूप तेज थी, लग गयी
और इधर मैं हाथ, पैर, रीढ़ की
हड्डियों में दर्द से परेशान
ढूंढता इलाज
छानता हूँ खाक।
डाक्टर कहते हैं.....
विटामिन डी नहीं है
मेरे खून में धूप की कमी है।
अब जाकर हुआ कुछ संतोष
कहता है मन निर्दोष
चलो कुछ तो अधिक है मुझसे
शिवरतन के पास
और कुछ नहीं
तो धूप ही सही।

कृष्ण कुमार यादव
पोस्टमास्टर जनरल,
वाराणसी परिक्षेत्र, वाराणसी-221002
मो0- 09413666599 ई-मेल: kkyadav.t@gmail.com

कहानी

हकीकत

आज सुबह से ही उसके पांव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। उसने सपने में भी नहीं सोचा होगा, जो आज हो रहा था। आज के सूरज की चमक में उसके चेहरे की चमक दोगुनी हो चली थी। आज उसके 'माँ' होने का गर्व उसके क्रियाकलापों से झलक रहा था। इतना खुश तो वह उस दिन भी नहीं हुई थी, जब उसे बेटा हुआ था। आखिर किस रूप में सोचकर बेटे होने का गर्व मनाती। आज भी 'वह दिन' जेहन से निकला नहीं हैं, जब वो इसी बेटे के कोख में आने पर मार देने तक का ख्याल कर गई थी। लेकिन माँ की ममता ने दिमाग पर विजय पाई और आज वही बेटा आई.पी.एस. अधिकारी बनकर अपनी माँ के पास आ रहा था। आखिर किसे पता था कि एक आदिवासी का बेटा एक दिन आई.पी.एस. भी बन सकता है। दिन-रात जी तोड़ परिश्रम कर उसने राकेश को स्कूल में पढ़ाया और कोचिंग संस्थान में भी दाखिला दिलाया। जैसे ही उसने बेटे के चयन की खबर सुनी मानो उसे अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। बार-बार वह सोचती कि ठीक से तो देखा होगा न, कहीं दूसरे के नाम को तो अपना नहीं समझ लिया। आश्वस्त होते ही उसकी आँखों से झर-झर कर आँसू गिरने लगते पर आंसुओं के साथ ही पुराने दृश्य भी कौंध जाते।

उसका नाम गीता था। अचानक उसे 25 वर्ष पुरानी बात याद आ गई। उस समय तक उसकी शादी नहीं हुई थी। उसके पिताजी एक फारेस्ट रेंजर के यहाँ दिहाड़ी पर माली का काम करते थे। जब भी पिताजी की तबियत खराब होती, उस दिन वह फूलों को सजाने-संवारने जाती थी। जिस अधिकारी के यहाँ उसका पिता माली का कार्य करता, वह अधेड़ उम्र का था और उसकी पत्नी गुजर चुकी थी। कई बार जब रसोईया नहीं आता तो गीता ही खाना भी बना देती थी। इसके एवज में कुछ पैसे ज्यादा मिल जाते थे। वह जाड़े की एक सर्द शाम थी। पिताजी की तबियत खराब होने के कारण उस दिन माली के कार्य के लिए उसको ही जाना पड़ा था। अचानक अधिकारी ने आवाज लगाई। वह कमरे में गई तो पता चला कि रसोईया आज नहीं आया है और खाना उसे ही बनाना है। वह रसोई की ओर मुड़ी और जल्दी-जल्दी बर्तन साफ कर खाना बनाने में जुट गई। कुछ देर बाद उसे अहसास हुआ कि उसके पीछे कोई खड़ा है। पलटकर देखा तो रेंजर साहब थे। कुछ चाहिए क्या साहब जी?....हूँ। क्या.....

रेंजर ने उसकी आँखों में झाँका तो घबड़ाकर उसने आँखें नीची कर लीं अगले ही क्षण रेंजर ने गीता को बाहुपाश में ले लिया था। फिर तो गीता बस छटपटाती रह गई थी। रेंजर ने उसके हाथ पर कुछ पैसे रखे और हिदायत दी कि किसी को बताना नहीं।

वह अंतिम दिन था जब वह रेंजर के घर काम करने गई थी। घर लौटी तो खामोश थी। पिताजी सर्दी से कांप रहे थे, उनको कंबल ओढ़ाया और झोपड़ी के एक कोने में दुबक गई। पूरा बदन दर्द से कराह रहा था, उस पर से कड़कड़ाती ठंड। वह अपने आंसुओं को रोक नहीं पाई थी और सिसकियों के साथ कब नींद के आगोश में चली गई, पता ही नहीं चला। अगली सुबह जब जगी तो शरीर का दर्द तो कम हो चुका था, पर मन में रह-रहकर वह पल कचोट रहा था। पर वह कर भी क्या सकती थी ? रेंजर के विरूद्ध कुछ कहना तो खतरे से खाली भी नहीं था। आदिवासियों का शोषण तो वे अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते थे और आदिवासी इसे अपनी नीयत मानकर खामोश रह जाते थे। पिछले साल की ही तो बात है, जब दौरे पर आए एक अधिकारी ने एक आदिवासी लड़की से बलात्कार करने की कोशिश की और उसके शोर-शराबा करने पर उसके पूरे परिवार को गेस्ट हाउस में चोरी के आरोप में जेल भिजवा दिया।

गीता के चेहरे की खामोशी उसके पिताजी से छिपी न रही। पर जब भी वह पूछने की कोशिश करते तो वह तबियत खराब है, कहकर बात खत्म कर देती। उसे अपने मुँह खोलने का अंजाम पता था। पिताजी को भी लगता कि बेटी जवान हो गई है, अतः उसके हाथ पीले कर देने चाहिए। कुछ ही महीनों बाद उसकी शादी भी हो गई। पहली ही रात पति आया तो मुँह से महुआ की कच्ची शराब की गंध आ रही थी, पर अब यही उसका जीवन था। शादी को हफ्ते भर नहीं बीता था कि पति ने आदेश सुनाया कि घर में बैठोगी तो निवाला कहाँ से मिलेगा? फिर तो वह भी पति के साथ मजदूरी में हाथ बँटाने लगी।

कुछेक दिनों बाद ही उसे अपना पेट भारी महसूस होने लगा, उल्टियाँ होने लगी तो पति को राहत महसूस हुई। चलो मजदूरी में हाथ बँटाने वाला एक हाथ और बढ़ जाएगा। पर असलियत तो सिर्फ उसे पता थी। राज खुलने का डर उसे अंदर से ही भयभीत कर देता था। कई बार उसने सोचा कि इस पाप को नष्ट कर दूँ, पर अगले ही क्षण

अपने पेट पर हाथ फेरती तो सोचती कि इस मासूम का क्या दोष? अंततः वह दिन आ ही गया, जब उसने एक सुंदर से बच्चे को जन्म दिया। कभी वह बच्चे का चेहरा देखती तो कभी उस पल को याद करती। अचानक गालियों की बौछार के साथ उसके पति ने प्रवेश किया-"ये कलमुँही यह किसका पाप लेकर मेरे घर आई है? अभी तो 9 महीने पूरे भी नहीं हुए।" वह कुछ नहीं बोली बस गालियों की बौछार और कभी-कभी थप्पड़ की मार बर्दाश्त कर लेती। वक्त हर घाव स्वयं ही भर देता है। समय के साथ उसने 6 बच्चों को और जन्म दिया, जिनमें से 4 तो असमय ही चल बसे। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते गए, जिम्मेदारियाँ भी बढ़ती गई। बड़ा बेटा राकेश देखने में जितना खूबसूरत था, पढ़ने में उतना ही होनहार। जंगलों के बीच घिरे उस आदिवासी बहुल इलाके में न तो शिक्षा का कोई साधन था और न ही कोई परिवेश। जंगल से बाहर पाँच किलोमीटर की दूरी पर एक स्कूल था। जो भी बच्चे पढ़ने जाते, वहाँ तक पैदल जाते। गीता के भी तीनों बच्चे पढ़ने जाते। पर उनमें से सिर्फ राकेश ही पढ़ाई पूरी कर पाया।

इस बीच आदिवासी इलाकों में बाहरी घुसपैठ बढ़ने लगी थी। कभी ट्रक और ट्रैक्टरों पर सवार लोग उतरते तो कभी बंदूकों के साये में। जंगल की जमीन सरकार ने उद्योगपतियों के हवाले करना आरंभ कर दिया था तो सड़कों का जाल भी बिछने लगा। तमाम आदिवासी ठेकेदारों से मिन्नत करके काम पा जाते तो कुछ आदिवासी इसे घुसपैठ के रूप में लेते। ठेकेदार आदिवासियों का जमकर शोषण करते, उनसे खूब काम कराते पर मेहनताना सप्ताह में दो-तीन दिन ही देते थे। जिन आदिवासियों ने बगावत की उन्हें माओवादी और नक्सलवादी बताते। जंगल विभाग के साथ-साथ इलाके में अब पुलिस विभाग की गतिविधियाँ भी बढ़ गई थीं। इसी के साथ-साथ तमाम एनजीओ, समाज सेवी संस्थाओं, राजनैतिक दलों से जुड़े लोगों की इलाके में आवाजाही बढ़ने लगी। हर किसी के विकास के अपने मापदंड थे। कोई आदिवासियों को वोट बैंक के लिए पुचकारता और सब्जबाग दिखाता तो कोई उन्हें समझाता कि किस तरह सरकार उद्योगपतियों के साथ मिलकर उनकी जमीन और जंगल हड़प रही है। एक तरफ तमाम संस्थाएं आदिवासियों में चेतना जगाने के नाम पर अपना विस्तार कर रही थीं, वहीं राजनेता अपनी रोटियाँ सेंकने में व्यस्त थे। फिर इन सबसे मीडिया कैसे दूर रहता। प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया ने भी यहाँ अपने लिए स्पेस ढूंढ लिया। जो आदिवासी कभी मुख्यधारा से कटे थे, अचानक वे सुर्खियों में आ गए थे। माओवाद और नक्सलवाद जैसे तमाम जुमले उनके साथ जुड़ने लगे थे।

अचानक इन सबके बीच राकेश का चयन एक महत्वपूर्ण खबर बनकर कौंधी थी। सरकार इसे आदिवासी इलाकों के विकास और शिक्षा से जोड़कर बताती तो मीडिया ने भी इसे अपने-अपने नजरिए से पेश किया। राकेश की सफलता ने आदिवासियों में उत्साह भर दिया, वहीं लोग यह भी कहने से नहीं चूकते कि उसका चयन एक सोची-समझी रणनीति है। पुत्र की सफलता से आह्लादित गीता कभी उस एक पल को याद करती, जिसके चलते राकेश का जन्म हुआ तो अगले ही क्षण वर्तमान के धरातल पर खड़ी नजर आती। सफलता के पश्चात राकेश एक बार ही घर आया था और माँ का आशीर्वाद लेकर लौट गया था। दो साल के प्रशिक्षण के पश्चात राकेश लौटा तो उसके कंधे पर सफलताओं के सितारे टके हुए थे। इधर माँ-बाप इंतजार करते रहे कि राकेश घर लौटे तो धूमधाम से उसकी अपने समुदाय की किसी अच्छी लड़की से शादी करेंगे, पर शहर में पढ़ा-लिखा राकेश तो अपने बुने गए सपनों को साकार करने में लगा था।

पोस्टिंग के बाद घर लौटा तो साथ में बहू भी थी। अकादमी में प्रशिक्षण के दौरान ही अपनी सर्विस की एक लड़की से दिल लगा बैठा और शादी कर ली। घर वालों को बताने की जरूरत भी नहीं समझी। आखिरकार रोज अखबारों, टी.वी. चैनलों पर वहाँ के हालात देख रहा था। राकेश घर लौटा तो जरूर, पर टिका वहाँ वन विभाग के गेस्ट हाउस में। घर पहुँचकर माँ के पैर छुए तो माँ की आँखें भर आईं। इशारे से बहू को भी माँ के पाँव छूने को कहा, पर बहू तो वहाँ की गंदगी देखकर अपनी नाक को ही रुमाल से ढकने में व्यस्त थी।..... माँ मैं चाहता हूँ कि आप भी हमारे साथ शहर चलें, यहाँ के माहौल में तो दम घुटता है। नहीं बेटा, अपने पूर्वजों की जमीन छोड़कर हम भला कैसे जा सकते हैं। फिर तुम्हारे पिताजी व भाई भी तो हैं। ठीक है माँ, जैसी आपकी मर्जी..... हम तो आपको लेने आए थे, आप भी यहाँ के हालात से वाकिफ हैं। चारों तरफ नक्सलवादी व माओवादी आतंक फैला रहे हैं, यहाँ रहना तो सुरक्षित भी नहीं है इसीलिए मैं गेस्ट हाउस में टिका हूँ।

माँ को बेटे की बातें बड़ी बेगानी से लग रही थीं। आखिरकार आदिवासियों का दर्द वह कैसे समझ सकता था। वह भी उन्हें नक्सलवादी व माओवादी ही समझता था। उसे तो शायद पता भी नहीं कि उसके दोनों भाइयों को नक्सलवादी होने के आरोप में पुलिस ने जेल में बंद कर दिया है। अचानक उसकी निगाह बेटे के भरे-पूरे शरीर पर गई तो उसे उसमें रेंजर की छवि नजर आने लगी। अखिरकार खून तो उसी का था, जो आदिवासियों का शोषण करना ही अपना धर्म समझता था। वह आज फिर से एक बार सोचने पर मजबूर हो गई कि उसने राकेश को जन्म देने की बात ठीक सोची थी या उसे गर्भ में मार देने का निर्णय ही सही था। उसने बीते घावों को समय के हाथों कुरेदते पाया और खुद को बेबस, लाचार महसूस किया। बेटे ने जाने से पहले उसे बाहों में भरा तो उसमें ममत्व नहीं नजर आया, उसे लगा जैसे रेंजर ने उसे फिर से बाहुपाश में जकड़ लिया है और वह छटपटा रही है। उसकी आँखों में आंसू आ गए। बेटे ने समझा कि वह प्यार के आंसू हैं, पर उन आंसुओं की कसक और तड़पड़ाहट वह ही समझ सकती थी। वह बेटे-बहू को गाड़ी में बैठते और नजरों से ओझल होने तक देखती रही। पीछे रह गया था बस धूल का गुब्बार और कुछ अनचाही यादें।

गुजराती से अनूदित दो कहानियां

(1)

भिड़न्त

कहानीकार: गिरिमा घारेखान

अनुवादक: डॉ. रजनीकान्त एस.शाह

हमारे जीवनकाल में कभी कभी ऐसी घटनाएँ घटित हो जाती हैं जिन्हें मानना मुश्किल हो जाता है। लेकिन कहा गया है ना कि `Fact is stranger than fiction. ' मेरे साथ भी एकबार ऐसा ही कुछ घटित हुआ था, जो मेरे दिमाग की मेमरी में हमेशा के लिए स्टोर हो गया है।

इंसानी दिमाग कभी कभी तो गजबनाक काम कर देता है क्योंकि विश्व के सर्वोत्तम कंप्यूटर की अपेक्षा दिमाग की शक्तियाँ ज़्यादा हैं। लेकिन कभी कंप्यूटर में वायरस आ जाता है न, उसी तरह मेरे दिमाग में भी एक ऐसा ही वायरस आ गया था। बहुत ही ख़राब वायरस। पर वह वायरस किस प्रकार काम आया उसकी अद्‌भुत कथा आज़ मुझे आपको बतानी है।

हम सात मित्र अहमदाबाद से वैष्णोदेवी के दर्शन के लिए चले तब एक-एक दिन का समग्र कार्यक्रम अच्छे से बनाकर ही निकले थे। देवी के दर्शन हो गए तब तक तो सब ठीकठाक रहा। अब हमें जम्मू पहुँचकर एक दिन जम्मू दर्शन में ही व्यतीत करना था। उसके बाद जम्मू-दिल्ली मैल से दिल्ली। दूसरे दिन लालकिले पर स्वतन्त्रता दिवस के ध्वजवंदन कार्यक्रम में शामिल होकर अहमदाबाद वापस लौट आना था।

हमने वैष्णोदेवी स्थानक से नीचे उतरना चालू किया था कि मूशलाधार बारिश शुरू हो गई। यह बरसात हमारी सारी योजनाओं के आगे दीवार बन गई, – दीवार अर्थात् सच में पानी की दीवार। ऊपर से भूस्खलन शुरू हो जाने की खबरें भी आयीं। हमें बरबस होकर मंदिर के पासवाले होटल में घंटों पड़े रहना पड़ा। तूफ़ान थम जाने के बाद हम जम्मू पहुंचे तब तक हमारी दिल्ली ले जानेवाली ट्रेन तो खूल चुकी थी।

अब क्या किया जाए? इतने बरसों में पहलीबार दिल्ली निवासी एक मित्र की पहचान से ध्वजवंदन कार्यक्रम इतने पास से देखने का मौका हाथ लगा था। हम उस सुनहरे मौके को खोना नहीं चाहते थे। देशभक्ति का जुनून शिर पर बराबर सवार था। समय से दिल्ली पहुँचना ही था। इसलिए हम जम्मू के बसअड्डे पर पहुंचकर दिल्ली जानेवाली लक्झरी बस पर सवार हो गए।

हम बस पर सवार हुए तब सवारियों से बस तो लगभग भरी हुई थी। इसलिए जिसे जहाँ जगह नसीब हुई वहाँ अलग अलग बैठ गए। मैं पिछेवाले हिस्से में एक युवा के साथ जाकर बैठ गया। रास्ता तो दोनों ओर अत्यंत रमणीय था। धरा नामक अनिंद्य सद्य:स्नाता सुंदरी का सौन्दर्य पूर्णरुपेण निखरा हुआ था। और ऊपर से यह तो पहाड़ी सुंदरी! बारिश थमी हुई थी लेकिन चहूँ दिश बहकर आ रहे झरने, उनको छूकर उनके जलदेह में स्पंदन पैदा कर रही शीतलसमीर लहरियाँ और हरी वनश्री के संगम से अद्‌भुत दृश्य बनते थे। कठुआ की हरियाली और जालंधर और लुधियाणा के हरे-भरे खेतों को देख देखकर मेरा वक़्त तो अच्छे से बीत रहा था। सीट के पीछेवाली ऊंची पीठ के कारण मुझे मेरे मित्र भी नज़र नहीं आ रहे थे, तो ऐसे में उनके साथ बातचीत तो कैसे हो सकती? इसलिए अभी तो बादल छाए आकाश में दिखाई दे रही सूर्यकिरणों के केसरी छींटे, बीच का स्वच्छ हुआ अवकाश और नीचे हरित धरती ने मिलकर रचे हुए तिरंगे को सलाम करते हुए कल लालकिले पर से जिस ध्वज को फहराया जाएगा उस ध्वज की वंदना करने के अमूल्य क्षणों की मैं प्रतीक्षा कर रहा था।

अंतत: अंबाला आ गया तब वह युवा नीचे उतर गया। `हाश'- राहत अनुभव करते हुए मैं खिड़की की ओर लपका। कुछ खुलापन मिलने से शरीर ने भी आलस्य छोडकर उस खुलेपन का आनंद लिया और हाथ ऊपर नीचे करते हुए सुस्ताया। अब यात्रा करने का, बाहर के दृश्यों को देखने का ज़्यादा मजा आयेगा।

पर मेरा वह आनंद ज़्यादा टीका नहीं। बस अंबाला से खुलने को ही थी कि चार-पाँच यात्री बस में चढ़े। उनमें से एक दढ़ियल युवा मेरी बगल में आकर बैठ गया। उसके हाथ में एक बेग भी था। उसके बेग को नीचे रखने के लिए वह नीचे की ओर झुका और तत्क्षण मूल जगह पर ही रखे हुए मेरे बेग को मेरी ओर खिसकाने के लिए मेरे झुकते ही एक आवाज़ आयी-`थड़ाक'। हमारे दोनों के शिर सीट के नीचेवाले हिस्से में एक दूसरे से ज़ोर से टकराए। उसका तो माथा था या फ़िर कोई पत्थरों से भरा हुआ थैला! किसीने मानो कोई पहाड़ी टुकड़ा मेरे माथे पर फेंका हो ऐसा मुझे लगा। चक्कर आने लगेंगे

ऐसा हो गया। उसके साथ ही मेरे माथे में जोरदार करंट दौड़ने लगा हो ऐसा मुझे लग रहा था। हजारों वॉल्ट के असंख्य बल्ब माथे में चालू और बंद हो रहे हों ऐसी चमक माथे के आगेवाले हिस्से में हो रही थी। मैं दोनों हाथों से अपने माथे को पकड़े हुए आँखें मूँदे बैठा रहा। पर उस वक़्त मेरे साथ कुछ अजीब सा घटा। मुझे अचानक ही ऐसे विचार आने लगे, `अच्छा है, जैसे तैसे करके मैं यहाँ तक तो पहुँच ही गया। अब दिल्ली के लिए सिर्फ़ चार घंटे। वहाँ तो मुझे मेरे सारे साथी मिल ही जाएंगे। ऐसे काम में तो वे लोग उस्ताद हैं। यह बेग उनको थमा देने के बाद मेरा काम तो ख़त्म।''

मुझे अचरज़ हुआ। मैं यह क्या सोच रहा था? मुझे दिल्ली में मेरा मित्र मिलनेवाला है पर ``वह किस काम में उस्ताद है?''

मैं आगे कुछ सोचूँ उससे पहले तो अज्ञात रूप से मन में मेरे विचार आगे बढ़े। -मानो मेरे दिमाग से नहीं, पर अन्तरिक्ष से आए हों-``यह आदमी अभी मेरा बेग छूनेवाला था, अच्छा हुआ मैंने उसे रोक लिया। और उसका सर! या अल्लाह! सर है या फ़िर लोहे का बक्सा? दिमाग
में कुछ होने लगा है। अब तो बस कल लालकिलावाला काम अच्छे से हो जाना चाहिए।''

मैंने और उलझन अनुभव की। मुझे यह क्या हो गया था? मेरे दिमाग में कोई और आदमी कैसे चला गया था? ये विचार मेरे तो नहीं थे। अचानक ही मेरे दिमाग में फ्लेशलाइट हुई। क्या मेरा माथा इसके साथ टकराया था उसका यह परिणाम था? हे भगवान! ऐसा हो सकता है? यह तो उसके विचार मेरे मन में प्रवेश कर रहे थे? तो फ़िर वह लालकिले के काम के बारे में सोच रहा था, वह क्या था?

मैंने तिरछी नज़र से उसकी ओर देखा। उसका दिखावा, हावभाव, लंबी दाढ़ी, सुरमा डाली हुई बड़ी बड़ी आँखें-ये सब क्या कह रहे थे? और उसके विचार! क्या यह सीमापार से आया हुआ कोई आतंकी था? इसीलिए उसने सोचा,``जैसे तैसे करके अंबाला पहुँच गया।'' जम्मू से बस में चैकिंग ज़्यादा होता है इसलिए उसने इस तरह बीच रास्ते में ही चढना पसंद किया। उसके साथी लालक़िले पर क्या करनेवाले थे? मैं जब नीचे झुका तब उसके द्वारा गुस्सायी आवाज़ में कहा गया `छूना मत' मुझे याद आ गया। तो इस बेग में क्या बम था? ना, ना बम लेकर तो वह ऐसे प्रवास नहीं करेगा। लेकिन बम बनाने की सामग्री या और कुछ महत्त्वपूर्ण होना चाहिए। ओ प्रभु, दिल्ली तक चार घंटे के लिए मुझे उसके साथ बैठना था?

पहले तो मुझे घबराहट हुई, पर रग रग में बह रही देशभक्ति ने उस घबराहट को भगा दिया। मैंने अलग तरीके से सोचना शुरू किया। ``मेरी बगल में मेरी मातृभूमि को बरबाद करने के लिए आया हुआ एक आतंकी बैठा हुआ है। ईश्वर कृपा से ऐसा कुछ हुआ कि उसके विचार मुझमें प्रवेश कर जाते हैं। उसे पहचान लेने के बाद भी मैं कुछ नहीं कर सकूँ ऐसा तो कैसे चल सकता है?

आज एक अच्छे काम के लिए, देश की सेवा करने के लिए मैं किसी कुदरती संकेत से निमित्त हो गया था तो इसे रोकने के लिए मुझे कुछ करना ही चाहिए।'' मैंने सोच लिया कि अभी तत्काल खड़े होकर मैं सबको बता दूँ कि वह आदमी मुझे शंकास्पद लगता है। इसलिए उसके बेग की जांच होनी चाहिए। इतने सारे लोगों का सामना वह कैसे कर सकेगा? एकबार यदि उसे पुलिस के हवाले कर दिया जाए, उसके बाद तो उसके दिल्लीवाले साथी भी धर लिए जाएगे।

मैंने खड़ा होने के लिए साहस बटोर लिया। विचारों का कारवां तो चल ही रहा था। मात्र एक दिन के लिए गाड़ी पर छोटा सा तिरंगा लगा देने और देशभक्ति के गीत सुन लेने मात्र से थोड़े ही कोई देशभक्ति होती है? हमारे सैनिक मायनस चालीस डिग्री ठंड में देश की रक्षा के लिए इतना कुछ कर रहे हों, २२-२५ वर्ष के युवा देश के लिए बलि चढ़ जाते हों तो क्या मैं इतना भी नहीं कर सकता?''

मैं अभी अपनी जगह पर से हिलूँ उससे पहले तो मेरी बायीं ओर कुछ छू गया और साथ
ही उसके नुकीले शब्द भी मेरे कान में चुभे,``सोचना भी मत, मेरे हाथ में जहरवाली सुई है। अभी तुरंत तुम्हारी क़ुरबानी हो जाएगी। चुपचाप बैठे रहो।''

हे भगवान! इसे कैसे पता चला कि मैं....? अच्छा! तो भिड़ंत का असर दोनों ओर एक बराबर बराबर का हुआ था।

अब क्या हो सकता है? कमर में मृत्यु का ठंडा स्पर्श हो रहा हो तब कौन भला डरेगा नहीं? बच्चे तो अभी छोटे थे। पत्नी आगे की जिंदगी के अरमानों का पौधा सींच रही थी। मैं कर भी क्या सकता हूँ? मैं जो कुछ भी सोचूंगा यह भी जान लेनेवाला था।

``कुछ नहीं कर सकते तुम।'' वह मेरे दिमाग में बोल रहा था। ``सिर्फ़ अपनी जवान बीवी और बच्चों की सोचो।''

जिंदगी में निस्सहायता का ऐसा अनुभव मैंने कभी नहीं किया था। मैंने बाहर देखा। बस अब कुरुक्षेत्र से गुजर रही थी और मुझे सहदेव की याद आ रही थी। -सबकुछ जानते हुए भी कुछ नहीं कह सकने की या कुछ नहीं कर पाने की वेदना कैसी हो सकती है वह मेरी समझ में आ रहा था। एकबारगी तो ऐसा विचार आया कि कोई बात नहीं, सीमा पर ही शहीद हुआ जाता है ऐसा थोड़े ही है? लेकिन मेरे खड़े होने से पहले ही यह आदमी मुझे सुई भोंक दे और मैं चुपचाप मर जाऊँ, तो किसीको थोड़े ही खबर होनेवाली है। इन ऊंची सीटों के कारण किसीको कुछ दिखेगा भी नहीं। यदि किसी को दिखाई दे तो भी ऐसा ही मानेंगे कि यह अभी सो रहा है। ठेठ दिल्ली पहुँचने के बाद मित्र जब जगाने के लिए आएगे तब उनको खबर होगी। तब तक तो यह कहाँ से कहाँ पहुँच गया होगा। कोई लाभ नहीं हो ऐसी क़ुरबानी देकर क्या करना है?

``सही सोच रहे हो।''

अब मुझे अपनेआप पर गुस्सा आ रहा था। मैं सोच रहा था कि मैं स्विच ऑफ करके मेरे विचारों को रोक दूँ, लेकिन ऐसा तो कैसे हो सकता है? मैंने गुस्सायी लाचारी के साथ उसकी ओर देखा। उसके होठों पर सियार जैसी मुस्कान खेल रही थी और आँखों में गिद्ध जैसी क्रूरता थी।

ऐसे में एक घटना घटित हुई। वैसे तो यह बहुत सामान्य घटना थी पर उस दिन वह बहुत बड़ी घटना हो गई।

मेरे मोबाइल की रिंग बजी। मेरे फ़ोन का रिंगटोन था,`सुनो गौर से दुनियावालों....सबसे आगे होगा हिंदुस्तानी।'' मेरा हाथ जेब की ओर गया परंतु उससे पहले तो आदेश हुआ।

``उठाना नहीं है।''

क्या करूँ? रिंग को बजने दिया, जिसने फ़ोन किया होगा उसे ज़्यादा महत्त्वपूर्ण काम
होगा। इसलिए दूसरीबार, तीसरीबार, चौथीबार रिंग बजती रही। उसी वक्त एक वस्तु को देखा। - उसके दिमाग में चल रहे आगे के प्लान के विचार रिंग के बजने पर बंद हो जाते थे। उसके बजाय उसे समुद्र में सुनामी की लहरें उछल रही हों ऐसी आवाज़ें सुनायी देती थी। इसका मतलब यह कि भारत की देशभक्ति का गीत उसे बहुत परेशान कर रहा था। उसे बहुत गुस्सा आ रहा था। यदि वह गुस्सा फट पड़े तो वह अपनेआप ही अपनी पहचान दे देगा।

इतनी देर तक रिंग के बजते रहने पर भी मैंने फ़ोन उठाया नहीं था इसलिए कुछ जिज्ञासावश आगेवाली सीट पर बैठे हुए दो लोग खड़े हुए। मुझे फ़ोन उठाने से रोकने की धून में इस बुद्धू ने ऐसा तो सोचा ही नहीं होगा। बगलवाली सीटवाले तो कबसे चेहरे पर चिंता छिड़के हुए मेरी ओर देख रहे थे कि यह आदमी फ़ोन क्यों नहीं उठा रहा होगा? मेरे पास एक मौका खुद ब खुद सामने चलकर आया था। यदि मेरी यह धारणा सच्ची हो तो मुझे ऐसे गीत गाकर इसे अंदर से विचलित कर देना चाहिए। वह कुछ सोचे, समजे, उससे पहले मैं तो खड़ा होकर ऊंची आवाज में गाने लगा,``सारे जहाँ से अच्छा....''

पहले तो लोग चकित होकर मुझे देखते रहे। बाद में अलग अलग सीट पर बैठे हुए मेरे मित्र भी गाने में जुड़ गए। स्वतंत्रता दिवस की पूर्वसंध्या के क्षणों में देशप्रेम सबके लहू में दौड़ रहा होता है। धीरेधीरे तो सारी बस यह चिरपरिचित गीत गाने के लिए मेरे साथ जुड गई। तालियाँ भी अब तो साथ देने लगी थीं। अब मेरे मन में और कोई विचार नहीं थे, मात्र यह गीत था। वह मजबूर था क्योंकि सबकी नज़र मुझ पर थी। वह अभी कुछ कर सके ऐसा नहीं था।

एक गीत खत्म हुआ पर मैंने उस गंगा को बहने से रुकने नहीं दिया। मैंने `परदेस' फ़िल्म का `आई लव माय इंडिया' गाना शुरू किया। मैं उसकी ओर देखता ही नहीं था। मुझे उसे गुस्सा हो जाने की हद तक उत्तेजित करना था। इस गीत में और कंठ भी जुड़े। ज़्यादा लोग अपनी जगह पर खड़े हुए। मैं एक के बाद एक देशभक्ति के गीत गाता रहा। बस अब पानीपत से गुजरकर सोनीपत पहुँचने को थी। मेरे लिए तो आज यही पानीपत का युद्ध था। मुझे अकबर के सामने खड़ा हेमू और अफ़घान दुर्रानी के खिलाफ युद्धरत मराठे याद आ रहे थे। अभी तो ये गीत ही मेरे सैनिक थे, मेरी सेना थे।

मेरी समझ में आ रहा था कि उसकी दिमागी सुनामी अब धीरेधीरे लावा की उबलती हुई लहरों में रूपांतरित हो रही थी। मैंने एक और सिपाही को मैदान में उतारा:

``भारत हमको जान से भी प्यारा है, सबसे प्यारा गुलिश्ताँ हमारा है।
सदियों से भारत भूमि दुनिया की शान है...

और जैसे ही सबने मिलकर समवेत स्वरों में `वंदे मातरम्' का जयघोष किया कि उसका
ज्वालामुखी फट पड़ा।

``बंद करो' चिल्लाते हुए वह खड़ा हुआ। उसके हाथ में पिस्टल था।

बस में दो क्षण के लिए सन्नाटा छा गया। किसी भूत का साया देख लिया हो ऐसे कइयों के चेहरे फ़क पड़ गए। पर मात्र दो क्षण के लिए ही। तीसरे ही क्षण अंबाला से चढ़े हुए उन तीन-चार यात्री मिलकर उसके ऊपर ऐसे तो टूट पड़े कि एक क्षण में तो उसकी गन उनके हाथ में थी। वह जमीन पर था और उसके हाथ-पैर जकड़ लिए गए थे। अवाक् हुई सवारियाँ कुछ समझ पाये उससे पहले तो उसे हथकड़ी पहनाकर, रस्से से बांधकर पीछेवाली सीट पर बैठा दिया गया था। मुंह पर पट्टी चिपका दी गई थी। स्तब्ध रह गई सवारियों को संबोधित करनेवाली सत्तावाही आवाज़ आयी, `इंडियन मिलिटरी। हम कबसे उसकी गतिविधियों पर नज़र रखे हुए उसका पीछा कर रहे थे। वह किस किस से मिलता है, यह जानना जरूरी था। अब इससे सब उगलवा लेंगे। शायद वह हमारे देशभक्ति के गीतों को बरदाश्त नहीं कर सका और....''

अब मैं उनको कैसे समझाऊँ कि उससे ये गीत क्यों सहे नहीं जा रहे थे? वैसे तो आतंकियों को हर तरह की तालीम दी गई होती है पर खुद हिंदुस्तान की भक्ति करे ऐसी तालीम भला किसने दी हो?

मैंने एक जवान के पास जाकर उस आतंकी के पास जाने के लिए इजाज़त मांगी। वह कुछ सोच-विचार करके `हाँ या ना' कहे उससे पहले तो मैं उसके पास पहुँच गया और पूरी ताकत लगाकर मेरा माथा उसके माथे से टकरा दिया।

``चलो! अब मैं तो मुक्त हो गया! वह बदमाश मेरी मातृभूमि को और मेरे देश के जवानों को गालियाँ दे रहा था – यह मुझसे कैसे बरदाश्त हो भला? अब भले ही जो भी चाहे बड़बड़ाता रहे।

(2)

और कितनी दूर?

कहानीकार : योगेश जोषी

अनुवादक: डॉ.रजनीकान्त एस.शाह

कितनी दूर है स्टेशन? अभी और कितनी दूर? स्टेशन इतना दूर तो कभी लगा नहीं है...रास्ता भी इतना लंबा तो कभी नहीं लगा है...टोपी पहनी हुई है फ़िर भी टाल गर्म हो गई है...घाम के कारण या बुख़ार के कारण? जिंदगीभर की थकान एकसाथ अनुभव हो रही है....पैर भी बड़ी मुश्किल से चलाने पड़ते हैं....शांता सच कह रही थी- रोज़ बुख़ार चढ़ता है....कमजोरी भी कितनी है....जाना नहीं....मेरा कहा मानो...जाना नहीं।

हठ करके, जिद पर आकर पैंशन लेने के लिए निकले हुए महिपतराय ने वैसे तो शांताबहन का कहा माना होता। लेकिन आज़ सबेरे सबेरे ही...

``मीता," सुँघनी सूंघते हुए शांताबहन ने कहा, ``थोड़ा चिल्लर देना, मंदिर में भंडार भरने के लिए..."

``अभी आखिरी दिनों में कहाँ से लाऊँ?"

गोंद से अपना आइडेंटिटी कार्ड जोड़ रहे महीपतराय ने बहू की आवाज़ सुनकर मन ही मन झुँझलाहट अनुभव की। उनको याद आया- कल ही मीता उसके लिए सोलह रूपिया पचहत्तर पैसे का पाउडर ले आयी थी। बड़ी रूपवती कहीं देखी नहीं हो तो? तब आखिर तारीख नहीं थी?

महिपतराय का क्षीणकाय वृद्ध शरीर कुछ गुस्सा हो गया। आँखें लाल हो गईं। कनपटी की नसें फूल गईं, भौंहें खींच गईं।

वैसे तो वे कभी भी बहू से माथापच्ची करते नहीं थे। बेटा या बहू अपनी बात काट दे इससे तो अच्छा यह होगा, कि खामोश रहा जाए। अब तो पुराने निकम्मे बरतनों की भांति एक कोने में पड़े रहना है। लेकिन पिछले करीब पंद्रह दिनों से चल रहे बुख़ार के कारण वे चिड़चिड़े से हो गए थे। बुख़ार के कारण मुंह भी कड़वाहट से भरा रहता था। कुछ तीखा खाने की इच्छा हो जाती थी। लेकिन पुत्रवधू के ड़र से वे चूप ही रहते थे। जब वे रिटायर्ड नहीं थे तब उनका क्या तो रुआब था! कैसा प्रभाव था! हर हफ़्ते कुछ न कुछ मीठा और नमकीन तो होता ही था। बीमारी के चलते और लगातार दबकर रहने के कारण महिपतराय को गुस्सा आया।

``बहू, अभी तो मैं यहाँ जिंदा पड़ा हूँ। ऐसा नहीं समझना...."

महिपतराय को खांसी आयी।

``बोलना नहीं...आप कुछ कहना नहीं....." कहते हुए शांताबहन पानी का ग्लास भरकर ले लायी।

महिपतराय ने पानी पीया। पानी ज्यादा ठंडा लगा। शायद अंदर बुख़ार होगा।

सुदर्शन चूर्ण लेते समय सोचा:

घर में हम दोनों को तो कोई मानता ही नहीं है....हम तो मानो फ्रेम में मढ़े बिना, संदल की माला से रहित, घर में जीनेवाले फ़ोटो ही रह गए हैं! बेटे को ब्याहा नहीं था तब तक सब कहते थे-यह है रमेश महिपतराय गार्ड का बेटा। अब मेरी पहचान इस तरह करायी जाती है- यह हैं रमेश के फादर।

घर में किसीके आने पर रमेश बताता था- यह कलर टी.वी. अभी ही खरीदा है। साढ़ेबारह लगे। यह डाइनिंग टेबल बीते महीने ही बनवाया। यह फ्रिज़ भी अभी ही लिया है और यह....हैं मेरे फादर।

और महिपतराय कुछ क्षण के लिए फ्रिज़ हो जाते थे। और मेड़ी पर पड़ी रहती वह पुरानी, लकड़ी के बड़े बक्से में बंद हो जाने का मन करता था। वह बक्सा जब वे गार्ड हुए तब मिला था। उस पर अपना नाम लिखवाया था।– महिपतराय एच.भट्ट। नौकरी के मिलने के बाद कुछ ही समय में उनकी पहचान बदल गई थी। महिपतराय भट्ट में से भट्ट नाम मिट गया था। सब महिपतराय गार्ड के नाम से ही जानते थे।

रिटायर्ड हुए अभी सत्रह वर्ष हो गए हैं फ़िर भी अपने गाँव जब जाऊँ तब अभी भी रुआब बनता था। लोग महिपतराय ग्याड कहकर बुलाते हैं तथा मान-सम्मान देते हैं। चाय पर बुलाते हैं। जबकि मेरे ही घर में मेरी पहचान...मेड़ी पर पड़ा हुआ रेलवे का वह बक्सा और मैं...

रिटायर्ड हो जाने पर भी महिपतराय ने रेलवे का आइडेंटिटी कार्ड उस बक्से में अब भी संभाले रखा है और बाहर कहीं जाते वक्त आई.कार्ड अपनी जेब में अवश्य रखते थे।

एकबार शांताबहन ने व्याकुलतावशात् कहने मात्र के लिए कह दिया होगा,``मरोगे तब भी आपकी जान तो इस क्याड में ही अटकी रहेगी।"

``शांता तुम भी..." और महिपतराय ने बेचैनी अनुभव की।

हाथ में झंडी लिए डिब्बे की पायदान पर खड़े होकर महिपतराय ने ट्रेन के साथ एक फ़ोटो खिंचवायी थी और उसे मढ़वाकर बैठक में टँगवाई थी।

``अब ऐसी फ़ोटो घर में अच्छी नहीं लगती।'' कहकर उनसे बिना पूछे ही मिता ने उस फ़ोटो को उतारकर रेलवे के उस पुराने बक्से में रख दिया था। उस फ़ोटो के पीछे रहा गोरैया का घोंसला भी....तब महिपतराय का दिल मानो रो उठा था।

उपरांत खांसी आयी। छाती की नसें फूल गईं; जलन हुई। बलगम के निकल जाने से कुछ राहत का अनुभव किया।

छाती में संगृहीत रमेश के लिए अरमान, अपेक्षाएँ....महिपतराय ने बलगम की तरह निकाल दिये थे, थोड़े थोड़े करके....

इस जमाने में बेटा और बहू यात्रा कराये ऐसी तो मैंने कभी उम्मीद भी नहीं की थी। इसीलिए तो रिटायर्ड होने से पहले शांता को अपने साथ ले जाकर यात्रा कर ली। लेकिन ऐसा तो ख़्वाब में भी नहीं सोचा था कि शांता बेचारी को मंदिर में भेंट चढाने के लिए थोड़े से चिल्लर के लिए भी ऐसे....

अभी तो यह महिपतराय जिंदा है। अभी तो उनको पैंशन मिल रही है। अभी तो हाथ और पैर साबुत हैं, हल्का सा बुख़ार है तो क्या हुआ? आज़ तो जाकर पैंशन ले ही आऊँगा। `बुख़ार है...बुख़ार है...ऐसा कहकर इस शांताड़ी ने मुझे अबतक पैंशन लेने के लिए जाने नहीं दिया तो सुनना पड़ा न बहू के मुंह से?!

``शांता'', महिपतराय ने सख़्ती दिखाकर कहा, ``तुम अपशकून नहीं कराना; मैं पैंशन लेने के लिए जा रहा हूँ।''

महिपतराय तैयार हुए।

रेलवे का वह काला गर्म कोट याद आया, जिसमें से धेवतों के लिए कुरती(जैकेट) सिलवा दी थी। रिटायर्ड होने के बाद भी काफ़ी समय तक उस कोट को पहना था। उस कोट को पहनते ही शक्ति संचारित होती थी, किसी अलग ही ऊष्मा का अनुभव होता था और फुर्ती का संचार हो जाता था। ऐसा लगता था, कि जैसे खुद अभी अलग हुए नहीं हैं, रेलवे ने अभी तक उनको अलग नहीं कर दिया है।

महिपतराय ने तो कहा था,``धेवतों के लिए नए गर्म कपड़े खरीद लेते हैं।'' लेकिन शांताबहन मानी नहीं। कहने लगीं,``पैसे खर्च कर देने की जरूरत ही क्या है? दर्ज़ी को बैठाया है तो आपके कोट में से ही कुर्तियाँ बनवा लेते हैं।''

महिपतराय ने आगे कोई दलील की नहीं थी। उसकी भी एक वजह है-

एकबार वे फर्स्ट क्लास में बैठे हुए थे। टिकट चैकर आया और अपने अपार आश्चर्य के बीच उस लड़के ने महिपतराय से टिकट मांगा!

``टिकट?''

``स्टाफ।''

``पास दिखाइए।''

``नहीं है, रिटायर्ड हूँ।''

और उसने महिपतराय को दंडित किया था।

रेलवे के साथ उनका कितना लगाव!....लगभग सारा जीवन रेलवे के नाम कर दिया था...रेलवे को यदि कोई गाली भी दे तो ऐसा लगता था जैसे किसीने उनको गाली दी हो उसी...उसी रेलवे के लिए, रिटायर्ड हो जाने के बाद वह खुद एक यात्री। एक यात्री मात्र?!

तब महिपतराय को बहुत दु:ख हुआ था। सोचा था, रेलवे में भी अब मेरी कोई कीमत रही नहीं है...फ़िर भी, रेलवे के उस काले कोट को ब्यौंत रही दर्ज़ी की कैंची को देखकर बेचैन हो गए थे। उस कैंची ने मानो रेलवे के साथ बचा रहा सहा रिश्ता तक काट डाला....

तब से तो वे रेलवे के आइडेंटिटी कार्ड को जी-जान से संभाले रखते थे।

आइडेंटिटी कार्ड की ओर टुकुर टुकुर देख रहे होते थे तब महिपतराय को कईंबार याद आ जाता था – स्कूल में पढ़ते थे तब हररोज़ रिसेस में, गाँव के सिवाने में डाली जा रही रेल की पटरियाँ देखने के लिए जाते थे। बादमें तो गाँव में स्टेशन भी बना! और रोज़ हम लोग पीपीप् गाड़ी देखने के लिए जाते थे। तब ट्रेन किसी परी जैसी ही प्यारी लगती थी!

माँ जब ट्रेन से आनेवाली होती थी तब उसकी प्रतीक्षा करते हुए स्टेशन पर खड़ा रहता था। थोड़ी दूर तक पटरियाँ नज़र आती थीं। फ़िर मुड़कर ये पटरियाँ झाड़ियों में खो जाती थीं। अधेरा उतर आता था। जिन झाड़ियों में पटरियाँ खो जाती थीं उस दिशा में घने अंधेरे में नज़र गड़ाए रहता था। कि अचानक ही दौड़े चले आ रहे उजाले में झाड़ियाँ जगमगा उठती थी। हृदय की धड़कनें तेज हो जाती थी। माँ को लेकर गाड़ी आ रही है! इंजन की लाइट का वह जगमगाता तेजस्वी उजाला भी कितना प्यारा लगता था! ना,ना, रेलवे के साथ रहा खुद का जुड़ाव टूट जाए ऐसा नहीं है। नहीं ही है।

जूते का फीता बांधते हुए महिपतराय ने सोचा:

बहुत समय हुआ अभी तक पोलिश हुई नहीं है! जब नौकरी थी तब तो रेलवे में घूम रहे बुटपोलिश करनेवाले लड़के मुफ़्त में ही पोलिश कर देते थे और ट्रेन में फेरीवाले फ्रूट भी देते थे,मुफ़्त में!

छड़ी के सहारे धीरेधीरे पैर रखते हुए महिपतराय चलने लगे।

हर सीजन में कितने सारे फल बच्चों के लिए वह लाता था! कपड़े खराब नहीं हो इसलिए शांता जब रमला को चूसने के लिए आम देती थी तब उसका फ़ाक निकाल देती थी। बाद में वह मोरी के पास बैठकर आम चूसता रहता था। उसका मुंह, दाढ़ी, छाती, पेट....सबकी आम के रस से लिपाई-पुताई हो जाती थी! फ्रूट तो हमेशा घर में रहता ही था। रमला को कुछ....कुछ याद नहीं पड़ रहा होगा?! मुझे इतने समय से बुख़ार आया हुआ है लेकिन नारंगी की एक फाँक तक किसने देखी है? शांता बेचारी के

तो चार ही दांत बचे रह गए हैं, चबाया भी नहीं जा रहा तो पर्याप्त दूध भी.....

यह तो ठीक है, कि पैंशन आ रही है। नहीं आती होती तो? इसके अतिरिक्त वृद्धाश्रम कैसा रहेगा?! किसीकी जलीकटी तो नहीं सुननी पड़ेगी! कोई लड़-झगड़कर हमारा मुंह तो कोई बंद करेगा नहीं! पिन्की नहीं होती तो हम अचूक वृद्धाश्रम में चले गए होते...पिन्की को बा और दादा के बिना जरा भी चले नहीं। वह उसकी मम्मी से कहती है, तुम नहीं, दादा खिलाएँगे। और दौड़ते हुए आकर मेरी गोद में बैठ जाए। और यह देखकर उसके साथ खेलने के लिए आया हुआ बिल्ली का बिलौटा भी मेरी गोद में दौड़कर आ जाता और मेरी आँखों में झांकते हुए मूक रहकर बोल उठता – मुझे गोद में बैठाकर क्यों नहीं खिलाते?! पिन्की के कारण ही.....

सुनाई नहीं देता? कबसे हॉर्न बजा रहा हूँ! मरने का शौक हो तो जाकर कूद पडो न कांकरिया में....मेरे रिक्षा....''

एक गंदी गाली महिपतराय को सुनाकर रिक्षा आगे बढ़ गया।

महिपतराय चौंक गए।

क्यों अभी बाहर निकला हूँ?!

थोड़ी देर के बाद याद आया-

हं... हं... पैंशन लेने के लिए।

सामने देखा।

अभी भी कितनी दूर है स्टेशन?!

महिपतराय ठसाठस फ़ुटपाथ पर आए।

चलनेवालों के लिए तो इस फ़ुटपाथ पर जगह बची ही है कहाँ?

बेचनेवाले ही फ़ुटपाथ रोककर बैठ जाते हैं। ये पुलिसवाले भी....

महिपतराय को किसीका धक्का लगा। गिरने से बच गए। जेबकतरा तो नहीं होगा! ऐसा विचार आते ही जेब पर हाथ रखकर देख लिया-

चलो! आइडेंटिटी कार्ड है।

कॉलेज में दाखिला लिया तब पहलीबार कार्ड बनवाया था। काउंटर पर दसका देते हुए कहा था-एक आइडेंटिटी...कार्ड! यह सुनकर काउंटरवाला भी हँसने लगा था। स्कूल में शांति थी; उदी चड्डी और सफ़ेद कमीज़ मतलब नूतन हाईस्कूल और खाकी चड्डी मतलब शारदा। जन्मा था तब `गंगा के भानजे' के रूप में जाना जाता था। बाद में बाप के बेटे के रूप में, शादी कर लेने के बाद शांता का वर, फलां का दामाद; नौकरी मिल जाने के बाद महिपतराय ग्याड....और जब बालमंदिर में था तब? महिलो लेंटालो! और अब? रमेश के फादर...

सुदर्शन चूर्ण की कड़वी डकार आयी। कड़वाहट को मिटाने के लिए उन्होंने अपनी प्रिय पहचान को याद किया- पिन्की के दादा!

कॉलेज के फंक्शन के वक़्त तो भली हुई थी। वैसे तो बापुजी दाढ़ी बढ़ाने नहीं देते पर सावन महीने के बहाने से तब दाढ़ी बढ़ायी थी। फंक्शन के वक़्त हॉल में दाखिल होते ही-

-आपका आई.कार्ड?

-लीजिये।

-आपका ही है न? इस फ़ोटो में दाढ़ी नहीं है!

महिपतराय को ठेस लगी। गिरने से बच गए।

आज क्यों इतने सारे विचार आते हैं? बुखार शिर पर चढ़ गया हो ऐसा लगता है...घर वापस लौट जाने के लिए मन करता है। घर में ही रहा होता तो अच्छा था। शांता सच कह रही थी। पर जब इतनी दूर तक आया ही हूँ तो चल, पैंशन लेकर ही जाता हूँ। अब....अब तो स्टेशन भी कहाँ दूर है? यह रहा...सामने ही दिखाई देता है!

स्टेशन को देखते ही मानो कुछ राहत का अनुभव हुआ।

रिटायर्ड होने के बाद भी वे हररोज़ शाम को स्टेशन पर आते थे, रेलवे का ड्रेस पहनकर! और प्लेटफॉर्म के इस छोर से उस छोर तक चक्कर लगते थे। लेकिन बादमें तो वह सुख भी नहीं रहा।

हाँ, ट्रेन की व्हीसल की आवाज़ घर में सुनाई देती है और पिन्की तो तुरंत बोल पड़ती है – मम्मी, मम्मी दादा की गाड़ी बोली!

शुरुशुरु में तो मध्यरात्रि में भी ऐसी व्हीसल सुनकर कभी नींद में ही सही महिपतराय का हाथ झंडी लहरा देने के बाद बिछौने में जाकर शर्मिंदा हो जाता था।

``क्या हुआ? कुछ हो रहा है?'' शांताबहन पूछती थीं।

``कुछ नहीं....ना...कुछ नहीं...'' कहकर महिपतराय पत्नी का हाथ अपने हाथों में जकड़े रखकर सो जाते थे- मानो दोनों हाथों से वे अपनी आइडेंटिटी को पकड़े रखने की कोशिश कर नहीं रहे हो!

मित्र सभी चले गए मुझे छोडकर...एक मैं ही जिंदा हूँ अभी भी....रेलवे के साथ कोई लेनदेन अभी बाकी रही होगी...किसी जन्म के पाप अभी भी भोगने बाकी रह गए होंगे...एकमात्र बेटा रमला तो अब हो गया बहू का....बस, एकमात्र...शांता है मेरी.....बाकी तो मुझे कोई पूछता ही नहीं है, न ही घर में और न ही बाहर।

कभी तो...कभी कभार ही सही बहू यदि पूछ लेती हो; ``बापुजी, क्या सब्जी लाऊँ? आपको क्या अच्छा लगेगा? क्या बनाऊँ? तो भी लगे कि इस घर में मैं भी रहता हूँ....मेरा भी कोई वजूद है...

मेरी रेलवे के उस लकड़ी के बक्से को जरा सी दीमक क्या लग गई थी,कि बहू ने कितनी हल्लागुल्ला मचा दिया था?

घर के अन्य फर्नीचर को भी दीमक लग जाएगी। मैं तो कह कह कर थक-हार गई। इस बक्से को निकाल बाहर कर दो। कितनी जगह रोके बैठा है इस घर में? लेकिन बापुजी मानते ही नहीं हैं। क्या पता क्या रखा है इस बक्सवा में।

कहती हूँ....आज ही जाओ और बेच दो हाट में जाकर इस बक्सवा को....''

यह सुनकर वे बक्से के पास बैठ गए थे। बक्से पर लिखे हुए महिपतराय के `एम' को भी दीमक लग गई थी। बक्से पर दाहिना हाथ रखकर वे विह्वल दृष्टि से, बड़े दु:खी मन से अपने नाम की ओर टुकुर टुकुर देखते रहे और आवेश में, आवेग में आकर खिन्न आवाज़ में बोले थे: ``मैं मर जाऊँ तब निकाल देना इस बक्से को। या फ़िर मुझे और इस शांता को भी छोड़ आओ हाट में....''

स्टेशन आया।

हा...श!(संतोष की अनुभूति)

स्टेशन की सीढ़ियाँ चड़ते हुए कुछ शाता(सुख) का अनुभव हुआ। सोंटे जैसा शरीर सीधा हुआ। मानो संतोष अनुभव हुआ, इस छड़ी के सहारे की अब जरूरत नहीं है।

महिपतराय ऑफिस में दाखिल हुए।

सभी कारकुनों के चेहरे नए लगे!

कहीं भूल से दूसरे रूम में तो नहीं घूस गया न? ना....ना...यह तो वही रूम है...वही टेबल हैं...कुर्सियाँ, वही रेक...वही स्टील की अलमारियाँ....वही फाइलें...स्टाफ ही बदला है। बाकी सब तो वही है....वही गांधीजी की फ़ोटो...अभी भी इंस्पेक्सन के दिन उस पर जमी धूल को पोंछा जाता होगा? मेरी मौत के बाद...दीवार पर लटकती मेरी फ़ोटो...उस पर जमी हुई धूल को मेरी मरण तिथि पर ही पोंछा जाएगा? मौत के बाद मेहमान आते रहेंगे अफ़सोस व्यक्त करने के लिए। बस, तब तक फ़ोटो लगी रहेगी दीवार पर, माला पहनाए हुए, टीका लगाए हुए। बाद में वह फ़ोटो माले पर, निकम्मी वस्तुओं के साथ....अभी जीता-जागता-

``छ्...छ्...'' मुंह में से तमाकू की गंधवाली हवा छोड़ते हुए एक कारकून ने कहा,``किससे काम है?''

`हं?''

``किससे काम है?''

``पैंशन लेने के लिए आया हूँ।''

``तो ऐसे मूढ़मति से क्यों खड़े हो? जाओ उस टेबल पर।''

दयनीय(लाचार) चेहरा लिए महिपतराय उस टेबल पर गए।

रेवन्यू स्टेम्प चिपकाकर कांपती उँगलियों से टेढ़ेमेढ़े हस्ताक्षर किए

कारकून ने सही को चैक करते हुए कहा,``आपकी सही मेल नहीं खा रही है: महिपतराय आप खुद हैं?''

महिपतराय ने फटाक से आइडेंटिटी कार्ड निकालकर दिखाया।

``क्या यह फ़ोटो आपकी ही है?! चेहरा नहीं मेल खा रहा है।''

``कहाँ से मेल खाएगा? कितने वर्ष पुरानी फ़ोटो है!''

``पर सही तो मिलनी चाहिए ना? क्या प्रमाण कि आप ही महिपतराय भट्ट?!

कि बगलवाले कारकून ने कहा: ``अरे दे भी दो यार....मैं इस काका को जानता हूँ।''

पैंशन गिनकर जेब में रखी। बाद में वे, फ़िर से कार्ड में लगी फ़ोटो को देखने लगे।

``फ़ोटो भी कितनी धुँधली पड़ गई है! कार्ड भी कितनी जीर्णशीर्ण हो गया है। टांके मार मारकर चलाया है। अब यदि यह फट जाए तो सांधा जाए ऐसा भी नहीं है। लेकिन पीली फ़क हो गई फ़ोटो में रहा चेहरा कैसा दिखता है। पुष्ट! मांसल! रौबिला! अभी तो चेहरा भी लंबा हो गया है और गाल भी पिचके हुए हैं। फ़ोटो में बाल कितने बढ़िया दिखते हैं! अब तो लगभग गंजापन...सच में, चेहरा तो मेल ही नहीं खा रहा....

बाद में आइडेंटिटी कार्ड को प्लास्टिक के कागज़ में लपेटकर, संभालकर जेब में रखा। उसके बाद दाहिनी हथेली से जेब को दबाया। दो-चार धड़कनें सुनायी दी।

महिपतराय कहते थे-आइडेंटिटी कार्ड हमेशा जेब में रखना चाहिए। कभी कहीं अकस्मात हो गया और, मुंह-बुंह पिचक गया तो लाश की शिनाख़्त कैसे होगी? कभी कभी तो विचार आता था कि कहीं आगजनी में फंस गए और जलकर ख़ाक हो जाएँ तो?! कपड़ा, चमड़ी, आइडेंटिटी कार्ड सबकुछ जल जाए तो पहचान क्या? क्यों? इसीलिए तो इस तर्जनी पर अंगूठी को पहन रखा है; इसके ऊपर महिपतराय का `M' लिखा हुआ है। अरे, अस्थिपंजर ही शेष रहा हो ना तो भी इस अंगूठी को देखते ही कह देंगे कि यह...यह तो महिपतराय!

``अरे काका,'' महिपतराय ऑफिस से बाहर निकल ही रहे थे कि कोई बोल उठा,``शहर में दंगाफ़साद है, कर्फ़्यू लागू कर दिया गया है। आप जाना नहीं।''

``कर्फ़्यू में तो मुझे तो जाने देंगे। क्या वे मेरी उम्र को नहीं देखेंगे? उपरांत आइडेंटिटी कार्ड भी है मेरे पास। फ़िर चिंता ही किस बात की?''

ऐसा कहकर महिपतराय चल पड़े।

स्टेशन के बाहर आए।

वाह! कितना बढ़िया! ऐसा शहर चाहिए! कैसे खाली खाली फ़ुटपाथ! किसीका भी धक्का लगे नहीं। रास्ता भी कैसा खाली खाली! रास्ते के बीचोबीच भी यदि मौज से चलें तो भी किसी भी वहाँ से टकरा जाने का ड़र नहीं।

थोड़े थोड़े अंतराल पर पुलिस खड़ी थी। पर महिपतराय को किसीने रोका-टोका नहीं।

महिपतराय रौबीली चाल से चलते थे। कि पुलिसवाला चिल्लाया,``कहाँ जा रहा है बूढ़े?

मालूम नहीं कर्फ़्यू है?''

``घर जा रहा हूँ। पैंशन लेने के लिए गया था। उसके बाद कर्फ़्यू लग गया।''

``ठीक है, ठीक है, अब बाहर नहीं निकलना।''

महिपतराय ने सोचा:

रेलवे की ड्रेस पहनी हुई नहीं है ना इसलिए मुझे रोका। पर उस वक्त मुझे आइडेंटिटी कार्ड की याद क्यों नहीं आयी?

महिपतराय चलने लगे।

दूर टीयरगैस के धुएँ उड़ते हुए दिखाई दिये।

आँखें जलने लगी। बुख़ार भी बढ़ा हुआ था। माथा फटा जा रहा था। गले में जलन उठी थी। अभी चक्कर आएंगे तो लुढ़क जाऊंगा ऐसा लगता था।

क्षितिज पार से कोई आवाज़ आ रही हो ऐसा लगता था। ध्यान से सुनने लगा।

सिग्नल नहीं दिया गया हो और गाड़ी रुक गई हो और इंजन रह रहकर ज़ोर ज़ोर से चीख रहा हो ऐसी व्हिसलों की धीमी पर तीव्र आवाज़ मानो...दूर क्षितिज के उस पार से आ रही हो ऐसा लगा।

और महिपतराय को लगा,

कितनी दूर है स्टेशन? अभी और कितनी दूर है?

पुलिस ने फ़िर से महिपतराय को रोक दिया।

``रौबीले अंदाज़ से महिपतराय ने आइडेंटिटी कार्ड दिखाया।

``साले बुड्ढे हमें रौब दिखाता है? कहकर उसने आइडेंटिटी कार्ड को फाड़ डाला।

महिपतराय कुछ क्षण के लिए हैबत खा गए। जैसे कुछ क्षण के लिए मानो हृदय ने काम करना बंद कर दिया हो।

फ़िर सोचा, ला, आइडेंटिटी कार्ड के टुकड़े तो बिन लूँ...

महिपतराय के हड़बड़ाते हुए, कांपते और धड़कते हुए हाथ फैले पर आइडेंटिटी कार्ड के वे टुकड़े पवन में ऊपर उठे और उड़ते हुए दूर उड़ने लगे.... महिपतराय का उठा हुआ हाथ मानो कह रहा था-

अभी और कितनी दूर?!

डॉ. दलजीत कौर

चंडीगढ़

कविताएँ-माँ

1)
देखे तुम्हें
ज़माना बीता
देख लेती हूँ
ख़्वाबों में
ख़्यालों में
तस्वीर तुम्हारी
फिर भी
ख़ाली है
घर का आँगन
मन का कोना
कि
माँ हूँ मैं

2)
जन्म
दिया उसे
पंख
दिए उसे
उड़ना
भी सिखाया
तूफ़ान से
बचाती हूँ
आज भी
जूझने से
रोकती हूँ
प्राण बसते हैं
उसमें मेरे
कि
माँ हूँ मैं

3)
उठ जाती हूँ
रातों को
दुआएँ
माँगती हूँ
बलाएँ
लेती हूँ
सजदे
करती हूँ
न जाने
कितने धर्मों को
मानने लगी हूँ
कि
माँ हूँ मैं

4)
कितने ख़्याल
कितनी कल्पनाएँ
कितने ख़ौफ़
तुम्हारा समाचार
जब नहीं मिलता
दो -तीन दिन
मर -मर कर
जीती हूँ मैं
कि
माँ हूँ मैं

5)
चिड़िया
सोचती हूँ
घोंसले से उड़ जाते
जब बच्चे
कितना उदास
होती होगी चिड़िया ?
कैसे ढ़ाढ़स बाँधती
होगी चिड़िया ?
बरबस आ जाते
आँख में आँसू
कि
माँ हूँ मैं

6)
बेचैन
रहती हूँ
तेरी ख़ुशी
उदासी ,
बेचैनी
जान लेती हूँ
दूर हो कर भी
न जाने कैसे
कि
माँ हूँ मैं

7)
झूठ
झूठ बोलते हो
जब तुम
घबराती हूँ मैं
क्या -क्या अनुमान
लगाती हूँ मैं
डर से काँप
जाती हूँ मैं
कि
माँ हूँ मैं

8)
जीना
नम रहती हैं
मेरी आँखें
आजकल
जीना आ गया
तुम्हें मेरे बिना
पर मुझे
नहीं आया
तुम बिन रहना
कि
माँ हूँ मैं

9)
रवैया
बदलने लगा है
तुम्हारा रवैया
बात करने का
बड़ी -बड़ी बातें
करने लगे हो तुम
कैसे बदल सकता है
मेरा रवैया
कि
माँ हूँ मैं

10)
जीत
तुम्हारे जीतने से
मैं जीत जाऊँगी
तुम मुझे
हरा मत देना
तुम से ही है
मेरी दुनिया
कि
माँ हूँ मैं

प्रगति त्रिपाठी
बैंगलोर
kumaripragati1988@gmail.com

मेरे नसीब में आराम कहां

रमेश का ट्रांसफर दूसरे शहर हो गया , अब फिर से नये शहर में रहना और उस जगह गृहस्थी जमाने में थोड़ी मुश्किल हो रही थी क्योंकि मेरे लिए वो जगह और लोग अजनबी थे, लेकिन साथ के फ्लैट में रहने वाली वर्मा आंटी ने बहुत मदद की, आस- पास के जगहों, मार्केट से परिचत कराया। अपने ही दूधवाले को मेरे यहां भी लगा दिया। अब जिसकी सबसे अधिक जरूरत थी, वो भी समस्या वर्मा आंटी ने हल कर दिया, एक कामवाली बाई लगा दी। दुबली - पतली, छोटे कद की,लंबे काले बाल, चेहरे पर एक अजीब सी खामोशी जो बहुत कुछ बयां करती थी, देख कर ही लगा की बहुत तकलीफ में हैं। मैंने उसे सब काम समझा दिया, जब भी आती बस चुपचाप सारा काम करती और कोई बात नहीं करती। वो दूसरे बाईयों से बिलकुल अलग थी न किसी के बारे में चुगली। बहुत ही अच्छी सीधी सरल इंसान थी।

कभी मन करता उसके बारे में पुछूं लेकिन नहीं पूछती। दूसरे दिन वर्मा आंटी आई मेरा भी सब काम खत्म हो गया था, मेरी आदत थी की जब सब काम खत्म हो जाता तो एक बार चाय बना कर, आराम से बैठकर चाय की चुश्की लेकर पीती।

मैंने कहा सही समय पर आई आंटी मैं बस चाय बनाने ही जा रही थी।

'अरे नहीं बेटा मैं इस समय चाय नहीं पीती, मैं तो बस ये पूछने आई थी की रानी कैसा काम कर रही हैं'

"मैंने कहा ठीक ही कर रही हैं पर आंटी इसे देख कर लगता हैं न जाने कितने गम अपने सीने में छुपाए फिर रही हैं, इसके चेहरे पर एक अजीब सी उदासी तैरती हैं। आप तो इसे जानती होंगी, कुछ बताइए ना इसके बारे में पता नहीं क्यों इसके बारे में जानने का मन कर रहा है एक अलग जगह बन गई है इसके लिए मेरे दिल में।

"क्या बताऊ इसे तो काम करने की जरूरत ही नहीं थी, इसका पति कारपेंटर हैं अच्छा कमा लेता हैं। दो बच्चे हैं इसके और एक बहन हैं इसकी जिसे इसने अपने साथ ही रखा हैं क्योंकि इसके माँ -बाप इसकी शादी के दो साल बाद ही चल बसे। लेकिन इसका पति इसे एक रूपया भी नहीं देता, सारे पैसे शराब में उड़ा देता हैं। इसे अपने बच्चों के लिए ही घर से निकलना पड़ा, बहुत स्वाभिमानी हैं और बाईयो की तरह ना कोई चापलूसी करती हैं, न इधर की उधर, ना कोई नखरा करती हैं। बस अपना काम खत्म करके अपने घर जाती हैं, सारे घर की जिम्मेदारी उठा रखा हैं इसने, छोटी बहन के शादी के लिए पैसे जमा कर रही हैं। अब तो आठ घर काम करती हैं और बहुत बीमार भी रहने लगी हैं नही तो जब पहली बार इसे देखा था तो क्या सुंदर लगती थी, ये लम्बे और घने बाल, शरीर से भी अच्छी थी पर आज देखो लगता इसके शरीर में खुन ही नहीं बचा। एक बेटी कॉलेज में हैं और बेटा इस बार दसवीं की परीक्षा देगा, दो ऑपरेशन हो चुके हैं और बस बच्चों के भविष्य सवाँरने में अपनी हड्डियाँ गलाए जा रही हैं, बेचारी को आराम नसीब नहीं हैं - वर्मा आंटी ने बताया"।

रानी की कहानी सुनने के बाद मेरा मन बड़ा दुखी हुआ। बस अब मुझे यही लगता की मैं उसकी मदद करूं, जो की उसने मुझसे कभी नही माँगी। उस दिन के बाद मैं हमेशा उससे कहती रहती की कोई जरूरत हो तो मुझे बेझिझक बताना। एक महीने बाद उसने मुझसे एक सप्ताह की छुट्टी माँगी, मैंने कारण पूछा तो बोली - दीदी मेरी छोटी बहन की शादी हैं।

मैंने कहा किसी चीज की जरूरत हो तो बताओ और मैंनें एक नई साड़ी लाकर उसे दे दिए और कहा ये मेरी तरफ से तुम्हारी बहन के लिए, उसने बिना कुछ बोले रख लिया। और कुछ चाहिए? तब उसने एक महीने की सैलरी एडवांस माँगी। मैंने उसे दे दिया। एक सप्ताह बाद आयी तो बीमार थी, मैंने उसे वापस भेज दिया और बोला ठीक हो जाओ फिर आना काम पे, तो बोली मेरे नसीब में आराम कहाँ। आप तो इतना भी बोल रही हैं, लेकिन बाकी लोग तो मुझसे ऐसा नहीं बोलते।कुछ लोग ऐसे हैं की अगर मैं मर जाऊं तो भी आकर बोलेंगे की पहले मेरे घर का काम कर ले, फिर मरना। इतना कह वो हँसते हुए चली गई, लेकिन उसकी हँसी के पीछे छुपे दर्द को मैं समझ गई और उसकी बात मेरे जहन में घुमने लगी, कैसे कोई इतना निर्दयी हो सकता हैं।

कहानी

डोली शाह
निकट- पी एच ई पोस्ट -सुल्तानी छोरा
जिला- हैलाकंदी असम-788162
Mail-Shahdolly777@gmail.com

नई रोशनी

छोटी सी दुनिया में गुजर -वशर करने वाला सुरेश आज अपने बेटे राजू को इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला करवाने पहुंचा ।वहां की चका - चौंध भरी दुनिया देख अनायास ही मन में विचार उठने लगा,कि मैं कुछ गलत तो नहीं कर रहा। इसी उधेड़ -बुन में झुकी पलके अपने आप से सवाल कर ही रही थी कि इतने में पास बैठी एक महिला पूछने लगी --

" क्या बात है आप यहां इतने परेशान क्यों हैं?" बेटे को छात्रावास में छोड़ने आए हैं क्या?

" जी, छोड़ने तो आया हूं।"

" हां, पहली बार तो दुःख जरूर होता है, पर आपको तो खुश होना चाहिए कि आपका बेटा इतनी बड़े कॉलेज में पढ़ने आया हैं।"

"हां , वह तो ठीक है, पर यहां का नजारा तो अपने आप में अद्भुत है !"

..." तो आप इस माहौल को लेकर परेशान हैं!"

..."जी , कुछ ऐसा ही समझिए । "

..." देखिए आज यह हर बड़े कॉलेज की कहानी है, मैं भी जब पहली बार यहां आई थी तो मुझे भी कुछ ऐसा ही महसूस हुआ था। लेकिन काफी जानकारी से पता किया कि आज के युग में यह सब बिल्कुल आम है।" अब मेरा ही देखिए ,मेरी तो दोनों ही बेटियां है। एक बेटी पिछले वर्ष ही अपनी पढ़ाई खत्म कर और मात्र तीन महीने के अंदर ही उसने शादी भी कर ली लेकिन अब उसकी नौकरी भी लग गई है। छोटी बेटी जिसके दो साल की पढ़ाई अभी भी बाकी है ,उसी से मिलने यहां आई हूं।"

.." वाह दोनों ही बेटियां!"

" जी इसीलिए तो सोच रही हूं आपका तो बेटा है फिर इतनी चिंता क्यों ?"

क्या कहूं, इससे मेरी कुछ ज्यादा ही अपेक्षाएं हैं इसीलिए चिंता हो रही है।

" समझी, आपकी चिंता भविष्य से लेकर घर बसाने तक की है।"आपके मन में लड़की वगैरा -वगैरा ...

आप अभी से इतना मत सोचिए , रही ब्याह -शादी की बात ,तो यदि वह खुद कर भी ले ,तो क्या बुराई है। यहां माता-पिता की अनुमति के बिना बच्चों को बाहर जाने की इजाजत नहीं दी जाती ,तो वह ब्याह आदि की बात करेंगे भी तो अपने साथ पढ़ने वालों से ही! उतनी ही पढ़ी-लिखी वह भी होगी।

यहां हम अपने बच्चों को पढ़ा कर उनका भविष्य तो बना ही रहे हैं ,साथ ही एक शिक्षित परिवार का गठन भी कर रहे हैं। आज के युग में परिवार में यदि दोनों ही उच्च कोटि की शिक्षा ग्रहण किए हो तो वह परिवार नहीं एक मंदिर होगा, क्योंकि आज समाज में जितनी भी सामाजिक कुरीतियों पैदा हो रही है वह सिर्फ पति-पत्नी के विचारों में भेदभाव के कारण ही पैदा हो रही हैं। दोनों में एक अलग ही सामंजस्य होगा। उनके बीच समान रूप से एक दूसरे के प्रति सम्मान की भावना होगी । जिससे आने वाली पीढ़ी को भी एक अलग ही मार्गदर्शन मिलेगा। तो क्यों ना हम अपनी सोच को ही विस्तृत करें और अपने इस पल का आनंद लें।

सब कुछ समझते हुए सुरेश मानो वक्त के थपेड़ों में खो गए ।

वह बचपन के उन दिनों में खो गये जब राज उनके साथ घंटो खेतों में चिलचिलाती धूप में काम करता और नंगे पैर आधा पेट नाश्ता और दोपहर के भोजन हेतु विद्यालय की ओर दौड़ जाता..!

माध्यमिक शिक्षा तक तो वे सरकारी सुविधाओं से ही उत्तीर्ण होता चला गया लेकिन उच्च शिक्षा के दौरान समर शास्त्री ने राज के लिए जो किया वह सचमुच काबिले तारीफ था ।उनके उत्साह और साहस के बल पर ही राज दसवीं में इतने अच्छे नंबर लाया और सरकार से स्कॉलरशिप आदि की सुविधा भी मिली । जिससे आज वह यहां तक पहुंचा और इतने बड़े कॉलेज में इस गरीब के बच्चे को पढ़ने की अनुमति मिली। हां,पर राज की मेहनत भी कुछ कम नहीं थी , आज उसकी खुशियों के वक्त मुझे भी खुश होकर उसका प्रोत्साहन बढ़ाना चाहिए।

इतने में पास बैठी महिला बोलने लगी-- और आज तो मोबाइल का जमाना है उसकी हर पल की खबर रखना हमारा कर्तव्य भी होना चाहिए !

सुरेश अपने मन को समझा कर दिल में दर्द छुपाए वहां से चल दिया। हर पल उन्होंने पिता होने का फर्ज निभाया ।देखते ही देखते चार साल बीत गये। राज अपनी पढ़ाई पूरी कर घर आया ही था कि दो महीना के अंदर ही उसकी प्राइवेट कंपनी में नौकरी भी लग गई। पिता की

खुशी का ठिकाना ना रहा।

बातों ही बातों में उन्होंने राज से समर शास्त्री की बात बताई -

" इतने में वह बोलने लगा-- "पापा मुझे याद है उनकी बात - बात पर जोर-जोर के डंडे, तो जीवन को समझने के लिए वह बड़ी-बड़ी बातें"। मेरी पढ़ाई के लिए अक्सर प्रोत्साहित करना। आज भी उनके स्वर मेरी कानों में गूंजते हैं।

एक तरफ जहां वह चरण स्पर्श किया , वहीं पिता मिठाई का डब्बा आगे बढ़ाते हुए - सर आपका बेटा। आपकी वजह से आज अपनी जिंदगी में सफल हो पाया । वरन् मेरी कहां हैसियत थी ,कि मैं इतना पढ़ा सकता !

' अरे वह सब तो ठीक है लेकिन राज की मेहनत भी माननी पड़ेगी! "मैंने तो सिर्फ उसका मार्गदर्शन किया , मेहनत तो उसकी अपनी थी"। दसवीं तक इस छोटे से विद्यालय में पढ़ने वाला नटखट सा बच्चा और आज.... सचमुच बहुत गर्व की बात है! लेकिन उसके बाद उसका इतने बड़े कॉलेज में पढ़ाना भी उसकी जिंदगी के लिए एक अहम पहल साबित हुआ।

आप सही ही कह रहे हैं उसे इंस्टिट्यूट के सभी शिक्षकों का भी बहुत-बहुत आभार जिन्होंने एक गरीब के लड़के को यहां तक पहुंचाया। पूरे गांव में मानो खुशियों की लहर दौड़ रही थी ।

तभी राज ने मौका देख अपनी दोस्त राखी की बात कही-- सुरेश चौंक पड़े! बेटा यह तुम क्या बोल रहे हो

... पापा एक बार मिल तो लीजिए , बहुत अच्छी है वह!

इतने में सुरेश को तुरंत ही इंस्टिट्यूट में मिलने वाली महिला की बात स्मरण हो गई।

" इसी बात का डर था मुझे"!

..." पापा ,किस बात का डर" .

..."नहीं, कुछ नहीं, तुम नहीं समझोगे!

"... पापा हो तो आप मेरी शादी करवाऐगे ही!

..." तो राखी से एक बार मिल ही लीजिए" । वह हमारी बिरादरी की भी है,

...चलो तुम कहते हो तो ,!उसे कहना माता-पिता के साथ घर आने को...

.. वाह, जरूर पापा!

राखी अपने माता-पिता के साथ सुरेश के घर पहुंची। दोनों परिवारों में बातचीत हुई। राखी के व्यवहार ने पिता का भी दिल जीत लिया। उन्होंने फौरन ही विवाह के लिए हामी भर दी। इतने में राखी के पिता ने लेन-देन की बात करनी चाही कि राज के पिता कहने लगे कि" आप तो हमें साक्षात लक्ष्मी दे ही रहे हैं ,मुझे और कुछ नहीं चाहिए।"

राज और राखी की खुशी का ठिकाना ना रहा। विवाह संपन्न हुआ । दोनों बहुत खुश थे। यह देख सुरेश भी खुश रहते।

वर्षों पहले पत्नी के गुजर जाने के बाद सूने घर में आज मानो साक्षात लक्ष्मी स्वयं ही प्रकट हो गई थी। तभी रेखा का एक कंपनी से नौकरी के लिए आमंत्रण आ गया। यह देख राज बहुत खुश हुआ लेकिन राखी को अभी नौकरी की इच्छा नहीं थी। वह घर परिवार की सेवा करना चाहती थी। यह देख पिता का सिर गर्व से ऊपर उठ रहा था । राज के बहुत समझाने पर वह मैनेजर से बात कर ऑनलाइन कार्य करने के लिए तैयार हो गई। अब वह घर से ही कंपनी का कार्य भी करती और परिवार का भरपूर सेवा भी!

यह देख राज को बुलाकर उसके पिता कहने लगे-- बेटा मुझे गर्व है, कि "मैं तेरा पिता हू।

"बस इतनी सी बात ,पापा" " " "बेटा यह इतनी सी बात नहीं है, जब तुम पापा बनोगे ना तब समझोगे,"

" पापा आप भी ना ...."

दोनों जोर से हंस पड़े।

अर्चना तिवारी

वडोदरा गुजरात

लघु कथा सी हूं

मिल जाऊंगी तुम्हें कभी
किसी मोड़ पर क्योंकि
एक कहानी हूं मैं
दर्द लिखती हूं तो
कभी खुशी लिखती हूं
एक अनसुनी कथा हूं मैं
दस्तानों की व्यथा समाए हुए
कभी कविता तो कभी
लघु कथा सी हूं
हां एक हवा हूं
छू कर तुझे दूर चली जाती हूं
कभी किसी के लिए रुकती नहीं
मृगतृष्णा में भटकती एक हिरनी हूं
सूखे पत्तों सी उड़ जाऊंगी
वक्त के हाथों की कठपुतली हूं
नाचती हूं जैसे नचाता है वो
हां मिल जाऊंगी किसी
विरान पगडंडी पर
या उस राह पर
जाता नही कोई मुसाफिर
जिस राह पर

सरोज बाला

कठुआ (जम्मू कश्मीर)

कहानी

अपनों की अहमियत

शादी समारोह समाप्त हो चुका था , लेकिन गहमागहमी अभी तक समाप्त नहीं हुई थी| मेह्मानों ने भी ड़ेरा जमा रखा था|

ऐसे में नवविवाहिता आरती को बहुत असुविधा हो रही थी| सुबह उठकर तैयार होना , रात देर से सोना और दिन भर परिवार वालों के सामने घूंघट ड़ाल कर बैठे रहना |रोज सुबह शाम घूमने फिरने वाली आरती के लिए सज़ा से कम नहीं था| रात सोने के समय या दिन भर में किसी समय उसकी झलक मिलती तो वह समय एक ताज़े हवा के झोंके के समान आरती को घुटन से राहत दिलवाने होता था|

आरती चाहती थी कि मायके की तरह दिन में खाना खाकर थोड़ी देर कमर सीधी कर ले और शाम को थोड़ा टहल आए |पर रिश्तों से भरे माहौल में यह संभव नहीं था|

शाम को वह उदास बैठी थी| तो समझदार जेठानी ने प्रदीप से कहा ," देवर जी .... कुछ दुल्हन का ख्याल रखा करो ?'

" क्या हुआ ?" प्रदीप ने चौंकते हुए कहा|

" अरे ..... आरती को थोड़ा घुमा फिरा लाओ| घर में बैठी बैठी बोर हो गई होगी | "

" लेकिन भाभी रिश्तेदार क्या सोचगें ? प्रदीप ने अपने दिल की बात को छुपाते हुए बोला |

" सोचने दो जो भी सोचते है| तुम लोग जाओ| बाकी मैं संभाल लूगीं| " भाभी नें कहा |

थोड़ी देर बाद प्रदीप आरती को बाइक पर बैठा कर बाज़ार ले गया | बाज़ार पहुंच कर बाइक पार्क में खड़ी करके बाज़ार में पैदल इधर उधर घुमने लगें| पहली बार पति के साथ घूमती आरती बहुत ही रोमाचिंत थी| उसके छोटे से शहर में तो शाम सात बजे से ही अंधेरा छा जाता था और यंहा लग रहा था कि दिन अभी ही शुरू हुआ हो | चारो और रोशनी के रंग बिरंगे फुहारें, एक से एक खूबसूरत पोशाको में सजधजे युवक युवतियां और चारो ओर रौनक सी छाई हुई थी| इन्हीं सभी में खोई खोई हुई आरती प्रदीप के पीछे पीछे चल रही थी| तभी प्रदीप की आवाज़ से आरती चौंक गई| उसे लगा की प्रदीप उसका ध्यान अपनी ओर खींच रहा है|पर प्रदीप की निगाहें तो खूबसूरत लड़कियों के झुंड पर थी| आरती प्रदीप की शरारत पर मुस्करा उठी|कुछ देर के बाद प्रदीप ने कहा," देखो कितनी सुंदर जोड़ी है? बड़ा किस्मत वाला है वो जिसे इतनी सुंदर सी पत्नी मिली है| "

आरती ने देखा बाकई वह महिला बहुत सुंदर थी| उसने फिर सहज सरल रूप से मुस्करा कराकर हाँ में हाँ मिलाई | दोनों कुछ देर घूम कर चाट पकौड़े खाकर बापिस आ गए | अगले दिन फिर घूमने निकले| अगले दिन फिर वही स्थिती रही | प्रदीप का ध्यान फिर इधर उधर जाता रहा | आरती को बुरा लगा कि साथ में इतनी नवविवाहिता पत्नी के होते हुए भी प्रदीप का ध्यान कहीं ओर है ?पर उसका बचपना समझ उसकी चंचलता पर ध्यान नहीं दिया |

कुछ दिन बाद प्रदीप आरती को लेकर अपने नौकरी वाले शहर में चला आया | आरती समझ चुकी थी कि प्रदीप सौन्दर्य का रसिया है |और इसलिए सांवली सलोनी आरती पाकर ज्यादा खुश नहीं है |लेकिन आरती को विश्वास था कि एक दिन सब कुछ ठीक हो जाएगा |उसने बड़े यत्न से अपनी गृहस्थी सजाने शुरु की थी| छोटे से घर में सारा सामान सलीके से लगाया था| परदे, चादर, कुशन जो उसने खुद काढ़े सिले थे लगाकर घर की काया ही पलट गई थी| आँगन में फूलदार पौधे लगाकर सजा दिए थे | कुछ दिन तो प्रदीप भी हैरान और मुग्ध हुए रहा| उसे विश्वास नहीं हो रहा था| कि स्त्री के स्पर्श से घर इतना सुंदर बन जाता है | आरती के साथ साथ प्रदीप भी खुश था|

जल्द ही प्रदीप का मोह भंग हो गया|वह अपने रंग में आ गया | जब भी आरती उसके साथ घूमने को तैयार होती तो प्रदीप उसे टोक देता | ," अरे इतने गहरे रंग की साड़ी ? इसमें तो पता नहीं चलेगा कि तुम्हारा चेहरा , हाथ पैर और तुम्हारी साड़ी कहा है?"

" लेकिन दक्षिण भारतिय महिलाएं भी तो सांवली रंग की होकर इतने गहरे रंग पहनती हैं| " आरती ने अपना तर्क दिया |

" अरे उनकी बात तो कुछ और हैं| इन पर ये भी फबता हैं| " प्रदीप ने बड़ी लापरवाही से कहा |

आरती अगर हल्के रंग की साड़ी पहनती तो प्रदीप उसी टोक देता ," अरे ...इसमें तुम्हारा रंग और भी गहरा लगेगा |"

आरती कट कर रह जाती है," ठीक है...तुम ही बताओ क्या पहनू ?" दीप उपेक्षा से बोला ," कुछ भी पहन लो .... लगता है भगवान ने तुम्हें ओवर टाइम में बनाया है |" अपमानित सी आरती की आँखों में आँसू आ गए और सारा

उत्साह ठण्ड़ा पड़ गया | यह सच था कि उसका रंग सांवला था लेकिन नैन नक्श सुंदर थे| लंबे बालों की चोटी लहराती थी| उसकी खूबसूरत सी आँखों को देखकर सहेलियाँ अक्सर चुस्कियाँ लेकर कहती थी," आरती... पलकें झुकाकर रखना वरना कोई न कोई इन झील सी आँखों में डुबकी लगा लगेगा|"

आरती अपनी कमी को बखूबी समझती थी| और इस कमी को पूरा करने की खातिर उसने अपना पूरा ध्यान व्यक्तित्व को संवारने में लगा दिया |स्कूल कॉलेज टॉप पर रही | उसकी सुरीली आवाज़ के बिना कोई भी कार्यक्रम पूरा नहीं होता था| खेलकूद हो या कला जिस विधा में लग जाती उसमें आगे ही रहती थी| उसे विश्वास था कि उसके गुणों के कारण उसका रंग महत्वहीन हो जाएगा |लेकिन उसकी आशाओं पर पहला आघात तब हुआ जब उसके रिश्ते की बात चलनी शुरू हुई | अच्छा घर व गुणों के होते हुए भी बात सांवले रंग पर अटक जाती थी| प्रदीप से रिश्ता तय हुआ तो उसे लगा कि शायद उसके गुणों का कद्रदान मिल गया है लेकिन प्रदीप ने उसकी सारी इच्छाओं पे पानी फेर दिया था| घर से बाहर निकलते ही उसके धेर्य की परीक्षा शुरू हो जाती थी | प्रदीप आरती पर खूबसूरत स्त्रियों या लड़कियों को देखकर कोई न कोई टिप्पणी ज़रूर करता|

कई बार आरती बात को मज़ाक में उड़ाते हुए कहती ," अरे.... खुशकिस्मत हो जो मेरी जैसी वीवी मिली वरना सब तुम्हारी तरह मुझे भी मुड़ के देखते या सीटी बजाते|" " रहने दो सब बेकार की बातें ... आजकल ब्यूटी का ज़माना है |"

आरती का मन चित्कार हो उठता | उसके बस में जो कुछ भी था |वह कर रही थी| लेकिन जिसका सुधार नहीं हो पाए | उसका क्या इलाज़ था | फिर भी वह हिम्मत जुटाती और प्रदीप को आकर्षित करने की कोशिश में रहती थी|

उसने सुना था कि पति के दिल तक पहुंचने का रास्ता पेट से गुजर कर दिल तक जाता है | उसने नई व्यंजन वाली पुस्तक लाकर अच्छे अच्छे व्यंजन बनाने शुरू कर दिए | अक्सर उसकी पसोड़ने उस्से पूछती थी,"आज क्या बनाया है आरती... जिसकी खुश्बू दूर दूर तक जा रही है| "आरती जब व्यंजन मुस्कराते हुए प्रदीप के सामने रखती तो वहीं व्यंजन खाकर प्रदीप कभी तो चुप्प रहता तो कभी मूह से तारीफ निकल ही जाती ," सच ही कहा है किसी ने कि सुंदर स्त्रियां अच्छा खाना नहीं बना सकती | इस कटाक्ष पर आरती तिलमिला कर रह जाती ," तुम्हें इतनी बुरी लगती हूँ तो शादी ही क्यों थी मुझसे ?"

"पता ही नहीं मेरी आँखों को क्या हो गया था? या कहीं लड़की बदली तो नहीं गई थी| ?" प्रदीप ने बड़ी लापरवाही से बोला |

तब आरती का मन ज़ोर ज़ोर कर चींखते हुए कहने को कहता ," हाँ.... हाँ.... हाँ पट्टी तो बंध गई थी आँखों पर पैसों की | " पर वह पता नहीं क्या सोच कर चुप्प रह जाती है|

प्रदीप के अंह को ठेस पहुंचा कर संबधों में गांठ नहीं ड़ालना चाहती थी| वह तो उसे बाद में पता चलता है कि उसके पिता ने दहेज में मोटी रकम दी थी| जिसके कारण सौंदर्य के पुजारी प्रदीप ने आरती से शादी तो कर ली थी पर उसे अपमानित करके भड़ास निकालता था|

बस यूँ ही रोते घुटते आरती का जीवन गुजर रहा था| उसकी बेटी भी हो गई थी| उसका रंग रूप भी प्रदीप पर गया था| बरना उसे भी आरती की तरह ताने सुनने पड़ते | अपने मन की व्यथा वह किसी को भी कह नहीं पाती थी| तभी उसकी ज़िंदगी में एक और तूफ़ान आ गया| उसने देखा पड़ोस के खाली मकान में सामान उतर रहा था| एक छोटे बच्चे के साथ दंपति भी नज़र आ रहे थे| आरती का स्वभाव वैसे भी मेलजोल रखने वाला था| नए पड़ोसी से परचिय पाते कुछ मदद की आवश्यकता पाने के लिए पूछने व चाय पर आमत्रिंत करने के लिए गई| उनके मुख्य दुआर पर पहुचंते ही वह ठिठक गई | आरती मन ही मन कहने लगी कि अगर इसका आना जाना हुआ तो प्रदीप को आरती की तुलना करने का मौका मिल जाएगा |हर समय पड़ोस में रहने से शायद इन्हें आर्कषित होने का मौका मिल जाए | बापिस चली जाँऊ या न नहीं| आरती अभी सोच ही रही थी कि इतने में वही महिला आरती के पास गई |

" आइये न बाहर क्यों रूक गई | हम आपके नए पड़ोसी है|"

आरती चौंक उठी | चेहरा कुछ जाना पहचाना सा लगा | यह तो संगीता है | बी.ए में उससे एक साल सीनियर थी |रंग रूप पर इतना घमंड़ था कि सीधे मूंह बात नहीं करती थी | उसके चक्कर में घर से कॉलेज के रास्ते में जाने कितने लड़के मंड़राते थे| चलो ठीक है इतनी घमंड़ी किसी को पास फटकने नहीं देगी | पर यह क्या? उसकी आशा के विपरीत संगीता ने बड़े प्रेम से उसका हाथ ने पकड़ लिया| " तुम आरती हो न "फिर आरती से वह कितनी देर तक बातें करती रहीं |

उसके परिवार से परचिय पाकर आरती शाम की चाय पर निमत्रण देकर घर आकर तैयारियाँ करने में जुट गई | मन ही मन हैरान भी थी क्योंकि संगीता व उसके पति की जोड़ी भी बेमेल थी| उनके रूप में ज़मीन आसमा का अंतर था| लेकिन इससे उसे क्या लेना देना |उसकी परेशानी कुछ और ही थी| वह सोच रही थी| अब क्या किया जाए ? पुरानी पहचान निकल आई है किया भी क्या जा सकता है? मेल जोल बड़ा था तो प्रदीप उसे और भी हीनता का एहसास कराएगा | वैसे हो सकता है संगीता का घमंड़ी स्वभाव खुद ही दूरी रखने में मदद कर दे|

शाम को संगीता आई तो बड़े प्रेम से मिली | शायद समय ने उसको बदल दिया| तभी प्रदीप ऑफिस से आया | उसकी निगाह जब संगीता पर पड़ी तो वह आँख झपकना भूल गया | पद्रीप की हालत देख खिसयाई बिल्ली सी आरती ने संगीता और उसके पति से परिचय कराया ," ये हमारे नए पड़ोसी है |

प्रदीप मन ही मन खुश हुआ पल भर में कितने विचार आ गए | मुश्किल से उसने मन के भावों को नियत्रण किया

संगीता के पति देखकर उसके भाग्य से प्रदीप को इर्ष्या हुई | ना जाने कौन सी मज़बूरी में संगीता ने उससे शादी की | उसने सोचा ," चलो अच्छा है | ऐसे में वह संगीता को जल्द ही आर्कषित कर लेगा| इनके पड़ोस में आने से जीवन में रौनक तो बढ़ जाएगी | कुछ देर आरती ने उससे औपचारिक बातें करते हुए पुन: निमत्रण दिया|

अब प्रदीप के जीवन में थोड़ा परिर्वतन आ गया था| ऑफिस में जाने से पहले व बापिस आकर आधिकांश समय बाहर लान में गुजरने लगा | कभी अखबार कभी पत्रिका पढ़ने के बहाने तो कभी फूल पत्तियाँ तोड़ने के बहाने सारा ध्यान संगीता पर लगा रहता था| न जाने कब उसकी झलक मिल जाए और आँखों को राहत मिले|

आरती यह सब समझती पर चुप्प रह जाती |इसलिए वह संगीता के आना जाना कम चाहती थी| प्रदीप ने आरती को कई बार संगीता के घर चलने को कहा | पर आरती ने कई बार बड़ी सफाई से टाल दिया | हालाकिं संगीता व आरती एक दूसरे के यंहा आती जाती रहती थी| प्रदीप के व्यवहार और उतावलेपन को देखते हुए आरती चाहती थी| कोई अप्रिय घटना होने से पहले यां तो यह मकान बद्ल ले यां तो इनका तबादला हो जाए |

एक दिन आखिर हुआ वहीं जिसका आरती को ड़र था| बातों ही बातों में संगीता ने आरती से कहा ,"क्या बात है ? पति से कुछ झगड़ा चल रहा है क्या ? ज्यादातर वह बरामदे में बैठे प्रदीप का ध्यान कहीं ओर ही रहता है ?"

आरती के दिल का दर्द आँखों के रास्ते बह निकला | उसने संगीता के सामने दिल का हाल रख दिया | "मैं तो उनको शुरू से पसंद नहीं थी| हमेशा खूबसूरत स्त्रियों की प्रशंसा और मुझे द्रष्टीहीन से देखना | बस यहीं हाल रहा है | तुम्हारें आने के बाद कोई दिन ऐसा नहीं गया जिस दिन तुम्हारी चर्चा न कि हुई हो? "

फिर वह प्रदीप के दोष छुपाते हुए बोली," वैसे इसमे प्रदीप का क्या दोष ? तुम तो हो ही इतनी खूबसूरत कि मेरी निगाहें भी तुम पर से हटती ही नहीं फिर वो तो पुरूष है | "

" आरती मुझे तुम्हारी नादानी पर हैरानी हो रही है | लोग तुम्हारी तारीफ करते थकते नही थे| और उसने तुम्हें घर की मुर्गी को दाल के बरावर समझ रखी है| " फीकी मुस्कान के साथ संगीता ने आरती को स्तांवना दी |

एक दिन आरती संगीता आरती के यंहा आई | तो वह उदास बैठी थी| संगीता ने कारण पूछा तो उसकी आँखों में पानी भर आया| बोली " खबर आई है मेरी माँ की तबीयत खराब है और वह मुझे मिलना चाहती है | "

" तो क्या है चली जाओ" संगीता बोली | " समस्या प्रदीप की है | ऑफिस में ज़रूरी काम के कारण साथ नहीं जा सकते और यंहा अकेले रहने से उनके खाने पीने की परेशानी हो जाएगी | " आरती ने समस्या बताई |

कुछ देर चुप्प रह कर संगीता बोली "ह्म्म ... कुछ दिन घर से दूर रहना भी ज़रूरी होता है| तभी दूसरो की अहमियत की पता चलती है| वैसे अगर प्रदीप को दिक्कत न हो तो खाने का प्रबंध मेरे यंहा भी हो जाएगा |"

" नहीं....नहीं.... नहीं तुम क्यों परेशान क्यों हो रही हो?" आरती ने कहा |

" अरे ... यंहा दौ दौ लोगों का खाना बनता है|वंहा एक और का सही | क्यों आरती ठीक है न |" संगीता बोली |

आरती ने प्रदीप की सारी बात बताई |

" जैसा तुम लोग ठीक समझो |लंच ऑफिस से ले लूंगा| ब्रेकफास्ट और ड़िनर संगीता के यंहा कर लिया करूगां| " प्रदीप मन की खुशी छुपाते हुए बोलता है |

प्रदीप की तो मन की मुराद पूरी हो गई | प्रदीप मन ही मन कह रहा था कि आठ दिन तो क्या अठारह दिन रह आओ | संगीता के पास जाने और उसके साथ अधिक समय बिताने का इससे अच्छा अवसर और कंहा मिलेगा ? और एक दो उपहार देकर संगीता को खुश भी कर देगा| शायद संगीता भी उस से यहीं चाहती है |तभी उसने खुशी से हामी भर दी | संगीता और उसके पति की जोड़ी बेमेल थी| प्रदीप के साथ होती तो जोड़ी कितनी फबती| यही सोचता प्रदीप आरती के पास बैठ गया |

आरती उस दिन का खाना फ्रीज़ में रख आई थी | कोफ्ते, रायता , पुलाव सभी

कुछ प्रदीप की पसंद का था |बड़े बेमन से प्रदीप ने खाना गर्म करके खाया | वह तो सपनों में ड़ूब हुआ बेताबी से अगली सुबह की प्रतीक्षा कर रहा था| आठ बजे बिस्तर छोड़ने वाले प्रदीप की आँख सुबह सुबह खुल गई|झटपट नहा धोकर बड़े मन से तैयार हुआ |बढ़िया सी पैंट शर्ट ड़ाली और स्प्रे किया | आज तो उसका समय काटे नहीं कट रहा था|

अखबार से नज़रे हटाकर बार बार संगीत के बरामदे में जाने लगा ," क्या संगीता नहीं जानती उसे ऑफिस नहीं जाना है| फिर उसे संगीता का निमत्रण याद आया |जब भी आपको आवश्यकता हो नि:संकोच चले आइये गा|"

प्रदीप ने सोचा देर करना ठीक नहीं शायद वह नाश्ते की तैयारी में व्यस्त हो |घर को ताला लगाकर वह संगीता के घर चल दिया |संगीता के घर की घण्टी बजाने पर नौकर ने दरवाजा खोला |

प्रदीप ड्राईंग रूम में बैठा तो आठ दस मिनट बाद नौकर ने चाय के साथ ब्रेड़ बटर, नमकीन बगैरह रख दी और बोली," आइए नाश्ता करिए .. मैड़म बस आती ही होगी |"

प्रदीप को मलाल हो रहा था कि संगीता खुद नहीं आ सकती थी| लेकिन ऑफिस के समय को याद करके रूखा सूखा खाने लगा | थोड़ी देर में सजरी संवरी संगीता आई और बोली ," माफ करिएगा मैं तो भूल ही गई थी कि आप आने वाले है इस

लिए जल्दी में कुछ बना नहीं सकीं |"

प्रदीप पर संगीता का नशा चढ़ा हुआ था इसलिए बुरा नहीं माना| दिन का खाना कैंटीन में खाया | और अगले दिन फ्रेश होकर संगीता के यंहा पहुंचा तो संगीता के पति ने उसका स्वागत किया | प्रदीप ने अभी तक ड्राइंगरूम की हद भी पार नहीं की थी| भोजन कमरे के अंदर आया तो उसका सिर चकरा गया चारो तरफ बेतरज़ी

से सामान बिखरा पड़ा हुआ था| उधर से ध्यान भटका कर नाश्ता खाना शुरू ही किया तो मन ही मन जल उठा | इतना बेस्वाद खाना आरती ने कभी नहीं बनाया था| क्या संगीता को अपने रूप सौंद्रय को संवारने के अतिरिक्त कोई और काम नहीं आता|

साथ ही खाने की मेज़ पर उसका सारा ध्यान बच्चों और पति पर ही केंद्रीत था| झुंझलाया सा प्रदीप घर आ गया |

अगले दिन प्रदीप की उत्साह पहले जैसा नहीं था| पिछले दौ दिन के अनुभव ने उसे अनमना कर दिया था| फिर भी कहीं संगीता बुरा न मान जाए | वह संगीता के यंहा पहुंचा तो आज फिर नौकर ने ही उसका स्वागत किया | घर की वहीं हाल था " कैसी गृहणी है संगीता ?घर भी साफ सुथरा नहीं कर सकती |एक आरती है क्या मज़ाल घर में ज़रा भी धूल मिट्टी रहने दे | फर्श भी दर्पण शा चमका कर रखती है|

आज फिर नौकर कल जैसे रूखा सूखा खाना आगे रख गया | प्रदीप सुलग सा गया | ऐसा नाश्ता तो आरती ने कभी नहीं कराया था| घर में बने नाश्ते में नमकीन,मिठाई के ड़िब्बे भरे रहते थे| कोई भी मेहमान चार दिन के लिए आ जाए तो रोज़ रोज़ नए नए पकवान बनते थे| और यंहा संगीता को कोई सुध नहीं है| प्रदीप का मन हुआ कि नाश्ता छोड़कर उठ आए | तभी इठलाती हुई आई|

"अरे... आप ने तो कुछ लिया ही नहीं | दरअस्ल मैं उनके कामों में लगी रही| सुबह तो इन्हें बच्चो की तरह एक एक चीज़ देने पड़ती है| इसलिए कोई काम नहीं हो पाता | आप लीजिए न ..."

पर प्रदीप का स्वाद कसैला हो गया था | प्रदीप सोचने लगा ," क्या आरती को घर

के काम नहीं पड़ते | इसे सजने सवरने से फुरसत मिले तब कुछ करे न .... | "

संगीता के रूप का जादू धीरे धीरे कम हो रहा था| वह सोच रहा था कि शाम के खाने में क्या होगा ? उसे लग रहा था|कि वह अनचाहा मेह्मान है संगीता की बेरूखी नए उसे हक्कीत समझा दी थी|

उसका मन हुआ शाम के खाने के लिए मना कर दे पर जाने क्यों मन नहीं कर सका|

शाम को थका हारा प्रदीप घर लौटा तो चाय की तलब हुई | आरती होती तो बिना कहे चाय आ जाती थी|प्रदीप सोचते हुए चाय बना रहा था| थोड़ी देर बाद वह संगीता के घर चला गया | दरवाजे पर पहुंचा था कि अंदर से आवाज़ आ रही थी," क्या फर्क पड़ता है? कौन सा वह खाना खाने आता है | सौंदर्यपान करने ही तो आता है| और उसके बाद भूख किसे रहती है?"प्रदीप ने कोशिश की पर पहचान न पाया कि आवाज़ किसकी थी | उसे पूरी उम्मीद थी कि शायद संगीता की ओर से प्रतिक्रिया आए |कहने वाले को चुप्प कराने की आवाज़ आई |लेकिन हल्की सी हंसी के अतिरिक्त कुछ सुनाई नहीं दिया | अपमानित सा प्रदीप दबे पाँव बापिस आ गया | बस खूबसूरती का नशा उतर गया था| उसे आरती की बैइंतहा याद आने लगी |आखिर वहीं तो उसकी है|

रंग सांवला है तो क्या हुआ?और तो कोई कमी नही है उसमे? मैं भी हीरे की कद्र नहीं कर पाया | यहीं सोच के प्रदीप ने संगीता को कॉल करके कहा ," सारी ...आज कुछ दोस्तो ने पार्टी दी है रात के खाने पर नहीं आ सकूगां?"

दूसरी कॉल आरती के यंहा की | फोन आरती ने उठाया|प्रदीप ने आरती से बोला ," माँ की तबीयत कैसी है? कब आ रही हो?"

" तबीयत तो ठीक है पर अभी मुझे आए यंहा तीन दिन ही हुए है ! " आरती ने हैरानी से कहा |

तो क्या मैं तुम्हें कल लैने आ रहा हूँ | "प्रदीप ने बोला|

आरती का मन हुआ था कि पहले उससे पूछे कि क्या सुंदर हाथों की रोटियां मीठी नहीं |"

प्रदीप को क्या पता था कि उसे और आरती को एक दूजे को करीब लाने का उपाए फ़ॉर्मूला काम कर गया था | और सच में सुसराल वालो के रोकने पर भी प्रदीप आरती को घर ले ही आया था | अब वह बदल चुका था | आरती भी इस परिवर्तन हैरान थी क्या वही प्रदीप है जो बात बात पर उसका मज़ाक उड़ाता था और ताने मारता था| हर काम में खोट निकालता था |

काम करती हुई आरती के पास जब भी प्रदीप खड़ा हो जाता था| और उसे मुग्ध द्रष्टी से निहारता था | और आरती रोमाचिंत हो उठती थी| लेकिन उसकी समझ से यह बात बिल्कुल परे थी कि आख्रिर यह हुआ कैसे?

हमीद कानपुरी,
कानपुर -208004

ग़ज़ल

ज़िन्दगी में एक पल को भी नहीं आराम था।
आदमी अच्छा भला था पर बहुत बदनाम था।

हर तरह का लुत्फ जमकर पा रही थी ज़िन्दगी,
खूबमहफिल सजरहीथी मयक़दाथा जाम था।

चाँद पर उतरा हमारा यान बिल्कुल बेखटक,
कुल ज़माने के लिए ये बरतरी पैगाम था।

आज सब ने देख ली ताबीर जीती जागती,
एकसपना कलतलकथा औ ख़याले खाम धा।

मार कर मन एक बुढ़िया थी खड़ी बाज़ार में,
बसवही खुशखुशदिखामुट्ठीमेंजिसके दामथा।

कहानी

राजेन्द्र कुमार सिंह
नाशिक-(महाराष्ट्र)
ईमेल rajendrakumarsingh4@gmail.com

जुलूस

कमलनाथ हमेशा अपने मन की करने में ही अपनी जीत समझता या मानता था।उसकी इसी अहंकार जिद व प्रतिद्वंदिता की भावना से ओतप्रोत हो अपने भविष्य को अंधेरे गर्त की ओर ले जाता दिखाई दे रहा था। जो उसके बाबू जगतनारायण राय को तनिक भी अच्छा नहीं लगता था।उसकी इसी तरह की दकियानूसी बातों को सुन उनका हमेशा एक ही बात रहता-'तेरा जीवन नरक बनता दिख रहा कमलनाथ।पार्टी-वार्टी का काम छोड़ पढ़ाई-लिखाई पर ध्यान दें।सबका समाधान इसी में छिपा हुआ है। तुम्हारा उज्ज्वल भविष्य इसी के इर्द-गिर्द घूम रहा है।लेकिन तुम अपने अहंकार के चलते शिक्षा के रास्ते को छोड़ गलत रुख पकड़कर अपने स्थाई सुख पर ग्रहण लगा रहे हो। फिर उसके बाद बड़े-बड़े विद्वान के विचारों उद्धृत कर उसको समझाने का भरपूर प्रयास करते। किंतु कमलनाथ के दिमाग में पार्टी वालों ने ऐसा गोबर भर दिया था कि वहां अच्छे विचार का रंग जमना कतई संभव ही नहीं था।पार्टी चाहे कोई भी हो।उसका हमेशा यही ध्येय होता है।उसके ढेरों कार्यकर्ता हों जो उनके द्वारा दिए गए थोड़े बहुत पैसों पर मौज करें और जहां जुलूस,झंडा या मजमा लगाना हो या मार-पीट करने की नौबत आए तो कसकर दहाड़े,लड़ भीड़ जाए।

उस समय कमलनाथ को बाप की नसीहत सुन दोस्तों के बीच में काफी फजीहत या लज्जित होना पड़ता था।जब उसके अड़भंगी मित्र जो गलत सोहबत को ही परम रास्ता मानकर आगे चल रहे थे।कमलनाथ उसी पथ का अनुसरण कर आगे बढ़ रहा था।

इसलिए कमलनाथ जब भी घर आता उसके बाबू एक जुमला छोड़ ही देते-'बेटा यही समय कुछ बनने संवरने का है। यह सत्रह-अठारह साल की उम्र अपने आप में काफी मायने रखती है।संभल गया तो बदल गया आचार- विचार, व्यवहार नहीं तो सारा जीवन लोफर- लफंगा गिरी में बेकार।कुछ पढ़ लिख लो उसके बाद जो राह चुनना हो यह तुम्हारे ऊपर है।राजनीति के लिए सारा जीवन पड़ा है।लेकिन बाबूजी की बातें उसे खौलते हुए गर्म लोहे की तरह अपने कानों में और दिलों दिमाग पर लग रहे थे। उसने सिरे से पिता की बातों को खारिज कर बेहततीरब लहजे में उनके ऊपर उड़ेल दिया-' उमर ने आपके दिमाग को शिथिल व सुषुप्त बनाकर छोड़ दिया है।सारा दिन बरसाती मेंढकों की तरह टर्राते रहते हैं।यह कहते हुए गुस्से से चेहरा सिकोड़ते हुए आंखें गड़ा दिया था-जो बकना है बकते रहिए।मुझे अब और आगे पढ़ना नहीं दसवीं तक पढ़ लिख लिया ना आगे की पढ़ाई मुझसे किसी भी हाल में होने वाली नहीं। गांव में बहुत पढ़े-लिखे पड़े हैं तो कौन सा पहाड़ तोड़ लिए है।

कमलनाथ की बातें सुनकर दंग रह गए वह भी शिक्षा पर।इस तरह की बाते करते देख विचार हुआ कि दो चार हाथ जमा दे। किंतु कद्र की सीमा खतरे के निशान से ऊपर तक पहुंच गई हो तो परिणाम कुछ भी हो सकता है।इसलिए अपने गुस्से को काबू में कर मध्यम स्वर में विनम्र होकर वार किए -'बेटा कम से कम शिक्षा को लेकर ऐसी बातें मत कहो।क्योंकि मैं अपने जिंदगी में ऐसे दोस्तों के बीच रहा जो समाज के दबे कुचले लोगों का हमेशा से भला किया।इस शिक्षा के बदौलत गए निकल गए।आज तुम जिस नेता के पीछे भाग रहे हो जरा पता करना उनके लड़के इसमें शरीक है कि नहीं। हकीकत से रूबरू हो जाओगे।आज उनका गुलामी कर रहे हो कल हर तरह परिपूर्ण होकर बेटा आएगा तो कल उसके बेटे का पांव पखारना।आज मंदिर-मस्जिद के झगड़े में पड़कर क्या हो रहा है नेताजी के बच्चे सच्चे देशभक्त बनकर विदेश में पढ़ाई कर रहे हैं और तुम सब मंदिर मस्जिद खोदने में झंडा ढोने, दंगा फसाद में संलग्न कर अपने जीवन को अंधकार में बना रहे हो।किंतु ब्रेनवाश जब वक्त की नजाकत को देखकर किया गया हो तो उसे कुछ सुझता नहीं है। बातें कितनी भी अच्छी क्यों न हो उसे बुरी लगती है।

जगतनारायण अपने एकलौते बेटे का भविष्य अंधेरे गर्त के खाई में जाता दिख रहा था।लेकिन जगतनारायण ने सोच लिया था कि उनका समझना वदस्तूर जारी रहेगा।इज्जत करें या भला बुरा कहे फजीहत करें लेकिन जिस तरह उसके दिमाग को गलत धारा में मोड़कर उसके अरमानों को तोड़ा है उसे ऐसे मोड़ पर लाकर छोड़ा है जहां से भविष्य की नींव पड़ती है जीवन अंगड़ाई लेती है ।भविष्य के लिए ताना-बाना बुनने सपने साकार करने का समय होता है।वह चाह रहे थे कि बेटे को भी अपने ढंग से उसको सही राह दिखाए।वह इस पर काम करना शुरू कर दिया है।यह तो मालूम है कि कमलनाथ जिस राह का राही हो गया है ।वह चापलूसी भरा एक अलग जिंदगी जीने के अपना सर्वस्व अपने बुद्धि को गिरवी

रख छोड़ा है।जिसका नतीजा गलत ही होगा।अंधभक्ति में अंधा होकर भविष्य को तहस नहस तो कर ही दिया।किंतु मैं भी अपने विचारों को उसके मन में जो वर्षो से काई की तरह जमकर उसके शक्ति को लुप्त कर उसकी नेक नियति पर प्रहार कर उसके कुचले प्रयासों को अपने विचारों से वार कर संवारना ही अब मेरा कार्य होगा।

कमलनाथ बाबू की बातों को अनसुना करने में ही भलाई देखता है। उसे एहसास हो गया कि बुढ़ापा सबसे बड़ी बीमारी है।जिस बात को पकड़ लेंगे उसी पर जिरह करते रहेंगे झुलते रहेंगे।उनका बकना काम है बकने दो।

जगतनारायण कुछ परिवर्तन देख चकित हो गए थे।कमलनाथ पहले तो कभी जुबान लड़ा भी देता था किंतु इधर कुछ दिनों से जुबान लड़ाना छोड़ अपने चित को शांत चुपचाप खाना खाकर सो जाता था। उसकी मां रमोती देवी उसके कमरे में खाना ले जाकर ढक कर रख देती क्योंकि कमलनाथ का आने का समय कोई निश्चित नहीं है।पार्टी का सारा दारोमदार देख-रेख करने वालों में कमलनाथ का नाम पहले स्थान पर है।उसकी पार्टी के नेता सौरभ कुमार चुनाव की सारी जिम्मेदारी कमलनाथ को सौंप दिए हैं।यह उनका विश्वासी भक्त है दोनों की दोस्ती काफी प्रगाढ़ है।इसलिए चुनाव में खर्च का लेन-देन, किस गांव में मुखिया सरपंच को क्या देना है,वोटरों में कितना पैसा बांटना है यह सारा कार्य कमलनाथ के जिम्मे है।जो अपने कर्तव्य को सजग प्रहरी की तरह सटीक निर्वाह कर रहा था। सौरभ कुमार तो उसके क्रियाकलापों का कार्य करने की क्षमता उसकी उत्सुकता पर दिलो जान से मोहित थे।

कमलनाथ जिस गांव में पांव रखता था।गांव के सारे वोटर उसके अगुवाई में धक्का मुक्की करते धकियाते उसके समक्ष प्रकट होकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में झुंड के बीच झिड़क उत्पन्न हो जाती।उनकी उत्सुकता,जिज्ञासा और लालसा को देखकर कमलनाथ अपने चेहरे को झटक हल्के मुस्कुराहट के तहत कहता-'आप सबकी उपस्थिति विश्वास व आस्था को सुदृढ व परिपक्वता दर्शा रही है आप सबका प्रेम स्नेह,विश्वास, जागरूकता को देखकर सौरभ कुमार ने कहा है कि जीतते ही पहला काम इसी मुरैना गांव से श्री गणेश करूंगा।क्योंकि जुलूस में जो हुजूम उमड़ा है ऐसा बहुत कम किसी गांव में देखने को मिला।आप लोगों ने ऐसा क्या जादू कर दिया जो सौरभ कुमार जी आपके विचारों को देख अनुग्रहित व अवलंबित हो गए।हमेशा मुरैना गांव का नाम उनके होठों पर

थिरकता रहता है।आप उनके विश्वास को हताश में मत बदलिएगा क्योंकि ऐसा नेता पहली बार मिला है। इसे जीताकर असेंबली तक पहुंचना है क्या कहते हैं आप लोग,?'

'एकदम पहुंचाकर रहेंगे। एकमुश्त वोट जाएगा सौरभ बाबू को। यह स्वर गांव के मुखिया आलोकनाथ का था फिर सब ने इसको दोहराया। फिर कमलनाथ ने मुखिया जी के कानों में कुछ खुसर-पुसर किया।वोट का खरीद-फरोख्त की बातें हो रही थी।ताकि किसी अप्रत्याशित भय संवेदना या आशंका की गुंजाइश सिरे से गायब हो हो जाए।वही तय हुआ कि प्रत्येक वोट पर पांच सौ फिक्स कर दिया गया।

कमलनाथ सारी व्यवस्था कर,मामला को मुकम्मल,दुरुस्त कर अपने गाड़ी को खरौना की तरह मोड़ दिए थे।जिस गांव में जाते सभी गांव में एक जैसा व्यवहार करते कि सबसे पहले आपके गांव का विकास होगा।कमलनाथ की बातें सुन जनमानस उनके आगे-पीछे गुड़ को देखकर चीटियों के हुजूम का वार की तरह उसके पीछे-पीछे दौड़ने लगी थी।एक अलग उत्साह उमंग का सुख से अपनी ज्ञानइंद्रियों को पीछे लगा दिया था।वह जहां जिस गांव में जाते इस तरह का घुल मिलकर पेश आता था कि सभी उसके आगे पीछे डोलने लगते। उसके सुझाव के कायल हो जाते।

।।।।।।।

इस बार के चुनाव में कमलनाथ की जो भूमिका थी वाकई कमाल की थी। सभी मतदाता उसकी बातों में आकर एकमुश्त मत दिए थे जिसका परिणाम यह हुआ कि प्रचंड मतो से सौरभ कुमार विजय घोषित हुए।उनका विजय जुलूस कुछ इस कदर निकला है कि ऐसा जुलूस आज तक किसी पार्टी के द्वारा नहीं निकला था। जो अघोषित पार्टी के विजयी उम्मीदवार सौरभ कुमार ने निकाला।चुनाव में तो दिल खोल कर पैसा बाटे ही थे जीतने के पश्चात तो क्या कहना है कि वह ऐसा मानते थे कि नेतागिरी आज के जमाने में एक बिजनेस का पर्याय बन गया है जहां पूंजी लगाकर जीतना पड़ता है उसके बाद तो खूब धन अर्जित किया जा सकता है।क्योंकि सौरभ कुमार पहले से ही गांव-गांव घूमकर मतदाताओं की नब्ज टटोल कर वार करना चाह रहे थे। ऐसे में कमलनाथ जैसे यशस्वी शिष्य का मिलना उनके अंतस्थ को काफी सुकून पहुंचा गया। भरोसे का भाव परिलक्षित करा गया। ऐसे में ही उनका जीत सुनिश्चित हो गया था।क्योंकि कमलनाथ का प्रभाव लोगों पर जादू की तरह छा रहा था। उसके बातों के भंवरजाल में उलझे हुए भी सुकून मिल रहा था।

कमलनाथ की चिंता की रेखाएं जो असमय उसके चेहरे पर वक्त से पहले उग आई थी। परिणाम पक्ष में आते ही खुशियों के लहर पर सवार होकर कब कैसे विलीन हो गई और वहां सुकून व चैन की छांव में गांव का विकास उसके आंखों के समक्ष तैरने लगा था। सौरभ कुमार ने बहुत जल्द आकर गांव-गांव में सभा कर एक-एक लोगों से मिलने का वादा,उनकी समस्याओं के निवारण करने वादा करके असेंबली में अपने उपस्थिति से दर्ज कराकर शीघ्र लौटने की बात करके गए थे।किंतु अब एक-एक करके दो-तीन महीना सरक गया लेकिन नवनिर्वाचित प्रतिनिधि सौरभ कुमार का कोई अता-पता और ठिकाना का कुछ पता नहीं चल रहा था।उनका अपना पर्सनल ध्वनि भ्रमण यंत्र यानी मोबाइल भी उनके पर्सनल पी ए के हाथों सुपुर्द कर चैन कि नींद लेने में मशगूल थे।अपने क्षेत्र का सबसे बड़ा हमदर्द है वह भरोसे का कार्यकर्ता कमलनाथ जब भी पिए से कहता वह या तो टाल देता या सौरभ कुमार उससे बात करना

नहीं चाह रहे थे।

कमलनाथ को अब सारी बातें समझ में आने लगी थी।हालांकि ईमानदारी से अपने कर्तव्य का वगैर पूर्वाग्रह का निर्वाह किया था ।एक-एक मतदाताओं से मिलकर उनकी समस्याओं को सौरभ कुमार के कानों में डाला था। ताकि जीत के बाद उनके भरोसे को जीत कर अस्थाई रूप से यह सीट अपने हाथों में बना रहे किंतु एक हल्की फुहार ने उनके अरमानों को धो पोछकर रख दिया था।

कमलनाथ अब कैसे अपना शक्ल दिखाएं।घर से निकलना जैसे मुश्किल व दुरूह सा लग रहा था । कहीं भी जाते लोगों का हुजूम एकजुट हो ही जाता।उनका चेहरा मायूसी व अनकहे दर्द की गहरी पीड़ा से जकड़ जाता था।वह हमेशा सांत्वना देते हुए बातों के झुरमुट में उलझना नहीं चाह रहे थे।

जैसे-जैसे दिन बीतते जा रहा था कमलनाथ का सौरभ कुमार के प्रति मोह भंग बालू के धूप की तरह ढहता जा रहा था। विश्वास का चादर छिन्न-भिन्न हो गया था।उनकी स्थिति लीक हुए टायर की तरह सिद्ध हो रही थी।सौरभ कुमार का कुशल अभिनय के जाल में ऐसा उलझ गया था वह उसी में छटपटा कर रह गया। वह प्रतिदिन सौरभ कुमार को फोन करता है लेकिन हर बार उसकी पीए से सामना होता है।जब चुनाव में अपने अहमियत की बात करता है तो टका सा जवाब देकर फोन रख देता है -'साहब मीटिंग में है समाप्त होते ही आपसे बात करवाता हूं यह फोन नंबर आपका ही है और वगैर जवाब जाने मैं सुरक्षित कर लेता हूं ताकि आपसे मुलाकात किया जा सके,बातचीत हो सके।

इसी तरह दिन महीना पूर्ववत बीतते रहे। जनप्रतिनिधि सौरभ कुमार का फोन नहीं आया और ना ही जीत कर जाने के बाद फिर उनका मीटिंग हुआ और ना ही बाद में कोई और जुलूस निकला। कमलनाथ आज काफी दुखी हैं कैसे उसके शुभचिंतक बनकर उसके भावनाओं का खून किया है।जो उनके चुनाव का सर्वे सर्वा दरोमदार बनकर आज भी जनता की उपेक्षा उलाहना और तिरस्कार की भावना से अभिशप्त हैं।आज जनता के प्रति किए वादे यूं ही ज्यों के त्यों अधूरे अधर में लटके सौरभ कुमार के टोह में उनके फिराक में लटका हुआ है ।वैसे पता चला कि अपने अघोषित पार्टी का किसी राष्ट्रीय पार्टी में विलय हो गया है।गुप्त सूत्रों से पता चला कि इस बार पार्टी उन को जिस क्षेत्र से विजय घोषित हुए हैं वहां उनके जगह पर उनका लड़का जो विदेश से उच्च शिक्षित होकर नौकरी के चाह को लापरवाह की तरह धकिया कर पिता के पक्ष पर चलने का निर्णय लिया है।सौरभ कुमार अपने बेटे के इस जिद को सहर्ष स्वीकार कर अपने तरफ से हरी झंडी दिखा दिए थे ।क्योंकि राजनीति ही एक ऐसा क्षेत्र है इज्जत प्रतिष्ठासे लेकर हर तरह से वारान्यारा करने में अहम भूमिका निभाते आ रही है ।और इस बार का चुनाव में सौरभ कुमार का लड़का तुलसी कुमार लड़ने वाला है ।

इसी बीच कमलनाथ के माता-पिता बेटे के करतूतो से आहत हो एक साल के अंतराल में ही कुच कर गए थे।कमलनाथ शादीशुदा तो था ही।जिस साल सौरभ कुमार चुनाव जीते थे उसी साल कमलनाथ में नेतृत्व की क्षमता को देखकर उसके पड़ोसी गांव हसनपुरा गांव के रामचरण सिंह ने अपने बेटी का रिश्ता कमलनाथ के साथ संपन्न हो गया था। रामचरण भी राजनीतिक पकड़ वाले व्यक्ति थे और उनकी लालसा भी थी कि उनकी बेटी का ब्याह एक राजनीतिक परिवार से ताल्लुक रखता है उसी के साथ करूंगा।

राम चरण सिंह जब कमलनाथ के पिता जगत नारायण राय से मिले तो इस रिश्ते पर किसी तरह का एतराज ना जताकर भीतर से काफी खुश नजर आ रहे थे।ताकि बेटा जब मां-बाप के बातों को अवहेलना करे तो ब्रह्मास्त्र के रूप में पत्नी का जादू सिर चढ़कर बोलने लगता है।अब तक जो मेरे किसी बातों पर तरजीह नहीं देता था कैसे पत्नी के आते उसके करतूतों पर लगाम लगाती है।किंतु शादी होते ही वह दिन देखने की नौबत नहीं आई।एक माह बाद महीने भर के अंतराल में दोनों प्राणी कूच कर गए।उनकी इहलीला समाप्त हो गई।बाबू के कसौटी पर खरा नहीं उतरा कमलनाथ और सौरभ कुमार के जीत के पश्चात दिन-प्रतिदिन जनवासे पर बढ़ती भीड़ हुए जिसमें वादा निभाने की जुर्रत को देखते हुए भीतर से जगतनारायण अंदर से टूट गए थे इसलिए वगैर दुख तकलीफ भोगे जाने का सुगम रास्ता मिल गया था।

आज कमलनाथ घर का सर्वे सर्वा है।चार साल का एक लड़का है जिसका नाम अमरनाथ वह पत्नी सविता है।छोटा परिवार सुखी परिवार है।आजू बाजू की बातें अक्षरसः सत्य सिद्ध हो रही थी।वह कह रहे थे उनकी बातें मेरे चाल चलन को देखकर गहरी उदासी में घिरी हुई होती थी- 'कमलनाध तेरे पढ़ने-लिखने के दिन है। यह नेतागिरी नारा - व्यारा,जुलूस यह सब बाद की बातें हैं।पहले कुछ बन जाओ लेकिन उस समय अपने खून की गर्मी में वह अपने ही रौ में बहते किसी के भावनाओं का कद्र करना, उस पर ध्यान देना बिल्कुल निरापद लगता था।वह हमेशा गलत रास्ते पर जाने से रोकते रहे।आज सौरभ कुमार ने जो कहा था कमलनाथ चिंता मत करो।अपनी चिंता को मुझ पर छोड़ दो तेरी सारी समस्या मेरी समस्या है।बस तन्मय होकर काम करो।चाहे जैसे हो तन-मन-धन से वोटरों को रिझाने,अपने पक्ष में करने के लिए जो कुछ भी टेढ़ा-मेढा फार्मूला अपनाना चाहते हो अपनाओ।बस जनाधार बन जाए।उस समय सौरभ कुमार की बातें उसके बाबू के तुलना में काफी वजनदार साबित हो रही थी। इसलिए बाबू के बातों को हमेशा खारिज कर अपने मन को फारिग करने के लिए औषधि के रूप में उपयोग करता था।हां उनकी बातों का जवाब नहीं देना है इसके लिए तो पहले ही कसम खा लिया था और बारीकी से अमल भी करता था।उसकी मां कहती थी-'तेरा बाबू कह रहे थे कमलनाथ को कितना भी भला-बुरा कह दूं लेकिन आज तक तो न कभी मुंह

लगा,और न ही कटु शब्द बोलकर कभी मेरे मन को आहत किया।तब सुनकर लगा कि उसके बाबू उसके बारे में ऐसा सोचते थे।एक बार फिर यादें ताजा होकर उसके मन के विकार को आंखों में बह रहे आंसुओं ने धो पोछकर रख दिया था।

चुनाव की सरगर्मी का माहौल बनता जा रहा ह।सब अपने-अपने पार्टी के उम्मीदवार अपने वादों को नारे में लपेटकर वातावरण में उछाल रहे हैं।हालांकि इस बार भी कमलनाथ को नेताओं ने घेरने की पुरजोर कोशिश की थी। किंतु कमलनाथ ने विगत में गच्चा खाया दिल अपने संकल्प से तनिक भी नहीं डिगा।दअब वह कभी भी राजनीति में बढ़ चढ़कर हिस्सा नहीं लेगा।एक सजग मतदाता की तरह योग्य उम्मीदवार को अपना मत देने के लिए आग्रह तो करेगा किंतु दवाब तो हरगिज नहीं डालेगा।अब कमलनाथ के प्रति सब की सहानुभूति उभरने लगी थी।किस तरह झूठ के भंवरजाल में फंसाकर कमलनाथ के भावनाओं को रौंदा गया।जनमानस उसके पक्ष में आने लगी तो वह इस क्षेत्र से तटस्थ व निराधार होकर एक गृहस्थ जीवन की परंपराओं के देखरेख में जीवन यापन कर रहा था।

आज कमलनाथ जगतनारायण के जगह पर है।दिन पूर्ववत बीत रहा था। इस बार के चुनाव में गहमागहमी कुछ ज्यादा दिख रही थी।सौरभ कुमार के बेटा तुलसी कुमार इस बार के ऐसेमबली के चुनाव में उतरा है। सौरभ कुमार किसी अन्य जगह से लड़ने वाला है।बाप बेटे का दौरा शुरू हो गया है। तुलसी कुमार का राजनीतिक भविष्य को पराकाष्ठा पर पहुंचाने के लिए इधर का रूख किए हैं।

कभी कमलनाथ फोन करते-करते थक गया किंतु फोन कभी रिसीव नहीं किया।आज सौरभ कुमार का फोन निरंतर बजता है किंतु कमलनाथ देखकर छोड़ देता है।

आज कमलनाथ के गांव पड़रिया का दौरा है।सौरभ कुमार कमलनाथ से मिलने उनके घर पर गया है।किंतु घर पर नेताओं के जमघट से जैसे उसको चिढ़ सी हो गई है।वह अपने पिछली गलतियों को बार-बार दोहरा रहे हैं।किंतु वक्त के कसौटी पर तपकर कमलनाथ के अंदर एक ऐसा चमक उभर आई है जो उसके समक्ष अब कोई टीक नहीं पाता।जिस तरह झूठा आश्वासन देकर उसके भावनाओं को उसके प्रतिष्ठा को रोकने का प्रयास किया गया।उसकी कराह आज भी बरकरार है। हमेशा उभरती रहती है और वह छटपटाने लगता है। काश! अपने बाबू का बात मान लिया होता तो आज का नजारा कुछ और होता। इसलिए वह अपने बच्चों को जो अभी नवांकुर है इन राज नेताओं के छाया से अभी से बचाना शुरू कर दिया है। हमेशा प्रयासरत रहता है।क्योंकि अब समझ में आ गया है कि यह खदरधारी अपने भाव का प्रभाव जमाने के लिए जनता की आपसी लगाव को तोड़कर अपना नाता जोड़ते हैं।कमलनाथ अनुभव के भट्ठी में तपकर काफी सीख गया है,निखर गया है। उसका एक ही नारा है पैसे जितना खाना है खाओ लेकिन वोट वहीं गिराओ जहां तेरा तन मन सूझबूझ से इजाजत दे।

सौरभ कुमार कमलनाथ को समझाकर फिर से लाइन पर ला दिए हैं ऐसा वह सोचते हैं।किंतु कमलनाथ को मालूम है जीत पैसा से नहीं जनता अपने मत से तय करेगी।

लघुकथा

मीना दत्ता
पटना,बिहार

अपनी मिट्टी

सुमिया किशोरी थी ...जंगल मे जामुन महुआ बिछना ..मिट्टी के कलशी में नदी से पानी भरना

हाट बाट जंगल में सखियों संग खेलना गाना उसका दैनिक कार्य था।सुबह मुहं धोकर माँ उसके बड़े बालों का कसकर जूड़ा बांधती ..चिड़ियों के जमा किए हुए रंगबिरंगे पंख खोंसती..सुमिया को कहती

" दिखा तो उड़कर चिड़ियों जैसा"

उत्फुल्लता भरी हंसी आदिवासी युवतियों की पहचान है।जंगल और मातृसत्तात्मक व्यवस्था इनकी हंसी से बरकार है।

जंगल काट सड़के अस्पताल स्कूल बने।बिजली पानी आई।जंगल रोई ..सुमिया का परिवार विस्थापन का शिकार हुआ ..न जंगल न खेत न रोजगार।महानगर में फ्लाइओवर के नीचे कभी फुटपाथ पर परिवार सोता ।ऊंची बनती गगनचुम्बी इमारत के लिए गारा ईंट उठाती

सुमिया के जूड़े से पंख तो अपने मिट्टी के घर में छूट गए।दो समय परिवार भरपेट खाना खाए

इसके लिए आकाश में उड़ान भरने की बात सुमिया की माँ अब नहीं करती।

सुबह में रात का बचाया गया भात कटोरी में खाते उसका पांच वर्षीय भाई सूरज निकलते ही पूछता है

" अपने घर कब चलेंगे??"

सुमिया के पिता कहते है

" सुमिया को महानगर ने ब्याह लायक छोड़ा तो सरहुल मेले में अपने घर चलेंगे"

भाई जल्दी जल्दी भात खाने लगता है।सुमिया बालों को समेट जुड़ा बांधती है।माँ सड़क किनारे लगे गुलाबी करबीर तोड़ उसके जूड़े में लगाती है।खुश होती है इस वक्त ..सुमिया को देख निहाल होती है ...नौ बजे तक ही यह खुशी रहेगी ...गारा उठाती सुमिया फूल जुड़े से फेंक देती है...वह समझती है उन नजरों को जो कहती है" फूल का जन्म ही टूटने और सूखने के लिए होता है"

सरहुल मेला, सब सुमिया के लिए नहीं आता।सपना नींद में आता है सुमिया को। मेले में हाथ मे हाथ लिए वह छउ नृत्य कर रही है।सरहुल नृत्य चैत्र पूर्णिमा की भव्य अलौकिक चांदनी में गांव के सबसे पुराने वृक्ष के नीचे कर रही है।.....सपनों का क्या वे आते ही है ....

कहानी

क़ाज़ी वाजिद सिद्दीक़ी
बरेली ,उ प्र.
मो- 9027982074
ई मेल wajidhusain963@gmail.com

एक थी रब्बो

अट्ठारह बरस की रब्बो का यौवन निखर रहा था।रोज़ाना उसके अफ़ग़ानी माता-पिता, चाचा-ताऊ उसका ब्याह कर देने के बारे में सोचते और कई बार इकट्ठे बैठकर इस बारे में राय-मशवरा भी कर चुके थे। लेकिन रब्बो को चाचा-ताऊ के लड़कों में से कोई भी पसंद नहीं था। उसके ताऊ का बड़ा लड़का रहमत मटरगश्ती करता था। चाहे वह सुंदर और लंबा– तगड़ा जवान था, रब्बो उसे कायर समझती थी। नई बस्ती के गद्दियों के लड़कों ने उसे एक- दो बार मारा-पीटा भी था।... गद्दियों के लड़के कहते थे, 'इसके पास शरीर तो है, लेकिन दिल नहीं।' और रब्बो दिल की ग्राहक थी। शारीरिक दृष्टि से उसके पास कोई कमी न थी पांच फुट छह इंच लंबी थी वह, और मक्खन पर पला उसका शरीर मक्खन-सा ही सफेद और उससे भी अधिक कोमल था। और फिर रब्बो पर इन अफ़ग़ान पठानों की छाप पड़ी हुई थी। वे बीघो ज़मीन के मालिक थे। वे सदियों पहले यहा बसाए गए थे। ... स्वतंत्रता सेनानियों और अंग्रेज़ों की छावनी के बीच बेरियर बनने के लिए, अंग्रेज़ उन्हें प्रलोभन देते थे। कुछ को पुलिस में नौकरी और भी न जाने क्या-क्या फैसिलिटी दी थी।

गद्दी यहां पीढ़ियों से रहते थे। वे दूध का व्यापार करते थे। कुछ लोगों का मानना है, इनके वंशज गूजर थे। उनके ख़ानदान के लोग बलवान तो थे, पर पठानों को सदियों से शासकीय समर्थन था। इस कारण से अफ़ग़ानी पठानों ने उनकी ज़मीनों पर कब्जा कर लिया था। गद्दियों ने अपनी रिहाइश के लिए नई बस्ती बना ली थी।

इन गद्दियों की लड़कियों में कोई भी रब्बो जितनी सुंदर न थी। उनकी लड़कियां ख़ुद रब्बो के रूप-रंग की प्रशंसा करती रहती थी। उस जैसी लम्बी- पतली लड़की उस गांव में कोई न थी। रब्बो को पठानों और गद्दियों के बीच झगड़े-फसाद, खून-खराबा पसंद नहीं था। वह अंग्रेज़ों की इस चाल को समझती थी। वह पठानो से कहती थी, 'अंग्रेज़ हमारे देश में शासन करने के लिए हमरे बीच फूट डालते हैं। इस हक़ीक़त को झुठलाया नहीं जा सकता -सदियों पहले हमारे पूर्वजों ने उनकी ज़मीनों पर कब्ज़ा किया है इसलिए भाईचारे के लिए हमें पहल करनी होगी।' कभी-कभी वह सोचती थी, 'वह ब्याहकर गद्दियों में चली जाए तो पठान और गद्दी रिश्तेदार हो जाएंगे और हमेशा के लिए दुश्मनी पर विराम लग जाएगा।'

रब्बो के घर नई बस्ती से एक अतिथि आया करता था। वह पच्चीस वर्ष का सुडौल मज़बूत क़द-काठी का युवक था। उसका पूरा नाम सिराजुद्दीन था। सब कहते थे कि वह अपने गांव में पांच बीघे ज़मीन का मालिक है, किंतु रब्बो को विश्वास नहीं होता था। यदि सिराजुद्दीन को अंग्रेज़ों को ज़मीन देना होती तो रब्बो के पिता चाचा ताऊ में क्या दोष था, शायद सिराजुद्दीन को मेहमान समझकर ही ऐसा लोग कहते थे। ... ख़ैर यदि वह सिराजुद्दीन ज़मीन वाला था भी, तो इससे क्या। रब्बो के पिता भाईयो ने तो कभी भी उसे रब्बो के योग्य वर नहीं समझा था। सिराजुद्दीन रब्बो की ओर हमेशा कनखियों से देखा करता था। रब्बो जब भी उसके सामने होती, उसे ऐसा लगता जैसे उसे वह आंखों-आंखों में ही देख रहा हो, भाप रहा हो। और इसीलिए रब्बो उससे झिझकती थी, उसे अच्छा नहीं समझती थी। रब्बो समझ रही थी कि वह आदमी उसी के लिए उनके पास आता है। ... कहीं नई बस्ती आते- जाते वह रब्बो के भाई रहमत को मिल गया था और रहमत उसे घर ले आया था। रब्बो को याद था, उस दिन जब वे दोनों आए थे, रब्बो दरवाज़े में खड़ी थी, संभवत: उसी घड़ी सिराजुद्दीन के चोट लगी थी। किंतु रब्बो को उसका हर छठे, सातवें दिन ठाट से आटपकना भला नहीं लगता था। और फिर वह रब्बो के पिता से कह ही क्यों नहीं देता। कि रब्बो का विवाह उसके साथ कर दें। वह जब भी रब्बो को घर से भागने के लिए कहता, वह सोचती थी कि मेरे पिता ने उसे शायद जवाब ही दे दिया है। रब्बो सोचती थी अगर वह मुझे अच्छा लगता हो, तो मैं ख़ुद न उसके साथ भाग जाऊं?

उन दिनों गांवो में भी स्वतंत्रता आंदोलन की लपट पहुंच चुकी थी। रब्बो के गांव में पंडित ज्वाला प्रसाद और शफीक उल्ला आंदोलन से जुड़ चुके थे। वह छुपते- छिपाते लोगों को आंदोलन से जुड़ने के लिए प्रेरित करते थे। एक दिन वह रब्बो के घर उसके भाई रहमत के पास आए। उससे आंदोलन में भाग लेने के लिए कहा। रहमत के अंदर अपने बाप-दादा की तरह, अंग्रेज़ो की गुलामी के जीवाणुओ का साम्राज्य था। अत: उसने उन्हें कोई तवज्जो न दी पर रब्बो ने उनकी पार्टी की सदस्यता ले ली। वह स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने लगी थी। उसकी रुचि समाजसेवा में भी थी। गांव की स्त्रीयों के बीच जाकर उनकी समस्याओं का निवारण करती थी।

रब्बो जहां भी जाती थी, उसे सुनने को मिलता, 'फलां की बेटी या बहू भाग गई थी, कुछ दिन बाद उसकी लाश नदी में मिली थी। रब्बो को संदेह हुआ तो उसने गुप्त रूप से जानकारी जुटाई। वह जान चुकी थी, हर भागी हुई या मृतक के तार कहीं-न-कहीं सिराजुद्दीन से जुड़े थे। रब्बो को लगा, 'शायद इसी नियत से सिराजुद्दीन मुझे अपनी ओर आकर्षित करता था और भागने के लिए उकसाता था। यदि मैं उसके झांसे में आ जाती तो मेरा भी यही हश्र हुआ होता।'

रब्बो के कहने पर पंडित ज्वाला प्रसाद और शफीक अहमद ने पुलिस को सूचित किया। पुलिस ने सिराजुद्दीन को रंगे हाथ पकड़ने की योजना बनाई। प्लान के अनुसार, रब्बो ने सिराजुद्दीन से नज़दीकी बढ़ाई और घर से भागने का प्लान बनाया। एक रात वह सुनिश्चित स्थान पर पहुुंच गई जहां सिराजुद्दीन उसका इंतज़ार कर रहा था। उसके साथ एक अंग्रेज़ भी था। पुलिस देखकर अंग्रेज़ ने सिराजुद्दीन को गोली मार दी। दरोगा ने अंग्रेज़ से कहा, 'सर प्लीज़ रन।'

रब्बो हथियारों के बीच ही पली बढ़ी थी। अपनी सुरक्षा के लिए वह पिस्टल साथ लाई थी। उसने भागते हुए अंग्रेज़ पर फायर कर दिया। फायर की आवाज़ सुनकर गांव वाले वहां पहुंच गए थे। उन्होंने उस गोरे को तड़पते देखा, जिसने उनकी लड़कियों की बलात्कार के बाद हत्या की थी। वह कलक्टर पीटरसन था।

कलक्टर की हत्या के जुर्म में रब्बो को गिरफ्तार कर लिया गया था। उसे फांसी की सज़ा हुई थी। वीराने में बने एक मज़ार को लोग रब्बो का मज़ार बताते हैं और आस्था के साथ उस पर फूल चढ़ाते हैं। यह कहानी हर मां अपनी बेटी को सुनाती है, ताकि प्यार का झांसा देकर कोई उसकी अस्मिता से खिलवाड़ न कर सके।

लघुकथा

सपना चंद्रा
भागलपुर बिहार

लिबास

नीना की उम्र लगभग पच्चीस को होने चली थी।दो वर्ष पूर्व ही तो विवाह हुआ था। परंतु नियति ने घोर अन्याय किया था।

खाने-खेलने के लिए अभी भरा-पूरा उम्र और ये ईश्वर का दंड।ऑफिस से लौटते समय पति रमेश की एक ट्रक के चपेट में आने से मृत्यु हो गई थी।

गोद में छः माह की बच्ची,कैसे दोनों की जिंदगी कटेगी।ये सोंच-सोंचकर घरवाले चिंतित रहते थे।

कुछ ने नये सिरे से जिंदगी शुरु करने की सलाह दी तो कुछ ने यादों की समाधि पर खूद को मिटा देने की।

आखिर औरत को इसी समाज में रहना है तो ऊँच-नीच का खासा ख्याल भी रखना होगा।

गली-मोहल्ले की कुछ औरतों का तो बस एक ही काम था,दूसरों के घर की ताका-झांकी।

कौन किसके यहाँ अभी आया,कौन अभी गया एकदम पैनी निगाह लिए ताकती रहती।

छोटी ननद के ज़िद करने पर माथे पर छोटी सी बिंदी लगाई थी।थोड़े से रंग-बिरंगी चूड़ियां भी हाथों में डाली थी।इंसान का रंगों से कितना गहरा नाता है ये उसने महसूस किया था।

हद तो तब हो गई जब किसी ने कहा देखो!.आईने के सामने ज्यादा वक्त मत गुजारना।लिबास जितना सादा होगा उतना ही अच्छा रहेगा।ये भटकने नहीं देती।

नीना की नजरों में कई सादे लिबास तैरने लगे थे।जो भटके हुए थे।

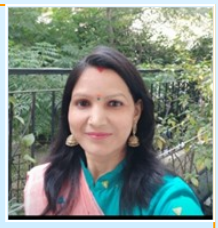

पूनम सिंह
दिल्ली

कृपणता

'अब कौन आया ! त्योहार खत्म हुआ नहीं कि सुबह से ही मांगने वालों की लाइन लग जाती है।" 'क्या है भाई "? उसने झुंझलाते हुए कहा।

"बाबूजी दिवाली का प्रसाद दे दीजिए।"

"अरे कितनों को दे! सुबह से कितने ही मांगने वाले आ गए । सीढ़ी धोने वाला , प्रेस वाली ,काम वाली बाई , स्वीपर, चौकीदार अब तुम। अरे क्या हमारे घर पैसों का पेड़ लगा है "? पूरे गुस्से में उन्होंने अपने शब्दों को ऊँची तान देते हुए कहा। " वैसे तुम कौन हो" ?

"जी , मैं कूड़ा उठाने वाला।"

"हाँ तो मैंने कहा ना .... "इससे पहले कि वो अपनी बात पूरी करता उसने कहा ".. ,अच्छा तो कूड़ा ही दे दीजिए आप अपना ।"

उसने रसोई में जाकर झट से कूड़े की बाल्टी लाकर पकड़ा दिया। तभी उसका पोता दौड़ता हुआ आया " ,दादा जी.. दादा जी..! तुमने कहा था ना दिवाली के बाद मुझे रेस्टुरेंट लेकर चलोगे।"

"हाँ - हाँ मेरा लाडला जरूर! " उसने प्रेम पूर्वक उसके सर पर हाथ फेरते हुए कहा।

"ये लीजिए बाल्टी ! "उसने कूड़ा समेटकर बाल्टी उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा। उसकी नज़र कूड़े वाले से टकराई और वो एक पल के लिए उससे नज़रें नहीं मिला पाया ।

रमेश कुमार संतोष
rameshkumarsantosh1951@gmail.com

कलह

घर के सब सदस्य तनाव में आ गए। उम्मीद तो पहले से ही थी परन्तु यह इतनी जल्दी हो जायेगा इसका विश्वास नहीं था। बात उसके अलग होने की नहीं थी अगर अलग होना ही चाहता है तो कुछ समय इंतजार तो करता। अब भी उसे अलग कर देने से उसे कोई अंतर नहीं पड़ता अंतर बस परिवार की बदनामी का है। ?लोग क्या कहेंगेउनके पिता जी की आत्मा क्या कहेगी.. ?जिन से उसने परिवार को एक साथ रखने का वायदा किया था । अब क्या ?...होगाक्या उसे अलग कर दूॅं... नहीं मैं उसे अलग कैसे कर सकता हूँ... ?उसे एक बार फिर से समझाने का प्रयास करु गा । परन्तु उसे समझाने का वक्त ही नही आया। कितनी धूमधाम से उसने उस की शादी की थी.. वह नहीं चाहते थे कि कोई यह कहे कि पिता नहीं है तो भाई ने कुछ किया नही...। पिता के स्थान पर उसी ने सारे फर्ज निभाये थे...। अपने पी .एफ. से जितना कर्ज वह ले सकता था उसने ले लिया था। पिछले साल ही उसने मुहल्ले में डलने वाली कमेटी भी डाल रखी थी और उसकी शादी में उसे भी उठा लिया था। सब होने के बावजूद भी कुछ भुगतान अभी करने शेष थे। परन्तु उसे चिन्ता नही थी। दोनों भाई कमाते थे और एक की सैलरी से घर का खर्च चल जायेगा और दूसरी से लिया गया उधार चुकता हो जायेगा। परन्तु ऐसा हुआ नहीं... पिछले चार महीने से उसने एक भी पैसा घर में खर्च के लिए नहीं दिया है... बड़ी मुश्किल से वह कमेटी के भुगतान के अतिरिक्त घर का खर्च चला रहा है... । उसने तो सोचा था शादी के बाद उस के खर्च बढ़ गये होगे , नया नया घूमना फिरना होता है.. जल्द ही वह खुद ही घर के खर्च में हाथ बंटाने लगेगा... परन्तु चार महीने के बाद जब मां ने उस से बात करना चाही तो उल्टा वह ही मां को कोसने लगा कि उससे उस की खुशी बर्दाश्त नही होती... यह सब बड़े को कहे..। घर की स्थिति बहूं से कह नही सकती थी। वह चुप सी हो कर रह गई।

...चिन्ता ने बड़े के दिमाग पर भी असर डाला था और उधार लेने वाले भी अब मांगने लगे थे। वह हंस कर ?... कुछ समय के लिए उन्हें टाल जाता था। परन्तु कब तक अब वह रात -रात भर सो भी नहीं पाता था.. किसी से बात भी नहीं कर पाता बस अन्दर ही अन्दर घुटता रह जाता...। इस कारण से वह शारीरिक कमजोरी भी महसूस करने लगा था...। अक्सर वह खामोश रहने लगा।काम से लौट कर वह बस अपने कमरे में बंद हो जाता। और छोटा जब काम से आता तो आते ही तैयार हो कर पत्नी के साथ घूमने निकल जाता। बिना कुछ बतायें ही। खाना अक्सर वह बाहर से ही खा आते थे.. और देर रात तक ठहाके उनके कमरे से आते रहते थे...। बहूं भी नाश्ता कर के फिर से अपने कमरे में चली जाती थी। बड़ी बहूं को कोसने वाली माँ को अब बड़ी बहूं अच्छी लगने लगी थी। वह हर समय काम में उस की मदद करती थी। घर की सफाई से लेकर रसोई तक और कपड़े धोने तक के काम से पीछे नहीं हटती थी...। छोटी के आने से पहले वह हमेशा उसे कुछ न कुछ सुनाती रहती थी परन्तु कभी भी उस ने पलट कर जवाब नहीं दिया था..। और छोटी के आने पर वह छोटी से बहुत लाड़ प्यार जताती थी उसके मायके की तारीफों के पुल बांध देती थी... दहेज में कितना कुछ लेकर आई थी... शायद इसलिए..। और धीरे धीरे उस का उस से मौहभंग होने लगा.. । जब भी कोई काम कहा जाता वह हंस कर टाल जाती थी। परन्तु अब तो पलट कर जवाब देने लगी थी...। इस बार महीने के आरम्भ में ही उसने छोटे से वेतन मिलने के बारे में पूछ लिया परन्तु पलट कर उसने जवाब दे दिया -

" तुम जानती हो माँ अब मैं अकेला नहीं हूँ... उसके खर्चे भी तो मुझे ही करने है न..।"

"वह तो ठीक है परन्तु घर के प्रति भी तो तुम्हारी जिम्मेदारी है न..।"

"बड़ा है न ...अच्छी भली उस की सरकारी नौकरी है"

"वह तो ठीक है ,वह जितना होता है कर रहा है.. घर के खर्च के अलावा उसने कमेटी का भी भुगतान करना होता है.. फंड से जो उसने लोन लिया था उस की भी किश्त कट जाती है.. तुम्हारी शादी में लिये गये उधारी के भुगतान भी उस ने करने होते है। आखिर वह कितना करे उस के बच्चों के स्कूल का भी तो खर्च है. . पिछले कितने महीनों से उनकी फीस भी जमा नही हुई है..।

"तो मैं क्या करू ... ?उसने जन्मे है तो पालन तो उसी ने करना है..."

"तुम्हारे पिता की मृत्यु के पश्चात तुम्हें भी तो उसी ने पढ़ा लिखा कर काम पर लगवायां है.. और तुम्हारी शादी का खर्च भी तो... " माँ की बात को बीच में ही काट कर-

"तो एहसान किया क्या... ?मैं भी तो कमाता था.."

"तू कमाता था तो खर्च भी होता था देख अब खर्च बढ़ गया है. वह परेशान रहने लगा है । मैं माँ हूँ उस की चिंता

" ..को समझ सकती हूँ "तो मैं क्या करू रात का खाना तो हम बाहर खाते है । दिन की रोटी ही तो खाते हैं. " उस की आवाज में तलखी आ गई थी। दोनों बहुंयें भी बाहर आ गई थी.. । बात को बिगड़ते देख बड़ा भी बीच बचाव करने के लिए बाहर आ गया था। छोटी बहूं तेज आवाज में रोने लगी थी। तमाशबीन पड़ोसी भी कान लगाकर उनके घर से आ रहीआवाजो को मजे से सुन रहे थे.. । "बस अब चुप करो.." "चुप क्या करू.. देख कैसे जवाब दे रहा है.. । " अब माँ भी रोने लगी थी... उसे रोते देख बड़ी बहूं माँ के पास आ कर उन्हें चुप कराने लगी थी...। यह देख कर छोटी रोते रोते चीख रही थी

" हां हां मैं ही नकम्मी हूँ... जब से आई हूँ .. बस चुभ रही हूँ इनकी आंखों में . मैं अभी फोन करती हूँ .. मैं नहीं रहना इन भूखे - नंगे लोगों के साथ... । " उसे रोता देख छोटे का पारा और तेज है गया ... । बड़ा माथे पर हाथ रख कर वहीं बैठ गया.. उस की कांपती आवाज निकली... "छोटे इसे अन्दर ले जा.. । "तू ही पखंड करता है । सारी आग तुम ने लगाई है.. माँ के अन्दर जहर तुमने ही बड़ा है..।." "चुप हो जायों .. अब बस करो.. कुछ तो लाज शर्म करो.. "

दरवाजे पर पड़ोसी भी इकट्ठा हो गये थे... । किसी ने धक्का देकर दरवाजा खोल दिया था ... बाहर उछल - उछल कर पड़ोसी धक्का -मुक्की के साथ धीरे - धीरे बातें भी कर रहे थे। "

बस कर छोटे...अब इसे अन्दर ले जा... ।" छोटा गाली देता हुआ अन्दर से डण्डा ले आया.. और ऊंची आवाज में बड़े को गाली देने लगा .. । अब बड़े की आवाज भी तेज हो गई थी । वह आगे बढ़ कर बोला - "ले मार .. हिम्मत है तो.. ।" जैसे ही छोटे ने डण्डा मारने के लिए उठाया माँ बड़े से लिप्पट गई।

डण्डा माँ को लगा ... वह जोर जोर से चीखने लगी.. बड़े ने मां को छाती से लगा लिया..। अब उस का रोना भी रूक नहीं रहा था। छोटी बहन रोते रोते अपने कमरे में चली गई रोते रोते अपने मायके वालों को सब बता रही थी। कुछ पड़ोस की औरतों ने आ कर उसे सम्भाला था। बड़ी बहूं ने बाहर का दरवाजा अन्दर से बन्द कर दिया था पानी का गिलास माँ को देने लगी। वह अब भी हिचकियाँ ले ले कर रो रही थी.. । इतने वर्षों से बनी घर की इज्जत तार- तार हो गई थी। घर की इस कलह ने लोगों के सामने उन्हें नंगा कर दिया था।

काव्य

राहुल लोहट

(हरियाणा)जीन्द

समझते तुम

करीब समझते मुझको ना दूर समझते तुम,
और ना मेरे वक्त को यूँ मगरूर समझते तुम।
मुझको अगर अच्छे से समझा होता तुमने,
तो शायद फिर मुझको जरूर समझते तुम।
मेरी नाक की चमड़ी तक ही पहुँच पाये बस,
मानता गर मेरी जिन्दगी का फ़ितूर समझते तुम।
कोसों चले जाते हवा में उछाले अक्षर अकसर,
अच्छा रहता गर इस बात को हुज़ूर समझते तुम।
ये खुला आस्मां दौड़ के सरांखों पर बैठाता तुमको,
गर पहले ज़मीं की अहमिय़त को भरपूर समझते तुम।
तेरे लहजे को समझ आता गर जरा सा भी लहजा मेरा,
मेरे इस अजीब लहजे को गुरूर नहीं नुज़ूर समझते तुम।
'राहुल'यहाँ मसला रूह का है,तुम्हारी कामयाबी तुम्हें मुबारक,
मैं तुम्हें कुछ भी ना समझता गर ख़ुद को मशहूर समझते तुम।।

मालूम नहीं

रांझा हो जाये कब कोई कब कोई हीर हो जाये,मालूम नहीं,
कब किसके ज़हन में किसकी तस्वीर हो जाये,मालूम नहीं।
ना दौलत का गुमां कीजिये,ना गरीबी को कोसिये साहब,
कब हो जाये कोई राजा कब फकीर हो जाये,मालूम नहीं।
हर रोज शाम बातें होती रहे माँ-बाप से,ये जरूरी बहुत है,
शहरी हवाओं में सीमाएं कब बे तासीर* हो जाये,मालूम नहीं।
महल,मेज,कुर्सियां,पलंग,बिस्तरे,करोड़ों गज जमीनें छोड़,
शमशान का इक टुकड़ा कब जागीर हो जाये,मालूम नहीं।
कांधे पर रखा वो सर आपका सर कलम करवा सकता है,
यार मोहब्बत कब मौत बन कर हाज़िर हो जाये,मालूम नहीं।
चेहरों पर लथपथ चेहरे देख,अपनों के लहजों से परेशां हो,
यार आदमी कब शरीफ़ से काफ़िर*हो जाये मालूम नहीं।।
अच्छे सेवाक़िफ हैं के दुश्मन दुश्मनी निभाने को मजबूर है,
दोस्त से बचियेगा,दोस्त कब शातिर *हो जाये,मालूम नहीं।।

शराफ़त अली खान
बरेली

वो राजू था

एक दिन शाम को जब मैं दफ्तर से घर पहुंचा तो मैंने किचन में एक लड़के को रोटियां सेंकते देखा। तभी सामने से पत्नी मुस्कुराती हुई आईं। मैंने चुपचाप इशारे से किचिन की तरफ इशारा किया तो पत्नी ने हंसकर कहा," यह राजू है,ये अक्सर मुझे बाहर दरवाजे पर मिल जाता और कहता ,"बाजी, मुझे रोटियां बहुत अच्छी तरह बनानी आती हैं, कभी मुझसे रोटी शं बनवा कर देखो ना?" तो आज राजू से रोटियां बनवा रही हूं। इतने में किचन से आवाज आई," बाजी !बबलू को मेरे पास किचन में ना आने देना, मुझे, जब देखो ,छेड़ता रहता है।"

पत्नी हंसी," बोली ,नहीं राजू, बेफिक्र रहो। बबलू को डांट दूंगी ।वह तुम्हारे पास नहीं आएगा, ना ही तुम्हें छेड़ेगा।" पत्नी ने दबी ज़बान से बताया कि ये छोटे भैया बबलू से घबराता है और यह किन्नर है।

बबलू मेरा छोटा भाई है जो अध्ययनरत है ।एक दिन राजू फिर आ धमका। उस दिन रविवार था। मैं घर पर ही था। मुझसे बोला ,"भाई साहब ,मुझे एक लड़का बहुत छेड़ता है।" मैं भी मजाक के मूड में था। मैंने पूछा," क्या कहता है?" वह फिर वह हाथ नचाकर बोला" हरामी कहता है, तू तो मेरी जान है।"

" फिर तुमने क्या कहा?" मैंने पूछा ।

मैंने कहा ,"कलमुंहे मैं तेरी जान क्यों होने लगी? तेरी जान होगी तेरी मां, तेरी बहन।"

"वेरी गुड, बिल्कुल ठीक जवाब दिया तुमने।" मैंने उसकी हां में हां मिलायी।

वह एक दिन श्रीमती जी से बबलू की साइकिल मांग कर ले गया और फिर महीनों तक नहीं दिखाई दिया ।

काफी दिन गुजर गए। एक दिन मैं स्कूटी से बाजार से घर आ रहा था कि सेटेलाइट बस अड्डे पर काफी भीड़ की वजह से मुझे स्कूटी धीमी करनी पड़ी ।तभी पड़ोस में एक मोटरसाइकिल आई ।उस पर एक लड़के के पीछे एक लड़की साड़ी पहने श्रंगार करे बैठी थी । वह मुझे देखते ही हंस कर बोली ,"भाई साहब, कैसे हैं? बाजी ठीक हैं ?"मैंने युवती को कुछ कहे बगैर ग़ौर से देखा , वह और कोई नहीं किन्नर राजू था।

संदीप आनंद
पटना

दुआ

" बाबू , दो रोटी खिला दो न.... बहुत जोरों की भूख लगी है । कल से भूखा हूं । "

उस बूढ़े की गिड़गिड़ाती आवाज़ को सुनकर होटल मालिक को उस पर दया आ गयी ।

" ये लो चाचा , भर पेट खा लो... और हाँ अगर और रोटी चाहिए हो तो मांग लेना... शर्माना मत । "

यह कहकर होटल मालिक अपने काम में लग गया ।तभी वहां होटल का मैनेजर आ गया । उस बूढ़े को देखकर मैनेजर बिफर पड़ा - " तू फिर यहाँ आ गया खाने.... तुझे मैंने कितनी बार समझाया है कि यह मुफ्त का होटल नहीं है । यहाँ पैसे लगते हैं । "

मैनेजर को चिल्लाता देख होटल मालिक वहां आ गया - " क्या हुआ मैनेजर , क्यों चिल्ला रहे हो ? "

" मालिक , ये आदमी रोज खाने के लिए यहाँ आ जाता है । पैसे मांगो तो कहता है कि मैं भिखारी हूं , मेरे पास पैसे नहीं है । ऐसे अगर हर रोज मुफ्त में लोगों को खिलाया जाएगा , तो हमारा होटल घाटे में चला जाएगा । "

" घाटे में नहीं मैनेजर.....फायदे में रहेगा । पता है मैंने अपने होटल का नाम अपनी माँ के नाम पर क्यों रखा है...क्योंकि मेरी माँ को भूखे लोगों को भोजन खिलाना अच्छा लगता था । उनके आशीर्वाद का हीं परिणाम है कि आज मैं इतने बड़े होटल का मालिक हूं । गरीबों की दुआ में बहुत ताकत होती है मैनेजर । "

मैनेजर से कहकर होटल मालिक ने अपने होटल बोर्ड पर लिखवा दिया - " यहाँ गरीबों के लिए मुफ्त भोजन की व्यवस्था है । "

डॉ. मीना बैस रघुवंषी
भोपाल (म.प्र.)

लघुकथा

आई की जूलरी

हमारी कालोनी की मिसेज परते की परसों रात को रेलवे स्टेषन पर पटरी पार करते समय तेज रफतार से आ रही मालगाड़ी से टकरा कर मौत हो गई है।

श्रीमती परते का पूरा शरीर इतना क्षतविक्षत हो गया था कि उनकी डेड बॉडी भी नहीं मिली।

दूसरे दिन यह समाचार सब को मालूम हुआ तब मिसेज परते की अंतिम यात्रा शुरू होने के पूर्व कॉलोनी की सभी महिलाएँ व पुरूष परते साहब के घर पहुंच गए। पुरूष बाहर लॉन में रखी कुर्सियों पर बैठे थे व महिलाएँ घर के अंदर बैठक में बैठी थीं। बैठक के बीच में एक लकड़ी के पटे पर काली पॉलिथिन में मिसेज परते के शरीर के कटे हुए हाथ, पैर व शरीर के कुछ टुकडे रखे थे जिन्हें उनकी सम्पूर्ण देह का प्रतीक मानकर अंतिम संस्कार किया जाना था।

,ऐक महिला के पूछने पर दुघर्टना कैसे हुई ? मिसेज परते की बेटी ने बतलाया कि आई एवं बाबा कल शाम सात बजे एक शादी में सम्मिलित होने जयपुर जा रहे थे ऑटो वाले ने उन दोनों को रेलवे के प्लेटफार्म नं. चार पर उतारा था। प्लेटफार्म नं. 4 पर जाकर मालूम हुआ कि उनकी ट्रेन तो प्लेटफार्म नं. एक पर आने वाली है। वह लोग रास्ते में जाम की वजह से वैसे भी स्टेषन लेट पहुंचे थे। ट्रेन आने में लगभग 5–7 मिनट ही शेष थे इसलिए दोनों ने सोचा क्यों न ब्रिज पर जाने की जगह पटरिया क्रॉस कर प्लेटफार्म नं. एक पर जल्दी से पहुंच जाएँ। बाबा तो तेजी से चलकर प्ले. टफार्म 4 से प्लेटफार्म नं. एक पर पहुॅच गए थे लेकिन आई घ ुटनों में दर्द के कारण धीरे–धीरे चलकर पटरी क्रॉस कर रही थीं कि अचानक दूसरी तरफ से तेज रफतार से आ रही मालगाड़ी को टकरा गई उनकी बॉडी ट्रेन के इंजन के साथ कई किलोमीटर तक घसीटती चली गई। सवेरे कई घंटे ढूँढने के बाद उनके हाथ पैर का एक–एक टुकड़ा मिला व शरीर के कुछ छोटे–छोटे टुकड़े मात्र मिले, इतना कहकर उनकी बेटी फूट–फूटकर रोने लगी। सबकी आँखे नम हो गईं, सारा माहौल गमगीन हो गया । सब उनकी बेटी को चुप कराने लगे।

मिसेज परते की बहू जो की एक साईंस सेंटर में वैज्ञानिक के पद पर कार्यरत है अचानक बोली "आई के शरीर पर लगभग 6 तोले की जूलरी थी उनके हाथ व पैर के अवषेष तो मिल गए लेकिन आई की एक भी जूलरी नहीं मिली। आप सभी जानते है कि आजकल गोल्ड कितना मँहगा है।"

सभी लोग आष्यर्च व क्रोध मिश्रित नजरों से उनकी बहू की ओर देखने लगे क्योंकि सब को ऐसा लगा बहू को सास की दर्दनाक मौत से ज्यादा दुःख उनकी जूलरी खो जाने का है।

फ़्लर्टी मैम

ऊर्जा विकास निगम से मेरी प्रबंधक के पद पर नियुक्ति हुई थी। मुझे निगम कार्यालय में ज्वाइन किए कुछ समय ही हुआ था। मैं ऑफिस के लोगों से मैं धीरे–धीरे परिचित हो रही थी।

ऑफिस में प्रबंधक वित्त के पद पर कार्यरत सुलभा बाजपेयी मुझे बहुत अच्छी लगती थीं। वे एक वरिष्ठ प्रषासनिक अधिकारी की बीबी थीं पर सबके साथ उनका व्यवहार बड़ा सहज था लेकिन उनकी एक आदत मुझे बड़ी अजीब सी लगती थी वे ऑफिस के युवा सुदर्षन अधिकारियों के साथ बहुत रोमांटिक बातें करती थीं कभी– कभी वे उन अधिकारियों से बात करते समय हाथ पकड लेतीं तो कभी उनकी पीठ पर हौले से घोल जमा देती थीं। कभी किसी वरिष्ठ सुदर्षन अधिकारी की कुर्सी के हत्थे पर बैठ कर बतियाती रहती थीं।

मैंने उस ऑफिस में पूर्व से कार्यरत अपनी सहेली रीता से पूछा बाजपेयी मैडम चालीस साल की उम्र पार कर चुकी हैं वह दो किषोरवय बेटो की माँ हैं और एक वरिष्ठ प्रषासनिक अधिकारी की बीबी है फिर भी वे युवा एवं वरिष्ठ सुदर्षन अधिकारियों से फ्लर्ट करती हैं?

रीता ने कहा दरअसल सुलभा मैम जितनी सुंदर, चचंल व हँसमुख हैं उनके पति रमेष बाजपेयी उतने ही कुरूप व बेहद गंभीर व कठोर स्वभाव के व्यक्ति हैं उनके सामने हंसना मुसकुराना तो जैसे गुनाह है। वैसे इनके पति इन्हें बहुत चाहते हैं व यह भी अपने पति का बहुत सम्मान करती हैं लेकिन दोनों पति–पत्नी के स्वभाव, रूचि व व्यक्तित्व एकदम अलग होने से यह असंतुष्ट सी रहती हैं और ऑफिस के युवकों के साथ फ्लर्ट करती हैं। ऑफिस के युवक भी जानते हैं यह एक वरिष्ठ प्रषासनिक की बीबी हैं इसलिए वह इनके उन्मुक्त व्यवहार के बावजूद मर्यादा में रहते हैं। कोई भी युवक न तो इनको स्पर्ष करने की चेष्टा करता है और न ही कोई इनसे गलत बात करने का साहस करता है, इसलिए यह निडर होकर सबसे खूब फ्लर्ट कर अपनी अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति करती हैं। हम सब सुलभा मैम की इन्हीं हरकतों की वजह से उन्हें फ्लर्टी मैम कहते हैं।

रीता की बात सुनकर मैनें सोचा अगर सुलभा के माता–पिता ने रमेष बाजपेयी जी के पद के अलावा सुलभा व उनके स्वभाव व व्यक्तित्व के मिलान पर भी विचार कर लिया होता तो आज इस उम्र में सुलभा जी, फ्लर्टी मैम के ि खताब से नहीं नवाजी जातीं, और न ही सबकी हँसी का पात्र बनतीं।

अख़लाक़ अहमद ज़ई

सही निर्णय

उसे ना तो खांसी आ रही थी, ना छींक। सर्दी-जुकाम बुखार भी नहीं था फिर भी उसका बदन कांप रहा था और बेहद कमज़ोरी महसूस हो रही थी। कोविड के चलते सारे डॉक्टर सीधा हास्पिटल जाने की सलाह दे रहे थे। खुशकिस्मती से एक डॉक्टर ने हास्पिटल जाने से मना करते हुए घर पर रखकर इलाज करने की सलाह दी। कुछ दवाइयों के साथ इम्यूनिटी बढ़ाने की भी दवा लिख दी और खान-पान में एहतियात बरतने के साथ-साथ काढ़ा पिलाते रहने की सलाह दी।

परिवार के सभी सदस्य दहशत में आ गये। आपस में सलाह कर इस नतीजे पर पहुंचे कि रात-बिरात हालत बिगड़ गयी तो कहाँ भागते फिरेंगे। इससे अच्छा है कि पहले ही हास्पिटल में एडमिट करा दिया जाय। हालांकि हास्पिटल की जो खबरें बाहर निकलकर आ रही थीं, वह अच्छी खबरें नहीं थीं। अब समस्या ये थी कि इस मसले पर किस्से मदद ली जाय। फिर ध्यान आया कि उसकी बहन सुमित का राजनैतिक सक्रीयता के नाते शहर में काफी दबदबा है। वह ज़रूर कोई रास्ता निकाल लेगी।

उसने सुमित से इस बारे में चर्चा की। सुमित ने आश्वस्त किया और अपने परिचित डाॅक्टरों को फोन लगाना शुरू किया पर किसी भी हास्पिटल में बेड खाली नहीं था। उसने फिर एक बार कोशिश की।

"हैलो डॉक्टर, मैं सुमित बोल रही हूँ। मेरे जीजा की तबियत खराब है। कोरोना पाॅजिटिव हैं। आपके हाॅस्पिटल में एडमिट कराना चाहती हूंँ। मरीज़ को लेकर आ सकती हूँ?"

"मैडम, बेड एक भी खाली नहीं है पर हांँ, आपके लिए सुबह तक खाली हो सकता है। पचास हजार का खर्चा आयेगा। अगर आप एग्री हों तो हम अगले प्रोसीजर पर काम करें।"

वह इकबारगी चौंक गयी। उसने अपने आप से ही सवाल किया– क्या यह इतना आसान है?

" वो कैसे?..... मतलब, वो कैसे खाली हो सकता है?"

" मैडम, वह आप मुझ पर छोड़ दीजिए।"

वह फिर सोच में पड़ गयी।

".....मतलब कल को कोई मुझसे भी ज़्यादा पैसा दे देगा तो मेरे जीजा को भी....?"

दूसरी तरफ से फोन काट दिया गया। वह अभी भी पसोपेश में थी। ज़िन्दगी से हार मानना किसी के लिए आसान नहीं होता। वह आखिरी सांस तक जद्दोजहद जारी रखता है पर जब खुद की जान के बदले किसी की जान बचाने की बात आ जाय तो वह बलिदान शहीदी का दर्जा दे जाता है। उसने एक पल में सोच लिया कि जीजा को होम क्वारंटाइन में रखेंगे। किसी की हत्या के पाप से बेहतर है.....। उसने बहन को समझा दिया।

निज़ाम

वह दोनों एक बंद मकान के बाहर चबूतरे पर बैठ गये। एक ने अपना चप्पल निकाल कर बगल में रखा और पलथी मारकर बैठ गया। दूसरा यूं ही पैर लटकाए बैठा रहा।

"आज का धंधा कैसा रहा?" एक ने दूसरे से पूछा।

"नहीं रे, आज जितने मिले सब चिरकुट मिले। पांच रुपये से जास्ती किसी के टेट से निकला ही नहीं।..... और तेरा?"

"मेरा भी वही हाल है। आज सिर्फ दो हजार का धंधा हुआ। वैसे मेरे को टेंसन नहीं है। गांव में घर-बार, खेती-बाड़ी सब है। लड़के को भी धंधे पर लगा दिया हूँ। बेटी को भी शान से विदा कर दिया। शादी में पूरा गांव आया था। चार-चार सिर्फ़ बकरा कटवाया था।

इस बीच थोड़ी दूरी पर खड़ा एक सात-आठ साल का लड़का उन दोनों के हाथों को तके जा रहा था जिससे वे नोट और चिल्लर की गिनती कर रहे थे। लड़का हालात से किसी गरीब घर का लग रहा था। अचानक एक की नज़र लड़के पर पड़ी।

"पैसा चाहिए?" उसने लड़के से पूछा।

लड़के ने 'ना' में सिर हिलाया।

"कुछ खायेगा?"

इस बार वह कुछ नहीं बोला। बातचीत सुनकर दूसरे ने भी लड़के की तरफ देखा।

"चल रे, भाग यहां से।" दूसरे ने डांटा।

"रहने दे यार, लड़का भूखा लग रहा है।" पहले ने दूसरे को टोका।

"भूखे तो हम भी हैं तभी तो भीख मांग रहे हैं।"

दूसरे के डांटने से लड़का धीरे-धीरे जाने लगा। पहला दूसरे की बात की परवाह किए बिना लड़के को अपने पास बुलाता रहा पर वह वापस नहीं लौटा। पहला दुखी हो गया।

" यार, यह भी कैसा निजाम है। कोई ब्याज पर पैसा चलाने के लिए भीख मांग रहा है और कोई पेट की भूख मिटाने के लिए किसी से मांग भी नहीं सकता!"

मानसिक गुलामी

मस्जिद में घूमती झोलियों को देखकर मौलाना ने तकरीर (इस्लामी भाषण) करते-करते बात का रुख़ मोड़ दिया।

" देखिए, झोली आप लोगों के बीच घूम रही है। आप लोग इसका ख़ास ख़्याल रखें और ज़्यादा से ज़्यादा इमदाद (मदद) करने की कोशिश करें। यह खुदा का घर है। यहां दिया गया आपका एक भी पैसा ज़ाया नहीं जायगा। आपके एक-एक पैसे का सवाब हशर (क़यामत के दिन) में दस गुना करके मिलेगा।"

झोली सारे नमाज़ियों के सामने से गुज़री। लोगों ने अपनी हैसियत के हिसाब से पैसे डाले। थोड़ी देर बाद मौलाना तकरीर करते-करते फिर रुके और एक कागज हाथ में लेकर बोले–

" एक ज़रूरी ऐलान है। यह मस्जिद का लाईट बिल आया है। इस अल्लाह के घर पर कोई कर्ज़ न रहे, इसका भी आप लोगों को ख़्याल रखना है। देखते हैं, इस नेक काम के लिए कौन सबसे आगे बढ़ता है।"

लोगों ने फिर अपनी-अपनी हैसियत के मुताबिक रुपए दिए। मौलाना ने फिर अपनी तकरीर शुरू की। दस मिनट के बाद फिर रुके।

" देखिए, चार हफ़्ता हो गया है। हर महीने आप लोग अपने इमाम का ख़्याल रखते हैं। इमाम को जब फरिश्ते जन्नत में ले जाने लगेंगे तो वह रुकेगा और खुदा से कहेगा— परवरदिगार, मैं तब तक जन्नत में नहीं जाऊंगा जब तक मेरे पीछे नमाज़ पढ़ने वाले मुक़तदी (अनुयायी) भी जन्नत में नहीं भेज दिए जाते। आपका इमाम अपने मुक़तदी को जन्नत में साथ लेकर जायेगा।..... अब देखना है कि मुक़तदी अपने इमाम से कितना मोहब्बत करते हैं। मैं अपनी ज़बान से कुछ नहीं कहूंगा। अगर हर महीने सौ-सौ रुपये आप लोग निकालेंगे तो इमाम की ज़रूरतें पूरी हो जायेंगी। "

बीच में बैठा एक नमाज़ी बुदबुदाया–

" मौलाना नमाज़ियों को नोट का पेड़ समझ कर रखे हैं। हिलाते रहो, नोटों की बारिश होती रहे। "

बगल में बैठा दूसरा नमाज़ी उसके करीब मुंह ले जाकर बोला–

" मैं घर की ज़रूरतों के लिए पैसा रखे था। आधा तो दे चुका हूँ। ये अब फिर मोहब्बत और वसीले की बात करने लगे।"

पहला धीरे से फुसफुसाया–

" सामने देख रहे हो! मौलाना और अपनी सेहत का हिसाब-किताब करोगे तो तुम मौलाना के आधे भी नहीं ठहरोगे। हम धर्म के नाम पर दिमागी तौर से अपाहिज बना दिए गए हैं। मानसिक गुलामी यहीं से शुरू होती है। खैरियत इसी में है कि चुपचाप सुनते रहो वरना तुम्हारी सूखी हड्डी पर यह जो चमड़ी लटक रही है, वह भी ये उतार लेंगे।

लघुकथा

गोविन्द भारद्वाज

अजमेर ,राजस्थान

भला आदमी

प्लेटफार्म नंबर एक पर पहुँचते ही सुभाष बाबू के कानों में उदघोषक की आवाज पड़ी,"दिल्ली की ओर से आने वाली और अहमदाबाद को जाने वाली गाड़ी संख्या २३७६७ अब एक नम्बर प्लेटफॉर्म के स्थान पर प्लेटफार्म क्रमांक आठ पर आ रही है,जिन यात्रियों को इस गाड़ी से यात्रा करनी है,वे कृपया करके प्लेटफॉर्म पर पहुंँचे।" "अरे बड़ी मुश्किल से तो एक नंबर पर पहुँचा हूँ..अब आठ पर...सांस फूल गयी मेरी तो..।" सुभाष बाबू बड़बड़ाये। उसी समय उनकी दृष्टि अधेड़ उम्र के एक कुली पर पड़ी,"कुली..हैलो कुली..।" "हाँ बाबूजी .. कहिए कौन-सा सामान उठाना है?" कुली ने नजदीक पहुँचते हुए पूछा। सुभाष बाबू ने कहा,"सामान-वामान तो कुछ नहीं..बस ये छोटा सा सूटकेस है..इसे प्लेटफ़ार्म आठ तक पहुँचाना है।"

जी साब...। "कुली ने कहा। "पहले यह बताओ कि कितने पैसे लोगे?" सुभाष बाबू ने पूछा। "बाबूजी पुल चढ़कर जाना पड़ेगा...आप सिर्फ पचास रूपए दे देना। " कुली ने सूटकेस को उठाते हुए कहा। "सिर्फ़ पचास रूपये .. सिर्फ़ तो ऐसे कहा जैसे पाँच रूपये की बात हो...मैं तो बीस रुपए दूँगा। "सुभाष बाबू ने बैंच पर बैठते हुए कहा। कुली ने कहा,"बाबूजी पचास रूपए ज्यादा नहीं है..कोई दूसरा होता तो...सत्तर-अस्सी से कम नहीं माँगता। "सुभाष बाबू ने कोई जवाब नहीं दिया।कुली वापस जाने लगा तो उसकी नज़र सुभाष बाबू के जूतों पर पड़ी।वह लपककर नीचे बैठा और उनके जूते को छूने लगा, उन्होंने टोकते हुए पूछा,"ये क्या कर रहे हो..पाँव क्यों छू रहे हो?" "बाबूजी...पैर नहीं छू रहा..आपके जूतों के फीते खुले हुए हैं..आप उठकर चलोगे तो गिर जाओगे ..इसलिए इन्हें बाँधने के लिए बैठ गया। " कुली ने कहा। इस पर सुभाष बाबू जी कुछ देर ख़ामोश रहे और फीते बंधवा लेने के बाद धीरे से कहा,"चलो सुटकेस ले चलो..आठ नंबर प्लेटफॉर्म पर।" "अब क्या हुआ,..बाबूजी?" कुली ने पूछ लिया। "कुछ नहीं..तुम भले आदमी लगते हो इसलिए..आजकल कौन किसकी फिक्र करता है। "सुभाष बाबू ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

घर आई लक्ष्मी

दीपावली की रात थी।सब लोग पूजा- पाठ करके पटाखे छुड़ा रहे थे।कुछ लोग खाने-पीने में व्यस्त थे। अचानक गली के बाहर आवाज सुनाई दी, 'चोर..चोर ..।' मैं शोर सुनकर बाहर निकला।कुछ लोगों ने एक बच्ची को कस के पकड़ रखा था।उसकी उम्र मुश्किल से लगभग आठ-नौ साल की रही होगी।वह बच्ची गिड़गिड़ाते हुए कह रहा थी,"मैं चोर नहीं हूं..मुझे छोड़ दो..।" "अरे भई क्या हुआ क्यों पकड़ कर रखा है इस मासूम बच्ची को?" "अरे अंकल ये कोई मासूम-वासूम नहीं है।चोर है चोर... दीपावली की रात हाथ साफ़ करने आयी थी.. घरों में।वो तो शुक्र है हमने इसे वक्त रहते हुए पकड़ लिया.. वरना...।"एक युवक ने उसे चांटा मारते हुए कहा।

मैंने सबको दूर हटाते हुए उस बच्ची से पूछा, "बेटी..चोरी करने आयी थी क्या?" "नहीं अंकल मैं तो...।" बच्ची कुछ कहती उससे पहले एक छोरा बीच में बोल पड़ा,"मैं तो क्या...कर दे अंकल के सामने कोई बहाना।" "अरे भई मुझे करने दो ना बात..बोल बेटी..क्या कह रही थी,तू।" मैंने उस से धीर बंधाते हुए पूछा। "अंकल हमारी झोपड़ी में बहुत अंधेरा है,दीये और रूई तो पिछले साल के पड़े हैं,लेकिन उनको जलाने के लिए तेल नहीं है।बस मैं यहां घर के बाहर रखे दीयों में से थोड़ा-थोड़ा तेल लेने आयी थी..ये देखो अंकल मेरी जेब में एक छोटी सी प्याली भी है।" उसने अपनी फटी फ्राॅक में लिपटी कटोरी निकालते हुए कहा। उसकी दर्द भरी दास्तां सुनकर मेरी आंखें नम हो गयी। मैंने उसको अपने घर ले जाकर उसे सबसे पहले एक मिठाई का पैकेट दिया।और साथ में एक तेल की शीशी,नयी रूई और कुछ कोरे दीपक,कुछ बची हुई मोमबत्तियां दी,और कहा, "बेटी.. जाओ अपने घर तुम भी अपने घर में उजाला करो।तुम तो अपने घर की लक्ष्मी हो।" अब उसके चेहरे पर थोड़ी सी मुस्कान तैर रही थी। मैं मन ही मन सोच रहा था,जैसे आज मैंने साक्षात लक्ष्मी के दर्शन किए हों,उस बच्ची के रूप में।

लघुकथा

डॉ. सन्तोष खन्ना
प्रधान संपादक, 'महिला विधि भारती ' त्रैमासिक पत्रिका

पकोड़े वाला

'**पां**च के पकोड़े देना।' एक मज़दूर -से दिखने वाले एक व्यक्ति ने पांच रुपए का एक मुड़ा -तुड़ा नोट आगे बढ़ाते हुए कहा।
राम भरोसे ने उसे हिकारत की नज़र से देखते हुए कहा:-
'पांच की तो आज साइकिल में हवा भी नहीं भरती।'
'अरे भैया, कोई दो-तीन महीने पहले आया था तो पांच में प्लेट भर पकोड़े खाये थे।'
'ठीक। अब भाव बढ़ गये हैं।देख रहे हो ग्राहकों की लंबी कतार। काम बढ़ा तो एक कड़ाही और धर ली। पकोड़े तलने के लिए एक नया आदमी रखा। प्लेटें उठाने के लिए दो छोरे और रखें हैं..।'
'बाप रे! यह करिश्मा कैसे हुआ? क्या कहीं डाका डाला है या पुरखों का गड़ा ख़जाना मिल गया है या क्या तुम भी आलू से सोने बनाने लगे हो ? ' उसने चेहरे पर व्यंग्यात्मक मुस्कान लाकर कहा।
'नहीं भाई, जब से सरकार ने पकोड़े तलने की सिफारिस कर दी, मेरे तो पौं बारह हो गये। पहले मुश्किल से कोई भूला भटका ग्राहक ईद की चांद की तरह दुकान पर चढ़ता था,अब तो बाढ़- सी आ गई है। ख़ुद नहीं संभला तो काम के लिए और हाथ रख लिए।तुम चाहो तो मेरे यहां काम पर आ जाओ। जितनी मजूरी तुम्हें मिलती है, उससे ज़्यादा दूंगा। क्या नाम है तुम्हारा?'
'कौशल कुमार।'
'कौशल कुमार, भई नाम तो बढ़िया है क्या काम भी बढ़िया करोगे?'
'सोच कर बताता हूं।'
'सोच लो। हां तो .. क्या नाम बताया था?'
'कौशल कुमार।'
'हां..हां.. याद आया कौशल कुमार। यहां तो काम बढ़ता ही रहे। जब चाहे, आ जाना।'
समय बीत क्या भाग रहा था। कई मौसम बदले। हवा में बदलाव आ रहा था क्योंकि अब गर्मी की तल्खी कम हो ठंडक का अहसास दिला रही थी। फिर ठंड का मौसम भी आ गया। राम भरोसे का कच्चा पक्का ठीहा अब सजीले पत्थरों से चमक रहा था । एक दिन गुनगुनी धूप में कौशल कुमार टू-व्हीलर से वहां उतरा। राम भरोसे कुर्सी पर बैठा कामगारों को हिदायतें दे रहा था। कौशल कुमार राम भरोसे के सामने जा खड़ा हुआ। राम भरोसे को उसे पहचानने में कुछ समय लगा,
'अरे कौशल कुमार! इतने समय कहां रहे? काफी तगड़े नज़र आ रहे हो, मुंह पर लाली ठांठे मार रही है। क्या सोचा? काम करोगे?'
'भैया, उस दिन आपके यहां से मालिक से हिसाब करने गया तो उसने बुरी तरह डांटा, ' काम नहीं करोगे तो क्या भीख मांगोगे? पगला गये हो क्या? भीख मांगना क्या तुम्हारा खानदानी पेशा है? मेहनत करने में मौत आती है तुम लोगों को।'
उसकी घुड़की सुन मेरा खून खौल उठा। किसी तरह खुद को जप्त किया और बिना पैसे लिए उल्टे पैर लौट आया।
फिर खूब सोचा -बिचारा । सोचा क्या मैं पकोड़े बनाने का काम नहीं कर सकता? गांव में मेरा ठीक-ठाक ठीहा तो था। सो गांव लौट आया। गांव में पकोड़े की दुकान खोल ली। अब वह गांव भी गांव थोड़ा रहा है छोटा-मोटा कस्बा हो गया है। कारें और मोटरसाइकिल आम हो गए हैं । बैंक से उधारी मिलने में कोई दिक्कत नहीं हुई और गणेश जी का नाम ले काम शुरू किया । लक्ष्मी मां की कृपा हो गई। भाई जी, अब मैं मजदूर नहीं रहा, रोजगार देने वाला बन गया हूं।'
' शाबाश भाई ! खूब तरक्की करो ।'
'बस एक बात पूछनी थी।' कौशल कुमार संकोचवश बोला।
' हां !हां ! बोलो । पूछो ?'
'यही कि लोग पकोड़े वालों का मज़ाक़ क्यों उड़ाते हैं। साथ ही सरकार और हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी पर भी तंज कसते रहते हैं । क्या यह छोटा काम है?'
' काम कोई छोटा नहीं होता। जिस काम में पसीना लगे, वही काम नगीना होता है । क्या गांव में तुम्हारी इज्जत नहीं है?'
है क्यों नहीं? पार्टी वाले तो मुझे सरपंच का चुनाव लड़ने के लिए कह रहे हैं ।' कौशल कुमार का मुंह स्वाभिमान से चमक उठा था।
' बस बढ़े चलो आगे । पकोड़े जिंदाबाद ! पकोड़े वाला जिंदाबाद! अब तुम नौकर नहीं बिजनेस के मालिक हो गए हो !'
राम भरोसे के इशारे पर कौशल कुमार के सामने गरमागरम पकोड़े परोस दिए गए।

विनोद दूबे
भदोही (उ. प्र.)

प्रेमचंद

एक ख़्वाहिश है,
कि कभी जो तुम एक दोस्त बनकर मिलो,
तो कुल्हड़ में चाय लेकर,
तुम्हारे साथ सुबह का कुछ वक़्त गुज़ारूँ,
तुमसे बातें करते शायद देख पाऊँ ,
तुम्हारी आँखों में छुपे वो सारे राज़ ,
जो लाख कोशिशों के बावजूद,
तुम्हारे अन्दाज़ में नहीं देख पाया ,
ये तुम्हारा समाज.....
मसलन, छोटे से गाँव का एक मेला,
जो बच्चों के लिए महज़ खिलौनों और
मिठाईयों की दुकान में होता है सिमटा,
उसी ईदगाह के मेले में ,कैसे दिख जाता है तुम्हें,
वो नन्हा सा हामिद,
अपनी बूढ़ी दादी के लिए ख़रीदता,
एक तीन आने का चिमटा...
घूसखोर नौकरशाहों के समाज में ,
जहाँ हमें अंदाज़ा भी नहीं,
कि कोई ईमानदार अफ़सर भी कहीं होगा,
कैसे मिल जाता है तुम्हें वो एक बंशीधर,
सेठ अलोपीदीन के पैसों के सामने चट्टान सा खड़ा,
तुम्हारा वो नमक का दारोग़ा .....
एक समाज जहाँ,बदले की भावना का फ़ैशन हो,
लोग बेधड़क रच लेते हों ," जैसे को तैसे" का षड़यंत्र ,
कैसे मिल जाता है तुम्हें वो बूढ़ा बेसहारा भगत,
अपने इकलौते बेटे के हत्यारे के बेटे में,
जो निःस्वार्थ फूँक देता है, जीवन का मंत्र...
एक समाज जहाँ,
माँ बच्चे की ऊँगली पकड़कर सिखाती हो गिरना और संभलना,
तुम्हें कैसे दिख जाती है वो बूढ़ी काकी,
और उसका बचे-खुचे खाने में पूड़ी-जलेबी के टुकड़े तलाशना .....
एक समाज जहाँ, ग़रीबी के क़िस्से आम से लगते हों,
मन में क्यूँ चिपकी रह जाती है, सिर्फ़ तुम्हारी लिखी हर बात,
कफ़न के पैसे से शराब पीते आज भी नज़र आते हैं
कहीं घीसू और माधव,
तो किसी खेत में पड़ा कोई हलकू ,ठंड में आज भी गुज़ार लेता है पूस की एक रात....
जिस देश में उसका राजा सबको,
सिर्फ़ हिंदू या मुसलमान दिखायी देता है,
ना क़ायदे से कोई परीक्षा होती है ,
ना परीक्षकों में सुजान सिंह जैसा कोई वफ़ादार दीवान दिखायी देता है,
उसी देश में कैसे मिल जाते हैं तुम्हें,
अलगू चौधरी और जुम्मन मियाँ
कैसे समझ लेते हो तुम,
कि इंसान जब पंच बनता है,
तो सिर्फ़ इंसान नहीं रह जाता,
वो परमेश्वर बन जाता है,
सिर्फ़ हिंदू या मुसलमान नहीं रह जाता....
चाय की आख़िरी चुस्की से पहले,
ये सब मुझे पूछना है तुमसे,
और फिर जाने से पहले तुम्हें ग़ौर से देखना है ,
देखना चाहूँगा,
बिना धनपत राय के धन के ,
बिना नवाब राय की नवाबी के ,
कैसी थी तुम्हारी तक़दीर,
एक फटा हुआ जूता,
और मटमैले कुर्ते में लिपटा ,
कैसा था तुम्हारा वो दुबला शरीर,
जिसने महज़ छप्पन सालों में तैयार कर दी ,
कहानी, नाटक और उपन्यासों की,
इतनी बड़ी जागीर ..,.

जब हास्य लिखा , तो हँसा दिया,
जब दर्द लिखा , तो रुला दिया,
सिर्फ़ एक फ़िल्म लिखी, सोज़े वतन,
उस पर भी दंगा करा दिया,
इतनी अलग विधाओं में,
इतना कुछ कैसे लिख पाए ,
प्रेम और कल्पना में लिपटे साहित्य को,
वास्तविकता की धूप में कैसे खींच लाए,
और आख़िर में ,
छूना चाहूँगा एकबार तुम्हारी दवात में रखी ,
भावनाओं की वो जादुई स्याही,
नमन है तुम्हें मुंशी प्रेमचंद्र,
तुम्हीं हो सही मायने में ,
कलम के सिपाही .....

काव्य

सतीश "बब्बा"

चित्रकूट (उ। प्र.)

एक दिन का मेला

एक दिन का मेला,
करते बहुत झमेला,
बांँध कर गठरी, ठेला,
फिर चलना है अकेला!

एक दिन का मेला,
फिर जाना है अकेला,
यही जीवन का खेला,
कब तक चलेगा ठठरी का ठेला!

कोई कहता मेरी जमीन है,
कोई कहता कब्जा मेरा है,
कोई कहता दरी मेरी बिछी है,
कोई कहता दादागिरी मेरी है!

ठैला में कोई बेचे केला,
कोई चाट का लगाता ठेला,
कोई चूड़ी - तरकी वाला ठेला,
कोई रसगुल्ला लाया भरकर ठेला!

भाभी, ननदें घूमतीं मेला,
शाम होते ही उदसने लगा मेला,
सभी सहेजने लगे हैं धेला,
देर रात में रह गया कचरे का ठेला!

ऐसऐसा ही है जीवन का खेला,
सुंदर पांडालों में सजता मेला,
रात हुई तो चला चली की बेला,
,न कुछ लेकर आतालेकर जाता धेला!

नलिन खोईवाल

इंदौर

तुम पुष्पों की हो गंध प्रिये

तुम पुष्पों की हो गंध प्रिये,
मैं फूलों का मकरंद प्रिये,
जब मिल जाते हैं हम दोनों -
बन जाता है गुलकंद प्रिये ।

प्रेम भरे तुम सागर प्रियतम ,
मैं तृष्णा की गागर प्रियतम,
मैं मीरा बन गई बावरी -
तुम मेरे नटनागर प्रियतम ।

वीणा की तुम संगत दिलबर,
तार-तार मैं झंकृत दिलबर,
तुम ही मेरे अब प्राण प्रिये-
तेरी हूँ मैं रंगत दिलबर ।

दिले चमन में गुल-सा महको,
नभ में बनकर पंछी चहको,
फूलों से मकरंद चुराकर-
तितली भंवरा जैसे बहको ।

बंध गए सात वचन में हम तुम,
जनमों के बंधन में हम तुम,
महके घर संसार हमारा-
खुशबू ज्यों चंदन में हम-तुम ।

छन-छन बाजे तेरी पायल ,
जैसे बरसे दिल पर बादल,
मुझको घायल कर जाता है -
तेरी इन आँखों का काजल ।

कितना प्यारा नीड़ हमारा ,
कितना सुंदर कितना न्यारा ,
अपनी चाहत का ये घर है-
स्वर्ग-सा है हर एक नजारा ।

मधुकर वनमाली

मुजफ्फरपुर बिहार

आना दीवाली में अबकी

झिलमिल दीप जलें तारों सम
तिमिर नदी के पतवारों हम
दीप लिए घटवार बनूं मैं
लहर भँवर की चिंता कैसी?
आना दीवाली में अबकी

हुलस हुलस कर देह जलाऊं
शलभ जलूं तो तुमको पाऊं
दीपशिखा सम उज्वल मन हो
अमानिशां की रात ढली सी।
आना दीवाली में अबकी।

अगर जलाओ नन्ही काठी
प्राण जला दें हम सब साथी
तन दीपक बन दहक उठेगा
अभिलाषा सुनकर मधुकर की।
आना दीवाली में अबकी।

यह मेरी यौवन की ज्वाला
पी जाओ तुम मानो हाला
रसना भी जलने दो थोड़ी
भूलोगे सब स्वाद जहर की।
आना दीवाली में अबकी।

दीपों का त्योहार बुलाता
मीत अभी इस पार बुलाता
नहीं मनाई हम ने कब से
आंख मिलन की लौ को तरसी।
आना दीवाली में अबकी।

संग तुम्हारे दीप जलाकर
देखूं आंखों में कुसुमाकर
जोत जला दूं उन में अपनी
रातें कर लूं फिर जगमग सी।
आना दीवाली में अबकी।

डॉ. उमेश कुमार शुक्ल की गजलें

अध्यक्ष,हिंदी-विभाग
महर्षि दयानंद कॉलेज
परेल मुंबई-12,मो. 9324554008

1

दोस्ती पर जाँ निसार करता है
गलतियाँ बार-बार करता है।।
जिसकी परछाईं भी घातक है
दुःख दर्द का हिसाब करता है।
पाप की राह पर जो चलता है
गैर का नहीं अपना बुरा करता है।।
उम्र भर नाकामियाँ मिलतीं रही
कारण बाहर तलाश करता है।।
छल कपट पाखण्ड फितरत नहीं
सच के साथ खड़ा सवाल करता है।।
कमज़र्फ पर नज़र रखना उमेश
वो गिला शिकवा हजार करता है।।

2

सुख में यारों भीड़ लगी थी
बेमौसम तहरीर लगी थी।।
यार सभी दीवाने थे सब
रिश्तों की तस्वीर लगी थी।।
हम भी बड़े सयाने थे तब
कितनों की तकदीर लगी थी।।
भाग्य सितारा चमक रहा था
जयकारों की होड़ लगी थी।।
ऊँच नीच जब भी आया तो
सद्भावों की भीड़ लगी थी।।
दुनिया रंग-बिरंगी दिखती
सूरज चाँद से जोड़ लगी थी।।
मान कहीं कम ना हो जाए
रखवालों की होड़ लगी थी।।
समय चक्र ने मारी पलटी
पल्टन भागी पीर लगी थी।।
लाख समझ कर घेरे घर को
लाक्षागृह में आग लगी थी।।
गहन तिमिर ने घेरा डाला
ग्रहण सूर्य पर आज लगीं थी।।
बाज़ारू मौसम में उमेश
बिक जाने की होड़ लगी थी।।

3

याद है मुझको वो जमाना आज भी
इशारे से बुला मुस्कुराना आज भी ।।
चढ़ती धूप दीवारों पर महसूस करता हूँ
तेरी परछाईं, वो खिलखिलाना आज भी।।
आज तक भूला नहीं वो शोखी बाँकपन
दोपहर की बातें वो पिटारा आज भी।।
बहुत अच्छा लगा वो अदा वो शोखियाँ
बिना मौसम के रंग लगाना आज भी।।
इक ख़्वाब मेरे दिल में जगाया था कभी
ऋण बाकी है तेरा चुकाना आज भी ।।
कौन कहता है भूल गया सारे सबक
यार तेरी दोस्ती औ हवाला आज भी।।

4

कुछ ना कुछ सबको होता है
लेकिन सबको ग़म होता है।।
हमको दूर करें अपनों से
स्वार्थ बड़ा भीषण होता है।।
दिल में दर्द दबा रखता है
चेहरे पर सावन होता है।।
गिने-चुने में गिनती होती
सच पर जो क़ायम होता है।।
सच पर कितना पर्दा डालों
सच तो आखिर सच होता है।।
चारों ओर शतरंज बिछीं है
खतरा तो हरदम होता है।।
अम्न-चैन की बातें करता
बारूदी विषधर होता है।।
हमसे दूर करें अपनों को
क्यों ऐसा मौसम होता है।।
कलश कंगूरे ढह जाएंगे
जनमत में वह बल होता है।।
अलख क़लम से जगा उमेश
जीवन तो सूरज होता है।।

5

शब्द और ख्वाब के अलाव जलाते रहिए
कर्म ईमान सेवा धर्म जगाते रहिए।।
रुठे गर संसार, कुछ फ़र्क नहीं पड़ता है,
गहन तिमिर में आशा दीप जगाते रहिए।।
अश्कों से तर-बतर है,जीवन किताब पूरी
जरा,सम्भाल के पन्नें पलटते रहिए।।
तन्हाइयों की बस्ती में घूमने निकले हैं
गर हो सकें इतना,मिलते-जुलते रहिए।।
जेठ की दोपहरी में,पा जाएँ गर सुकून
ईश्वर की कृपा है त्योहार मनाते रहिए।।
मोहब्बत की खुशबू,अम्न-चैन की दौलत,
ईश्वर का तोहफा सदा व्रत चलाते रहिए।।
है बदनसीब, लेकिन तन्हा नहीं 'उमेश'
गौरों की भीड़ में भी मुस्कुराते रहिए।।

विजय कुमार पुरी
कांगड़ा,हिमाचल प्रदेश

काव्य

पल पल करता है मन मेरा"

शरद चांदनी की रातों में, ढूंढूं अजब ठिकाने को,
याद में उसकी खोया रहता, कौन सुने अफ़साने को,
पलपल करता है मन मेरा, उनसे मिलने जाने को,
कुछ बातें सुनने को उनकी, कुछ अपनी बतलाने को।।

झर झर झरने सी झरती क्यों,
आँखों से अश्रु की धारा
कम्पित अधरों की खामोशी,
बूझ सका न क्यों हरकारा,
भाव भंगिमा के बलबूते, आतुर थी समझाने को,
चुप्पी को ही अच्छा समझा, देख किसी अनजाने को,
पलपल करता है मन मेरा, उनसे मिलने जाने को,
कुछ बातें सुनने को उनकी, कुछ अपनी बतलाने को।।

मधुमास में मधुकरी सी,
मधुवन में गुंजार करे,
फूलों कलियों की रंगत से,
नित नित नव श्रृंगार करे,
जब छलके यौवन मदमाता, फिर होश कहाँ दीवाने को,
गुन गुन करते आए भँवरे, प्रीत की रीत सिखाने को,
पलपल करता है मन मेरा, उनसे मिलने जाने को,
कुछ बातें सुनने को उनकी, कुछ अपनी बतलाने को।।

विपुल केश राशि रजनी सी,
मुख पर जब भी आती है,
रूप सलोने की कान्ति,
चपला सी चमकती जाती है,
फरफर उड़ता आँचल उसका, मन मेरा ललचाने को,
लाख कोशिशें करता रहता, मैं भी उसको पाने को,
पलपल करता है मन मेरा, उनसे मिलने जाने को,
कुछ बातें सुनने को उनकी, कुछ अपनी बतलाने को।।

उठती पलकें नज़र नशीली,
झुकती पलकों से शरमाये,
हिरणी सी जब चाल चले तो,
कमर लचीली बल बल खाए,
रूप निहारूँ बैठे बैठे, और सांसे हैं थम जाने को,
जादूगरी सी करती रहती, लगातार भरमाने को,
पलपल करता है मन मेरा, उनसे मिलने जाने को,
कुछ बातें सुनने को उनकी, कुछ अपनी बतलाने को।।

ललना की छलनी छाया को,
लिपटा लूँ अपनी बाहों में,
बस मदहोशी का आलम हो,
क्यों प्यासा भटकूँ राहों में,
प्रणय चेतना अगन लगाती, जो कहती जल जाने को,
मयखाने में मैं क्यों जाऊँ, अपनी प्यास बुझाने को,
पलपल करता है मन मेरा, उनसे मिलने जाने को,
कुछ बातें सुनने को उनकी, कुछ अपनी बतलाने को।।

शिव डोयले
विदिशा (म.प्र.)

मुक्तक

1-
निर्मल हो जा वो तेरे साथ खड़ा है
उसे प्यार से तो मिल सबसे बड़ा है
सच्चे मन से पुकार,वो सुन भी लेगा
व्यर्थ माया मोह के चक्कर में पड़ा है

2-
न तूने सोचा था, न मैंने सोचा था
अरे वो तो कुछ ऐसा ही मौका था
न नफा हुआ ,न नुकसान हुआ
नजर से नजर मिली अलिखित सौदा था

3-
मिट जाते हैं फासले, पास आने से
अजी प्यार कब छुपा हैं छिपाने से
मुहब्बत करके इतना जाना है मैंने
दर्द बढ़ता ही गया दिल लगाने से

4-
ये जो भीड़ में सादगी से खड़े हैं
अदब से सलाम करो कद में बड़े हैं
हौसलै की रोशनी है इन दीपों में
ये तूफान में भी अंधेरे से.लड़े हैं

हरेराम सिंह की दो कविताएँ

तैरते सपने

हम चाहते थे मुश्किलों को जीत लेना
ताकि जिंदगी हसीन बन जाए
हम यह भी चाहते थे
कि कोई भूखा न रहे
न कोई रहे मायूस अपनी जिंदगी से
यह जिंदगी फूलों की खुश्बू से
लोट-पोट हो जाए ऐसा चाहते थे
कि कोई बुजुर्ग मिलें तो
मुस्कुराहट से दिल भर आए
हम यह भी चाहते थे
कि चिमनियों से धुँआ उठना
जब कम हो
मजदूर हँसते हुए निकलें फैक्ट्रियों से
हम चाहते थे कि जब कोई
किसान खेत की ओर सरके
तो उसकी आँखों में जगी उम्मीद
चमक उठे
और सपने में शहनाई की आवाज गूँज उठे
बेटी के पीले हाथ को
इन बुझती आँखों से देख सके

प्यार से मीठा और हसीं कुछ नहीं !

शाम ढल रही है
तुम्हारी याद
खुश्बू बनकर
जेहन में उतर रही है
कभी हमने भी
तुमसे किया था प्यार
अहसास बनकर
आगोश में ले रहा
धीरे-धीरे
ज्यों-ज्यों आसमां की लाली
बदल रही सिंदूरी रंगों में
तेरी मांग की लाली
हमें डूबो रही है खुद में
ये खजूर के पत्ते
जो बिल्कुल शांत हैं
हमारी धड़कन की आवाज
सुन रहे हैं फरिश्ते बनकर
ये छोटी पहाड़ियाँ
ये हरी घास
हमसे कह रहीं
थोड़ा और ठहरने को
और ये घिर रहा अँधेरा
न जाने क्यों मीठा लग रहा है
और ऐसा पहली बार हुआ है
कि मैंने उस अँधेरे की बात मान ली
क्या बताऊँ
ये आकाश पर सज रहे सितारे
मेरी मबबूबा की माथे पर लटके
उजले दुपट्टे के किनारे जड़ी
मोतियों की लड़ी लग रही है
और हम खोते जा रहे हैं
इस अवनि के विस्तार में
न कल की कोई चिंता है
न आज की, न अभी की
फिर उसी पहाड़ी के नीचे सो रहा हूँ
कोई आकर कान में कहता है
प्यार से ज्यादा मीठा और हसीन कुछ नहीं
इसलिए मुहब्बत का एक नाम खुदा है
ऐसा लोग कहते हैं
मैं तो नास्तिक हूँ
पर मुझे समझ में आती है
कि लोग कष्ट और आफत के बाद भी
खुदा में क्यों होते हैं!
जो लोग नहीं जानते इसके अर्थ
वही उलझे हैं
कंकड़-पत्थर में
पर मैं क्या देखता हूँ
आसमान के ये सारे सितारे पास आ रहे हैं
और मेरी महबूबा की शक्ल में बदल रहे हैं!

संपर्क: ग्राम+पोस्ट: करुप ईंगलिश,
भाया: गोड़ारी, जिला: रोहतास(बिहार),पिन.802214,
मो.8298396621

शुचि 'भवि'

भिलाई, छत्तीसगढ़

सुनो

सुनो
तुम अक्सर कहते थे
दीवार से बेहतर
दरवाज़े होते हैं
और मैं न कह देती थी
हमेशा ही,,
न दीवार न दरवाज़ा
कुछ भी तो मुझे
नहीं था पसंद
हमारे दरमियां,,,
सुनो
आज अच्छा लगता है
मुझे वह दरवाज़ा
जिससे कभी भीतर
प्रवेश किये थे तुम
और मैं
आज भी तुम्हारी
राह निहारती हूँ
उस दरवाज़े के भीतर से,,,
सुनो
अब वो दीवार भी
मेरी पहली पसंद है
जिससे टिक कर बैठे थे
तुम कभी
अबतक महसूसती हूँ
मैं तुम्हें
उस दीवार से टिके टिके,,
सुनो
मेरी पसंद शुरु से अब तक ही
स्वछंदता रही है
फिर क्यों बदल ली हमने आज
अपनी अपनी पसंद,,,

शेफालिका सिन्हा

राँची झारखंड।

क्षणिकाएँ

1.
बाधाएं आती हैं
मन के दीप जलती रहें
तो बादल सी छँट जाती हैं।।

2 .
विश्वास मन का बना रहे
रास्ते मिल जाएंगे
मंजिल भी पा जाएंगे।।

3 .
जो अपना सा लगे
उसे ही अपना लें,
सारा जग परिवार है
मन को ये समझा लें।।

4 .
गांव से शहर
शहर से बड़े शहर
बड़े शहर से विदेश
आगे बढ़ते रहे
और जड़ से कटते रहे।।

5.
गिले-शिकवे दूर कर
गले मिलना चाहिए,
चार दिन की जिंदगी
मिलकर जीना चाहिए।।

डॉ मीरा सिंह "मीरा"

डुमरांव, जिला-बक्सर, बिहार

अरमान

अरमानों के पंख लगा ले
सपने सारे पूरे कर ले।
किस सोच में तू डूबा है
यूं ही क्यों घबराता पगले?

जिन राहों पर चला झूमते
रुकना वहां सख्त मना है।
चलते रहना अपने पथ में
चलने से तकदीर बना है।।

कदम-कदम तू बढ़ते जा
मंजिल चाहे गर मनचाही।
लक्ष्य साध ले अपने मन में
कभी न मुड़ना पीछे राही।।

देख हौसले को अब अपनी
चल अंबर को अब तो छू ले।
मचले जो अरमान हृदय में
आज सभी वो पूरे कर ले।।

मेरी तेरी राह निहारे
क्यों बैठा है मन को मारे।
जीत उसी की होती जग में
कभी नहीं जो मन से हारे।।

अपना लक्ष्य निगाहों में रख
जो मन चाहे कर ले हासिल।
चल बाधा को ठोकर मारें
तुझे बुलाती तेरी मंजिल।।

जिसके दिल में अरमां मचले
और हौसले हिम्मत बल दे।
उसको रोक न पाएं कोई
दुनिया उसके पीछे चल दे।।

नवीन माथुर पंचोली की गजलें

अमझेरा धार मप्र

1

नज़र को ये कभी लगता नहीं है।
ज़मीं से आसमाँ मिलता नहीं है।
जहाँ जाना, वहाँ से लौट आना,
कभी ये रास्ता रुकता नहीं है।
खड़े हो आईने के सामने पर,
छुपा चहरा कभी दिखता नहीं है।
परों का बोझ है जिस पर ज़ियादा,
वो पंछी दूर तक उड़ता नहीं है।
चला है साथ जो लेकर इरादे,
मुसाफ़िर वो कभी थकता नहीं है।
सियासत कर रहे हो साथ सबके,
मुझे ये क़ायदा जँचता नहीं है।

2

वास्ते जब सभी के हुए।
आप बस आप ही के हुए।
आपकी इक कही बात पर,
फ़ैसले ज़िंदगी के हुए।
आ गए कुछ सितारे नज़र,
सिलसिले रोशनी के हुए।
मिन्नतें, ज़िद, सलीक़े ,वफ़ा,
क़ायदे बन्दगी के हुए।
जब चले साथ हम दूर तक,
फ़ायदे दोस्ती के हुए।
कामवो ही लगे काम के,
जो हमारी ख़ुशी के हुए।

3

जिसे देखा कहीं, वो दूसरा है।
नज़र को आपकी धोखा हुआ है।
नज़ारा पास इतना भी नहीं है,
कि जितना पास सबका सोचना है।
हिमायत कर रहे हैं आप उसकी,
यहाँ जो शख़्श सबसे दोगला है।
सुने सबकी मगर करे मन की,
यही इस ज़िंदगी का क़ायदा है।
वहाँ मुश्क़िल सफ़र है कश्तियों का,
जहाँ उनका हवा से सामना है।
निभाताहै वहाँ उतनी अक़ीदत,
जहाँ जितनी शराफ़त देखता है।

4

चलो इसमें पते की बात तो है।
सफ़र में इक सहारा साथ तो है।
ज़ुबाँ ये पूछती है इन लबों से,
भला दिल में कहीं ईमान तो है।
तबीयत है बड़ी नासाज़ लेक़िन,
चलो इसमें ज़रा आराम तो है।
हमारा है, हमेशा , ये जताकर,
कि हमसे शख़्श वो नाराज़ तो है।
बनाता है सभी जो काम अपने,
किसी का सिर पे अपने हाथ तो है।
कही वैसी, रही है सोच जैसी,
हमारी शायरी बेबाक़ तो है।

5

ज़ख्म जितने छुपाने पड़े।
सौ बहाने बनाने पड़े।
आँसुओं पर नज़र जब गई,
हैं ख़ुशी के जताने पड़े।
जो तरफ़दार कहकर मिले,
नाज़ उनके उठाने पड़े।
जो ख़ुशी ने दिए फ़ायदे,
सब हवा में उड़ाने पड़े।
आज़माएँ किसे,कब,कहाँ,
वो तरीक़े जुटाने पड़े।
रोज़ पालेशिक़ायत,गिले,
आज दिल से हटाने पड़े।

6

इशारा जब हमें मिलता नहीं है।
निशाना दूर तक लगता नहीं है।
कि जिस पर दूर तक आसानियाँ हैं,
कहीं वो रास्ता दिखता नहीं है।
उठायें मुश्किलें जिसमें हमेशा,
हमें वो क़ायदा जँचता नहीं है।
छुपाती है ज़मीं ही रुख पलटकर,
कभी सूरज कहीं छुपता नहीं है।
चले आना, चले जाना भुलाकर,
कभी ये सिलसिला रुकता नहीं है।
,ख़ुशी पाकर जताये ग़म कभी वो
किसी से वक़्त ये कहता नहीं है।

प्रभात सिन्हा
बाराबंकी
क्षेत्रीय प्रमुख
प्रशिक्षण एवं विकास
पियाजिओ व्हीकल्स इंडिया

मात-पिता

वो तो मां ही होती है
जो तपते बुखार में भी
हिम्मत से खड़े होकर
बिना खुद की फिक्र करे
बच्चे का टिफिन बनाती है
अपने आशीर्वाद ,अपनेपन
और अपने प्यार के साथ ।

वो तो पिता ही होता है
जो जेब फटी और बटुआ
खाली होने पर भी हंसते हुए
बच्चो के सपनो को , इच्छा को
पूरा करने की हिम्मत करता है
और सदैव प्रयास करता है ।

वो माता पिता ही होते है
जो दरवाजे पर टकटकी लगाए
बार बार लगातार देखते रहते हैं
बच्चे के घर वापस आने तक।

हम कितने भी बड़े हो जाय ,
कितने भी अनुभवी हो जाय।
वो माता पिता ही होते है ,
जो हमे हक से निस्वार्थ भाव से।
सलाह देते है , ज्ञान देते हैं ।
वो माता पिता ही होते है
जिनकी झोली दुआओं से
हमेशा हमेशा भरी होती है।
जो सिर्फ और सिर्फ देते है
कभी कुछ लेने की तनिक
इच्छा भी नही रखते हैं ।

आशाओं की किरण बिखेरने
की कोशिश करते रहे।।
वास्तविकता तो यही है की
माता पिता से बड़ा धनवान ,
माता पिता से बड़ा दयावान,
माता पिता से बड़ा इंसान ,
माता पिता से बड़ा सामर्थ्यवान
तो कोई कभी होई नही सकता ।
क्योंकि जब कभी हम होते है
अकेले या पड़ते है कमजोर
तो सबसे पहले हिम्मत देने वाले
सबसे पहले हाथ बढ़ाने वाले
होते है माता पिता और कहते हैं
फिक्र क्यों करता है,
मत हो परेशान ,हम हैं ना

इसलिए जब जब मिले
माता पिता से हम,
मुस्कुराते हुए ही मिले
और हर मुलाकात में उनके
चेहरे पर हंसी बिखेरे

हाइकु

डा0 उषा माहेश्वरी पुंगलिया
जोधपुर,राजस्थान

1-
गीत संगीत
जीवन का लालित्य
उषा का गान

2-
सुख सौभाग्य
जीने की अभिलाषा
करें वंदन

3-
तीज त्यौहार
खुशियों का खजाना
प्रभु मिलन

4-
तीन तेरह
सपनों का आकाश
कांटों का पथ

5-
हाथी की चाल
जवानी की मस्तियाँ
बेपरवाह

6-
कागज स्याही
मिलकर रचती
स्वप्न कहानी

7-
यादें सुहानी
डायरी सहेजती
खुशी ग़म की

डॉ. हरिसिंह पाल
(कवि, लेखक, कहानीकार, उपन्यासकार समीक्षक)
नई दिल्ली–110045
मो. 9810981398
Email : drharisinghpal7@gmail.com

साहित्येतिहास की अनूठी कृति : 'भारत के संत कवि'

भारत आदि काल से ही संत–महात्माओं और दार्शनिकों का देश रहा है। अनेक संतों ने जहाँ आध्यात्मिक विरासत को संरक्षित व संवर्धित करने में योगदान दिया है वहीं भारतीय भाषाओं के साहित्य को भी परिपुष्ट किया है। वर्तमान हिंदी जिसे पूर्व में खड़ी बोली कहा जाता था, को समृद्ध करने में अनेक संत–कवियों का विशिष्ट योगदान रहा है। प्रायः कुछ साहित्यविद् समालोचक खड़ी बोली कविता का प्रारंभिक काल भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचनाओं से और उनके समकालीन रचनाकारों के साहित्य सर्जन से मानते रहे हैं। किंतु शोध कार्यों से सिद्ध हो चुका है कि खड़ी बोली हिंदी में काव्य सर्जन का कार्य भारतेन्दु से पूर्व ही अनेक संत कवियों ने शुरू कर दिया था। हाल ही में प्रकाशित सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं कवि डॉ. इन्द्र सेंगर कृत 'भारत के संत कवि' इस तथ्य को पुष्ट करती है। कुल 124–पृष्ठीय समीक्ष्य कृति में 16 संत कवियों के काव्य का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

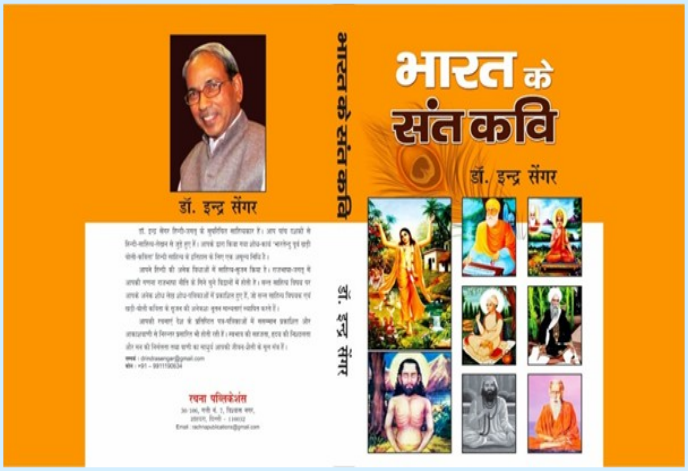

इस शोध पूर्ण कृति में जिन 16 संत कवियों का जीवन परिचय और उनका काव्य समाहित किया गया है वे हैं–1. संत घीसा साहब, 2. संत जीता दास, 3. संत गरीब दास, 4. संत नितानंद, 5. संत गंगा दास, 6. संत जैतराम दास, 7. संत नेकीराम, 8. संत हिरदैदास, 9. संत मलूक दास, 10, संत मेंहीं दास, 11. संत चतुरानंद, 12. चैतन्य महाप्रभु, 13. संत द्योतराम दास, 14. संत ईश्वर दास, 15. संत मंगत दास और 16. संत चैतन्य देव 'निर्वाण'। ये सभी शोध परक लेखों के रूप में देश की प्रतिष्ठित साहित्यिक एवं शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। यह उल्लेखनीय है कि डॉ. इन्द्र सेंगर ने 'भारतेन्दु पूर्व खड़ी बोली कविता' विषय पर शोध करके पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। इसलिए लेखक का इस विषय के प्रति रुझान स्वाभाविक है।

यह कृति इस रूप में भी महत्वपूर्ण है कि इससे पूर्व हिंदी–जगत के इतने संत कवियों, जिन पर अभी तक वांछित शोधपूर्ण जानकारी उपलब्ध नहीं थी, एक स्थान पर उपलब्ध हो गई है। विद्वान लेखक ने इसके लिए सामग्री जुटाने में अकथनीय परिश्रम किया है। हिंदी जगत के साथ प्रारंभ से यह विडंबना ही रही है कि अनेक सिद्धहस्त रचनाकार हिंदी साहित्य का इतिहास लिखने वालों से ओझल ही रहे हैं, चाहे वह वैचारिक प्रतिबद्धता की सीमा रही हो अथवा अनजाने में ही चूक रह गई हो। डॉ. सेंगर ने ऐसे ही अल्पज्ञात एवं अछूते संत कवियों को प्रकाश में लाने का श्रेय प्राप्त किया है।

इस कृति के प्राक्कथन में डॉ. शालिनी ने 'खड़ी बोली कविता की सहज यात्रा' शीर्षक से कृति की विषयवस्तु को विस्तार से व्याख्यायित किया है। निष्कर्ष के रूप में लेखिका ने लिखा है–"इनकी (संत कवियों की) काव्य–चेतना में राष्ट्रीय उन्मेश, मानवतवादी आदर्श धार्मिक क्रांति और स्वतंत्रता संग्राम का प्रबल स्वर था।" डॉ. शालिनी ने अपने कथन की पुष्टि में ब्रिटिश भाषाविद् जी.ए. ग्रियर्सन के 1887 और 1890 के दो अंग्रेजी में लिखे पत्रों को प्रस्तुत किया है। तब यह भ्रांति थी कि खड़ी बोली (वर्तमान हिंदी) में पद्य रचना संभव नहीं थी। किंतु उस काल–खंड के भारतेन्दु से पूर्व कुरु जनपद (वर्तमान में पश्चिमी उत्तर प्रदेश और हरियाणा का उत्तरी भाग) के संतों ने खड़ी बोली का प्रयोग अपनी

प्रौढ़ साहित्यिक कृतियों के लिए करके उसे परिनिष्ठत भाषा के स्तर पर पहुंचा दिया था।

बहुपठित लेखक डॉ. सेंगर ने इस कृति में प्रस्तुत 16 संत कवियों के जीवन वृत्त, उपलब्ध साहित्य, उनकी विचारधारा और उनकी कविताओं की बानगी दिखाकर सभी के साथ न्याय किया है। संत घीसा साहब (खेकड़ा, मेरठ) के 5 उदाहरण, संत जीतादास (खेकड़ा, मेरठ) के 3, संत गरीब दास के दो, संत नितानंद के 4, महाकवि गंगादास के 10, संत जैतराम दास के 4, संत नेकीराम का एक, संत हिरदैदास (रोहतक) के 6, संत मलूक दास के 32, महर्षि मेंहींदास (मधेपुरा, बिहार) के 6, संत चतुरानंद (मुंगेर, बिहार) के एक भी नहीं, चैतन्य महाप्रभु का एक, संत द्योतरामदास (हिसार हरियाणा) का एक भी नहीं, संत ईश्वरदास (जालंधर, पंजाब) का एक, संत मंगत दास (मेरठ) का एक और संत चैतन्यदेव 'निर्वाण' का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। इसका अर्थ है कि अन्वेषी लेखक को जितनी भी सामग्री मिली है, उसे अपने कथन की पुष्टि में पाठकों के समक्ष रखा है।

अंतिम संदर्भ–संकेत अध्याय में लेखक ने संत घीसा साहब, संत गरीबदास, संत जीतादास, संत नेकीराम, संत हिरदैदास, संत मलूकदास, चैतन्य महाप्रभु, संत द्योताराम, संत ईश्वरदास, संत मंगतदास और संत चैतन्यदेव 'निर्वाण' के संदर्भ ग्रंथों की सूची भी प्रस्तुत की है जिससे स्पष्ट है कि डॉ. सेंगर ने विभिन्न स्रोतों से विवेच्य सामग्री खोजी है। उन्होंने निश्चय ही कई संत आश्रमों, पुस्तकालयों की धूल छानने से लेकर उनके परिजनों से मिली उपल. ब्ध सामग्री की पड़ताल की होगी तब कहीं नवनीत निकल पाया होगा।

हिंदी साहित्य के इतिहास के लिए यह एक मौलिक एवं नवोन्मेशी कृति है जिसमें शोधपरक सामग्री का विवेचन पूरी गंभीरता के साथ किया गया है। यह पुस्तक पठनीय तो है ही मननीय और संग्रहणीय भी है। विद्वान लेखक का श्रम, सफल एवं सार्थक है। हमें आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि इस कृति का हिंदी साहित्य जगत में भरपूर स्वागत किया जाएगा। लेखक को इस महत्वपूर्ण कृति के प्रणयन के लिए बहुत बहुत बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं।

कृति : भारत के संत कवि

लेखक : डॉ. इन्द्र सेंगर

प्रकाशक : रचना पब्लिकेशंस, विश्वास नगर, दिल्ली – 110032

मूल्य : 350/– रुपये

पृष्ठ : 124

संस्करण : 2023

निधि "मानसिंह"
कैथल हरियाणा

राहगुज़र

लौट आई मै सालों बाद
फिर उन्ही वीरानों मे,
कुछ पल के लिए जिन्हें
मै छोड़ आई थी।
भूल गई थी मै किसी के नही
होतें ये राहगुज़र,
मैने अपनापन लुटाया
उनकी तो बस रूसवाई थी।
कदम-बे-कदम वो हमे
दर्द - ए गम - देते रहे,
दोस्ताना - ए - कर्म समझकर
हमने हर बात हंसी मे उडाई थी
होश आने मे जब तक
वक्त लगा हमे तब तक,
हमारी आंखे न जाने
कितनी बार सैलाब लाई थी?
लौट तो आयें हम इस
दिल - ए - नांदा पे जख्म खाकर,
पर अब दोस्ताने से हमारी
बस दूर से ही रहनुमाई थी।
न बनेंगे किसी के न बनायेंगे
किसी को दोस्त - ए-नजर,
निकाल के तूफ़ानो ने किश्ती मेरी
साहिल पे लाकर डुबाई थी।

डा. बबीता गुप्ता
अमेरी रोड, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

संकीर्ण सोच को विस्तार देती सशक्त कहानियों का पुंज

जैसा कि प्रेमचंद जी ने कहा हैं कि कहानी ऐसी रचना हैं जिसमें जीवन के किसी अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्धेश्य रहता हैं। उनके चरित्र जीवनशैली कथा विन्यास भी उसी भाव को पुष्ट करता हैं। लेखिका की नयी रूपरेखा में विविध विषयों में सृजित रचनायें पाठको को जोड़ती और परंपरागत परिधि से बाहर निकल समाज को एक नई दिशा, नयाआयाम, सोच को विस्तार देती बहुतेरे विषयों को छूती सशक्त कहानियाँ हैं। अपने आसपास परिवेशगत नाना प्रकार से गुजरती परिस्थितियों, घटनाओं, समाज की विभिन्न समस्याओं के प्रति अंतर्मन में उद्धेलित मनोवेगों को सहजता से प्रवाहमयी भाषा के माध्यम से कलात्मक रूप से सृजित जीवंत दस्तावेज हैं।नारी जीवन के हर पहलू को चरितार्थ व चारित्रिक विविधता को समेटे रचनाएं हैं।

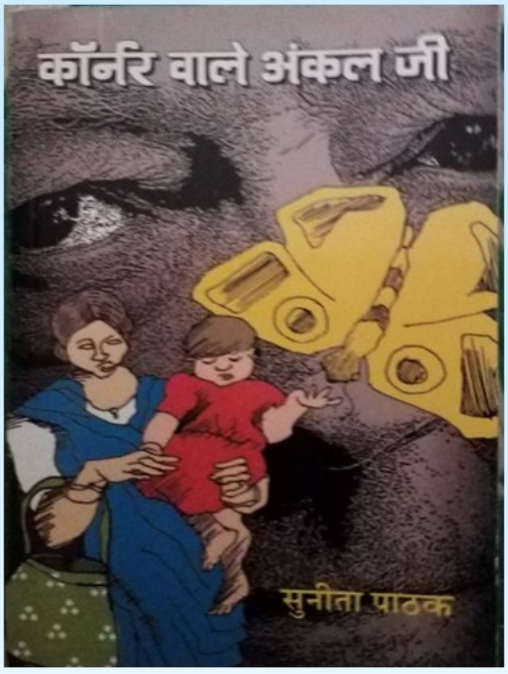

मानवीय मूल्यों की विकासयात्रा कराती कहानियों में एक ओर जहां आंचलिक भाषा के तड़के से बेहतरीन बनी कहानी 'तोड़ियों के तोड़े हुये दिल' में लोहपीटनियो की जीवनशैली का सांगोपांग वर्णन है । सभ्रांत समाज की ढेरों भ्रान्तियाँ शाश्वत खड़े सवाल के जबाव से रूढिंगत सवालों से घिरे मानस पटल को झकझोर देती हैं। वही दूसरी ओर ज्ञान, बुद्धि विवेक का विकास करने वाली कहानी चाबियों का गुच्छा हैं जिसमें प्रस्थितियों के अनुरूप बनती मानसिक प्रवृत्ति पर पूर्वाग्रही का आक्षेप मंदिरों की घंटी की ध्वनियों से हट जाता हैं। मनोस्थिति का सुन्दर चित्रण, 'ठाकुरजी ने सब ठीक किया जो छत पर भेजकर स्थिति पानी की तरह साफ हो गई।मंदिर की घंटियों की तरह अंतर्मन शुद्ध हो गया। '

सोच को रिश्तों को नया आयाम देती संवेदनात्मक अनुभूति व पूर्वाग्रही सोच को नकारती कहानी छंट गये भ्रम के बादल हैं।और 'लिव इन रिलेशनशिप' एक नई परिभाषा गढ़ती हैं। नीम चढ़े करेले जैसे सास-बहू के रिश्तों में आत्मीयता का गोंद जो एक-दूसरें की भावनाओं को समेटे, स्नेह का गुड़ कड़वाहट में मिठास घोलकर एक-दूसरे के सुख -दुःख साझा करती हैं।भावविभोर करता नेहा का वाक्य , 'अब हम अपने दुखों को भूलकर अच्छा दोस्त बनकर रहेंगे ... अब ना यह मेरी सास हैं और मैं इनकी बहू!'

संवेदनशील रिश्तों की कहानी में 'कॉर्नर वाले अंकल जी' उधार की खुशियां लूटते हैं ।उनके प्रति नव्या की क्षुद्र मानसिकता ... संदिग्धता के घेरे विवेक को खत्म कर देते हैं। वास्तविकता सुन नव्या शर्म से पानी-पानी हो जाती हैं। सोच अंतर्मन ग्लानि से भर जाता हैं।संदेशपरक वाक्य, 'हमारा मन दुर्भावनाओं से भरकर कितना विषैला हो जाता हैं कि सारा माहौल ,सारे रिश्ते यहां तक कि हमारी ओर देखती हुई सारी ऑखें बस हमें विष बुझे तीर की तरह नजर आते हैं।'

ज्ञान का मंदिर पाठशाला जहां समभाव से शिक्षा दी जाती हैं ... मध्यान्ह भोजन वितरण में श्यामली के प्रति टिफिन वाली छत्राओं की सोच से श्यामली को अपने प्रति आत्महीनता होती हैं। ताना सुनते हुये एक सपना बुनती हैं जो उसके प्रथम आने पर पूरा होता है। कक्षा में प्रथम आने की जरूरत के लिए इस मध्यान्ह भोजन की पोष्टिकता कितनी जरूरी हैं। बाल मनोभाव का यथार्थ चित्रण करती कहानी 'अचार पराठे वाला अचार' हैं जिसमें छात्रा श्यामली का स्वाभिमान को उकेरा है जो छात्रवृत्ति मिलने पर अपनी माँ से कहती हैं, 'अब मैं चाहती हूँ कि इस टिफिन में काम पर जाने से पहले माँ तुम सुबह अचार पराठा ले जाओ।'

जीवन की परिभाषा कभी संघर्षों में अपने आपको झोंककर समाज के सामने उदाहरण पेश करती हैं तो कभी कष्टों को सहकर माथे पर शिकन नहीं आने देती।सामाजिक-धार्मिक, नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा सहजता से जीवन के धरातल पर जटिलताओं को सुलझाती महत्वाकांक्षी व स्वाभिमानी नारी के संघर्षों का ब्यौरा दर्शाती कहानियों में मजबूरी

और मजबूती को अच्छे से उभारा हैं। कहानी 'मैं शहीद की विधवा' में पति के शहीद होने पर परिवार बिखर जाता है। असहाय जीवन से निजात पाने की छटपटाहट जरूर हैं... पर बेवशी में दोहरी जिन्दगी जीती सरिता आत्माभिमान व गर्वान्वित होकर कहती हैं, 'मेरी ऑखों में ऑसू नहीं जंचते... मैं शहीद की विधवा हूँ ना।'

और कहानी 'खुशियों की खरपतवार' में समाज की परिस्थितियों से जूझती अपने परिवार को संभालती हैं।निम्मी कहती हैं... 'मेरे प्रति लोगों की धारणा दर्पण के पीछे बने मेरे प्रतिबिम्ब की तरह हैं।... आभासी अक्स का कोई अस्तित्व कहां होता हैं। ...जीवन में खुशियों के फूल मुरझा भी जाते हैं। कभी-कभी हमें खुशियों के खरपतवार से भी जीवन को महकाना चाहिए।' सकारात्मक भाव लिए जीवन जीने की सीख दे गयी।

जीवन की उलझनों में समस्याओं को सुलझाती आत्मनिर्भर जीवन जीने की कहानी डाॅल नही, गुड़िया कहिए' में विन्नी ईश्वर प्रदत्त अपनी मेधा और श्रममूल्य से आत्महीनता से मुक्त होकर स्वाभिमान की जिन्दगी जीती हैं। आत्मविश्वास के कगार पर खड़ी अपनी रचनात्मक इच्छाशक्ति से कर्मठ बनकर उम्मीदों को कायम रखती है।

कहानी आपदा में अवसर तलाशती में मतलबपरस्त दोगली दुनिया का सच बयां किया है।।लेखिका ने पारिवारिक-सामाजिक व्यवस्थाओं का बखूबी चित्रित करते मनोविकार को उकेरा है स्वार्थ के लिए सुविधाये छीनती नव्या के प्रति अपनी दोस्ती का फर्ज निभाते हुये आत्मनियंत्रित शुभि संस्कार और विवेक द्वंद से संकीर्णता को परे कर नव्या की मां से आत्मीयता से मिलती हैं।

बिन बुलाई आपदा में बढ़ते लाॅकडाउन ने रिश्तों को, संवेदनाओं को,भावनाओं को अनलाॅक करती कहानी खुल गया लाॅकडाउन में सुधा के आत्मीय भावों को दर्शाया है।भीगे मन से सिर्फ इतना ही कह पाती हैं कि अब यह मुआ लाॅकडाउन कभी भी खुले...मेरे मन का लाॅकडाउन आज ही खुल गया।

एक ओर रिश्तों की तितली के मान्निद सहेजती गुलाब के फूल से महकते रिश्तों की कहानी कुल्लू का शाॅल हैं। वही दूसरी ओर खामोश रहकर विवादों को गहरा ना बनाकर बुद्धिमत्ता से राखी के उलझे धागो को सुलझाकर बिखरते रिश्तों को आत्मीयता भरा दर्जा देकर मजबूती देती कहानी अधिकार से परे जिसमें पारिवारिक रिश्तों में धरोहर के संरक्षक रिश्तों को धराशयी होने से पहले ही संजो लिए जाते हैं।राखी के बंधन को सार्थक करते कुछ संदेशपरक वाक्य...अधिकार से ऊपर उठकर रिश्तों को जीत लिया, रिश्तों के बीच खड़ी अदृश्य दीवाल को ढहा दिया। अधिकार से पहले कर्त्तव्य सीखा कर... अपने मायके में अपने बचपन को फिर से दो-चार दिन जीने के लिए वो दो-चार दिन का आमंत्रण ...हक प्यार का होता हैं संपत्ति का नही।

कुछ कहानियाँ अलग ही कलेवर में सृजित कर परंपरागत सोच से हटकर एक अलग ही दशा में बहकर दिशा देती है।

जिसमें कहानी काश!माँ ब्रेकअप कर पाती में नारी सम्मान में अपने ही पिता के माँ के प्रति उपेक्षित रवैये के कारण बेटी तोशी में प्रतिकार की भावना आ जाती हैं। तिलांजलि कहानी में अपने चरित्रहीन पिता की अंत्योष्टि में शामिल जरूर होता हैं पर अन्य रिवाजों की तिलांजलि दे देता है अस्थियों को नाली में बहाकर।

कहानी पुरूष सशक्तीकरण जिसमें पत्नी के विचारों से त्रस्त अलगाव का कदम उठाता हैं और कहानी दहेज नहीं दुश्वारियां... महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति कर वैवाहिक रस्म दहेज संबंधी संकीर्ण सोच में बुनी गई जिसमें वर पक्ष , वधू पक्ष द्वारा लगाये आरोपों से त्रस्त जीवन गुजार रहा हैं। दोनों ही कहानियाँ परंपरागत बहती सामाजिक सोच के विपरीत ।विलुप्त होती संवेदनाओं को उकेरती मानवता और मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित कराती कहानी पिल्लू संवेदनशील बनाती हैं।लेखिका ने मानवीय मूल्यों को जिन्दा रखने का सराहनीय प्रयास किया हैं।

यथार्थ के बीज से कलात्मक बोध से नई सोच की कोंप प्रस्फुटित होने की आस से सृजनकर्म हैं। समाज के विविध वर्गों का प्रतिनिधित्व करती कहानियों में मानसिकता को बदलने का प्रयास किया हैं साथ ही जीवन की वृहत्तर विविध विषयों को छूता कहानियों का गुच्छा जिसमें समाज को एक नई दिशा में सोचने की सौंधी महक देकर एक स्वस्थ समाज की स्थापना के लिए संदेश भी छिपा हैं। समाज के उत्थानपरक पहलुओं को अपनी रचनाओं के माध्यम से कहना लेखिका के उद्देश्यपरक लेखनकर्म को इंगित करता हैं।

लेखिका की विपुल शब्द संपदा, प्रांजल भाषा शैली,भावपक्ष प्रबल ,सरल सुपाठ्य, कलाकौशल उच्चतर, क्षेत्रीय भाषा को स्थान देना ना केवल कहानी में पात्रों को जीवंत ही कर दिया बल्कि क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान के साथ भाषायी संप्रेषणीयता का स्त्रोत भी बना।पुस्तक का आवरण पृष्ठ का चित्रांकन शीर्षक को प्रमाणित करता... अपनी माँ की बांह पर बैठी पाखी को देख बूढ़ी ऑखों में स्नेहमुग्ध रेशे तेरते...! वैचारिक समृद्धि विकसित करने की ओर पाठको को प्रेरित करती करीब एक सौ सैतालीस पृष्ठों में नये समय की आहट... बहुपक्षीय दृष्टि से उपजे भावों का ब्यौरा समेटे सशक्त व बेहतरीन अट्ठारह कहानियाँ हैं जो वजीनिया बुल्फ के वकतव्य 'रचना में इतनी दृढ़ता होनी चाहिए कि वह बिना किसी गत्ते के आधार के बिना अपने पैरों पर खड़ी हो सके' को परिभाषित करती हैं।

साहित्य को समृद्ध करती लेखिका के उद्धेश्यपरक लेखनकर्म को बहुत-बहुत बधाई!

कार्नर वाले अंकलजी : सुनीता पाठक
पहला संस्करण : वर्ष 2021
आवरण : आबिद सुरती जी
बोधि प्रकाशन, जयपुर
मूल्य : 150/

पुस्तक समीक्षा

मोहन सपरा
जालंधर(पंजाब)

कथा रिपोर्ताज : पांव जमीन पर / शैलेन्द्र चौहान
प्रकाशन : बोधि प्रकाशन ,जयपुर

पांव ज़मीन पर: लोक जीवन की लय का स्पंदन

कवि-कथकार-आलोचक शैलेन्द्र चौहान का संस्मरणात्मक उपन्यास उर्फ़ कथा रिपोर्ताज' पांव ज़मीन पर 'बोधि प्रकाशन जयपुर से प्रकाशित हुआ है। लोक जीवन की लय को स्पंदित और अभिव्यक्त करती शैलेन्द्र चौहान की कथा रिपोर्ताज' पांव जमीन पर 'एक महत्वपूर्ण प्रस्तुति है। कवि कथाकार शैलेन्द्र का लेखन एक सचेत सामाजिक कर्म है। उनका चिन्तन प्रतिबद्धता का चिन्तन है। वह जन प्रतिबद्ध लेखक हैं। विवेच्य किताब में शैलेन्द्र चौहान ने भारतीय ग्राम्य जीवन की जो बहुरंगी तस्वीर उकेरी है उसमें एक गहरी ईमानदारी है और अनुभूति की आंच पर पकी संवेदनशीलता है। ग्राम्य जीवन के जीवट, सुख-दु:ख ,हास-परिहास ,वैमनस्य ,खान-पान , बोली-बानी ,रहन-सहन आदि को बहुत जीवंत रूप में प्रस्तुत किया है। यह सब मिलकर पाठक के समक्ष सजीव चित्र की सृष्टि करते हैं और चाक्षुष हैं। लोक जीवन का आनंद देते कदम-उत्सव इनमें कदम ' पीपलखेड़ा गाँव के पोस्टमास्टर बड़े भैया 'हों ,कोठीचार के पूरन काका ,रघुवंशी जी ,तोमर माट साब हों या क्रूर बजरंग सिंह या गाँव में आया साधु हो – सबका सजीव चित्रण हुआ है। नदी , झरने ,जंगल ,तालाब ,पहाड़ ,गाँव के गैल – गलियारे ,पशु-पक्षी , किसान और फसलें हों ,मंडी बामोरा का हायर सेकेंडरी स्कूल , सहपाठी ,शिक्षक और वहां का परिवेश हो, विदिशा का बहुविध वर्णन हो शैलेन्द्र ने पूरी ईमानदारी और इन्वॉल्वमेंट के साथ इन्हें सृजा है। शैलेन्द्र के स्वयं अपने गाँव के लोग ,परिजन , सम्बन्धी ,मित्र और परिचित ,गढ़े-गढ़ाये चरित्र न होकर जीते-जागते एवं गतिशील चरित्र हैं।' पांव जमीन पर 'जिस अंदाज में लिखी गईरिपोर्ताज कथाएं है वे हिन्दी साहित्य में साथ।-विरल हैं जनोन्मुखी होने के साथरिपोर्ताज फ्रांसीसी भाषा का शब्द है। रिपोर्ट किसी घटना के यथातथ्य वर्णन को कहते हैं। रिपोर्ताज गद्य-लेखन की एक विधा है। रिपोर्ट सामान्य रूप से समाचारपत्र के लिये लिखी जाती है और उसमें साहित्यिकता नहीं होती है। रिपोर्ट के कलात्मक तथा साहित्यिक रूप को रिपोर्ताज कहते हैं। वास्तव में रेखाचित्र की शैली में प्रभावोत्पादक ढंग से लिखे जाने में ही रिपोर्ताज की सार्थकता है। आँखों देखी और कानों सुनी घटनाओं पर भी रिपोर्ताज लिखा जा सकता है। कल्पना के आधार पर रिपोर्ताज नहीं लिखा जा सकता है। घटना प्रधान होने के साथ ही रिपोर्ताज को कथातत्त्व से भी युक्त होना चाहिये। रिपोर्ताज लेखक को पत्रकार तथा कलाकार दोनों की भूमिका निभानी पडती है। रिपोर्ताज लेखक के लिये यह भी आवश्यक है कि वह जनसाधारण के जीवन की सच्ची और सही जानकारी रखे। तभी रिपोर्ताज लेखक प्रभावोत्पादकढंग से जनजीवन का इतिहास लिख सकता है।

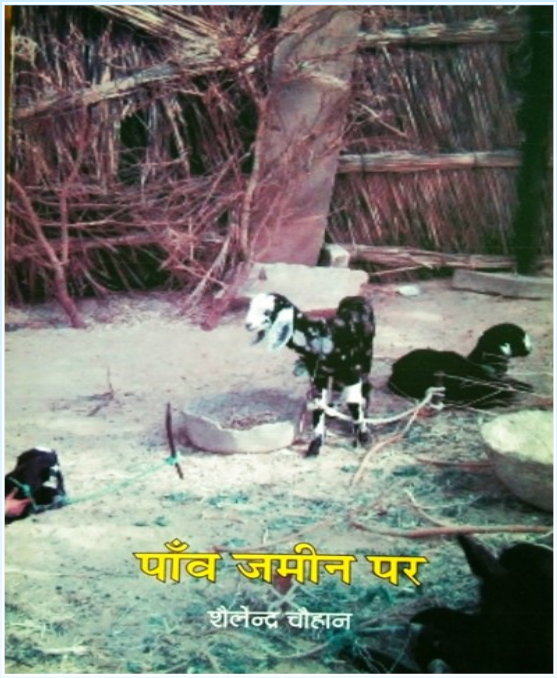

द्वितीय महायुद्ध में रिपोर्ताज की विधा पाश्चात्य साहित्य में बहुत लोकप्रिय हुई। विशेषकर रूसी तथा अंग्रेजी साहित्य में इसका प्रचलन रहा। हिन्दी साहित्य में विदेशी साहित्य के प्रभाव से रिपोर्ताज लिखने की शैली अधिक परिपक्व नहीं हो पाई है। शनैः-शनैः इस विधा में परिष्कार हो रहा है।सर्वश्री प्रकाशचन्द्र ,गुप्तरांगेय राघव ,प्रभाकर माचवे तथा अमृतराय आदि ने रोचक रिपोर्ताज लिखे हैं। रांगेय राघव ने कहानी के पारंपरिक ढाँचे में बदलाव लाते हुए नवीन कथा प्रयोगों द्वारा उसे मौलिक कलेवर में विस्तृत आयाम दिया। रिपोर्ताज लेखन , जीवनचरितात्मक उपन्यास और महायात्रा गाथा की परंपरा डाली। हिदी में रिपोर्ताज बहुत कम लिखे गए हैं । रेणु के रिपोर्ताज इस कमी को पूरा करते हैं । रेणु ने रिपोर्ताज लिखे और वे कहानी-संकलनों में संकलित हुए । उनकी 8 94 1 की लिखी' डायन कोसी 'डॉ० केसरी कुमार द्वारा संपादित' प्रतिनिधि कहानियाँ में संकलित की गयी

एव 'धर्मयुग 'के एक कथा दशक के अंतर्गत' पुरानी कहानी : नया पाठ...'रिपोर्ताज लिखा जो' आदिम रात्रि की महक ' संकलन में आया।

प्रेमचंद का ग्रामीण किसान कुलीन जमीदारों के अन्यायों ,सूदखोर व्यापारियों के शोषण ,सत्ता के निचले पायदान पर बैठे कर्मचारियों के दबावों और दमन के बावजूद आत्महत्या नहीं करता था। वह आखिरी दम तक हिम्मत न हारकर संघर्षपूर्ण स्थितियों कि चुनौती स्वीकारता था और जब व जैसे हो संभव प्रतिरोध भी करता था फिर उसकी चाहे कितनी बड़ी कीमत क्यों न चुकानी पड़े। गाँव अब पहले जैसे नहीं रह गए हैं वहां नगरों ,महानगरों जैसा विकास चाहे न पहुंचा हो उनकी वे विसंगतियां जरुर पहुँच गई हैं जिन्होंने उनके जीवन को अब उतना सरस ,आत्मीय और जिंदादिल नहीं रहने दिया है जितना पहले वह थे। खुली अर्थ व्यवस्था वाले भूमंडलीकरण ने तो गांवों के अस्तित्व को ही नकार दिया है ,किसानों और खेतिहर मजदूरों को सामाजिक सुरक्षा के दायरे से बाहर कर दिया है। विकास के नाम पर जब चाहे उन्हें उजाड़ा जा सकता है वहां विशेष आर्थिक क्षेत्र बनाया जा सकता है। उनके जीवन स्तर को बढ़ाने व सुधारने की बात एक मरीचिका भर बन गई है गुजिश्ता एक दशक से किसानों में बढती आत्महत्या की प्रवृत्ति ने उन्हें और गांव को एक बार फिर आर्थिक ,सामाजिक समस्या के केंद्र में ला दिया है। बावजूद इसके वह हमारे साहित्य में मुकम्मल तरीके से प्रतिबिंबित नहीं हुआ है ,बल्कि इधर के कथा साहित्य से गांव धीरे-धीरे कम होता चला गया है।

शैलेन्द्र उन कथाकारों में से हैं जिनके कथा साहित्य में गांव बार-बार आया है। गरीबों ,पिछड़े वर्ग के लोगों ,दलितों और छोटे व मझोले किसानों पर इतना प्रमाणिक वर्णन फिलहाल अन्यत्र नहीं मिलेगा जितना कि यहाँ है। खेतिहर किसान की समस्यायें और उनके सुख-दु:ख ,राग-द्वेष पूरी प्रामाणिकता के साथ उभर कर सामने आए हैं। दरअसल गांव-किसान से उनके लगाव की अहम् वजह अपनी मिट्टी से गहरा रिश्ता है जो उन्हें आज भी बांधे रखता है। मैं आज भी मानता हूँ कि असली भारत गांव में ही है। बावजूद इसके कि आज गांव लगभग पूरी तरह से टूट चुका है उसका एक बडा हिस्सा महानगरों से जुड गया है। अगर आज की कहानी में गांव कम हुआ है तो उसका एक कारण शहरीकरण है। हालांकि आठवें दशक के पश्चात की कहानी में गांव जरूर था लेकिन उस सीमा तक किसान वहां नहीं था। आजादी के बाद गांव का बहुत तेजी से विखण्डन हुआ था ,परिणामस्वरूप जिस वर्ग ने गांव से तेजी से पलायन किया उसमें सीमांत किसान और कृषि आधारित कुटीर उद्योगों से जुडे लोग ज्यादा मात्रा में थे। इसलिए किसान की अपेक्षा उस वर्ग पर कहानी में ज्यादा फोकस हुआ। दूसरा कारण यह है कि किसान की समस्यायें स्वयं उसके द्वारा पैदा की हुई समस्यायें नहीं थीं। वे साहूकार ने पैदा की थीं , राजनीति ने पैदा की थीं या अधिकारी वर्ग ने पैदा की थीं लिहाजा कहानियां ,किसान के नाम से नहीं ,बल्कि एक बड़े कैनवास गांव के आदमी के नाम से लिखी गई। उनका एक कहानी संग्रह' नहीं यह कोई कहानी नहीं 'सन १९९६ में प्रकाशित हुआ था जिसकी कुछ कहानियां इस पुस्तक की पूर्वपीठिका थीं यथा दादी ,मोहरे और उसका लौट आना। उस संग्रह में असंगठित क्षेत्र के मजदूरों पर एक बेमिशाल कहानी थी' भूमिका ,'अब तक ऐसी कहानी कहीं अन्यत्र नहीं देखने में आई है।शैलेन्द्र ग्राम जीवन के चितेरे रचनाकार हैं। हिन्दुस्तान की सामासिक संस्कृति की हिमायत ,जायज हकों की लडाई और सकारात्मक जीवन मूल्यों के प्रति निरंतर संघर्ष ,उनकी रचनाओं की विशेषता है। वे प्रेमचंद ,फणीश्वरनाथ रेणु , अमरकांत ,मार्कण्डेय ,शैलेश मटियानी ,पुन्नी सिंह ,जगदीश चन्द्र की तरह आंचलिक परिवेश के रचनाकार हैं। अपने कथा साहित्य में स्थानीय बोली के प्रयोग पर जोर देते हुए वे कहते हैं ,यद्यपि ऐसा माना जाता है कि आदमी का शोषण,उत्पीडन ,दारिद्र ,अभाव ,अशिक्षा ,बेरोजगारी इत्यादि सभी जगह पर एक जैसे हैं ,लेकिन मेरा मानना है कि एक जैसे होते हुए भी इनमें बहुत बारीक अंतर भी है और यदि उस बारीकी को हम सफलतापूर्वक पकडना चाहें तो हमारे पास लोक बोलियों से शक्तिशाली अन्य कोई औजार नहीं है। मूलधारा से अलग दूरदराज स्थान पर रहकर जीवन व्यतीत करने वाले आदमी की पीडा को अभिव्यक्त करने वाले शब्द खडी बोली के पास नहीं हैं और अगर हैं भी तो वे किसी बोली से ही आए होंगे। जिस परिवेश में आदमी रहता है उसी के अनुरूप आदमी की पीडा को उसी के शब्दों में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। जाहिर है ये रिपोर्ताज न तो कोरे दृश्यचित्रण हैं न मात्र संस्मरण। इनमें भारतीय ग्राम्य परिवेश ,कई-कई आयामों में ,ईमानदारी और सजगता से बहुविध सृजित एवं दृष्टव्य है।

शैलेन्द्र चौहान की ताजा कृति' पाँव जमीन पर ' को अनेक कोणों से जाँचा-परखा जा सकता है। यह आत्मकथात्मक संस्मरण है या लोक का चित्रण या निम्न मध्यमवर्गीय जीवन की संघर्ष-गाथा ?वस्तुत: कृति इन तीनों का सुंदर सम्मिश्रण है। इनके रसायन से जो निर्मित हुआ , उसमें रसानुभूति भी है और तत्व ज्ञान भी। अलग से वैचारिकता का लबादा न लादे होने पर भी इसमें विचार समाहित है जो पाठक को सोचने पर विवश करता है। चेतना को झकझोरता है। अतीत को लौटाया भले ही न जा सके ,पर अतीत में लौटा जा सकता है ,स्मृति के माध्यम से। शैलेन्द्र ने यही किया है। अनुभव के बाद' स्मृति ' लेखक की महत्वपूर्ण पूँजी है। उससे रचना प्रामाणिक और विश्वसनीय बनती है। जिस रचनाकार के पास स्मृति का कोश नहीं है ,उससे बड़ा दरिद्र शायद और कोई नहीं।इन दिनों आत्म-कथाओं और संस्मरणों की बाढ़-सी आई हुई है। इसके अपने खतरे हैं। इनमें आत्म-श्लाघा जैसी अभद्रता भी हो सकती है और स्वयं को अपने कद से बड़ा भी बताया जा सकता है। संतोष इस बात का है कि शैलेन्द्र चौहान के कथ्य में अतिरेक नहीं है। उन्होंने तटस्थ भाव से सच को जस का तस रख दिया है। शैलन्द्र ने हँसी लिखी है तो मन की उदासी भी नहीं छिपायी है। दरअसल ,पुस्तक बाल्यकाल से युवावस्था तक की यात्रा का सिलसिलेवार बखान है। उपन्यास-कहानी के परकाया-प्रवेश से भिन्न ,स्वकाया-प्रवेश। ग्रामीण भाग की आर्थिक ,सामाजिक व राजनीतिक स्थितियां ,संरचना ,मानसिक बुनावट ,श्रम और संस्कृत जिस सहजता से शैलेन्द्र ने उकेरे हैं वह समसामयिक हिंदी साहित्य में अद्वितीय है।

दीपक गिरकर
समीक्षक
इंदौर

रोचक कहानियों का संग्रह

मेरी पसंदीदा कहानियाँ सुपरिचित प्रवासी कथाकार डॉ. हंसा दीप का सातवां कहानी संग्रह है। समकालीन प्रवासी कथाकारों में डॉ. हंसा दीप ने अपनी सशक्त और अलहदा पहचान बनाई है। लेखिका अपने आसपास के परिवेश से चरित्र खोजती है। वे आम जीवन से अपने पात्र उठाती हैं।कहानियों के प्रत्येक पात्र की अपनी चारित्रिक विशेषता है, अपना परिवेश है जिसे लेखिका ने सफलतापूर्वक निरूपित किया है। डॉ. हंसा दीप एक ऐसी कथाकार है जो भारतीय और वैश्विक जनमानस की पारिवारिक पारम्परिक स्थितियों, मानसिकता, पीढ़ीगत अंतराल के कई पक्षों को यथार्थ की कलम से उकेरती है और वे भावनाओं को गढ़ना जानती हैं। लेखिका के पास गहरीमनोवैज्ञानिक पकड़ है। इस कहानी संग्रह में छोटी-बड़ी 19 कहानियाँ हैं। हंसा जी अपनी कहानियों के पात्रों के अंतस के तार-तार खोलकर सामने लाती हैं। हंसा जी की कहानियों में यथार्थवादी जीवन का सटीक चित्रण है। इस कहानी संग्रह की कहानियों में कथाकार ने मानवीय संवेदनाएँ, आदिवासियों का भोलापन तथा उनका निश्छल मन, पारिवारिक रिश्तों के बीच का ताना-बाना, नन्ही बच्ची की कोमल भावनाओं तथा उसकी मासूमियत, अकेलेपन से उबरते वृद्ध, रिश्तेदारों की संवेदनहीनता, अमानवीय चेहरा, समाज की संवेदनहीनता तथा व्यावहारिक प्रवृत्ति, युवती का त्यागमयी जीवन, बाल मनोविज्ञान, समयानुसार बदलते सामाजिक रंग, कुँठा से भरा जीवन, कर्तव्य पारायणता, नस्लवादी सोच इन सब आयामों को विश्लेषित किया है।

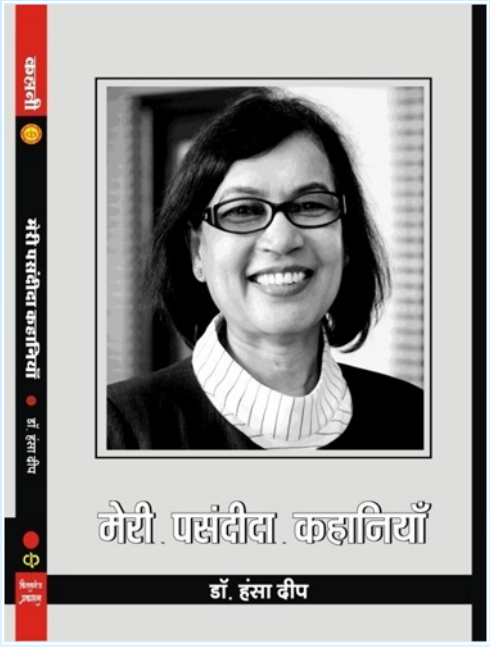

कथाकार कथानक के माध्यम से पात्रों के अतल मन की गहराइयों की थाह लेती हैं। डॉ. हंसा दीप के इस संग्रह की कहानियों को पढ़ने के पूर्व उनके आत्मकथ्य को पढ़ना जरूरी है जिसमें उन्होंने लिखा है "मेरे पात्र कभी सीमाओं में बँधना स्वीकार नहीं करते। वे स्वच्छंदता से भावों की उड़ान भर लेते हैं। परिवेश की विभिन्नताओं के बावजूद शरीर और मन के सारे लक्षण वैश्विक हैं, कृतियाँ भी उसी शैली में रची जाती रहें। विसंगतियाँ कहीं ज्यादा हैं, कहीं कम मगर मूल वही है। जड़ें कहीं से भी जुडी हों, आबोहवा का महत्व कभी कम नहीं होता। इसलिए मेरी इन सभी कहानियों में पात्र स्वच्छंद विचरण करते हैं। संवेदनाओं से जुड़कर मैं इनके साथ बहती चली जाती हूँ।" कहानी दोरंगी लेन एक वृद्ध महिला एंजिला के अकेलेपन की कहानी है। एंजिला को यह अकेलापन अपने पति और बेटियों की आकस्मिक दुर्घटना में हुई मृत्यु के कारण मिला है। नीग्रो ओरा यूगांडा से टोरंटो आकर मैडिसिन की पढाई कर रही है। उसके मन में हीन भावना है कि श्वेत लोग अश्वेत लोगों को आसानी से स्वीकारते नहीं हैं। लेकिन टोरेंटों आकर देखती है कि उसकी श्वेत मकान मालकिन का पति और बेटियाँ अश्वेत थें और वह मकान मालकिन अपनी बेटियों की तरह ही उसके लिए चिंतित रहती है। टूक-टूक कलेजा कहानी शीर्षक को सार्थक करती मानवीय संवेदना से सराबोर कहानी है। एक घर के प्रतीकात्मक माध्यम से दो पीढ़ियों के अंतराल को रेखांकित करती है। यह अकेलेपन का दर्द भोगती एक वृद्ध महिला की कहानी है जिसे अपने पुराने घर से काफी लगाव होता है लेकिन बच्चों की वजह से उस पुराने घर को उसे छोड़ना पड़ता है। बारह साल तक उस घर में रहने के बाद उसे छोड़ते समय वृद्ध महिला को घर में बिताए सभी पल चलचित्र की तरह याद आते हैं। घर का बिछोह वृद्ध महिला के मन को द्रवित कर देता है। हरा पत्ता पीला पत्ता मानवीय संवेदनाओं को चित्रित करती एक मर्मस्पर्शी, भावुक कहानी है। हर व्यक्ति को वृद्धावस्था से गुजरना होता है। डॉ. मिलर भी अपनी बढती उम्र को रोक नहीं पाए और हर रात वे सोते समय विचार करते थे कि शायद आज की रात आखिरी रात हो। लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। एक दिन एक साल का बच्चा उनके

संपर्क में आता है तो डॉ. मिलर की जिंदगी बदल जाती है। डॉ. मिलर की जिंदगी में बहार आ जाती है। दोनों एक दूसरे से बहुत कुछ सीखते हैं। छोटे बच्चे के संपर्क में आने से डॉ. मिलर अकेलेपन से उबर जाते हैं और उनकी उम्र बढ़ जाती है। फालतू कोना कहानी के केन्द्र में सुहास है। इस कहानी में पत्थर होते जाते परिवार के सदस्यों का हृदयस्पर्शी चित्र हैं। यह एक जिम्मेदार पति और स्नेहिल पिता सुहास की मार्मिक कथा है जिसमें सुहास का पत्ता धीरे-धीरे कटता जाता है और वह अपने ही परिवार के सदस्यों से दूर होता चला जाता है। सारी अच्छाइयों की पोटली बुराइयों के गट्ठर में बदल जाती है। सुहास एक शराबी बन चुका था और दिन रात गालियाँ बकता रहता था। ज्यादा शराब पीने से उस पर बीमारियाँ हावी हो गई। घर में वह एक कोने में पड़ा रहता था। अब जबकि वह मर चुका है और उसका दाह संस्कार भी हो चुका है।

इस कहानी की अंतिम पंक्ति काफी प्रभावी है। घर वालों के लिए घर के फालतू कोने के दिन पूरे हो गए थे। आज की नारी व्यावहारिक धरातल पर सोचने लगी है। अब वह पति को परमेश्वर मानकर हर समय उसकी पूजा नहीं करती है बल्कि शराबी पति, जो ढेर सारी बीमारियों से ग्रसित है, की मृत्यु का इंतज़ार करती है। यह बदलते समय की आहट है। शून्य के भीतर कहानी में कौमुदी अपने माता-पिता और भाई-बहनों की जिम्मेदारी अपने कधों पर उठाते हुए कब वह अधेड़ उम्र में पहुँच जाती है, उसे स्वयं पता नहीं चलता। पचास साल की होने के बाद वह अकेलेपन को दूर करने के लिए पालतू जानवरों को पालना शुरू कर देती है।

सोविनियर कहानी में एना गिलबर्ट का बचपन अनाथालय में गुजरने के कारण उसका जीवन कुंठित हो जाता है और वह अपनी सारी भड़ास कक्षा के छात्रों पर निकालती है। "शत प्रतिशत" आत्मकथात्मक शैली में लिखी, मानवीय संवेदनाओं को चित्रित करती एक मर्मस्पर्शी, भावुक कहानी है। इस कहानी की सभी घटनाएँ पिता द्वारा प्रताड़ित शोषित बच्चे की असहनीय दास्ताँ को बयान करती है। इस कहानी में एक पिता का अमानवीय चेहरा सामने आता है। यह कहानी जीवन के प्रत्यक्षीकरण की कहानी है। कहानी में टूटते हुए व्यक्ति की मनोदशा का चित्रण है। यह रचना एक व्यक्ति के मानसिक अन्तर्द्वंद्व की कहानी है। कहानी के नायक साशा के मन- मस्तिष्क में बचपन की त्रासद स्मृतियां अंकित हैं। बचपन के घाव, कुंठाएं उसे प्रतिशोध की भावना से भर देते हैं। साशा की व्यथा को कहानीकार ने मार्मिक ढंग से कलमबद्ध किया है। जब साशा बदला लेने के लिए भाड़े का एक ट्रक लेकर निकलता है और राहगीरों को कुचल देना चाहता है, तब एक ऐसा जादुई संयोग बनता है कि एक दूसरा व्यक्ति वह सब कुछ कर देता है जो साशा ने सोच रखा था। लेकिन जब साशा इंसानों का बहता हुआ खून देखता है तो उसका हृदय परिवर्तन हो जाता है और वह घायलों की खिदमत में लग जाता है। लेखिका ने साशा के मानसिक धरातल को समझकर उसके मन की तह तक पहुँचकर कहानी का सृजन किया है। जब उसकी सायकिल के हर हिस्से को पटक-पटक कर तोड़ा जा रहा था तो उसे महसूस हो रहा था जैसे कोई उसी की बोटी-बोटी काट कर फेंक रहा हो (पृष्ठ 19) तो कथाकार साशा के अंतर्मन को यहाँ खोलकर रख देती हैं।

इस संकलन की एक दिलचस्प, रोचक और महत्वपूर्ण कहानी है "इलायची"। कथाकार ने इस कहानी का गठन बहुत ही बेजोड़ ढंग से प्रस्तुत किया है। इस कहानी का शीर्षक प्रतीकात्मक है जिसमें इस कहानी के मुख्य किरदार शौकत मियाँ को अपनी चेतना से भी जूझते हुए दिखाया गया है। इस कथा में रजनी का किरदार भी प्रभावशाली है। कथाकार ने इस कहानी में प्रतीकों का सार्थक प्रयोग कर अपनी कलात्मक क्षमता का परिचय दिया है। उदाहरण दृष्टव्य है – उम्र भर गोश्त से अपनी जीविका और जीवन चलाने वाले के लिए उससे दूर रहना एक महान संत के धैर्य जैसा था। संतों जैसी कोई प्रवृत्ति नहीं पर किसी संत से बहुत ऊपर। न जाने दोनों में बड़ा संत कौन था एक घोषित संत था और दूसरा अघोषित संत, बिल्कुल एक इलायची की तरह मानवीयता की खुशबू से ओतप्रोत, अंतर्मन के हर दाने में भी और बाहरी छिलके में भी। (पृष्ठ79) कुलाँचे भरते मृग कहानी में एक वृद्ध महिला अपने मकान में एक युवती अमायरा को पेइंग गेस्ट रखती है। अमायरा आधुनिक परिवेश की स्वच्छंद लड़की है और मकान मालकिन पुरातनपंथी वृद्ध महिला है। दोनों की मानसिकता अलग तरह की है। एक ही महीने में मकान मालकिन अमायरा को घर खाली करने के लिए कह देती है। लेकिन जब वृद्ध मकान मालकिन को अमायरा की दुःख भरी कहानी मालूम पड़ती है तो उसे बहुत पश्चाताप होता है। "अक्स" कहानी में बाल मनोविज्ञान के अनेक पहलू चित्रित हुए हैं। इस कहानी में लेखिका ने नानी की ममता को अत्यन्त आत्मीयता एवं कलात्मक ढंग से चित्रित किया है। "सालों बाद भी वे सारी बातें वैसी की वैसी सामने आ रही हैं जैसी मेरे बचपन में आती थीं शायद उससे भी कहीं ज़्यादा। माँ बनकर यदि मैं इतनी टोका-टाकी कर रही हूँ तो यह बात तो पक्की है कि नानी बनकर मेरे अंदर की माँ की माँ 'प्राब्लम नानी' हो ही जाएगी। इसीलिये मैं नानी से नाराज हूँ, बहुत नाराजहूँ, वे चली भी गयीं तो क्या मुझमें खुद को छोड़ कर गयी हैं।" (पृष्ठ 101)छोड़ आये वो गलियाँ कहानी आदिवासी क्षेत्र से जुड़ी हुई है।

यह आदिवासी भील सुकमा की कहानी है जो कलेक्टर बनता है और उसकी पोस्टिंग उसी आदिवासी क्षेत्र में होती है जहाँ का वह रहने वाला है। कथाकार ने कहानी में आदिवासी स्त्रियों का दैहिक शोषण, खुले में शौच की समस्या, साहूकारों द्वारा आदिवासियों का शोषण सार्थक रूप से उकेरा है। सुकमा अपने इस आदिवासी क्षेत्र के लिए बहुत कुछ करना चाहता था, लेकिन भ्रष्ट राजनेताओं, राजनेताओं के अपराधियों से संबंध, शोषित अनपढ़ आदिवासी और प्रशासन तथा वह स्वयं राजनेताओं के हाथों की कठपुतली से वह तिलमिलाकर रह जाता है। जब

सुकमा इस क्षेत्र में अच्छा काम कर रहा होता है तब उसका स्थानांतरण कर दिया जाता है। "पूर्णविराम के पहले" कहानी में स्कूल बस की ड्राइवर एक शिक्षक पर अनुकम्पा करती है तो शिक्षक के मन में लगातार उधेड़बुन चलती रहती है और वह अपनी कल्पना से उस अनुकम्पा का गलत अर्थ निकालती रहती है लेकिन अंत में जब वह शिक्षक ड्राइवर से बात करती है तो अपनी सोच पर शर्मिन्दा हो जाती है और अपराध बोध से ग्रस्त हो जाती है। चाहती तो उसे गले लगाकर अपना अपराध बोध कम कर सकती थी लेकिन हौसला नहीं जुटा पाई। बगैर कुछ जाने, बगैर कुछ समझे जितने आरोप किसी के ऊपर लगाए जा सकते हैं, मैं लगा चुकी थी। उस बेरूखी से, उस बेहूदी सोच से मैंने खुद को अपनी नज़रों में नीचे गिरा दिया था, पर मेरे जंगलीपन को इंसानियत के घेरे में संजो कर वह मेरी अनर्गल सोच पर पूर्णविराम लगा गयी थी। (पृष्ठ 71) शिल्प की नवीनता, भाषा-शैली और भावाभिव्यंजना से इस कहानी की मधुरता प्रकट हुई है। फौजी कहानी में ट्रैन के एक डिब्बे में अकेली महिला अपने बच्चों के साथ यात्रा करती है। एक स्टेशन पर ढेर सारे फौजी उस डिब्बे में चढ़ जाते है। महिला बहुत घबरा जाती है। लेकिन बच्चे फौजियों से शीघ्र ही घुलमिल जाते हैं। एक बड़े स्टेशन पर एक राजनीतिक पार्टी के कार्यकर्ता उस डिब्बे में घुसकर नशे में झूमते हुए बेहूदा हरकत करते हैं लेकिन सभी फौजी उस अकेली महिला और उसके बच्चों को सुरक्षा प्रदान करते हैं। और जब सारे कार्यकर्ता किसी स्टेशन पर उतर जाते हैं और फौजी भी अपना स्टेशन आने पर उतरते हैं तब उस महिला की आँखें फौजियों के कर्तव्य पारायणता को लेकर गीली हो जाती है। पापा की मुक्ति कहानी में अचानक पापा की मृत्य होने पर एक बच्ची जो कि थोड़ी समझदार है, वह अपने पापा की तेरहवीं तक के सारे क्रियाकर्म देखती है। अपनी मम्मी और सारे रिश्तेदारों के क्रियाकलापों पर बारीक नज़र रखती है और तेरहवीं के अंत में जब सभी रिश्तेदार चले जाते
है तब उसे अपनी मम्मी और सारे रिश्तेदारों का व्यावहारिक पक्ष दिखता है। इसलिए वह बच्ची अंत में कहती है अच्छा हो गया, पापा को मुक्ति मिल गयी। नेपथ्य से दो सहेलियों की कहानी है, जिनके स्वभाव एक दूसरे से विपरीत है। एक सहेली धनवान है और दूसरी गरीब। धनवान सहेली के पास सब कुछ है - ढेरों डिग्रियाँ, शानदार कैरियर लेकिन धनवान सहेली को खुशियाँ सिर्फ सिक्कों की खनखनाहट से मिलती है जबकि गरीब सहेली के पास लोगों का खजाना है जिसकी वजह से वह बहुत खुश रहती है। तुलनात्मक रूप से गरीब सहेली का ही पलड़ा भारी रहता है। कहानी में धनवान सहेली की बेचैनी के मूल कारणों को पकड़ा है।

ऊँचाइयाँ कहानी में डॉ. आशी अस्थाना के जवान होते बेटे अलंकार की व्यथा को कहानीकार ने मार्मिक ढंग से कलमबद्ध किया है। इस कथा में कथाकार ने कहानी की नायिका डॉक्टर आशी अस्थाना की व्यस्त एवं आत्मकेंद्रित जिंदगी का सजीव चित्रण किया है और उसे आधुनिक विचार वाली, स्वतंत्र नारी के रूप में प्रस्तुत किया है। इस कहानी में बेटा अपने पिताजी के डरे, सहमे व्यक्तित्व से इतना अधिक आतंकित है कि वह निर्णय कर लेता है कि यदि वह शादी करेगा तो किसी लड़के से। अपनी माँ का व्यक्तित्व उसे काफ़ी दबंग लगता है। निर्मम फैसले से गुजरते हुई यह रचना बहस को जन्म देती है। यह कहानी स्त्री विमर्श के फलक को आवश्यक विस्तारदेती हैं।
दो और दो बाईस कहानी में अमेरिकन पुलिस की तत्परता, अपने कार्य के प्रति समर्पित और सजग दिखाई देती है। पुराना चावल विदेशों में एकाकी जीवन जी रहे बुजुर्ग लोगों के आम जीवन और दिनचर्या को रेखांकित करती सशक्त कहानी है। कहानी की नायिका मार्था छियानवे साल की है। वह इस उम्र में भी काफी सक्रीय है और अपना घर अंदर से बहुत साफ़ और सुन्दर रखती है। लेकिन बाहर से देखने पर घर पुराना और किसी गरीब व्यक्ति का लगता है। क्योंकि मार्था की ऐसी सोच है कि यदि बाहर से भी घर सुन्दर लगेगा तो चोरों का ध्यान इस घर पर जा सकता है। चेहरों पर टँगी तख्तियाँ चार अलग अलग देशों की स्त्रियों के मन की तहों को खोलती एक संवेदनशील कहानी है। कथाकार ने चारों महिलाओं की बेचैनी को बहुत अच्छी तरह उकेरा है। नस्लवादी सोच इन महिलाओं को प्रताड़ित करती है।

दोरंगी लेन, "शत प्रतिशत", "अक्स", "पूर्णविराम के पहले" कहानियाँ विदेश की पृष्ठ भूमि पर लिखी गई हैं। कथाकार हंसा दीप "शत प्रतिशत", "अक्स", कहानियों के माध्यम से बचपन को तराशने का महती काम करती हैं। ये कहानियाँ बच्चों के साथ अभिभावकों के लिए भी शिक्षाप्रद हैं। "शत प्रतिशत", पापा की मुक्ति, ऊँचाइयाँ जैसी कहानियों में लेखिका जीवन की विसंगतियों और जीवन के कच्चे चिट्ठों को उद्घाटित करने में सफल हुई है। इस संग्रह की कहानियों का कथानक निरंतर गतिशील बना रहता है, पात्रों के आचरण में असहजता नहीं लगती, संवाद में स्वाभाविकता बाधित नहीं हुई है। कथाकार ने जीवन के यथार्थ का सहज और सजीव चित्रण अपने कथा साहित्य में किया है। अकेलापन एक ऐसी विकट सच्चाई है जो हंसा दीप की कहानियों में निरंतर विद्यमान रहती है। हंसा दीप की कहानियों के पात्र अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। कहानियों के पात्र अपनी जिंदगी की अनुभूतियों को सरलता से व्यक्त करते हैं। कहानियों के चरित्र वास्तविक चरित्र लगते हैं, कृत्रिम या थोपे हुए नहीं। लेखिका के कहानियों के पात्र अपने ही करीबी रिश्तों को परत दर परत बेपर्दा करते हैं। इन कहानियों के पात्र अपने दैनंदिन कार्यों से अपने चरित्र का उद्घाटन करते हैं और जीवन से सबक लेते हुए दिखते हैं। कहानियों के किरदार अपनी मनोग्रंथियों से बखूबी जूझते हैं। हंसा जी की कहानियों के पात्र के पात्र देश-काल की सीमाओं से परे हैं। अधिकाँश कहानियों में विदेशी झलक मिलती है। इन कहानियों में अनुभव एवं अनुभूतियों की प्रामाणिकता है।

इस संग्रह की कहानियों में व्याप्त स्वाभाविकता, सजीवता और मार्मिकता पाठकों के मन-
मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव छोड़ने में सक्षम है। लेखिका अपनी कहानियों में व्यक्ति की आचरणगत विसंगतियों को बहुत साफ़-सुथरे ढंग से उकेरती हैं। इस संग्रह की कहानियों के शीर्षक कथानक के अनुसार है और शीर्षक कलात्मक भी है। हंसा जी के किरदार अपने जज्बातों को जाहिर करने में पीछे नहीं हटते। जीवन के गहरे मनोभावों को लेखिका ने पात्रों के माध्यम से अधिकाधिक रूप से व्यक्त किया है। हंसा जी की कहानियाँ बाहर से भीतर की ओर यात्रा करती हैं।

कथाकार हंसा दीप एक मनोवैज्ञानिक की तरह सामाजिक परिवर्तन को अपनी कहानियों का विषय बनाती हैं। अधिकाँश कहानियों का अंत सकारात्मक है। आशा है उनके इस कहानी संग्रह को भी पाठकों का भरपूर प्यार और सम्मान मिलेगा।

समीक्षित कृति : मेरी पसंदीदा कहानियाँ

(कहानी संग्रह)

लेखिका : डॉ. हंसा दीप

प्रकाशक : किताबगंज प्रकाशन, गंगापुर सिटी

मूल्य : 350 रूपए

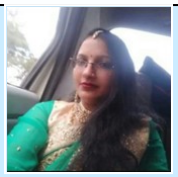

डॉ दीपिका माहेश्वरी सुमन (अहंकारा)

नजीबाबाद

गीत..

दूर से इश्क अब यूँ निभाएंगे हम।
सीमाओं को सारी भूल जाएंगे हम॥

मान को तेरे न कभी कम करें।
ऐसी राहों पर कदमों का हम दम भरें॥
तेरे जीवन की ही भोर बनकर सनम।
मिटा देंगे हर एक उलझन को हम ॥
राहों को तेरी अब यूँ सजाएंगे हम।
सीमाओं को सारी भूल जाएंगे हम ॥

दूर से इश्क अब यूँ निभाएंगे हम।
सीमाओं को सारी भूल जाएंगे हम ॥

रुखसारों पे तेरे चमकता नूर हो।
कभी ख़्वाबे निगाहें न मजबूर हो॥
चहकती ही रहे तू सदा के लिए।
निसार हैं हम हर अदा के लिए॥
शाने अदब तेरा यूँ बढ़ाएंगे हम।
सीमाओं को सारी भूल जाएंगे हम॥

दूर से इश्क अब यूँ निभाएंगे हम।
सीमाओं को सारी भूल जाएंगे हम ॥

ग़ज़ल

ज़ख़्म जितने भी मिले सह नहीं पायें हैं।
दर्द ए-इबारत को हम कह नहीं पायें हैं॥
इश्क़ ए-वफ़ा का सिला हमको ये मिला।
तेरे बिना इक पल हम रह नहीं पायें हैं॥
तेरे दयार से हम यूँ ही गुज़रे जब-जब।
बिना सज़दा किये हमदम रह नहीं पायें हैं ॥
लबों पे नाम तेरा दुआ तेरी ख़ातिर।
हम तो फ़क़ीर हुए कह नहीं पायें हैं॥
इश्क़ ए-तासीर से अरक हुआ है सुमन।
इत्र बन कर भी सनम बह नहीं पाये हैं॥

विजय कुमार तिवारी
भुवनेश्वर,उडीसा

मैनेजमेंट गुरु कबीर:ज्ञान और भक्ति पूर्ण प्रबंधकीय चिंतन

निर्गुण परम्परा के कबीर को,उनकी उलटबांसी और अद्भुत विराट व्यक्तित्व को समझना और उन पर चिन्तन करना सहज नहीं है। कबीर साहस करते हैं,समाज में फैली कुरीतियों पर आक्रमण करते हैं और कोई व्यापक दृष्टि देते हैं जिससे उनके 'राम' को जानना-पहचानना सहज हो जाता है। कबीर मेरे लिए सदैव प्रेरक रहे हैं और उन्होंने हमेशा आकर्षित किया है। सुखद संयोग ही है, अत्यन्त लोकप्रिय साहित्यकार श्री प्रताप नारायण सिंह द्वारा लिखित सद्-ग्रंथ "मैनेजमेंट गुरु कबीर" मेरे सामने है। प्रताप नारायण सिंह जी की प्रतिभा का आकलन इस तरह से किया जा सकता है,उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं में पूरी दक्षता के साथ,साधिकार लेखन किया है। उनके उपन्यास देश की महान विभूतियों के जीवन पर नये चिन्तन के साथ प्रकाश डालते हैं,उनके कविता और कहानी संग्रह छपे हैं और उनका सम्पूर्ण लेखन चर्चा में है। उन्हें उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'जयशंकर प्रसाद पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है।

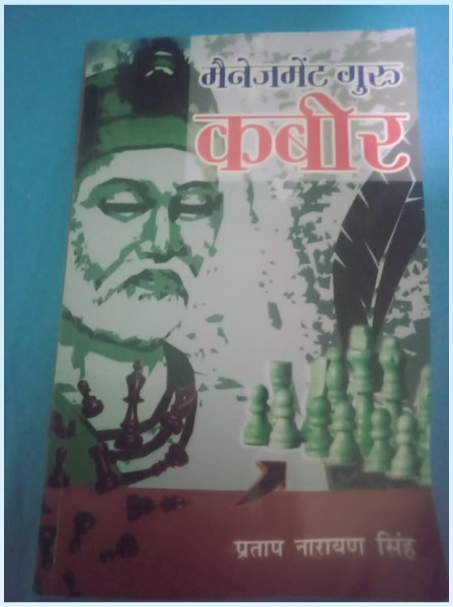

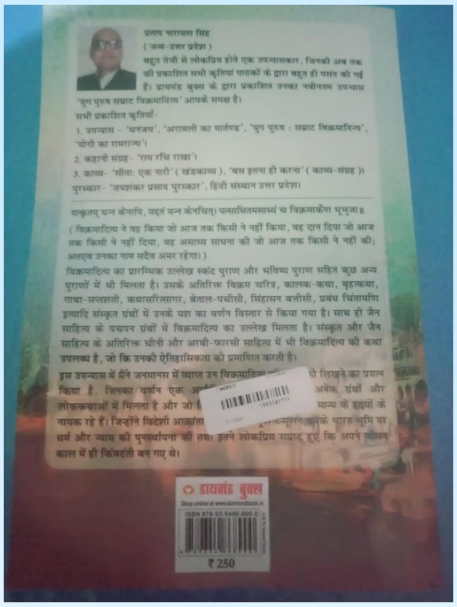

'मैनेजमेंट गुरु कबीर' उनका वैचारिक व शिक्षाप्रद ग्रंथ है जिसके 'आमुख' में लिखा हुआ है-"कबीर एक ऐसा नाम है जिसे उच्चारित करते ही व्यक्ति की आँखों के समक्ष समस्त बंधनों से मुक्त,सभी भेदभावों से परे और सम्पूर्ण दोषों का दमन कर चुके एक ऐसे संत,भक्त,चिन्तक,विचारक और समाज सुधारक की छवि उभर आती है जो निर्विवाद रुप से ज्ञान और भक्ति का एक सर्वकालिक प्रतिनिधि है।' लेखक ने इस ग्रंथ के सृजन का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए लिखा है-'कबीर के विचारों और उपदेशों के माध्यम से व्यक्ति के सामाजिक व व्यक्तिगत जीवन तथा कार्यक्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले प्रबंधन गुणों को विश्लेषित करने और समझने का प्रयत्न करना है।"

वे आगे लिखते हैं-'देखा जाए तो महापुरुषों के अंदर प्रबंधन का गुण अवश्य मिलता है। वे अपने जीवन,समाज और अनुयायियों को उन्हीं गुणों के कारण कुशलता से साधते और व्यवस्थित रखने में सफल होते हैं तथा समकालीन लोगों के साथ-साथ आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उदाहरण व प्रेरणास्रोत बन जाते हैं।" महापुरुष किसी न किसी बड़े उद्देश्य को लेकर चलते हैं और इसके लिए उनके पास आवश्यक कार्य-श्रृँखलाओं की परियोजना होती है। आज प्रबंधन की शिक्षा अति महत्वपूर्ण है। कबीर आध्यात्मिक और सामाजिक दोनों ही क्षेत्रों में क्रान्तिकारी परिवर्तनों के प्रणेता बने थे। वे आध्यात्मिक गुरु व समाज सुधारक थे और उनकी शिक्षाएं मानव कल्याण के लिए सदैव प्रासंगिक रही हैं। इस तरह उनमें स्वाभाविक रुप से प्रबंधन के गुण कूट-कूट कर भरे हुए थे। प्रताप नारायण सिंह ने विधिवत अपने शोधों और निष्कर्षों के आधार पर कबीर के प्रबंधकीय गुणों को रेखांकित करने का प्रयास किया है और कुल 18 शीर्षकों के अन्तर्गत अपनी सम्पूर्ण विवेचनाएं की है।

'संक्षिप्त जीवनवृत्त और कृतित्व' में प्रताप नारायण सिंह ने कबीर के जन्म,जन्मस्थान, माता-पिता, लालन-पालन,शिक्षा,जाति,गुरु,गुरुमंत्र,वेद-शास्त्र ज्ञान आदि को लेकर गहन चिन्तन-मनन किया है और अपने निष्कर्षों को प्रामाणिकता के साथ रखा है। कबीर जिस तरह से भारतीय दर्शन,योग वेद इत्यादि के विषय में गहनता से बातें करते

है,ऐसा लगता है,वे स्वामी रामानंद के शिष्य थे और उन्होंने गुरु से शिक्षा अवश्य ली होगी। कबीर गुरु को महत्वपूर्ण मानते हैं और कहते हैं-'गुरु के बिना ज्ञान नहीं होता।' उनका गुरु तो ईश्वर से भी बड़ा है। उन्होंने घर में रहकर,सांसारिक जीवन जीते हुए गृहस्थी को ही तपमय बना लिया। भिक्षा माँगना उनके लिए निषेध है,यह मृत्यु के समान है। उनकी शादी लोई से हुई और कमाल-कमाली दो संताने थीं। उनका जीवन अभावग्रस्त था और वे उतना ही संसाधन चाहते थे जिसमें जीवन चलता रहे—"साईं इतना दीजिए,जामें कुटुम समाय। मैं भी भूखा ना रहूँ साधु न भूखा जाय।" उन्होंने हर प्रचलित कुरीतियों का खण्डन किया और अनेक मान्यताओं का विरोध किया। 'काशी में मरने से मोक्ष प्राप्ति होती है' के विरोध में,जीवन भर काशी में रहने वाले कबीर अंतिम समय में मगहर चले गए। हिन्दी साहित्य में उनका महत्वपूर्ण स्थान है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा था-"कबीर साधना के क्षेत्र में युग-गुरु थे और साहित्य के क्षेत्र मे भविष्यद्रष्टा। उनके समकालीन एवं परवर्ती सभी सन्त कवियों ने उनकी वाणी का अनुसरण किया।" 'बीजक' उनका विश्वसनीय संग्रह माना जाता है जिसमें तीन तरह की रचनाएं है-साखी,शबद और रमैनी।

प्रबंधन गुण की चर्चा करते हुए प्रताप नारायण सिंह ने मनुष्य के द्वारा अपने सूक्ष्म और स्थूल के प्रबंधन पर ध्यान केन्द्रित किया है। जो लोग अपने मन और बाहरी क्रियाकलापों का प्रबंधन ठीक ढंग से कर पाते हैं उनका जीवन अपेक्षाकृत सहज और सरल हो जाता है और वे अधिक प्रसन्नचित्त रहते हैं। व्यवस्थित होने से समय और धन दोनों की बचत होती है। प्रबंधन केवल बाह्य-जगत तक ही सीमित नहीं है अपितु अन्तर्जगत को भी व्यवस्थित करने में भी इसकी बहुत आवश्यकता पड़ती है। मनुष्य को सुख-शांति से परिपूर्ण जीवन जीने के लिए मात्र धन या सामाजिक सफलता ही नहीं पर्याप्त होती है अपितु अपनी इन्द्रियों,भावनाओं,विचारों आदि का प्रबंधन भी करना पड़ता है। कबीर ने अपने अन्तर्जगत को साध रखा था। यह स्वयं को व्यवस्थित करने से हुआ और अपने मन,विचार, वाणी इत्यादि के प्रबंधन से हुआ। अच्छे प्रबंधन हेतु लेखक ने व्यक्ति के अन्दर अनेक आवश्यक गुणों की चर्चा की है और कबीर की शिक्षाओं,उपदेशों आदि से जोड़ा है।

कबीर के 'डगमग छाड़ि दे मन बौरा" भजन के आधार पर प्रताप नारायण सिंह ने 'आत्मविश्वास और दृढ़ता' के भाव को पकड़ा है और जीवन प्रबंधन के लिए जरूरी बताया है। यहाँ अनेक सूत्र वाक्य हैं-निर्भय और निश्चिन्त मनुष्य जीवन का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करता है। कबीर दास जी राम को पकड़े रहने की बात करते हैं। एक बार निर्णय कर लिया तो पीछे मत हटो। सशंकित और दुविधा में मत रहो। संसारियों से प्रेम जोड़ने से कल्याण का एक भी काम नहीं होता। हरि का भजन विश्वास पूर्वक करो। अपना लक्ष्य तय कर लो और लग जाओ। शूरवीर वही है जो अंतिम पलों तक हार नहीं मानता। दृढ़ व्यक्ति हारी हुई बाजी जीत लेता है। प्रह्लाद ध्रुव,ट्रोजन हार्स जैसी कहानियों के माध्यम से लेखक ने इन गुणों की सार्थकता व्यक्त की है और ये सभी कबीर के बताए मार्ग हैं। कबीर कहते हैं-जिन खोजा तिन पाईयाँ अर्थात् गहरे पानी में निर्भय होकर उतरो,सफलता मिलेगी। 'अब मैं भूला रे भाई! मेरे सतगुरु जुगत लखाई' भजन में कबीर जीवन प्रबंधन के अनेक सूत्र देते हैं। यहाँ ग्रहणशीलता और रचनात्मकता पर लेखक ने व्यापक तौर पर चिन्तन किया है। कबीर नये मार्ग की बात करते हैं,कर्मकांड,तीर्थयात्रा,पाखंड छोड़ने की बात करते हैं और अपने राम को हृदय के सिंहासन पर बैठाते हैं। उन्होंने भक्ति का ज्ञान मार्ग अपनाया,जाति को नकारा-'जाति न पूछो साधु की,पूछ लीजिए ज्ञान।' प्रताप नारायण सिंह ने ग्रहणशीलता और रचनात्मकता को नये सिरे से जानने, समझने पर जोर दिया है और इसके लिए कबीर के सूत्र वाक्यों को आधार बनाया है-पढ़े हुए ज्ञान को जीवन में उतारो,रुढ़िवादी मत बनो। मस्जिद से अजान देने पर कबीर पूछते हैं-क्या तुम्हारा खुदा बहरा है? भीतर कपट है,माला जपने से कोई लाभ नहीं। कबीर बार-बार भीतर की यात्रा करने, विचारों को खुला छोड़ने पर बल देते हैं। इससे अन्तर्दृष्टि का विकास होता है,नये अनुभव होते हैं,प्रगति होती हैं,मानसिक दृढ़ता आती है और मनुष्य उम्मीदों से भर जाता है। आधुनिक प्रबंधन शास्त्र ने कबीर के सूत्रों को ही तो पकड़ा है।

कबीर हरि-नाम जपने को कहते हैं,शरीर में काम,क्रोध,लोभ,मोह व अहंकार को चोर बताते हैं और अपनी चेतना को जगाने,सावधान होने की सलाह देते हैं। लेखक ने इन्हीं तत्वों के आधार पर प्रबंधन की प्रबल विश्लेषणात्मक क्षमता को समझाया है। विश्लेषण की प्रबल क्षमता से आत्मविश्वास बढ़ता है। सही विश्लेषण के अभाव में कार्य पूर्ण नहीं हो पाते और हानि उठानी पड़ती है। वे अपने दोहों मे विकारों का सूक्ष्म विश्लेषण करते हैं और जीवन को सुखद बनाते हैं। कबीर अन्तर्जगत के साथ बाह्य जगत के विश्लेषण की बात करते हैं-'साधू ऐसा चाहिए,जैसा सूप सुभाय। सार-सार को गहि रहे,थोथा देइ उड़ाय।' कबीर जीवन में सार तत्व को समझाना चाहते हैं और तदनुसार ही प्रताप नारायण सिंह जी प्रबंधन में कबीर के चिन्तन को शामिल करते हैं। प्रबंधन में दबाव को झेलने की शिक्षा दी जाती है। कबीर लिखते हैं-अब मैं क्या डरूँगा! अब तो मैं और तुम,आगम-निगम,ऊँच-नीच का रहस्य जान गया हूँ। प्रबंधन में समय,व्यय और कार्य की गुणवत्ता पर नियंत्रण रखना पड़ता है। समय को पहचानना और सही सन्दर्भ प्रस्तुत करना कोई कबीर से सीखे। वे मन को स्थिर रखने का संदेश देते हैं और कहते हैं-'काल करै सो आज कर,आज करै सो अब।' गुणवत्ता बनाए रखने के लिए उनका यह दोहा खूब चर्चित है-'निंदक नियरे राखिए,आँगन कुटी छवाय। बिन पानी,साबुन बिना,निर्मल करे सुभाय।' कबीर अपने संसाधनों के उपयोग,सदुपयोग पर जोर देते हैं और प्रबंधन का बड़ा रहस्य सुलझा देते हैं।

प्रबंधन में स्पष्टवादिता का अपना महत्व है। कबीर प्रचलित धारणाओं पर गहरी चोट करते हैं-केवल राम-राम रटने से काम नहीं होता,ईश्वर के प्रति सच्चा प्रेम होना चाहिए। राम नाम का जाप उनकी महिमा समझकर करनी चाहिए। कबीर गोल-गोल बात नहीं करते,स्पष्ट कहते हैं और स्पष्टवादिता पर जोर देते हैं। स्पष्टवादी की बातों पर लोग विश्वास करते हैं और अनुसरण करते हैं। कबीर खरा-खरा बोलते हैं-जो घर फूँके आपना,चले हमारे साथ। स्पष्टवादिता से पारदर्शी कार्य-संस्कृति का निर्माण होता है। कबीर का स्पष्ट संदेश देखिए-ईंट-पत्थर जोड़कर मस्जिद बना लिया और मुल्ला रोज अजान देता है, तो क्या खुदा बहरा है? पाँच बार नमाज पढ़ लेना सच्ची प्रार्थना नहीं है, जब तक हमारे भीतर प्रेम,करुणा और सत्य का वास नहीं होता। वैसे ही उन्होंने पत्थर को परमात्मा मानकर पूजने पर भी कटाक्ष किया है। वे किसी को भ्रम में नहीं रखना चाहते,किसी को नहीं कहते कि मेरा मंत्र जप लो,तुम्हें मोक्ष मिल जायेगा। इस तरह कबीर ने स्पष्टतः अपने विचारों को रखा और सबको सन्मार्ग दिखाया है।

रणनीतिक और आलोचनात्मक सोच का प्रबंधन के क्षेत्र में कम महत्व नहीं है। कबीर कहते हैं-'हम न मरैं,मरिहें संसारा।'सारा संसार मृत्यु को प्राप्त होता है परन्तु संत नहीं मरता क्योंकि वह राम नाम के रसायन का पान करता है। उन्होंने स्वयं को हरि से जोड़ लिया है। यह उनकी रणनीति है,स्वयं को उसी में मिला दो जिसकी मृत्यु नहीं होती,जो अमर है। ईश्वर अमर है,इसलिए स्वयं को राममय कर लो। प्रबंधन के क्षेत्र में इसको समझने के लिए आलोचनात्मक दृष्टि चाहिए। प्रताप नारायण सिंह जी लिखते हैं-आलोचनात्मक सोच अवधारणात्मक रुप से एक अनुशासित प्रक्रिया है जिसमें अपने लक्ष्य की प्राप्ति के तरीके पर गहराई से विचार किया जाता है। इसके अन्तर्गत अवलोकन,अनुभव,आभास, तर्क ,संचार इत्यादि माध्यमों से एकत्रित जानकारी का उपयोग,विश्लेषण,संश्लेषण और मूल्यांकन करना होता है। कबीर स्वयं को ईश्वर में मिलाने की प्रक्रिया समझाते हैं-अवधू गगन मंडल घर कीजै। वे अपनी दृष्टि को लेकर बिल्कुल स्पष्ट हैं और उनकी रणनीति भी स्पष्ट है। कबीर हमेशा आत्म-चिन्तन पर बल देते है और उनकी दृष्टि सदैव आलोचनात्मक रहती है। वे अपना मार्ग,लक्ष्य व अपनी समस्याओं को पहचानते हैं और उसी के अनुरूप अपनी रणनीति बनाते हैं। माया को महाठगिनी कहते हैं,उसके नस-नस को पहचानते हैं और संसार के प्रति नेह को जला देने का भजन गाते हैं।

नेतृत्व करने वाले व्यक्ति में दूरदृष्टि होती है,वह दूरद्रष्टा होता है। कबीर का कहना है जिसका गुरु अंधा है,शिष्य अंधा होगा ही और दोनों भटक जायेंगे। कबीर की दृष्टि थी-भ्रम और अंधकार से निकलकर सत्य,प्रेम और परमात्मा तक पहुँचना। वे इसके लिए नाना बिंबों का रहस्य समझाते हैं,निर्गुण भजन सुनाते हैं और ईश्वर से जुड़ने की बात करते हैं। क्रोध,मद ,लोभ से दूर रहने का संदेश देते हैं। कबीर अपने जैसों की तलाश करते हैं जो ईश्वर में लगे हुए हों। प्रताप नारायण सिंह जी अनेक कम्पनियो के प्रबंधन की चर्चा करते हुए कबीर के मार्ग की व्याख्या करते हैं। कबीर चौकन्ना रहने की बात करते हैं और जीवन में उसका लाभ बताते हैं। इस तरह वे विलक्षण दृष्टि वाले युगपुरुष थे और उनकी शिक्षाएं प्रबंधन में खूब काम आती हैं। इसी कड़ी में प्रताप नारायण सिंह प्रबंधन की दृष्टि से प्रामाणिकता और आत्मजागरुकता की चर्चा करते हैं। कबीर ज्ञान की आँधी में भ्रम के उड़ जाने का दृष्टान्त बताते है, आत्मजागरुकता प्रदर्शित करते हैं और अपने भजनों,दोहों या निर्गुनों में पूरी प्रक्रिया समझाते हैं। जागरूक व्यक्ति का भटकाव नहीं होता,वह यथेष्ट मार्ग सहज ही प्राप्त कर लेता है और पूरे समाज को दिशा दिखाता है। कबीर अपनी विफलता का कारण बताते हैं कि मैं उन्हें बाहर-बाहर खोज रहा था,मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे में खोज रहा था,कर्मकांडों में तलाश रहा था। अंत में उन्होंने बाहर की तलाश बंद कर दी और अपने भीतर की तलाश शुरु कर दी, कबीर को सब कुछ मिल गया।

प्रबंधन का एक अंग यह भी है,कार्य सिद्धि के लिए अपना ध्यान लक्ष्य पर केन्द्रित रखना चाहिए। कबीर मन की माला को फेरने की सलाह देते है और अपनी दृष्टि,अपने लक्ष्य पर रखते हैं। जो व्यक्ति अपनी प्रवृत्ति को अन्तर्मुखी करके स्वयं पर विचार करता है,स्वयं कहता है,स्वयं सुनता है और स्वयं को ही बताता है वह ज्ञानी होता है। कबीर कहते हैं-मन उलटकर मन में ही समा गया अर्थात बाहर के भटकाव से मुक्त होकर अन्तर्साधना में लग गया। अपनी संवेदनाओं को केन्द्रित करना आत्मजागरूकता का प्रमुख तत्व है और प्रबंधन में काम आता है। इसमें तीन तरीकों की चर्चा प्रताप नारायण सिंह ने विस्तार से की है-स्वयं पर ध्यान केन्द्रित करना,दूसरों पर ध्यान केन्द्रित करना और बृहद जगत पर ध्यान केन्द्रित करना। कबीर को पढ़ते हुए इन तीनों का ज्ञान मनुष्य ग्रहण करता है और आगे बढ़ता जाता है। लेखक ने इसी कड़ी में धैर्य और लगन पर गहन विचार किया है। सांसारिक प्रबंधकीय चिन्तन या जीवन के प्रबंधन में धैर्य और लगन की महत्ता किसी भी तरह कम नहीं है। कबीर बार-बार धैर्य धारण करने और लगन से काम करने की सलाह देते हैं। प्रताप नारायण सिंह ने इस प्रसंग में अनेकों उदाहरण देकर धैर्य और लगन को समझाने का प्रयास किया है और कबीर के उपदेशों से सम्बद्ध किया है।

'पारस्परिक संचार' की चर्चा करते हुए लेखक ने कबीर के संवाद या संबोधन को तीन हिस्सों में बाँटा है। कबीर स्वय को संबोधित करते हैं,दूसरा परमेश्वर से संवाद करते हैं और तीसरा संबोधन सम्पूर्ण जगत के साथ होता है। संवाद द्विपक्षीय होना चाहिए तभी सफलता मिलती है। कबीर अपने शिष्यों को समझाते हैं-तुमने अपने आसपास केवल पाखंड देखा है,वे सृष्टि का रहस्य समझाते हैं और भीतर ज्ञान के प्रकाश की बात करते हैं। प्रताप नारायण सिंह जी प्रबंधन के लिए परस्पर संवाद में सक्रिय होकर सुनना,भरोसेमंद होना,समान अनुभव करना आदि के बारे

में बताते हैं। पारस्परिक संचार कौशल से प्रगाढ़ सम्बन्ध बनते हैं। कबीर ज्ञान और प्रेम के ऐसे विक्रेता हैं जो अपने खरीददार से कोई मूल्य नहीं लेते,वे सुपात्र की तलाश करते हैं और अधूरे ज्ञान को खतरनाक बताते हैं। प्रबंधन की दुनिया में प्रेरक तत्वों या प्रेरणा के स्रोतों को बहुत महत्व दिया जाता है। कबीर बार-बार रटने वालों पर आक्रमण करते हैं,ऊँच-नीच के विचारों का विरोध करते हैं,कर्मकांड और भौतिक क्रियाओं से असहमति जताते हैं। कबीर ने वंचितों को सम्बल दिया और सबल मठाधीशों को फटकारा। सकारात्मक दृष्टिकोण को अपनाना,सहयोगियों का विश्वास जीतना, निष्ठापूर्वक प्रदर्शन करना,अग्रदूत बनना और सबके लिए समय देना आदि कबीर के प्रेरक कर्म-विचार है। वे समाज के प्रेरणास्रोत बन गये। प्रबंधन में प्रोत्साहन और सहयोग की महत्ता है। कबीर कहते है कि जन्म से कोई नीच नहीं है,मनुष्य नीच अपने कर्म से होता है।

'निरंतर सुधार' करते रहना प्रबंधन का महत्वपूर्ण चिन्तन है। कबीर उसी भाव से लिखते हैं-'मन रे जागत रहिए भाई!' एक बार जागकर सो नहीं जाना है,सावधान रहना है और लगातार जीवन में सुधार करते रहना है। कबीर का संदेश है, काम, क्रोध,मद,लोभ क्षण भर में अपनी चपेट में ले लेते हैं और सारा किया-धरा चौपट हो जाता है। कबीर विश्वामित्र,नहुष जैसे प्रतापी लोगों के भटकाव का उदाहरण देते हैं और लगातार सजग-सावधान होने को कहते हैं। वे कुंडलिनी के लिए छह चक्रों तक उसके सोने की बात करते हैं और अंतिम सहस्रार चक्र में उसका जागना ही उद्देश्य है। किसी भी प्रबंधन में निरंतर परिष्करण करते रहना है। इसके लिए प्रताप नारायण सिंह कुछ बिन्दुओं की चर्चा करते हैं जैसे कार्य-पद्धति के प्रति जागरूकता, सुधारों को सहजता देना,नीतिगत चतुराई,सहयोग और सशक्तिकरण आदि। साथ ही 'कौशल विकास' पर लेखक ने गम्भीर चिन्तन किया है और कबीर के मत-विचार से जोड़ा है। कबीर मन से सारे भेद मिटाने का संदेश देते हैं और समस्त मानव को एक समान समझने को कहते हैं। वे सभी के प्रति प्रेम विकसित करना चाहते हैं। परमात्मा-जीवात्मा सब एक समान है,कबीर भ्रम न पालने की सलाह देते हैं। आज के प्रबंधन में कौशल विकास अनिवार्य हिस्सा है,वह हमारे सामने नए-नए विकल्प खोल देता है। नवीन स्वस्थ विचारधारा अपनाने से विकास त्वरित होता है,युगानुरुप होता है। प्रताप नारायण सिंह ने कौशल विकास को लेकर सशक्त उदाहरण दिए हैं और प्रशिक्षण पर जोर दिया है।

'नम्यता' या 'नमनीयता' जीवन का सशक्त गुण है। नम्यता का अर्थ होता है लचीलापन अर्थात एक ही आकार में दृढ़ न रहना। कबीर अपने आराध्य के लिए नाना तरह का चिन्तन करते हैं,नाना रुपों में तालमेल बनाते हैं,उनसे विवाह रचाते हैं और मंगलगान के लिए सभी दुलहिनों,सुहागिनों को आमंत्रित करते हैं। 'हरि मोर पियू मैं राम की बहुरिया रे' कबीर राम को अपना प्रियतम मानते हैं। वे रुपकों का प्रयोग करते हैं और अपने सम्बन्धों की व्याख्या करते हैं।

प्रबंधन में नम्यता के बिना काम नहीं चलता। आज तेजी से आर्थिक व सामाजिक परिवेश बदल रहा है,बहुत कठोर होने से बात नहीं बनती। प्रताप नारायण सिंह ने कबीर के चिन्तन के आधार पर आज के प्रबंधन में नम्यता को जोड़ने की कोशिश की है। कबीर इतने नम्य हैं,उनका अपना कुछ भी नहीं है,वे कहते हैं-'हे ईश्वर! मैं तो तुम्हारा गुलाम हूँ,मुझे जैसे रखो या बेच दो।' कबीर अनेक भावों को लेकर ईश्वर के प्रति अनेक सम्बन्ध प्रकट करते हैं और यही उनकी नम्यता है।

"मैनेजमेंट गुरु कबीर" पुस्तक के अंत में प्रताप नारायण सिंह ने 'कबीर की प्रासंगिकता' शीर्षक से सार्थक लेख लिखा है। कबीर की वाणी से निःसृत उपदेश लोगों के लिए सफल,सार्थक और श्रेष्ठ जीवन जीने में सहायक रहे हैं और आज भी प्रेरित करते हैं। उनके भजन गाए जाते हैं और प्रेम से सुने जाते हैं। लेखक ने कबीर की प्रासंगिकता को दार्शनिक दृष्टि से,सामाजिक दृष्टि से,नैतिक व आर्थिक दृष्टि से समझने,समझाने का विस्तार से,अनेकों उदाहरणों सहित प्रयास किया है और प्रमाणित किया है। कबीर का जीवन,उनका उपदेश,उनका संदेश जीवन-प्रबंधन में प्रासंगिक और सहायक है,यह समझने की,अपने तरह की शायद यह पहली कोशिश है। यह पुस्तक कबीर-दर्शन तो समझाती ही है,वर्तमान प्रबंधन से जोड़कर शिक्षण-प्रशिक्षण का विस्तृत आकाश दर्शाती है। कबीर स्वयं पढ़े-लिखे नहीं थे परन्तु जीवन में ईश्वर को सम्मिलित करके सहज जीवन का मार्ग दिखा गए हैं।

समीक्षित कृति : मैनेजमेंट गुरु कबीर
लेखक : प्रताप नारायण सिंह
मूल्य : रु 250/-
प्रकाशक : डायमंड बुक्स,नई दिल्ली

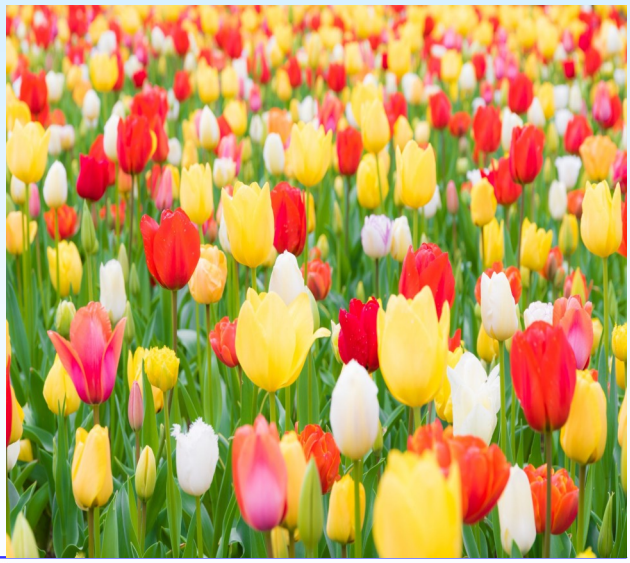

राजेश सिंह
अहमदाबाद

बचे हुए पृष्ठ : सामाजिक पहलुओं पर पारखी दस्तावेज

प्रिय राम पाल श्रीवास्तव जी, जो की पेशे से पत्रकार और लेखक है, उनकी 51 आलेखों का संकलन है इस पुस्तक में , जिसे **"बचे हुए पृष्ठ"** का नाम दिया गया है।जिसमें पूरा का पूरा एक कालखंड द्रष्टव्य है। लेखक स्वयं कहते है जो घटनाएँ पत्रकारिता के दौरान दृश्यमान हुई , जिन्होंने लेखक को लेखनी चलाने पर मजबूर किया ,या फिर जो पत्रकार और लेखक की पारखी या फिर यूं कहें पैनी नजरों में अटक गई , उन्ही चुनिंदा एवं विविध घटनाओं का दस्तावेज है **"बचे हुए पृष्ठ"।**

इनमें से कुछ आलेख सोशल मीडिया ,पत्र-पत्रिकाओं , आकाशवाणी पर प्रकाशित एवं प्रसारित भी हुए है। लेखक चूकिं पेशे से पत्रकार है तो अपील भी करते है की इन आलेखों को एक पत्रकार के दृष्टिकोण से समझने की कोशिश करें। इन आलेखों को राष्ट्र हित एवं मानव हित की नजर से परखें , बजाय इनमें दलगत या जातिगत राजनीति एवं सांप्रदायिकता का पुट देखें।

लेखक ने इन इक्यावन आलेखों में धर्म , धर्म स्थल , साहित्य , समाज , कुरीतिया , अध्यात्म ,मानवता , भ्रष्टाचार आदि सभी सामाजिक एवं राजनीतिक पहलुओं को समेटने का प्रयास किया है । कुलमिलाजुलकर लेखक ने मानवजाति के चारों मुख्य स्तंभों यथा- धर्म अर्थ काम मोक्ष को समाज में जहां जहां जिस रूप में देखा समझा उसे जस का तस अपने लेखनी से कलमबद्ध किया। इन आलेखों में तथ्यात्मक और विवरणात्मक बातें कहीं गई है और हो भी क्यों न , जब लेखक पेशे से पत्रकार हो, तो तथ्यों को प्रस्तुत करना उसकी जिम्मेदारी भी बनती है। लेखक ने आलेखों को लिखने में पूरी ईमानदारी का परिचय दिया है **–"जहां जैसा दिखा , वहाँ वैसा लिखा"**

संग्रह का पहला आलेख "सिद्ध शक्तिपीठ देवी पाटन" पर है , जो की हिन्दू धर्म में वर्णित 51 शक्तिपीठों में से 26 वां है। यह आलेख माँ पाटेश्वरी देवी के बारे में है ,जो की उत्तर प्रदेश के बलरामपुर जिले तुलसीपुर रेल्वे स्टेशन के समीप रामगंगा नदी के पूर्वी तट पर स्थित है। पूरा आलेख माँ की अलौकिक शक्तियों और श्रद्धालुओं की आस्था के बारे में है ।

संग्रह का दूसरा आलेख "चश्म-ए – खिरद को अपनी तजल्ली से नूर दे।" गायत्री समाज के बारें में उसके संस्थापक श्री राम शर्मा जी के बारें में है । लेखक ने इस आलेख में पवित्र गायत्री मंत्र के समानार्थक कुरआन की सूरह फातिहा का जिक्र किया है । लेखक ने हिन्दू मुस्लिम धर्म ग्रंथों में एक ही तरह भावों का समावेश है, को ढूढने का प्रयास किया है । गायत्री समाज के बारे में लेखक बताते है – वहाँ सभी धर्मों के बारे में सहिष्णु एवं तितिक्षा – भाव है ।

संग्रह का तीसरा आलेख "बेहतर जीवन-कुछ विचार" लेखक के अंदर की साम्यवादी झलक को उजागर करती है। जहां समाजहित की बातें है जनहित की बातें है। लेखक समान अधिकार न्यायपूर्ण वितरण प्रणाली का पक्षधर है। बानगी देखिए " एक नागरिक को औसत सीमा तक संपत्ति रखने का मूलभूत अधिकार होना चाहिए और इससे अधिक मूल्य की निजी संपत्ति पर प्रचलित ब्याज की दर से कर लगा दिया जाना चाहिए एवं इसका वितरण सभी नागरिकों में समान रूप से कर दिया जाना चाहिए।"

संग्रह के अगले आलेख " कभी सुबह तो आएगी" में लेखक साहित्य में मजलूमों की उठी आवाज पर अपनी नजर डालता है ।

काजी नजरुल को लेखक राष्ट्र प्रेम और मानव एकता का उद्घोषक मानता है । उकने बारे में लेखक कहता है की नजरुल जनता के कवि है ,उनकी रचनाओं के पात्र केवल विशिष्ट जन नहीं वरन आम लोग भी है। नजरुल की स्वतंत्रवादी कविता जिसने लोगों को प्रेरित किया " बालो वीर ,उन्नत मम शीर... का जिक्र भी लेखक ने किया है।

"पत्रकारों का दमन बनाम लोकतंत्र की मौत" आलेख में पत्रकार लेखक ने अपना दर्द अमीर मीडिया मालिकों के हस्तक्षेप पर व्यक्त किया है । जहां अमीर मीडिया को खरीद कर स्वतंत पत्रकारिता को गुलामी की पत्रकारिता में परिवर्तित कर रहा है। आजकल यह आलेख सर्वाधिक प्रासंगिक है , जहां राजनीतिकों ने या फिर पूंजीवादियों ने सारे मीडिया समूह को खरीद लिया है और मर्जी के हिसाब से समाचार को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया जा रहा है ।

ई. वी . एम. की विश्वसनीयता पर भी लेखक सवाल उठाता है। इसके पीछे की साजिश की तरफ भी लेखक का संकेत है। लोकतान्त्रिक प्रक्रिया में चुनाव के महत्व से इनकार नहीं किया जा सकता है और ई. वी . एम. पर संदेह निःसंदेह लोकतान्त्रिक प्रक्रिया पर संदेह है । जिसका निवारण जनता के सामने होना ही चाहिए।

लेखक ने माँ की महिमा आलेख में माँ की महिमा एवं महत्ता का वर्णन किया है ,जिसे निःसंदेह शब्दों में समेटा नहीं जा सकता। लेखक उद्धृत करते है। "एक बार एक व्यक्ति ने हजरत मुहम्मद साहब से पूछा – हे ईशदूत ,मुझ पर सबसे ज्यादा अधिकार किसका है ?' उन्होंने जबाब दिया – 'तुम्हारी माता का', 'फिर किसका?' उत्तर मिला – 'तुम्हारी माता का',फिर किसका?' फिर उत्तर मिला – 'तुम्हारी माता का',

लेखक पॉर्न साइटों पर अपनी चिंता व्यक्त करते हुए अपने आलेख "पॉर्न साइटें खा रही नई पीढ़ी को" में बच्चों में बढ़ती इस लत को लेकर चिंतित है । लेखक का मानना है की इस समस्या से निपटने के लिए सामाजिक स्तर पर जागरूकता की आवश्यकता एवं सरकारी स्तर पर ठोस कार्यवाही की जरूरत है। यह न केवल समाज को दूषित कर रहा है, वरन मानसिक रूप से बच्चों को कमजोर एवं अश्लील बना रहा है। लेखक की इस सामाजिक समस्या पर चिंता जायज है।

लेखक जहां सांप्रदायिक दंगों के पीछे छुपे सच को बेनकाब करने का प्रयास करता है वहीं जुर्म और राजनीति पर अपने राय जाहिर करते हुए लिखता है-'पाँच साल से अधिक सजा वाले मामलों में आरोपियों को संसद और विधानसभाओं का चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य ठहरा देना चाहिए । यहीं नहीं लेखक तो इस बात की भी वकालत करता है कि ,जो लोग हत्या , दुष्कर्म ,डकैती और तस्करी जैसे जघन्य मामलों में दोषी ठहराए गए हैं, उन्हें ताउम्र चुनाव लड़ने से प्रतिबंधित कर दिया जाना चाहिए।

लेखक की पैनी नजर समाज के हर पहलुओं पर है। अपने लेख में लेखक विधवाओं की बदहाली पर चिंता व्यक्त करते है। अनंत आनंद की खोज लेख में वेद में वर्णित एकेश्वरवाद की बात का जिक्र भी करते हैं। -**"एको ब्रह्म द्वितीयों नास्ति"** और इस्लाम के सूक्त वाक्यांश का जिक्र भी करते हैं। -**"अश्हदू अल्ला इला –ह इल्लल्लाह"** अर्थात मैं गवाही देता हूँ की अल्लाह के सिवाय कोई दूसरा उपास्य नहीं।

देश में छायी कुरीतियों – डायन हत्या और महिलाओं पर अंधविश्वास के नाम पर हो रहे अत्याचारों पर भी लेखक चिंता व्यक्त करते हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में घटी घटनाओं के माध्यम से लेखक इस कुरीति पर पाठकों का ध्यान आकर्षित कर इसके उन्मूलन पर ठोस कार्यवाही की आवश्यकता पर बल देते हैं।लेखक की चिंता कुपोषण पर है ,काले धन पर है, आजादी के नाम पर स्वेछाचारिता पर है, बलात्कार जैसी जघन्य अपराधों पर है ,महिलाओं की सुरक्षा को लेकर है,देश की अमन शांति पर है,पुलिसिया आतंक पर है ,देश की वित्तीय अर्थव्यवस्था ,महगाई ,भ्रष्टाचार ,बेरोजगारी,वित्तीय समायोजन पर भी लेखक अपने लेखों में सुझाव और अपनी चिंता जाहिर करता हैं।

आलेख "और हम गरीब रहे" में लेखक पूंजीवाद और देश की गरीब आबादी पर उसके प्रभाव पर अपनी दृष्टि डालते हुए कहता है-"असल में दुनिया अमीरों की है ,वास्तव में देश की बहुत बड़ी आबादी भूखे पेट जीवन गुजारने के लिए अभिशप्त है।

"करोड़ों रुपये फूँकें जा रहे पर नतीजा?" आलेख में लेखक बाल स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं मुख्यतः दिमागी बुखार पर मेडिकल सुविधाओं और भ्रष्टाचार पर चिंता व्यक्त करते हुए लिखता है-"सरकार से आवंटित पैसा कहाँ जा रहा है ,इस पर जांच करने की आवश्यकता है।

कुलमिलाजुलकर लेखक ने अपने लेखों में लगभग लगभग समाज के हर क्षेत्र में फिर वों चाहे सामाजिक व्यवस्था हो, राजनीतिक व्यवस्था हो, न्यायिक व्यवस्था हो या फिर लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ पत्रकारिता ही क्यों न हो , सब पर अपनी बेबाक राय रखी है , चिंता जाहिर की है ,सुझाव रखे है। लेखक चूंकि पेशे से पत्रकार है तो इन लेखों में पत्रकारिता की झलक भी देखने को मिलती है । लेखक ने आलेखों में तथ्यों को यथासंभव दिया है ताकि घटनाओं की विश्वशनीयता पर पाठकों को संदेह न हो। पुस्तक को पढ़कर समाज को देखने का एक नया नजरिया मिलता है। आलेख मन को उद्वेलित करते है ।समाज में घटी विभिन्न घटनाओं की सच्चाई से अवगत करते है। निःसंदेह पुस्तक पढ़ने योग्य है।

पुस्तक- **बचे हुए पृष्ठ (आलेख संग्रह)**
लेखक - **रामपाल श्रीवास्तव**
प्रकाशक- **शुभदा बुक्स (साहिबाबाद)**
पृष्ठ- **184**

हिंदी भारतीय परंपरा, संस्कृति व संस्कारों की सच्ची संवाहक - पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव
डाक विभाग द्वारा हिंदी दिवस व हिंदी पखवाड़ा का आयोजन, पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव ने किया शुभारम्भ
हिंदी की सबसे बड़ी ताक़त इसकी मौलिकता व सरलता - पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

हिंदी भारतीय परंपरा, जीवन मूल्यों, संस्कृति व संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक है। इसके प्रचार-प्रसार से देश में एकता की भावना और सुदृढ़ होगी। सृजन एवं अभिव्यक्ति की दृष्टि से हिंदी दुनिया की अग्रणी भाषाओं में से एक है। ऐसे में हिंदी में गर्व से कार्य करने और अपनी भाषा को समृद्ध करने में सभी को योगदान देना होगा। उक्त उद्गार वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने डाक विभाग द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय में आयोजित हिंदी दिवस और तदनुसार आरम्भ हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ करते हुए किया। इससे पूर्व उन्होंने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर और दीप प्रज्वलित कर हिंदी पखवाड़ा का शुभारम्भ किया।

पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि अनेकता में एकता को स्थापित करने की सूत्रधार 'हिन्दी भाषा' भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है,इसकी सबसे बड़ी ताक़त इसकी मौलिकता और सरलता है। भारत सरकार द्वारा विकास योजनाओं तथा नागरिक सेवाएं प्रदान करने में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया जा रहा है। आज संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्थाओं में भी हिंदी की गूंज सुनाई देने लगी है।

सहायक निदेशक राजभाषा श्री बृजेश शर्मा ने बताया कि डाक विभाग की ओर से 14 से 29 सितंबर तक आयोजित हिंदी पखवाड़े में तमाम प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जायेगा।

कार्यक्रम में सहायक निदेशक राजभाषा बृजेश शर्मा, आरके चौहान, लेखाधिकारी प्लाबन नस्कर, सहायक लेखाधिकारी संतोषी राय, डाक निरीक्षक श्रीकान्त पाल, रमेश यादव, श्रीप्रकाश गुप्ता, राकेश कुमार, विवेक कुमार, मनीष कुमार, रामचंद्र, सहित तमाम तमाम विभागीय अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन शंभु प्रसाद गुप्ता ने किया।

डिजिटल क्रान्ति के युग में हिन्दी में विश्व भाषा बनने की क्षमता -पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव
'अमृत काल' में परिवर्तन व विकास की भाषा के रूप में उभर रही हिन्दी -पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव
डाक विभाग में हिंदी पखवाड़ा का समापन, विजेताओं को पोस्टमास्टर जनरल ने किया पुरस्कृत

हिन्दी में विश्व भाषा बनने की क्षमता है। जैसे-जैसे विश्व में भारत के प्रति दिलचस्पी बढ़ रही है, वैसे-वैसे हिन्दी के प्रति भी रुझान बढ़ रहा है। आज 'अमृत काल' में परिवर्तन और विकास की भाषा के रूप में हिन्दी के महत्व को नये सिरे से रेखांकित किया जा रहा है। हिन्दी अपनी सरलता, सुबोधता, वैज्ञानिकता के कारण ही आज विश्व में तीसरी सबसे बड़ी बोली जाने वाली भाषा है। वैश्विक स्तर पर हिंदी बोलने व समझने वालों की संख्या 1अरब 40 करोड़ है।इस आधार पर देखें तो 2030 तक दुनिया का हर पांचवां व्यक्ति हिंदी बोलेगा। दुनिया के 200 से ज्यादा विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। उक्त उद्गार वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने प्रधान डाकघर, वाराणसी में 29 सितंबर को आयोजित हिंदी पखवाड़ा समापन व पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये। इस अवसर पर पोस्टमास्टर जनरल ने विशिष्ट अतिथि द्वय वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. श्रीप्रकाश शुक्ल और आकाशवाणी के सहायक निदेशक श्री राजेश गौतम संग क्षेत्रीय कार्यालय, प्रधान डाकघर, वाराणसी पूर्वी मंडल और पश्चिमी मंडल के कुल 48 डाककर्मियों को विभिन्न प्रतियोगिता के विजेता रूप में पुरस्कृत किया।

पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि हिंदी हमारे रोजमर्रा की भाषा है और इसे सिर्फ पखवाड़ा से जोड़कर देखने की जरूरत नहीं है। जरूरत इस बात की है कि हम इसके प्रचार-प्रसार और विकास के क्रम में आयोजनों के साथ ही अपनी दैनिक दिनचर्या से भी जोड़ें। हिन्दी आज सिर्फ साहित्य और बोलचाल की ही भाषा नहीं, बल्कि विज्ञान-प्रौद्योगिकी से लेकर संचार-क्रांति एवं सूचना-प्रौद्योगिकी से लेकर व्यापार की भाषा बनने की ओर अग्रसर है। डिजिटल क्रान्ति के इस युग में वेबसाइट्स, ब्लॉग और सोशल मीडिया ने हिन्दी का दायरा और भी बढ़ा दिया है।

गिरिधर पुरोहित

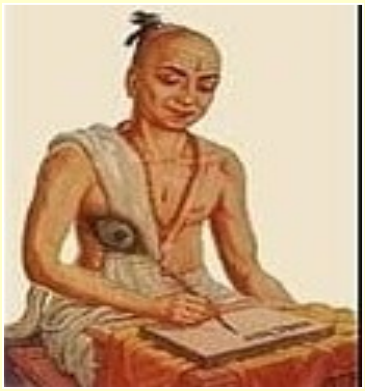

ठौर-ठौर सरसी में, सरोज प्रगट भए,

दसौं दिसि छाड़ै मल, निर्मलता लाई है।

फूली फुलवारी जेती, गिरिधारी हुँती सब,

मन की मलीनता कूँ, धरा छाड़ि आई है।

पहिलै हो आए तैसे, करि कहों न फिरितो,

ब्रज ब्रजराज बिनु कहौ कौन भाई है।

सरदौंनि रानी आई, बादर गए बिलाइ,

दई-दई-दई करै, बरखा बिलाई है॥

मानवी सेवा संस्था : राष्ट्र और राष्ट्र जन की सेवा में समर्पित

274/x ,शक्तिनगर कालोनी ,आरोग्य मंदिर ,गोरखपुर -273003

http://www.manvipatrika.co.in

(पत्रिका यहाँ से भी पढ़ सकते है)